Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भैरप्पा

आवरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
167888

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवरण

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवरण

गुरुदत्त

Central Library
167888
Gurukula Kangri Vishwavidyalaya, Haridwar

081
167888

हिन्दी साहित्य सदन
नई दिल्ली-११०००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R
089.9143
GUR-A

© प्रकाशकाधीन

BOOKS IN HINDI, ENGLISH & SANSKRIT
www.hindisahityasadan.com
Phone - 9213527666,7065618655
011 23553624

23553624, 23551344, 9213527666
हिन्दी साहित्य सदन
2 बी.डी. चैम्बर्स, 10/54, देशबन्धु गुप्ता रोड
करोल बाग, नई दिल्ली-1100 5

मूल्य : एक सौ दस रुपये मात्र

प्रकाशक : हिन्दी साहित्य सदन
३०-पी, कनॉट सरकस, नई दिल्ली-११०००१
फोन : ३३६३५५७
संस्करण : १९९७
मुद्रक : अजय प्रिंटर्स
दिल्ली-११००३२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधार-भूमि

जैसे वस्त्र शरीर का आवरण है अथवा शरीर आत्मा का आवरण है, इसी प्रकार विचार तथा भावनाओं का आवरण भी होता है। वस्त्र की रक्षा करने में कोई भी व्यक्ति शरीर को हानि नहीं पहुँचाएगा, न ही शरीर के लिए कोई आत्मा का हनन करना चाहेगा। इसी प्रकार विचारों में आवरण गौण और भीतर का संरक्षित भाव मुख्य माना जाना चाहिए।

कठिनाई वहाँ पड़ती है, जहाँ कोई आत्मा का अस्तित्व माने ही नहीं। ऐसे व्यक्ति के लिए शरीर ही सब-कुछ होता है। अथवा कभी कोई शरीर को हेय और आवरण को मुख्य मानने लगे। इस अवस्था में आवरण उपयुक्त न होने पर मृत्यु तक हो सकती है।

ऐसी ही परिस्थिति विचारों, भावनाओं इत्यादि में भी हो जाती है। सिद्धान्तों को गौण मान, रीति-रिवाज, जो सिद्धान्तों के आवरण मात्र होते हैं, को मुख्य मानने वाले भी संसार में विद्यमान् हैं और उसके लिए लड़ मरते हैं।

मनुष्य तो प्रायः सब एक समान होते हैं, परन्तु भिन्न-भिन्न आवरणों में भिन्न-भिन्न प्रतीत होते हैं। एक गौरवर्णीय हिन्दुस्तानी यूरोपियन पहिरावे में यूरोपियन प्रतीत होने लगता है, इसी प्रकार केश और दाढ़ी रखने से कोई सिख प्रतीत होने लगता है और सुन्नत इत्यादि चिह्न बनाने से मुसलमान।

कभी रीति-रिवाज की इतनी महिमा हो जाती है कि इसके आवरण में सिद्धांतात्मक विचार और भाव लुप्तप्राय हो जाते हैं। उदाहरण के रूप में देवता का स्वरूप हनुमान्-सरीखा होना चाहिए अथवा गणेश जैसा? राधा-कृष्ण की मूर्ति उपास्य हो अथवा शिव की? ये विवाद हैं आवरण के। इन विवादों में भगवान् की पूजा तथा उपासना गौण हो जाती है और मूर्ति की रूपरेखा मुख्य बन जाती है।

एक व्यक्ति सन्ध्योपासना पूर्वाभिमुख बैठकर करता है, कोई दूसरा नमाज़ पश्चिमाभिमुख हो करता है। ये पूर्व-पश्चिम सर्वथा गौण हैं। इस पर भी कभी-कभी विचारशील व्यक्ति भी इस बाहरी बात को मुख्य मानकर परस्पर झगड़ पड़ते हैं।

आर्यसमाज जैसी संस्था भी, जो अपने को बुद्धिशील व्यक्तियों का समूह मानती है, हवन करते समय धोती पहननी चाहिए और पाजामा नहीं, अथवा आहुति देते समय स्रुवा दाहिने हाथ में एक विशेष ढंग से पकड़ना चाहिए, पर बहुत बल देती है।

इसी प्रकार राजनीति और आर्थिक विधि-विधान में भी मनुष्य तत्त्व को छोड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रीति-रिवाज अथवा विधि-विधान पर बल देने लगते हैं। राज्य-कार्य में देशवासियों की रक्षा और जनता की सुख-सुविधा ही तथ्य की बात है। इस तथ्य की प्राप्ति के अनेक उपाय हो सकते हैं, परन्तु जब कोई राज्य अथवा राजनीतिक दल यह कहे कि उससे प्रतिपादित उपाय ही ठीक है और अन्य उपायों पर विचार भी नहीं करना, तो यही कहा जा सकता है कि तथ्य को छोड़ वे आवरण पर मुग्ध हो रहे हैं।

आजकल के मानव की स्थिति देख किसी भी पन्थ, समुदाय और विचारधारा का उदाहरण लिया जा सकता है, परन्तु उस पन्थ, समुदाय इत्यादि के विरोध का आशय नहीं है। यह कल्पना की गई है, जो आवरण को छोड़ तथ्य को पहचानते हैं। अतएव यहाँ किसी पन्थ, समुदाय अथवा विचारधारा का विरोध करना उद्देश्य नहीं परन्तु उस प्रवृत्ति का, जिससे लोग तथ्य को भूल बाहरी आवरण पर लड़ने-झगड़ने लगते हैं, दिग्दर्शन-मात्र ही मुख्य उद्देश्य है।

मानव सब समान हैं और उनका उद्देश्य एक है, परन्तु पंथ न्यारे-न्यारे हैं। पन्थों का विवाद उद्देश्यों में भिन्नता के कारण ही होना चाहिए। उद्देश्य एक होने पर भिन्न-भिन्न पन्थ रीति-रिवाजों से झगड़े का कारण नहीं होने चाहिएँ।

प्रान्तीयता अथवा जातीयता एक जन-समूह की उन्नति के लक्ष्य से निर्मित हुए हैं, न कि मनुष्य-मनुष्य में घृणा उत्पन्न करने के लिए। ये सीमाएँ मानव-हित में बनी हैं, मानव की हत्या करने के लिए नहीं। जैसे कपड़े शरीर की रक्षा के लिए होते हैं, वैसे ही प्रान्तीयता अथवा जातीयता मानवता की रक्षा के लिए है।

इसी प्रकार किसी समाज में, सबका सुखपूर्वक रहना उद्देश्य है और समाज में व्यक्तिगत स्वतन्त्रता तथा इसकी सीमा निर्धारित करना पन्थ है। समाजवादी ढाँचा हो अथवा व्यक्तिगत उद्योग अथवा यत्न हो, ये उद्देश्य-प्राप्ति में साधन हैं। साधन आवश्यक होते हुए भी जनता की सुविधा की तुलना में गौण हैं।

सरमायादारी से ही जनता का कल्याण हो सकता है अथवा समाजवादी ढाँचे से ही ऐसा होगा, ऐसा मानना यह मानने के तुल्य है कि धोती पहनकर ही यज्ञ पर बैठने से यज्ञ सफल होगा अथवा दाढ़ी-मूँछ रखने से ही कोई पन्थ चल सकेगा।

तथ्य अथवा आडम्बर, शरीर अथवा आवरण, उद्देश्य अथवा विधि-विधान 'आवरण' पुस्तक का विषय है। इस विषय को एक कथानक में गूँथने का यत्न किया गया है।

पुस्तक उपन्यास है। पात्रादि सब काल्पनिक हैं। किसी व्यक्ति अथवा समुदाय के विरोध अथवा मान-अपमान से इसका सम्बन्ध नहीं। उक्त विषय की विवेचना ही इसका उद्देश्य है।

शेष पाठकों के अपने पढ़ने और समझने की बात है।

—गुरुदत्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक

: १ :

लखनऊ के मेडिकल कॉलेज की पाँचवीं श्रेणी में हरभजनसिंह एक पंजाबी युवक पढ़ता था। पढ़ाई में अच्छा था। क्रियात्मक चीड़-फाड़ में नम्बर एक, कपड़े पहनने में सर्वथा मॉडर्न और शरीर का हृष्ट-पुष्ट, पौने छः फुट लम्बा और श्रेणी के सब विद्यार्थियों में से सिर निकालता हुआ।

आज गुरुपर्व था। आदिगुरु श्री गुरुनानक देव का जन्म-दिवस था। लखनऊ के बाज़ारों में श्री गुरु ग्रन्थ साहब की सवारी घूम रही थी और नगर-भर के सिख सवारी के साथ-साथ मण्डलियाँ बनाकर चल रहे थे। प्रेम, श्रद्धा और भक्ति का स्रोत बह रहा था। सहस्रों की संख्या में सिख नर-नारी, भक्ति-भाव के गीत गाते हुए सवारी के आगे-पीछे थे।

एक मोटर-ट्रक पर तख़्तपोश, दरी, क़ालीन और चौकी, उस पर रेशमी गद्दा, गद्दे पर चन्दन की लकड़ी की बरागन, जिस पर श्री गुरु ग्रन्थ साहब खुला रखा था। यह गुलाबी रङ्ग की रेशमी ज़रीदार चादर से ढँपा हुआ था। ऊपर पुष्प-मालाएँ चढ़ी थीं। गुरु ग्रन्थ साहब के पीछे सरदार वढ़ियामसिंह, लखनऊ के प्रसिद्ध ठेकेदार, हाथ में चँवर लिये बैठे थे। वे थोड़ी-थोड़ी देर के पश्चात् दरबार साहब पर चँवर झुला रहे थे। यह इस कारण नहीं था कि उस समय वहाँ मक्खियाँ थीं, जिनको इस पवित्र पुस्तक पर से हटाना था, यह एक पवित्र ग्रन्थ के केवल आदर का प्रतीक ही था।

ऐसे अवसर पर श्री गुरु ग्रन्थ साहब पर चँवर झुलाना एक अति मानयुक्त कार्य माना जाता था और यह मानयुक्त सेवा करने के लिए बड़े-बड़े धनी-मानी लालायित रहते थे। इस पदवी को पाने के लिए लोग हज़ारों रुपए देने के लिए तैयार रहते थे। इस वर्ष सरदार वढ़ियामसिंह ने सवारी में यह सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त करने के लिए सरक्युलर रोड पर बन रहे गुरुद्वारे के लिए दस हज़ार रुपया दिया था।

हरभजनसिंह सरदार वढ़ियामसिंह का लड़का था। आज डॉक्टर खन्ना ने उसको और उसके साथियों को एक ऑपरेशन दिखाने के लिए बुलाया हुआ था। ऑपरेशन अपैण्डेसाइट्स का था। पाँच विद्यार्थी, तीन नर्सें और दो डॉक्टर इस समय उपस्थित थे।

रोगी को मास में एक-दो बार असह्य वेदना होती थी और डॉक्टरों की सम्मति थी कि ऑपरेशन होना चाहिए। रोगी मान गया था।

डॉक्टर खन्ना ने क्लोरोफॉर्म देने के पश्चात् विद्यार्थियों को, जो मुख पर श्वेत पट्टियाँ बाँधे हुए थे, एक छोटा-सा व्याख्यान दे दिया। तदनन्तर पेट चीर डाला। आँतों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को एक ओर कर डॉक्टर ने अपैण्डेसाइट्स कला दिखाई और खट से काटकर बाहर चिलमची में रख दी।

इसके पश्चात् घाव को सीकर आँतों को ठीक स्थान पर रखकर बाहर से पेट को सी दिया। आधे घंटे में चीरे के काम से निवृत्त होकर सब लोग अवकाश पा गए। अचेत रोगी को नर्सें गाड़ी में रखकर ऑपरेशन थिएटर से बाहर ले गईं।

डॉक्टर और विद्यार्थियों ने मुख से पट्टियाँ खोलीं, अपने ऐपरॉन उतारे, हाथ धोए और इधर-उधर की बातें करते हुए बाहर निकल आए। विद्यार्थियों में तीन लड़के और दो लड़कियाँ थीं। जब डॉक्टर खन्ना अपनी मोटर में सवार हो चला गया तो विद्यार्थियों ने भी एक-दूसरे से छुट्टी ली। हरभजनसिंह जाने लगा तो एक लड़की ने पूछ लिया, "आप किधर जा रहे हैं?"

"शहर, अमीनाबाद पार्क की ओर। गुरु ग्रन्थ साहब की सवारी देखने का विचार है।"

लड़की हँस पड़ी और बोली, "अच्छा, बाई-बाई।" वह हज़रतगंज को जाने के लिए एक रिक्शा वाले से बात करने लगी।

"नीलादेवी, हँसी क्यों हैं?"

"कुछ नहीं, आप जाइए।" इतना कह वह मुस्कराई और रिक्शे वाले से बोली, "क्या लोगे?"

"छः आने सरकार!"

"चलो।" यह कह वह लपककर रिक्शे पर चढ़ गई। हरभजनसिंह अपनी बाइसिकल पर सवार हो रिक्शे के साथ-साथ जाता हुआ पूछने लगा, "कुछ बात तो है, नीलादेवी!"

नीला हँसी और कहने लगी, "मुझे उस दिन की बात याद आ गई थी, जब मैं हनुमानजी को प्रसाद चढ़ाने जा रही थी और आपने देख लिया था। आपने कहा था, 'एक डॉक्टर को मिट्टी के लोंदे पर पुष्प-पत्र चढ़ाते हुए लज्जा आनी चाहिए।' "

"परन्तु आज वह बात क्यों स्मरण आ गई है?"

"सवारी जो देखने जा रहे हैं आप?"

"तो क्या यह भी लज्जा की बात है?"

"पढ़े-लिखे व्यक्ति को तो स्वयं समझ जाना चाहिए।"

हरभजनसिंह हँस पड़ा। रिक्शा चलता गया और हरभजनसिंह की बाइसिकल उसके साथ-साथ थी। कुछ काल तक चुप रहने के पश्चात् हरभजनसिंह ने पूछा, "क्या समझ की बातें पुरुषों के लिए ही हैं और स्त्रियों ने इनसे फारख़ती ली हुई है?"

"आप स्त्रियों की चिन्ता क्यों किया करते हैं? वे तो अक्ल से फारख़ती लेती हैं और उस पर दखल भी कर लेती हैं। पुरुषों में विचारों की लचक नहीं होती। जब एक बार वह अक्ल को फारख़ती देते हैं तो फिर अक्ल की बात कर ही नहीं सकते।"

"यही तो बात है कि वे कभी अक्ल से सम्बन्ध-विच्छेद करते ही नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कदाचित् उनका कभी अक्ल में दखल हुआ ही नहीं।"

इसके पश्चात् फिर दोनों चुप हो गए। रिक्शा चलता गया। हरभजनसिंह बाइसिकल पर साथ-साथ था। कुछ देर तक विचारकर उसने कहा, "नीलादेवी, आज क्या है, जो जली-कटी सुना रही हैं ?"

"कभी ज़ुबान खराब होने पर फीकी वस्तु भी मिर्च की भाँति लगने लगती है। कुछ ऐसे ही मेरी साधारण-सी बात का आपको अनुभव हो रहा है।

"देखिए, आपने कहा था कि मिट्टी के लोंदे पर फूल चढ़ाना एक लज्जा की बात है। मैंने आपसे एक पुस्तक की सवारी पर पुष्प चढ़ाने की बात कही तो आपको मेरी अक्ल से फारख़ती प्रतीत होने लगी। मैंने कहा कि पुरुषों का तो अक्ल में दखल होता ही नहीं तो यह आपको जली-कटी प्रतीत होने लगी। ऐसी अवस्था में बिगड़ी ज़ुबान के स्वाद की ही उपमा तो दी जा सकती है।"

"इसका अर्थ यह हुआ कि आप तो बहुत ही मधुर भाषण कर रही थीं, परन्तु मेरे मन की अवस्था ही बिगड़ी है, जिससे यह मुझको कड़वा प्रतीत हो रहा है।"

"कुछ ऐसा ही समझ में आ रहा है।"

हरभजनसिंह को इस समय तो समझ नहीं आया कि नीला क्या कह रही है। वह क्रोधवश चुपचाप बाइसिकल चलाता गया। गोमती रोड से केसरबाग को रास्ता घूमा तो मोड़ पर नीला ने रिक्शा खड़ा करा लिया। नीला उतर पड़ी। हरभजनसिंह को अपने विचारों की धुन में पता नहीं चला कि नीला पीछे रह गई है। कुछ दूर जाने पर उसको विदित हुआ कि रिक्शा उसके साथ नहीं है। उसने घूमकर देखा, नीला रिक्शे से उतर रिक्शेवाले को पैसे दे रही थी। उसने बाइसिकल घुमा दी और नीला के पास पहुँच, बाइसिकल पर बैठे-बैठे, एक पाँव ज़मीन से लगाकर खड़े हो, पूछा, "यहाँ कहाँ जा रही हैं ?"

"माधुरी को तो आप जानते हैं, उससे मिलने जा रही हूँ।"

"उससे अथवा उसके भाई से ?"

"भाई आज यहाँ नहीं हैं। वे कलकत्ता गए हैं।"

"ओह ! तो उसके विषय में जानने जा रही हैं ?"

"उनके विषय में तो मुझको पता है। माधुरी कल बीमार थी, उसके विषय में जानने आई हूँ।"

हरभजनसिंह के कटाक्ष व्यर्थ गए। वे न तो नीला को क्रुद्ध कर सके, न ही उनसे उसको घबराहट हुई। उसने साधारण रूप में उत्तर दिए और 'बाई-बाई' कहकर मकान में चली गई। हरभजनसिंह उसको जाते देखता रहा।

: २ :

नीलमणि डॉक्टर राधाकृष्ण सक्सेना की लड़की थी। डॉक्टर सक्सेना और प्रभुदयाल, माधुरी के पिता, मित्र थे। प्रभुदयाल बैरिस्टर थे। डॉक्टर साहब और बैरिस्टर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहब का परस्पर आना-जाना था। इससे लड़कियों का भी आना-जाना बना था। राधाकृष्ण का मकान तो अमीनाबाद पार्क के किनारे पर था और प्रभुदयाल का केसरबाग के चौराहे पर। डॉक्टर सक्सेना तो कई पीढ़ियों से लखनऊ में रहते थे, परन्तु प्रभुदयाल पंजाब जिला लुधियाना के रहने वाले थे। प्रभुदयाल के पिता ने लखनऊ में ठेकेदारी का काम आरम्भ किया था और उससे लाखों रुपए कमाए थे। उसी कमाई के आश्रय प्रभुदयाल विलायत से बैरिस्टर बन आया था।

प्रभुदयाल की अपनी प्रैक्टिस भी अच्छी-खासी थी और जीवन अति सुलभ हो रहा था। पंजाबी होने से सिख मत की छाप लिये हुए था। साथ ही विलायत में पाँच वर्ष तक रह आने से विचार-स्वतंत्रता उसके जीवन का एक अंग बन चुकी थी।

श्री गुरु नानकजी के जन्मदिन के अवसर पर, गुरुद्वारा के लिए प्रभुदयाल ने एक हज़ार रुपया दान लिखाया था।

आज जब गुरु ग्रन्थ साहब की सवारी केसरबाग के चौराहे पर आई, तो प्रभुदयाल और उसके परिवार के लोग अपने मकान के छज्जे पर देखने आ खड़े हुए। प्रभुदयाल सिर से नंगा था। उसकी लड़की माधुरी और उसकी सहेली नीलमणि के सिर पर से कपड़ा उतरा हुआ था।

सवारी के साथ प्रायः सिख जनता ही थी। पहले कुछ मण्डलियाँ भजन गाती हुई जा रही थीं। दो-तीन मण्डलियाँ तो केवल स्त्रियों की ही थीं।

अब गुरु ग्रन्थ साहब की सवारी प्रभुदयाल के मकान के नीचे से गुज़री तो प्रभुदयाल, उसकी लड़कियाँ तथा समीप खड़े अन्य लोग, जिनमें बैरिस्टर साहब की माँ भी थी, श्री ग्रन्थ साहब पर पुष्प-वर्षा करने लगे। प्रभुदयाल ने पवित्र पुस्तक पर दो-तीन मुट्ठी-भर पुष्प-पंखुड़ियाँ बरसाईं।

ग्रन्थ साहब के पीछे बैठे पुरुष ने, जो उस पर चँवर झुला रहा था, इनको सिर नंगा देख कहा, "सिर ढाँप लीजिए, सिर ढाँप लीजिए।"

प्रभुदयाल विस्मय में उसकी ओर देखने लगा। उस व्यक्ति ने कहा, "सिर ढाँप लीजिए।"

प्रभुदयाल अभी भी इसका अर्थ नहीं समझा। उसने फूलों के पटार में से मुट्ठी भरकर पुष्प फिर पवित्र ग्रन्थ साहब की ओर फेंके। इस समय सवारी के साथ जाने वाले लोगों ने ग्रन्थ साहब के पीछे बैठे आदमी की आवाज़ सुन ली और सब-के-सब प्रभुदयाल और लड़कियों को "सिर ढाँपो, सिर ढाँपो" कहने लगे।

प्रभुदयाल, जो इंग्लैण्ड में व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का मज़ा चख चुका था, इस प्रकार के व्यवहार से चकित रह गया। उसने हाथ के संकेत से लोगों को कहा कि वे चलते जाएँ। ग्रन्थ साहब एक ऊँचे तख्तपोश पर चौकी रखकर और उस पर बरागन लगाकर रखा था। इस कारण ग्रन्थ साहब छज्जे की ऊँचाई पर ही था। ग्रन्थ साहब के पीछे बैठे पुरुष ने प्रभुदयाल के हाथ से संकेत करने पर कि सवारी चलती जाय, श्री दरबार साहब का अपमान समझा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर उसने माथे पर त्योरी चढ़ाकर कहा, "तुम पीछे हट जाओ।"

प्रभुदयाल हँस पड़ा। वह मन में विचार करता था कि वह अपने मकान के छज्जे में खड़ा है, इस कारण उसको आज्ञा देना न केवल अनुचित है, प्रत्युत उद्दण्डता भी है। इस पर वह कहने वाला था कि वे लोग अपना काम करें और उसकी ओर ध्यान न दें, परन्तु इस समय नीचे से किसी ने पत्थर उठाकर उसकी ओर दे मारा। पत्थर उसके कान को छूता हुआ छज्जे की छत से टकराकर पीछे खड़े हुओं में जा गिरा। प्रभुदयाल को इससे क्रोध चढ़ आया और बोला, "सवारी चलाओ।"

इस पर तो पत्थरों की बौछार होने लगी। प्रभुदयाल का माथा फटा। नीलमणि की कनपटी पर गहरा घाव हो गया। माधुरी को भी चोट आई और कई अन्य वहाँ खड़े हुओं को भी चोटें आईं। प्रभुदयाल भागा हुआ भीतर गया और अपना पिस्तौल उठा लाया। इस समय तक छज्जों में खड़े सब लोग पीछे के कमरे में हट आए थे। प्रभुदयाल को पिस्तौल लेकर छज्जे की ओर जाते देख नीलमणि ने उसका मार्ग रोक लिया। उसने कहा, "काका, नहीं, यह ठीक नहीं। यहीं ठहरिए और सवारी निकल जाने दीजिए।"

नीचे लोग जोश से भरे हुए मकान को आग लगा देने की आवाज़ें कसने लगे थे। इस समय हरभजनसिंह, जो सवारी के साथ-साथ था, लपककर ट्रक की छत पर चढ़ गया और कहने लगा, "खालसा वीरो! गुरु महाराज का अपमान करने वाले सब भाग गए हैं। पंथ की विजय हुई है। अब और झगड़ा करने की आवश्यकता नहीं। इस कारण मेरा निवेदन है कि चलना चाहिए।"

हरभजनसिंह नीला को प्रभुदयाल के मकान पर छोड़ बाइसिकल से अमीनाबाद पार्क की ओर सवारी के साथ होने के लिए चल पड़ा था। उसने बाइसिकल एक परिचित की दुकान पर रखी और स्वयं सवारी में सम्मिलित हो गया। वह उस ट्रक के, जिस पर दरबार साहब रखा था, साथ-साथ चल रहा था। उसका पिता ग्रन्थ साहब की सेवा के लिए ग्रन्थ साहब पर चँवर कर रहा था।

हरभजनसिंह ने पूर्ण झगड़ा, जो प्रभुदयाल के साथ हुआ था, देखा था। जब सवारी के लोग सीमा से बाहर हो मकान को आग लगाने की धमकी देने लगे तो उसने ट्रक पर चढ़कर, संगत को शान्त करने का यत्न किया। परन्तु किसी ने यह समझा कि हरभजनसिंह दरबार साहब का अपमान करने के लिए ट्रक पर चढ़ गया है। इससे उसको इतना क्रोध चढ़ आया कि वह हरभजनसिंह का कथन सुन और समझ नहीं सका। उस आदमी में इतना धैर्य भी नहीं रहा था कि वह देखे कि ट्रक पर चढ़ने वाला एक सिख युवक ही है। वह हरभजनसिंह के पीछे ट्रक के मडगार्ड पर चढ़ गया और उसने हरभजनसिंह का पाँव पकड़कर उसे नीचे घसीट लिया।

हरभजनसिंह को स्वप्न में भी यह विचार नहीं आ सकता था कि उससे यह आशा की जाएगी कि वह दरबार साहब का अपमान कर सकता है। वह बेख़बर खड़ा था और जब उसका पाँव घसीटा गया तो वह लुढ़ककर नीचे गिर गया। वह गिरते-गिरते बाँह के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बल भूमि पर पड़ा और उसकी बाँह की मोच निकल गई। गिरते समय उसकी पगड़ी और केश खुल गए।

हरभजनसिंह के पिता ने यह कांड देखा तो डाँटकर लोगों को कहा, "यह क्या कर रहे हो? एक गुरु के प्यारे को किस लिए धकेला है?"

बहुत कठिनाई से लोग शान्त हुए और सवारी आगे चली। यह शान्ति स्थापित करने में पुलिस ने कम-से-कम भाग लिया।

हरभजनसिंह अपनी पगड़ी ले जलूस से बाहर निकल आया। बाँह में मोच आने के कारण वह पगड़ी बाँध नहीं सका। अतएव वह पगड़ी बग़ल में दबाए, अपने मित्र की दुकान पर, जहाँ उसने अपनी बाइसिकल रखी थी, चला आया। वहाँ उसने अपने मित्र से रूमाल लेकर सिर पर बाँध लिया और ताँगे पर सवार हो, अपने मकान कैण्टोनमैण्ट रोड पर चला गया।

: ३ :

प्रभुदयाल को कुछ ऐसा अनुभव हुआ, मानो वह सोते से जाग पड़ा है। अपने पिता के विचारों के कारण और घर के संस्कारों के कारण, वह अपने को सहजधारी सिख मानता था। उसके पिता का तो देहान्त हो चुका था, परन्तु उसकी वृद्ध माता अभी जीवित थी और घर में गुरु ग्रन्थ साहब की स्थापना थी। वृद्ध माता तो अब ग्रन्थ साहब पढ़ नहीं सकती थी। इस कारण कभी-कभी एक ग्रन्थी गुरुद्वारे से आया करता था, जो इसमें से पाठ किया करता था। उस समय प्रभुदयाल की माता, प्रभुदयाल स्वयं और कभी उसके बच्चे भी बैठकर सुना करते थे। प्रभुदयाल यहाँ तो प्रायः नंगे सिर ही बैठा करता था। कभी सिर पर टोप रखकर भी बैठता था। इसमें कभी आदर-अनादर की बात उसके मन में नहीं आई थी। वह गुरु ग्रन्थ साहब की वाणी को पसन्द करता था। वह यह भी मानता था कि गुरु नानक देव परमात्मा के परम भक्त और उस पर अगाध श्रद्धा रखने वाले थे। इसी कारण उनकी वाणी में रस और प्रभाव है।

वह जब सुनता,

'सा पुरुख निरंजन हरि पुरुख निरंजन
हरि अगमा अगम अपारा।
सभी ध्यावें सभी ध्यावें तुद जी।
हरि सच्चे सिरजन हारा।
सभी जिय तुम्हारे जी तू जिओं का दातारा।
हरि ध्यावहु सन्तौ जी सभी दुख सारण हारा।
हरि आपे ठाकुर हरि आपे सेवक जी
किआ नानक जात विचारा।'

इस प्रकार पद के पश्चात् पद श्री गुरु ग्रन्थ साहब में से जब प्रभुदयाल सुना करता था, तो जहाँ उसके मन में श्री गुरु नानकजी महाराज के लिए श्रद्धा और भक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उमड़ती थी, वहाँ वह स्वयं परमात्मा पर अगाध विश्वास से भर जाता था।

परन्तु इस समय वह गुरु ग्रन्थ साहब में लिखे पर विचार नहीं कर रहा था। उसमें लिखे पर उसके विचारों में अन्तर नहीं आया था। उसके मन में विचार उठ रहे थे गुरु ग्रन्थ साहब के ठेकेदारों पर। केशधारी सिख समझते थे कि वे ही हैं, जो गुरु नानक के विचारों की रक्षा और आदर करने वाले हैं।

उसने सरक्युलर रोड पर गुरुद्वारे के लिए एक सहस्र रुपया लिखवाया था। आज उसको चेतना हुई कि वह यह दान गुरु महाराज के पंथ के प्रसार के लिए नहीं, वास्तव में उन लोगों की प्रभुता बढ़ाने के लिए दे रहा है, जो मनुष्य के मन की भावनाओं से अधिक मनुष्य की वेशभूषा पर ध्यान देते हैं और जो किसी दूसरे के मन के भावों का आदर करना नहीं जानते। उसने मन में निश्चय कर लिया कि अब वह गुरुद्वारे के लिए दान किया धन नहीं देगा। इस पर उसके मन में विचार आया कि यहाँ न देकर इस रुपए को वह क्या करेगा? यूँ तो वह अन्य संस्थाओं को भी दान दिया करता था। इस कारण यह धन किसी अन्य संस्था को देने का विचार भी उसके मन में उत्पन्न हुआ, परन्तु यह विचार टिक नहीं सका। वह यह धन गुरु महाराज के चरणों में अर्पण कर चुका था, अतएव वह इसको किसी ऐसी संस्था को, जो गुरु महाराज के कार्य को पूर्ण न करती हो, देने को तैयार नहीं हुआ।

अगले दिन जब वह कोर्ट में माथे पर पट्टी बाँधकर गया तो वहाँ यह बात विख्यात हो गई कि गुरु ग्रन्थ साहब की सवारी के सामने नंगे सिर खड़ा होने के कारण प्रभुदयाल पीटा गया है। वह अपने मकान की ऊपर की मंज़िल पर होने के कारण बच गया है, नहीं तो जान से ही मार दिया जाता।

प्रभुदयाल के मित्रों ने उसके साथ सहानुभूति प्रकट की और सुझाव उपस्थित किया कि वह गुरुद्वारा कमेटी पर बलवा करने का दावा कर दे, परन्तु प्रभुदयाल नहीं माना। एक सिख ऐडवोकेट सरदार गुरुवचनसिंह ने यह समझा कि प्रभुदयाल अपने किए पर पश्चात्ताप कर रहा है। इस कारण वह उसके पास आया और कहने लगा—"बाबू प्रभुदयाल, यह आपने किया क्यों?"

"क्या किया, क्यों?" प्रभुदयाल ने पूछा।

"पंथ से नियत किए विधि-विधान की अवहेलना।"

"मुझको विदित नहीं था कि सिख पंथ और इस्लाम पंथ में कोई अन्तर नहीं है। वे भी मस्जिद से भी दूर किसी मन्दिर में कीर्तन होता सुन नहीं सकते।"

"पर आप तो गुरु महाराज के सामने ही खड़े थे।"

"और उन पर पुष्प-वर्षा कर रहा था। इस पर भी अपने घर के अन्दर था। गुरु ग्रन्थ साहब एक शाराए-आम पर था। भला यह कैसे हो सकता है कि पंथ सब संसार के आदमियों पर अपने विधि-विधान लागू कर दे।"

"आपकी पुष्प-वर्षा से सबके मन में भ्रम हो गया था कि आप भी गुरु के सिख हैं, इसी से वे आपसे आशा करते थे कि आप पंथ के विधि-विधान मानेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, मैंने इस विषय में एक भूल की है। मेरे व्यवहार से यह भ्रम हो सकता था कि मैं उन जैसा ही रूढ़िवादी सिख हूँ। इसी भूल के कारण मैंने कल वाली घटना की सूचना तक थाने में नहीं दी। सरदार गुरुवचनसिंह, अब मैं पूर्ण सावधानी से काम लिया करूँगा। कभी इस प्रकार का भ्रम उत्पन्न होने का अवसर ही नहीं दूँगा।"

"आप सिख तो हैं नहीं। तो फिर सिख प्रकट करने की आवश्यकता ही क्या है?"

"हाँ, आप ठीक कहते हैं। गुरु महाराज मुझको प्रिय हैं और मैं गुरु महाराज का प्रिय हूँ अथवा नहीं, भगवान् जानते हैं। परन्तु मैं सिख, जैसा कल प्रकट हुआ है, नहीं हूँ।"

प्रभुदयाल ने वैसा ही किया। जब गुरुद्वारे के लोग उससे वचन दिया दान का धन लेने आए तो उसने स्पष्ट इन्कार कर दिया। उसने पूर्ण घटना का वर्णन कर कह दिया कि यदि इस प्रकार के लोग बनाना गुरुद्वारों का काम है, तो वह इसके लिए एक कौड़ी भी नहीं दे सकता।

सरदार वढ़ियामसिंह इस डैपुटेशन में एक था। वह पूर्ण घटना से परिचित था। उसने कुछ लज्जा अनुभव करते हुए कहा, "जनसाधारण के मनोद्‌गारों का आदर करना अत्यावश्यक है। यह बात सिख जनता में मानी जाती है कि दरबार साहब के सामने सिर नंगा कर खड़ा होना दरबार साहब का अपमान करना है।"

"देखिए सरदार बहादुर! मैं अपने घर में खड़ा था। दरबार साहब की सवारी शाराए-आम पर जा रही थी। आपका मुझको अपने घर में रहते हुए, यह आदेश देना अनधिकार चेष्टा थी। मुझको अब क्षमा कीजिए। मैं जानता हूँ कि मेरा एक हज़ार रुपया आपके सामने कुछ भी गणना नहीं रखता। इससे कई गुना अधिक आप अकेले दे सकते हैं। मैं तो यह इन्कार अपनी आत्मा की प्रेरणा के अधीन कर रहा हूँ। मैं इस प्रकार की असहिष्णुता और असहनशीलता उत्पन्न करने में एक पाई भी देना नहीं चाहता।"

गुरुद्वारे का डैपुटेशन जब जाने लगा, तो उसमें आए हुओं की दृष्टि घर के एक कमरे में रखे गुरु ग्रन्थ साहब पर पड़ गई। उसको देखकर एक सज्जन प्रभुदयाल से कहने लगे, "तो क्या आप दरबार साहब को लपेट देंगे?"

"मैं अपने घर में क्या करूँगा और क्या नहीं करूँगा, यह आपके जानने की बातें नहीं हैं।"

"मेरे कहने का प्रयोजन यह है कि यदि आपने इनको उठा देना है तो हम उठाकर ले जाएँ और इसकी स्थापना किसी अन्य स्थान पर कर दें।"

"बाज़ार में ये मिलते हैं। जब किसी स्थान पर स्थापना करनी होगी तो आप ले सकते हैं।"

इस पर सरदार वढ़ियामसिंह ने कहा, "आइए ख़ालसाजी! ये वकील हैं। इनसे बहस में हम जीत नहीं सकेंगे।"

इस पर सब हँसने लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रभुदयाल के इस आचरण पर प्रभुदयाल की माँ को बहुत दुःख हुआ। उसने उसी रात पूछा, "प्रभु, तुमने गुरुद्वारे को दिया दान वापस ले लिया है क्या?"

"नहीं माँ! दान वापस नहीं लिया। हाँ, गुरुद्वारे को नहीं दे रहा। जहाँ मनुष्य का मान नहीं होता और उस पुस्तक का मान होता है, जो बाज़ार में बीस रुपए की बिकती है, वहाँ दान देकर क्या करूँगा?"

"पर बेटा, इसमें बहुत-सी अच्छी बातें भी तो लिखी हैं।"

"हाँ, माँ! लिखा है—

'सभी जिय तुम्हारे जी, तू जिओं का दातारा।'

"परन्तु गुरुद्वारे में तो यह बताया जाता है कि जो केशधारी नहीं, वह नीच और जाहिल है। यहाँ यह सिखाया जाता है कि दूसरों के घरों में घुसकर उनको बलपूर्वक अपनी बात मानने पर विवश किया जाय। माँ! मैं गुरु साहब की बात तो मानता हूँ, परन्तु इन सिखों की नहीं, जिन्होंने उस दिन मेरा सिर फोड़ दिया था।"

माँ अपने पुत्र के सिर पर बँधी पट्टी देख चुप कर रही। साथ ही उसको एक और घटना का स्मरण हो आया। एक दिन वह केवल इस कारण कि कच्छा और कड़ा नहीं पहने हुए है, गुरुद्वारे के लंगर से उठा दी गई थी। इस घटना के स्मरण आ जाने से वह अपने पुत्र की बात को समझने लगी थी।

:४:

गुरु नानक के जन्मदिन से अगले दिन, नीलमणि कॉलेज गई तो उसके सिर पर पट्टी बँधी थी। प्रोफेसर और अन्य सहपाठियों ने पूछा, तो उसने बताया, "यह बुद्धिहीनता का आघात है।"

हरभजनसिंह ने तो यह चोट लगती देखी थी, परन्तु उसने अपने इस ज्ञान का उल्लेख अपने सहपाठियों से नहीं किया। उसने नीला के उत्तर को सुना, परन्तु उस पर टीका-टिप्पणी नहीं की। नीलमणि ने भी उत्तर में साधारण सिद्धान्तात्मक बात ही कही थी और घटना-विशेष, जिसमें यह चोट लगी थी, नहीं बताई।

पढ़ाई के उपरान्त वह अस्पताल में अपनी ड्यूटी पर चली गई। हरभजनसिंह की ड्यूटी रात के समय की थी। इस कारण वह नीलमणि से सहानुभूति प्रकट नहीं कर सका। वह वहाँ से घर लौट आया। नीलमणि के सिखों के जलूस का नाम तक न लेना उसके लिए विचार का विषय बन गया।

अगले दिन दोनों फिर क्लास में मिले। साधारण अभिवादन हुआ और बस। आज हरभजनसिंह से नहीं रहा गया। उसने पढ़ाई के उपरान्त नीलमणि के साथ-साथ अस्पताल की ओर जाते हुए कहा, "मुझको अत्यन्त दुःख है कि उस दिन कुछ लोगों ने ऐसा व्यवहार किया।"

"किसने कैसा व्यवहार किया है?"

"उस दिन की सवारी की बात कर रहा हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो आप भी उनमें थे ?"

"हाँ, परन्तु मैंने तो लोगों को शान्त करने का ही यत्न किया था। मैं नहीं होता तो कदाचित् वे मकान को आग लगा देते।"

"तब तो कोई नई बात न होती। नई बात तो यह हुई है कि आपके समझाने पर सब समझ गए थे। इसमें उनकी बुद्धिमत्ता की तो कोई बात प्रतीत नहीं हुई। हाँ, आपकी चतुराई का परिचय तो अवश्य मिला है।"

हरभजनसिंह प्रसन्न था। यह कहलाने के लिए ही कि वह बहुत चतुर आदमी है, उसने यह बात आरम्भ की थी। इस पर उसने वह सब-कुछ बता दिया, जो कहकर उसने लोगों को टाला था। इस पर नीला मुस्कराई और बोली, "तो वे आप थे, जिसको टाँग पकड़कर लोगों ने नीचे गिरा दिया था ?"

यह सुन हरभजनसिंह को बहुत लज्जा लगी। इस पर भी उसने कहा, "मैं अपने गिराए जाने की परवाह नहीं करता। मेरा प्रयोजन, सवारी को वहाँ से टालकर आगे ले जाने का, सिद्ध हो गया था।"

"परन्तु देखिए न, आप पर जो आक्रमण हुआ, उस बात का विचार न भी करें, तो भी यह तो विचार की बात है ही कि आपको दरबार साहब पर पुष्प-वर्षा करने वालों को भाग गया बताना पड़ा और उनको खालसा वीर कहकर सम्बोधन करना पड़ा, जिन्होंने दरबार साहब पर पुष्प-वर्षा करने वालों पर पत्थर बरसाए थे। दोनों बातें ग़लत थीं। न तो हम भागकर गए थे और न ही वे वीर थे, जो निहत्थों पर पत्थर बरसाते थे।"

"आपके घाव का क्या हाल है ?" हरभजनसिंह ने बात बदल दी।

"डॉक्टर का विचार है कि घाव भरने में एक सप्ताह तो लग ही जायगा।"

इस समय वे अस्पताल में पहुँच गए थे। नीलमणि ने अपनी हाज़िरी लिखवाई और बीमारों के देखने में लग गई।

हरभजनसिंह लौट पड़ा। नीलमणि के कथन से उसके मस्तिष्क को भारी चोट पहुँची थी। यूँ तो सवारी की घटना को देखने के समय से ही वह इसमें बहुत-कुछ अस्वाभाविकता, अयुक्तिसंगतपन और हीन-भावना की उपस्थिति अनुभव करने लगा था, उसने उन मूर्खों को वीर कहकर सम्बोधन किया था और बिना जाने कि मकान में क्या हो रहा है, कह दिया था कि मकान वाले भाग गए हैं।

अगले रविवार को नियमानुसार गुरुद्वारे में संगत एकत्रित हुई। ग्रंथी ने दरबार साहब में से पाठ किया। इस समय हरभजनसिंह, जो इन दिनों गुरुद्वारे नहीं जाया करता था, यहाँ जा पहुँचा। वह सवारी के दिन हुई घटना के विषय में वहाँ के विचार जानना चाहता था। जब वह गुरुद्वारे में पहुँचा तो ग्रन्थी पाठ कर रहा था—

"मैं बन्दा बेखरीदू सचु साहिबू मेरा
जिउ पिंउ सभु तिस दा सभु कुछ है तेरा।
माणे न माणे तूधजी मेरा भरवासा
बिन साचे अन टेक है जो जाणहु काचा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेरा हुकम अपार है कोई अन्त न पाए
जिस गुरु पूर भेदसी सो चले रजाए।
चतुराई सियाणया कितै काम न आइए
तुठा साहिबू जो देवे सोई सुख पाइए।"

इस पाठ में भगवान् पर पूर्ण भरोसा और उसके अर्पण सब-कुछ करने की बात थी। हरभजनसिंह विचार करता था कि इस वाणी में तो न किसी के प्रति वैर-भाव है, न ही किसी का विरोध। जब यह है तो इसकी रक्षा के लिए इतना झगड़ा क्यों किया जा रहा है ?

वह ग्रन्थी पाठ कर रहा था और संगत चुपचाप तथा लीन चित्त हो सुन रही थी। हरभजनसिंह इसी संगत के उद्विग्न मन और अनियमित चलन को जलूस में देख चुका था। इससे उसको समझ नहीं आ रहा था कि इतनी मधुर और भक्ति-भावनापूर्ण वाणी के सुनने वाले उसी दिन वाला व्यवहार भी रख सकते हैं? जिस आदमी ने उसकी टाँग पकड़कर उसे नीचे गिराया था, वह संगत में सबसे आगे बैठा भक्ति-भावना से पाठ सुन रहा था।

परन्तु उसका विस्मय अधिक काल तक स्थिर नहीं रह सका। जब पाठ समाप्त हुआ और अरदास पढ़ ली गई तो एक गुरु का प्यारा उठा और हाथ जोड़कर संगत के सम्मुख विनती करने लगा। वह यहाँ की गुरुद्वारा कमेटी का मन्त्री था। वह कहने लगा, "सतगुरु कर्तार की अपार कृपा से उस दिन का जलूस हर प्रकार से सफल हुआ। गुरु की प्यारी संगतों ने बहुत ही जोश और साहस के साथ अपने कार्य को निभाया। इस अवसर पर श्री गुरुद्वारा में कुछ कमरे और बनवाने के लिए पन्द्रह हज़ार रुपया एकत्रित हुआ है। गुरु के प्यारे सरदार वढ़ियामसिंहजी ने इस गुरु के कार्य के लिए दस हज़ार रुपया दिया है। एक सहजधारी बैरिस्टर प्रभुदयाल की माताजी ने एक हज़ार लिखाया था, परन्तु उस दिन बाबासाहब के सम्मुख उसने नंगे सिर खड़े होकर दरबार साहब का अपमान किया था। संगत का उनसे झगड़ा हो गया और उन्होंने वह दान किया धन देने से इन्कार कर दिया है। इस प्रकार पन्द्रह हज़ार में एक हज़ार की कमी हो गई है। मुझको पूर्ण आशा है कि संगत इस कमी को पूरा कर देगी।

"सहजधारी जनता पर कुछ बहुत भारी आशा नहीं की जा सकती। वे सहजधारी होने से दो नौकाओं में पाँव रखे हुए हैं। जब उनको लाभ प्रतीत होता है तो वे गुरु की संगत में आ बैठते हैं और मतलब होने पर हिन्दू देवी-देवताओं के सामने माथा रगड़ने लगते हैं।

"गुरु की प्यारी, प्रभदुयाल की माता के हृदय पर, अपने पुत्र के हठ से क्या बीतती होगी, अनुमान लगाना कठिन है। इसमें हम क्या कर सकते हैं।

"हमें अपना काम करना चाहिए। एक सहस्र रुपया, जो इस 'सिर-घिसिए' के कारण गुरुद्वारा को हानि हुई है, उसकी पूर्ति करनी चाहिए।"

मन्त्री गुरुद्वारा कमेटी के कथन के पश्चात् एक सेवादार खड़ा हो गया और हाथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोड़कर निवेदन करने लगा, "गुरु के प्यारो ! चन्दा तो एकत्रित हो जायगा। मैं इसमें एक चवन्नी देता हूँ।" इतना कहकर उस सेवादार ने अपनी जेब से एक चवन्नी निकालकर दरबार के सामने फेंक दी और फिर कहने लगा, "पर मैं तो एक और निवेदन करने के लिए उपस्थित हुआ हूँ। मेरा मत है कि प्रभुदयाल के घर के सामने धरना दिया जाय और यह माँग उपस्थित की जाय कि वह अपनी माता देवी को पन्थ सेवा करने के लिए एक हज़ार रुपया देने से न रोके।"

सेवादार का यह प्रस्ताव सुनकर संगत में जोश भर आया और अन्य सेवादार ने जयकारा बुला दिया, "जो बोले सो निहाल।"

संगत ने उत्तर दिया, "सत श्री अकाल।"

इस पर पहला सेवादार फिर कहने लगा, "मैं अपनी सेवा इन धरना देने वालों में देता हूँ। यदि आवश्यकता पड़ी तो मैं भूख हड़ताल भी कर दूँगा।"

इस पर फिर जयकारा बुलाया जाने लगा। बिना किसी अधिकारी के इस प्रस्ताव का समर्थन किए, लोग उठ-उठकर धरना देने वालों में अपनी सेवाएँ देने लगे। सेवादार, जिसने यह प्रस्ताव किया था, एक कागज़ लेकर नाम लिखने लगा।

इस समय सरदार वढ़ियामसिंह उठा और लोगों को शान्त करने के लिए कहने लगा, "खालसा वीरो तथा गुरु के प्यारो ! बैरिस्टर प्रभुदयाल की माता ने यह दान लिखाया था अथवा प्रभुदयाल ने स्वयं लिखाया था, कहना कठिन है। कल मन्त्रीजी के साथ मैं भी बैरिस्टर साहब से दान की रकम लेने गया था। उनसे जो बातें हुई थीं, उनसे नहीं कहा जा सकता कि यह दान उनकी माँ ने लिखाया था। इसके अतिरिक्त यह भी नहीं कहा जा सकता कि उनकी माता ये दान अब देना भी चाहेंगी अथवा नहीं। इस कारण··· ।"

इस समय वही सेवादार, जिसने धरना देने का प्रस्ताव किया था, वढ़ियामसिंह की बात को बीच में ही रोककर कहने लगा, "पहले धरना में नाम लिखाने वालों के नाम लिख लेने दीजिए। पीछे गुरुद्वारा कमेटी विचार कर लेगी। यदि उसकी सम्मति में धरना देना ही चाहिए तो फिर स्वयंसेवकों को आज्ञा दी जा सकती है।

"मेरा कहना है, कि नाम लिखाए जाएँ।"

इस पर नाम फिर आने लगे। सवा सौ से ऊपर नाम लिखाए गए। नाम लिखाने वालों में महिलाएँ भी थीं। जब सूची बन गई तभी वढ़ियामसिंह अपना वक्तव्य जारी कर सका। उसने कहा, "मेरी सम्मति है कि गुरुद्वारे के लिए धन तो हम आज ही एकत्रित कर लें। धरने की बात कमेटी में विचार कर लेंगे। मेरा संगत के सम्मुख निवेदन है कि एक हज़ार यहाँ एकत्रित कर दिया जाय। यह बहुत आवश्यक बात है।"

इस पर लोग फिर चन्दा देने लगे। कोई दुअन्नी, कोई चवन्नी और कोई-कोई एक रुपया भी देता था। सब धन, जो वहाँ एकत्रित हुआ गिन डाला गया। ये साठ रुपए पन्द्रह आने थे।

इस पर वढ़ियामसिंह ने कहा, "मुझको गुरुभक्त संगत से इतने कम दान की आशा नहीं थी। आप लोग धरने की बात कहते हैं। उसके लिए भी तो धन की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यकता पड़ेगी। पचास-साठ रुपए से न तो गुरुद्वारा बन सकता है और न ही धरने की योजना चल सकती है।"

वढ़ियामसिंह ने इस कोष में सौ रुपया दिया और कहा कि जितना संगत और देगी उतना ही वह अकेला देगा।

इस पर लोगों ने और देना आरम्भ कर दिया। बहुत यत्न करने पर धनराशि एक सौ रुपए से अधिक नहीं हुई।

हरभजनसिंह ने विचार किया कि सवा सौ लोगों ने धरना देने के लिए नाम दिया है। धरना देने में कितने ही दिन व्यर्थ जाने का भय है और यदि ये लोग अपनी एक-एक दिन की भी कमाई दे देते, तो एक सहस्र रुपया तो सहज में ही हो जाता। परन्तु जितना जोश विरोध करने के लिए दिखाया गया है, उतना पैसा देने में नहीं।

इस समय प्रसाद बाँटा गया, पहले पाँच प्यारों को और फिर अन्य संगत को।

हरभजनसिंह अपने पिता के साथ घर आया। हरभजनसिंह की बहन अमृतकौर भी साथ थी, सेन्ट टॉमस स्कूल में पढ़ती थी। वह इस सब उत्तेजना का, जो गुरुद्वारे में दिखाई गई थी, अभिप्राय नहीं समझ सकी थी।

हरभजनसिंह ने पूछा, "यह सेवादार जो धरना देने की बात करता था, बहुत ही मूर्ख प्रतीत होता है। क्या काम करता है यह ?"

"कुछ काम नहीं करता। संगत के जूते सँभालता है और गुरुद्वारे में रोटी खाता है। कपड़े कभी मैं और कभी कोई और ले देता है। यह चवन्नी, जो इसने दी थी, वह कमेटी के मन्त्री ने दे रखी थी। यह इस कारण थी कि ग़रीब के इस दान को देखकर अन्य लोगों को भी देने में उत्साह उत्पन्न हो। रही धरने की बात, यह तो वह स्वयं ही कहने लगा था।"

"पर पिताजी, यह धरने की बात तो नहीं चलेगी न ?" अमृत ने पूछ लिया।

"क्यों, क्या हानि है इसमें ?"

"आपने ही तो कहा था न कि यह नहीं कहा जा सकता कि दान प्रभुदयाल ने दिया है अथवा उसकी माता ने ?"

"मुझको पक्का पता है कि दान प्रभुदयाल ने दिया था, उसकी माँ का हाथ इसमें नहीं है।"

"तब तो धरना असत्य का पोषक हो जायगा।"

"मैं धरने के हक में नहीं हूँ। इस पर भी यदि जनता डट गई तो मैं क्या कर सकता हूँ ?"

"आपने सबके सामने यह क्यों नहीं कह दिया कि दान प्रभुदयाल ने लिखवाया था और उसकी माँ ने नहीं ?"

"देखो अमृत !" वढ़ियामसिंह ने कहा, "मैं सिख-संगत का अगुआ हूँ। यदि इन छोटी-छोटी-सी बातों के लिए साधारण लोगों से झगड़ा करूँ, तो मेरा अगुआपन नहीं रह सकता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर हरभजनसिंह ने कहा, "तो अगुआ बने रहने के लिए आपने असत्य भाषण कर दिया।"

"मैंने असत्य नहीं कहा। मैंने सेवादार की बात का समर्थन नहीं किया। मैंने तो केवल कहा है कि प्रभुदयाल की माँ क्या चाहती है, हम नहीं जानते।"

"आपके ऐसा कहने से यह बात सिद्ध ही होती है कि दान देने वाली प्रभुदयाल की माँ भी हो सकती है, परन्तु आप जानते हैं कि यह दान प्रभुदयाल ने ही दिया था।"

"तुम दोनों अभी बच्चे हो। तुम नहीं जानते कि इस बात का रहस्य यह है कि मैं अगुआ बना रहना चाहता हूँ। इसी में अपना लाभ समझता हूँ।"

हरभजनसिंह और अमृत चुप कर गए, परन्तु उनके मन चुप नहीं रहे। वे तो विचार कर रहे थे कि यह धर्म नहीं है, यह दुनियादारी है। जो-कुछ गुरु ग्रन्थ साहब में लिखा है, वह ठीक ही है, परन्तु जो-कुछ संगत और गुरुद्वारे के अधिकारी कर रहे हैं, उसका गुरु ग्रन्थ साहब के प्रवचन के साथ कुछ भी सम्बन्ध नहीं। दोनों भिन्न-भिन्न बातें हैं।

: ५ :

हरभजनसिंह नीलमणि से प्रेम करने लगा था। उसको इस बात का ज्ञान तब हुआ था, जब वह मेडिकल कॉलेज की सैकंड ईयर में पढ़ता था। नीलमणि भी उसके साथ ही पढ़ती थी। जब भी वह उसके सामने जाता था, वह अपने मन में एक विशेष प्रकार का कौतूहल अनुभव किया करता था। इसके पश्चात् दोनों में मेल-जोल बढ़ गया। हरभजनसिंह को इस बात का अर्थ यह समझ आया था कि वह भी उससे कुछ अंश में लगाव रखती है। विशेष रूप में नीला का उससे बात करते समय संकोच अनुभव करना, उसको अपने अनुमान का समर्थन प्रतीत होता था। यह विचारकर वह उससे इस लगाव को और अधिक घनिष्ठ करने का यत्न करता रहा।

चौथी श्रेणी की परीक्षा हो जाने के उपरान्त कॉलेज के अध्यापक तथा विद्यार्थियों के एक मण्डल ने भारत-भ्रमण के लिए जाने का प्रबन्ध किया। इस भ्रमण का आयोजक सुशीलकुमार भट्टाचार्य विद्यार्थियों से मिल-मिलकर इस भ्रमण पर चलने वालों के नाम लिख रहा था। वह नीलमणि से भी मिला।

नीलमणि और हरभजनसिंह बाइसिकल-स्टैंड के समीप खड़े अपनी-अपनी बाइसिकलें निकलवा रहे थे। इस समय सुशीलकुमार उनके पास आया। उसने नमस्कार कर कहा, "मिस नीला, आप तो चलेंगी न?"

"कहाँ?" भ्रमण की बात उसने नोटिस-बोर्ड पर पढ़ी थी, परन्तु यह इस समय उसके मन में नहीं थी।

"ऑल इण्डिया टूर पर, जिसका हमारे कॉलेज की स्टूडैंट्स यूनियन प्रबन्ध कर रही है।"

"ओह! कौन-कौन जा रहे हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

R 089.9143
GUR-A
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Central Library
167888
Gurukula Kangri Vishwavidyalaya Haridwar

"अभी तक अठारह नाम आ चुके हैं। पच्चीस नाम हमको चाहिए। हमारा विचार है कि पच्चीस यात्री होने पर एक फर्स्ट क्लास कैरेज रिज़र्व हो जायगी। पूरी कैरेज रिज़र्व करने से हम उसको स्टेशन पर खड़ी करवा सकेंगे और जिस भी गाड़ी के साथ चाहेंगे, लगवा सकेंगे।"

"उन अठारह में कौन-कौन हैं ?"

सुशीलकुमार ने नाम पढ़कर सुनाए। इनमें किसी लड़की का नाम नहीं था। इस पर नीलमणि ने कहा, "मैं शायद नहीं जा सकूँगी।"

"ज़रूर चलिए, मिस नीला ! हमारी यूनियन ने यह निश्चय किया है कि जो भी लड़की चलेगी, उसको खर्च में पच्चीस प्रतिशत रियायत दी जायगी।"

"क्यों ?"

"पढ़ने वाली लड़कियों में देश-भ्रमण के लिए उत्साह भरने के लिए। लड़कों में इसकी आवश्यकता नहीं समझी गई। वे तो पहले ही बहुत घुमक्कड़ हैं।"

"इस पर भी अभी कोई लड़की तैयार नहीं हुई ?"

"मैं अभी मिस सुभद्रा से मिला हूँ। वे कहती हैं कि यदि कोई अन्य लड़की तैयार हो जाएगी तो वे भी चलेंगी।"

"बात तो वे ठीक कहती हैं।"

"तो क्या, आप भी तभी निर्णय करेंगी ?"

नीला हाँ कहने का विचार कर रही थी, परन्तु चुप थी। इस पर हरभजनसिंह ने कहा, "पर लड़कों की संगत में क्या दोष है ?"

सुशीलकुमार हँस पड़ा। हरभजनसिंह मुस्कराते हुए नीला के मुख पर देखता रहा। नीला ने सुशीलकुमार से पूछा, "क्या यह प्रश्न आपने मिस सुभद्रा से भी किया था ?"

"हाँ, परन्तु उसने उत्तर में कह दिया था, 'पसन्द अपनी-अपनी होती है।' "

इस पर तीनों हँसने लगे। नीला ने हँसते हुए कहा, "मेरा कहना तो यह है कि लड़कियों की संगत लड़कों से अधिक सुखकारक होती है। पुरुष एक हिंसक प्राणी है। स्त्रियों ने इनको घरेलू अर्थात् डुमैस्टिकेट करने का यत्न किया है और कुछ अंशों में सफलता भी प्राप्त की है। इस पर भी अभी इनमें जंगलीपन बहुत मात्रा में विद्यमान है।"

"कुछ भी हो।" सुशीलकुमार ने कहा, "यदि आप चलें तो हममें से कुछ रीछों की नकेल तो आपके हाथ में दी ही जा सकेगी।"

"अठारह मेरे मान के नहीं। इस कारण देखना चाहती हूँ कि कितनी लड़कियाँ चल रही हैं।"

"आप अपना नाम अस्थायी रूप में दे दीजिए। मैं आशा करता हूँ कि शेष सात स्थान लड़कियों से भर जाएँगे।"

"क्या खर्चा बैठेगा ?"

"पूर्ण भ्रमण का रेल का भाड़ा छः सौ रुपया, जिसमें से पचास प्रतिशत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

167888

रेल-विभाग विद्यार्थियों के नाते रियायत देगा, अर्थात् तीन सौ रुपया जाने वाले को देना पड़ेगा। पाँच रुपया नित्य के हिसाब से रोटी इत्यादि के लिए। इस प्रकार अधिक-से-अधिक एक व्यक्ति का पाँच सौ रुपया, जिसमें से यूनियन आपको सवा सौ रुपया देगी।"

"इतने के लिए तो घरवालों से भी पूछना पड़ेगा।"

अब हरभजनसिंह बोल पड़ा, "पूछने की क्या ज़रूरत है। आपका रेलभाड़ा तो मैं ही दे दूँगा।"

"क्यों ?" नीलमणि ने माथे पर त्यौरी चढ़ाकर पूछा।

"आपको एक रीछ के सिधाने की मज़दूरी में।"

पहले तो इस व्यंग्य को नीला और सुशीलकुमार नहीं समझे। परन्तु जब समझे तो खूब हँसे। नीला ने कहा, "आई डिक्लाईन टु टेक दि चार्ज।" (मैं इस उत्तरदायित्व को अस्वीकार करती हूँ।)

इस पर वे फिर हँसने लगे। अब हरभजनसिंह ने पूछा, "तो मेरा चार्ज कौन लेगा ?"

"कोई ले लेगा।"

यह पहला अवसर था जब हरभजनसिंह ने नीला से संकेत-मात्र में विवाह के लिए कहा था। बात यहीं समाप्त हो गई।

इस भ्रमण में हरभजनसिंह का सदैव यत्न रहा कि वह नीला को अपने समीप खींचे, परन्तु नीला का यत्न यह था कि किसी के मन में यह सन्देह न हो सके कि वह हरभजनसिंह को किसी भी प्रकार उपमा देती है।

भ्रमण में ही हरभजनसिंह यह समझने लगा था कि उसने नीला को अपने समीप कर लिया है। एक दिन जब वे ताजमहल के एक लॉन में बैठे चाय की प्रतीक्षा कर रहे थे, तो हरभजनसिंह ने मिस्टर भट्टाचार्य से पूछा, "आपको नीला के व्यवहार में कुछ विशेषता प्रतीत होती है ?"

सुशीलकुमार ने कहा, "हरभजन, नीला के व्यवहार में तो कुछ बात समझ आती नहीं, परन्तु तुम्हारे विषय में सबका यह विचार है कि तुम उस पर डोरे डाल रहे हो। प्रोफेसर भाटिया भी उस दिन कह रहे थे कि तुम्हारा उसके आगे-पीछे इस प्रकार नाचना हास्यास्पद प्रतीत होता है। वे कहते थे कि नीला ने अभी तक तुम्हारे मुख पर चपत नहीं लगाई, यही आश्चर्य करने की बात है।"

भाटिया का यह कथन एक लड़की सुभद्रा को भी पता चल गया। उसने नीला से इसका उल्लेख कर दिया। नीला हँस पड़ी और बोली, "प्रोफेसर साहब मेरे चरित्र का बहुत ही घटिया अनुमान लगाते हैं। यदि मैं इस प्रकार अपनी ओर देखने वालों और अपनी प्रशंसा करने वालों पर पिल पड़ूँ तो मैं पागल हो जाऊँ। कोई अपने मुख से कुछ कहे, मेरा क्या बिगड़ता है ?"

"पर एक बात है," सुभद्रा ने कहा, "तुम्हारे चुप रहने से सब साथियों के मन में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भ्रम उत्पन्न हो रहा है कि तुम हरभजनसिंह को पसन्द करती हो और यह पसन्द विवाह कराकर ही रहेगी।"

"मैंने इस दिशा में अभी तक विचार नहीं किया। हरभजनसिंह क्या और कोई अन्य युवक क्या, मैंने विवाह की दृष्टि से कभी किसी की ओर देखा ही नहीं।"

सुभद्रा ने यह बात अन्य लड़कियों से, जो भ्रमण पर साथ आई हुई थीं, कह दी और धीरे-धीरे यह बात हरभजनसिंह के कानों तक भी पहुँच गई।

यात्री आगरा से दिल्ली, दिल्ली से अमृतसर, अमृतसर से शिमला और मसूरी जा पहुँचे। मसूरी का वातावरण ही कुछ ऐसा है कि वहाँ प्रेम की बातें करने को मन चाहता है। हरभजनसिंह भी अपने मन की बात कहे बिना नहीं रह सका। वे माल पर घूम रहे थे। हरभजनसिंह ने यत्न कर नीलमणि से एकान्त में बात करने का अवसर निकाल लिया। जब वे अन्य साथियों से कुछ दूर हो गए तो उसने कहा, "नीला, सुभद्रा अपनी एक सहेली से कह रही थी कि तुमने अभी तक किसी भी युवक को विवाह करने की दृष्टि से नहीं देखा। इससे तुम्हारे मन में स्थान खाली देख, मैं चाहता हूँ कि उसमें अपने लिए स्थान बनाने का यत्न करूँ। क्या विचार है तुम्हारा?"

"मुझको अभी इन बातों पर विचार करने की आवश्यकता अनुभव नहीं हुई। न ही इस प्रकार की व्यर्थ की बातों के लिए मेरे पास समय है।"

"तो क्या करती रहती हो, जो तुम्हारे पास जीवन की सबसे आवश्यक बात के लिए भी समय नहीं है?"

"तो आप जानते नहीं? मैं मेडिकल कॉलेज की फिफ्थ ईयर में पढ़ती हूँ। यहाँ से पास करने के पश्चात् छः मास के लिए अस्पताल में अभ्यास के लिए काम करना होगा। पश्चात् मुझको अपना काम जमाना है। जम जाने के पश्चात् ही तो विवाह की बात सामने आ सकेगी।"

"ठीक है; पर मैं भी तो इस सिलसिले में से गुज़रने वाला हूँ। दोनों साथ-साथ चल सकें तो मंज़िल पर सुगमता से पहुँच जाएँगे।"

"साथ-साथ चलने में कोई हानि नहीं है। पर यह विवाह की सूचक नहीं हो सकती। इस सफ़र में भी तो साथ-साथ चलने के लिए कई बातें विचारणीय हैं। वे समय पर ही सोची जा सकती हैं।"

"तुम सोचती रहो। मैं तुम्हारे मन में बैठने का यत्न करता रहूँगा। मेरे यत्न करने पर तुमको आपत्ति नहीं होनी चाहिए।"

"जब तक यत्न मेरी स्वतन्त्रता में बाधक नहीं होता, तब तक मुझको क्या आपत्ति हो सकती है। हाँ, यदि आपके यत्न उसी प्रकार चलते रहे, जैसे इस भ्रमण में चलते रहे हैं, तो आप मेरे हृदय में अनुकूल अवस्था उत्पन्न करने के स्थान प्रतिकूल प्रतिक्रिया ही उत्पन्न कर लेंगे।"

"क्यों, मैंने कौन-सी ऐसी बात की है, जिसकी तुम्हारे मन में प्रतिकूल प्रतिक्रिया उत्पन्न हुई?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस विषय में यदि आप डॉक्टर भाटिया से बातचीत कर लें तो आपके ज्ञान में वृद्धि होगी।"

"तुम्हारी उनसे बात हुई है क्या?"

"नहीं। इस पर भी मैं जानती हूँ कि वे आपके व्यवहार से सन्तुष्ट नहीं हैं।"

हरभजनसिंह इस गोरख-धन्धे से बहुत परेशान हुआ। जब देहरादून से यात्री लखनऊ के लिए रवाना हुए तो हरभजनसिंह ने डॉक्टर भाटिया के डिब्बे में जगह ले ली। मार्ग में उसने डॉक्टर भाटिया से बात करने का अवसर निकाल लिया।

मसूरी पहुँचने तक तो वह यही समझता रहा था कि वह नीला के बहुत समीप हो गया है, परन्तु जब नीलमणि ने उसको डॉक्टर साहब से बात करने के लिए कहा तो उसको गड़बड़ का सन्देह हो गया। उसने उनके समीप बैठकर पूछा, "डॉक्टर साहब, क्या आप मेरे नीला से व्यवहार के सम्बन्ध में बहुत नाराज़ हैं?"

"हाँ, सख्त नाराज़ हूँ।"

"क्यों? क्या मैं जान सकता हूँ कि मैंने क्या किया है?"

"मैं सब बातें तुमसे नहीं कह सकता। मैं तुमको यह बताना चाहता हूँ कि मैं भी तुम्हारी आयु का रह चुका हूँ और तुम्हारी भाँति मूर्खता की बातें कर चुका हूँ। क्या तुम सुनना चाहते हो कि एक दिन लंदन हस्पताल में मेरे साथ क्या हुआ था?

"मेरी ड्यूटी जब भी रात के समय होती थी, एक 'केट ईडन' नामक नर्स की ड्यूटी भी रात की होती थी और कुछ ऐसी घटना घटती रहती कि हम दोनों एक ही वार्ड में काम करते थे। मिस ईडन की आदत थी कि रात के दो बजे वह एक प्याला कॉफ़ी पीती थी। वह प्रायः मुझको भी एक प्याला बना देती और इसको मैं उसकी ओर से प्रेम करने के लिए निमन्त्रण समझने लगा। मैं उससे बहुत ही हिल-मिलकर बात करने लगा। उसके छोटे-मोटे काम भी कर देता। कभी बाज़ार से सामान भी ला देता।

"एक दिन उसने कॉफ़ी का प्याला दिया, तो मेरे मुख से निकल गया—'ओ हैवनली कप! हाउ फारचूनेट आई एम!'

"इस पर उसने पूछा—'मिस्टर भाटिया, इस कॉफ़ी के प्याले में कौन-सी स्वर्गीय बात आ गई?'

"मैंने उत्तर दिया—'दि टच ऑफ़ यूअर हैंड।'

'इन हाथों में क्या विशेषता है?'

'ये नरम हैं, मुलायम हैं, सुवासित हैं और सुन्दर हैं। जब कॉफ़ी मेरे होंठों से लगती है, तो मैं अनुभव करता हूँ कि मेरे होंठों का इन हाथों से सम्बन्ध बन गया है और जब इन हाथों से बनी कॉफ़ी तुम्हारे होंठों से लगती है तो मैं समझता हूँ कि मेरे होंठों का सम्बन्ध उनसे बन गया है।'

"मेरे मुख से एक भी शब्द और नहीं निकल सका और ईडन के दाहिने हाथ की चपत की छाप मेरे गाल पर लगी। मेरे प्याले की कॉफ़ी मेरे कोट और कमीज़ पर गिर गई और मैं भौंचक्का हो उसका मुख देखता रह गया। उसने अपने प्याले की कॉफ़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाली में फेंक दी। पश्चात् हमने एक-दूसरे का मुख नहीं देखा।

"हरभजनसिंह, तुम जो-कुछ नीलमणि के विषय में कहते रहते हो, वह मेरे मिस ईडन के इस कहने से कहीं अधिक है। यह हिन्दुस्तान है और वह हिन्दू लड़की है, नहीं तो अब तक तुम्हारी मुरम्मत हो चुकी होती।"

हरभजनसिंह की आशाओं पर पानी फिर गया। इस पर भी उसने प्रयत्न नहीं छोड़ा। नीला के व्यवहार में कोई अन्तर नहीं पड़ा। वह पूर्ववत् उसकी बातों को सुनती, मुस्कराती और बात बदल देती।

: ५ :

समय व्यतीत हो गया। इस काल में माधुरी के भाई प्रबोध की दृष्टि भी नीला पर पड़ी। वह उस पर मोहित हो गया और उसको अपनी ओर आकर्षित करने का यत्न करने लगा। यूँ तो नीलमणि उनके घर में बाल्यकाल से आती-जाती थी, परन्तु प्रबोध को वह पत्नी बनने योग्य तब समझ आई, जब वह मेडिकल कॉलेज की फिफ्थ ईयर में पढ़ती थी।

होली के उत्सव पर वह उनके घर आई हुई थी और रंग, रोली परिवार के लोग परस्पर फेंक रहे थे। प्रबोध कलकत्ता के इंजीनियरिंग कॉलेज में पढ़ता था और छुट्टी पर घर आया हुआ था। जब नीला सर्वथा श्वेत परिधान में आई तो वह उसकी रूप-राशि देख उस पर मुग्ध हो गया।

प्रबोध उस पर रंग फेंकने का यत्न करने लगा। अवसर पा उसने पिचकारी से उसकी साड़ी को रंग दिया और कहा, "अब ठीक लगती हो। पहले तो...."

"पहले क्या थी?"

"स्वर्गीय अप्सरा। अब भूमि पर विचरने वाली सुन्दरी।"

नीला का मुख लाल हो गया, परन्तु वह रोली की लाली में, जो प्रबोध ने उसके मुख पर मल दी थी, छिप गया।

नीला ने अपना बदला लिया। वह भी अवसर पाकर उसके मुख पर रंग मल आई और बोली, "अब ठीक बन्दर मालूम होते हो।"

"मैं बन्दर हूँ तो लो तुमको चुड़ैल बनाकर छोड़ूँगा।"

आँख बचाकर वह कमरे में गया और अपने छोटे भाई नारायण की दवात में से स्याही ले हाथों पर मल आया। माधुरी और नीला दोनों रंग से तोबड़तूर उधर को पीठ किए खड़ी थीं, जिधर से प्रबोध आँगन में आया था। पूर्व इसके कि उसकी माँ उसके हाथों पर काली स्याही देख उसको मना करे, उसने जल्दी में रंग मुख पर मल ही दिया, परन्तु जल्दी में वह रंग नीला के स्थान माधुरी के मुख पर मला गया।

नीला समझ तो गई कि वह उसको चुड़ैल बनाने का प्रयास था, जो माधुरी पर प्रयोग हो गया है। इस पर भी वह हँस पड़ी।

माधुरी को काले-काले हाथ उसके मुख की ओर आते दिखाई दिए थे और पूर्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके कि वह बच सकती, उसके मुख पर कालिख पोत दी गई। माधुरी ने घूमकर देखा। यह प्रबोध था। प्रबोध को भी पता चल गया कि यह नीला नहीं थी। एक क्षण तक प्रबोध को शोक हुआ और माधुरी को क्रोध, परन्तु तुरन्त ही दोनों हँसने लगे। माधुरी ने कहा, "बहन के लिए क्या यह दवात की स्याही रह गई थी? बड़े कंजूस हो भैया!"

नीला हँसती हुई भाग गई थी, जैसे सिंह से हिरनी भागती है। प्रबोध के पिता ने देखा और माधुरी के कटाक्ष को सुना, तो नारायण को बुलाकर कहा, "नारायण, जाओ। तुम भी हाथ काले कर आओ।"

वह समझा नहीं। इस पर प्रभुदयाल ने कहा, "जाओ तो। बड़ा मज़ा आएगा।"

जब वह हाथ रंगकर आया तो पिता ने उसको एक ओर ले जाकर कहा, "देखो, मैं प्रबोध को अपने पास बुलाकर उसके हाथ पकड़ लूँगा और तुम पीछे से वह उसके मुख पर मल देना। दीदी का बदला निकल जायगा।"

नारायण को यह बात पसन्द आई। प्रभुदयाल ने प्रबोध को समीप बुलाकर कहा, "यह दवात की स्याही तो रंग से कहीं महँगी है और माधुरी तुमको कंजूस कहती है?"

"जाट क्या जाने लवंग का भाव!" प्रबोध ने पिता को अपनी हिमायत करते हुए देख प्रोत्साहित हो कहा।

इतने में नारायण कमरे से निकल आया। प्रभुदयाल ने प्रबोध को कहा, "हाथ दिखाओ।"

प्रबोध ने हँसते हुए हाथ दिखाए तो प्रभुदयाल ने उसके हाथों को पकड़ लिया और अवसर देख नारायण ने भैया के मुख पर स्याही मल दी।

सब हँसने लगे। नीला, जो छिपकर देख रही थी, अब वहाँ आ गई और पूछने लगी, "चुड़ैल कौन बना?"

"प्रबोध, अब हाथ धो लो। यह काला रंग बहुत महँगा है।" प्रभुदयाल ने कहा।

उस दिन सायंकाल जब पूरी और हलुआ खाया जा रहा था। प्रबोध, जो नीला के समीप बैठा था, कहने लगा, "वास्तव में तुम लाल रंग में बहुत सुन्दर प्रतीत होती थीं।"

"वैसे तो आप भी बहुत भले प्रतीत होते थे। मुझको बन्दर न कहकर हनुमानजी कहना चाहिए था।"

"तुम्हारा इष्टदेव न?" सब जानते थे कि वह हनुमानजी की उपासिका है। प्रबोध उसकी हँसी उड़ाने के लिए कहा करता था, "मिट्टी के लोंदे पर फूल-पत्र चढ़ाने से क्या मिलता है तुमको?"

आज नीला ने स्मरण कर कह दिया था, "नहीं, वे तो मिट्टी के लोंदे हैं। आपको वह कहकर मैं आपका अपमान नहीं कर सकती। आप तो चलते-फिरते सक्रिय हनुमानजी बन गए थे।"

"तुम्हारे लिए तो मैं वह भी बन जाना मान जाऊँगा।"

"नहीं प्रबोध भैया! वे बन गए तो भाभी नाराज़ हो जाएँगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो वह भी तुम ही बन जाना। नाराज़ होने को कोई नहीं होगा।"

"मिट्टी के लोंदे से कौन विवाह करेगा?"

"तो पूजा ही कर लेना।"

"तब तो आपको किसी सार्वजनिक मन्दिर में स्थापित करना पड़ेगा। मिट्टी के देवता तो सरे-बाज़ार ही स्थापित किए जाते हैं।"

नीला के माता-पिता और उसकी छोटी बहन सरिता भी आमन्त्रित थे। राधाकृष्ण और प्रभुदयाल पास-पास बैठे थे। राधाकृष्ण कह रहा था, "नीला के विवाह के लिए बिरादरी के लोग भाग-दौड़ मचाने लगे हैं।"

"ठीक है। कहीं बात निश्चय कर रखनी चाहिए।"

"नीला अभी नहीं मानती। इससे जब भी बात की है वह कहती है, 'जब आपने पढ़ा-लिखाकर समझदार बनाया है तो उस समझ-बूझ के प्रयोग का अवसर दीजिए। मैं आपसे अपनी पसन्द के विषय में राय कर लूँगी.।' "

"वह ठीक ही कहती है। यूँ तो वह इतनी अच्छी है कि मैं उसको अपने ही घर में ले आने की इच्छा करता हूँ, परन्तु समय बदल गया है और अंग्रेज़ों की भाँति हम माता-पिताओं को भी अपने बच्चों को चुपचाप स्वराज्य दे देना चाहिए। कहीं फ्रांसीसियों की तरह इण्डोचाइना में डट जाने की भाँति हम भी डटे रहे तो ये अधिकारी लोग गोला-बन्दूक लेकर हमें निकाल देंगे।"

दोनों हँस पड़े। प्रभुदयाल ने नीला और प्रबोध की ओर संकेत कर कहा, "वह देखो, कम्युनिस्ट रशिया की भाँति प्रबोध इण्डोचाइना को आपके विरुद्ध भड़का रहा है। भला इसी बात में है कि चुपचाप रिटायर हो पर्दे के पीछे छिप जाएँ।"

दोनों हँसने लगे। कुछ विचारकर राधाकृष्ण ने कहा, "नीला इतनी मूर्ख प्रतीत नहीं होती कि किसी कम्युनिस्ट के चक्कर में फँस जाय।"

"देखते जाइए, भाई साहब!"

प्रबोध नीला से कह रहा था, "सार्वजनिक मन्दिर में बैठाओ अथवा मन-मन्दिर में, मुझको किसी प्रकार की आपत्ति नहीं होगी। शर्त यह है कि होना मन्दिर चाहिए।"

"बहुत ठीक।" नीला ने मुस्कराते हुए कहा, "परन्तु जब आपके साथी मन्दिर में पूजा करने वाले को मूर्ख और रूढ़िवादी का नाम देते हैं तो मन्दिर में बैठे पूजा कराने वाले को क्या कहेंगे?"

"धूर्त।"

"तब तो आपकी किसी मन्दिर में स्थापना नहीं होनी चाहिए। प्रबोधजी को कोई धूर्त कहे, यह मुझसे सहन नहीं हो सकता।"

इस कथन ने बात समाप्त कर दी। बार-बार बात के टाले जाने ने नीला के विचारों का परिचय दे दिया। इस पर भी उसने बात को अन्तिम स्तर तक ले जाने के लिए कहा, "नीला, मैं तुम्हारे लिए अपने मन में एक विचार बना बैठा हूँ। तुमको अपना जीवन-साथी बनाना चाहता हूँ। मैं कल कलकत्ता लौट रहा हूँ और मेरे पास समय नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि गोल-मोल बातों के जाल में फँसा रहूँ। बताओ, क्या मैं अपने माता-पिता से कह दूँ कि तुमने इस जीवन-यात्रा में मेरा साथ देना स्वीकार कर लिया है ?"

"नहीं जी, यह मत कहना। मैं अभी इस विषय में कुछ भी नहीं कह सकती—न हाँ, न ना। मेरा मन अभी इस विषय में विचार करने के लिए भी तैयार नहीं है।"

"तो तुम ना तो नहीं कर रहीं न ?"

"अब यह तुम समझ लो। मुझको डॉक्टर बनना है। इसमें अभी एक वर्ष शेष है। पश्चात् मुझको अपनी प्रैक्टिस जमानी है। तभी घर-गृहस्थी के लिए समय आएगा।"

"मैं तब तक प्रतीक्षा कर सकता हूँ।"

"तब मैं क्या हो जाऊँगी, कह नहीं सकती। हाँ, इस समय तो मैं तुम्हारा साथ देने के न तो योग्य हूँ, न ही अभिलाषी हूँ।"

"यह अभिलाषा की बात कहाँ से आ गई ? अभी तो तुम कह रही थीं कि तुम कुछ नहीं जानतीं।"

"देखिए, इतना तो जानती हूँ कि मैं आस्तिक हूँ, आप नास्तिक हैं। मैं भाग्यफल को मानने वाली हूँ, आप केवल पुरुषार्थ को ही मानते हैं। मैं स्वतन्त्र जीवन और व्यवसाय में विश्वास रखती हूँ, आप समाजवादी हैं अर्थात् प्रत्येक बात में व्यक्ति को समाज के अधीन करने के पक्ष में हैं। भला हम दोनों का साथ निभेगा कैसे ?"

"वैसे ही जैसे हमारे चाचा सिख हैं और पिता सहजधारी। अथवा वैसे ही जैसे आपके पिता शैव हैं और तुम हनुमान् की उपासिका।"

"मैं चाचाजी के सिख होने और पिताजी के हिन्दू होने के विषय में तो कह नहीं सकती। जब ये दोनों इकट्ठे रहते थे, तब सिखिज़्म में राजनीति और धर्मान्धता कभी मिली दिखाई नहीं देती थी, परन्तु अब वे दोनों इकट्ठे रह सकेंगे अथवा नहीं, कह नहीं सकती।

"रहा मेरे और पिताजी के उपास्य देवताओं में अन्तर। इस अन्तर के कारण हम एक-दूसरे के व्यवहार में बाधक नहीं होते। पिताजी ने मुझको कभी नहीं कहा कि मैं मिट्टी के लोंदे पर पुष्प-पत्र चढ़ाती हूँ। न ही मैंने उनको कभी कहा है कि वे एक पत्थर के टुकड़े पर दूध चढ़ाते हैं। इसके सर्वथा विपरीत आप अभी मेरे जीवन-साथी न होने पर भी मेरे इष्टदेव को जली-कटी सुनाते रहते हैं।"

"मैं समझता हूँ कि तुम्हारे मानसिक विकास में वह एक प्रक्रियामात्र है। तुम इस पर बैठी नहीं रहोगी। थोड़ा आश्रय देने से तुम आगे निकल जाओगी।"

"ठीक है। समय आने दीजिए और जब आगे निकल आऊँगी, तब जीवन-भर साथ देने की बात विचार कर लूँगी।"

प्रबोध नीलमणि से किसी प्रकार का वचन लिये बिना ही कलकत्ता चला गया। एक प्रकार से वह निराश ही था। इस पर भी जब-जब वह लखनऊ आया, नीला उससे स्नेह-भाव ही प्रकट करती रही।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ६ :

हरभजनसिंह को यह ज्ञात नहीं था कि नीला ने प्रबोध को भी स्वीकार नहीं किया और वह जैसे उसके साथ मीठा बोलती है, वैसे ही प्रबोध तथा अन्य परिचितों से भी मुस्कराकर बात करती है। कॉलेज में तो वह उस पर छाया रहता था। इस कारण कॉलेज के विद्यार्थी यह अनुभव करते थे कि उनका विवाह होगा ही। इससे अन्य सहपाठी और परिचित नीला से दूर-दूर ही रहते थे। वे एक पंजाबी युवक से झगड़ा करना उचित नहीं समझते थे।

अन्तिम परीक्षा हुई और नीला इत्यादि सब उत्तीर्ण हो गए। नीला की ड्यूटी असिस्टैंट हाउस सर्जन के रूप में हस्पताल में लग गई। डॉक्टर भाटिया के साथ वह चिकित्सा-कार्य का अभ्यास करने लगी थी। उसके साथ सुशील भट्टाचार्य की ड्यूटी भी लगी हुई थी। हरभजनसिंह की ड्यूटी एक अन्य डॉक्टर रशीद के साथ लगी हुई थी।

असिस्टैंट्स को दिन में दो बार हस्पताल जाना पड़ता था। कुछ ऐसा संयोग हुआ कि नीला और सुशील दोनों एक ही समय जाते थे। हरभजनसिंह का समय दूसरा था। इस कारण उसको नीला से मिलने का कम अवसर मिलता था। कई दिन पश्चात् हरभजनसिंह समय निकालकर उस समय आया, जब नीला और सुशीलकुमार अपना कार्य समाप्त कर घर को जाने वाले थे।

"हैलो, मिस्टर सिंह !" भट्टाचार्य ने हरभजनसिंह का अभिवादन करते हुए कहा, "आजकल कहाँ रहते हैं आप ?"

"यहीं लखनऊ में। यहाँ हस्पताल में भी आता हूँ, परन्तु मेरे आने का समय ऐसा है कि दर्शन होते ही नहीं।"

नीला ने चुपचाप हाथ जोड़ नमस्कार की थी और तीनों हस्पताल से बाहर को चल पड़े थे। तीनों के पास अपनी-अपनी बाइसिकलें थीं। भट्टाचार्य ने हरभजनसिंह से सहानुभूति प्रकट करते हुए कह दिया, "यदि आप चाहें तो मैं ड्यूटी बदल सकता हूँ।"

"क्यों, आपको यह समय ठीक नहीं बैठता क्या ?"

"ठीक तो है। नीलादेवी भी बहुत सहयोग देती हैं और डॉक्टर भाटिया भी बहुत पसन्द करते हैं। इस पर भी यदि आप चाहें तो आपकी और नीलादेवी की सुविधा के लिए यह त्याग कर सकता हूँ।"

नीला हँस पड़ी और पूर्व इसके कि हरभजनसिंह कुछ कहे, पूछने लगी, "पर मिस्टर भट्टाचार्य, आपको किसने कहा है कि इससे मुझको सुविधा होगी ?"

"मेरा विचार है। कदाचित् हम सब सहपाठियों का भी यही विचार है कि आप दोनों एक ही समय और स्थान पर कार्य करना पसन्द करेंगे। हमारे परिवार की यह रीति है कि हम स्त्री-वर्ग के मान और सुविधा के लिए तैयार रहते हैं।"

"आप बहुत अच्छे हैं मिस्टर भट्टाचार्य ! परन्तु यह आपको भ्रम हो गया है कि मैं मिस्टर सिंह के साथ काम करने को आपके साथ काम करने पर उपमा देती हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ऐसा हम सबका विचार है।"

"मैं आप सबको विश्वास दिलाती हूँ कि यह आप सबका भ्रम-मात्र ही है। मिस्टर सिंह से मिलकर मुझको प्रसन्नता होती है। इनमें कुछ गुण हैं, जिनको मैं पसन्द करती हूँ, परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि आपकी संगत मुझको कम पसन्द है। आपमें भी गुण हैं, यद्यपि वे मिस्टर सिंह के गुणों से भिन्न हैं।"

दोनों हस्पताल के बाहर पहुँच गए थे। मिस्टर भट्टाचार्य का मार्ग दूसरा था। इस कारण वह यह कह, 'थैंक्स फॉर दि डिस-इल्युज़नमैंट' (आपके भ्रम-निवारण के लिए धन्यवाद) बाइसिकल पर सवार हो अपने घर को चला गया। जब सुशीलकुमार कुछ दूर निकल गया तो हरभजनसिंह ने कहा, "नीला, यह तुमने आभार से बचने के लिए कहा है अथवा सत्य तुम मुझमें और भट्टाचार्य में कुछ अन्तर नहीं मानतीं ?"

"यह एक अति विकट प्रश्न है। अन्तर तो है, परन्तु उस अन्तर के लिए मैं एक को दूसरे पर उपमा नहीं दे सकती। अपने-अपने स्थान पर आप सब भले लोग हैं और मैं सबका बराबर आदर करती हूँ।"

"मैं तो आज तुमसे एक अत्यावश्यक विषय पर बातचीत करने आया हूँ।"

"हाँ, कहिए।"

"हस्पताल में काम करते हुए तीन मास हो गए हैं। अगले तीन मास के पश्चात् हमको अपना-अपना क्लिनिक चलाना होगा। मैं चाहता था कि हम ऐसे स्थान पर क्लिनिक लें, जो सर्वथा साथ-साथ हों, जिससे हम अपने व्यवसाय में एक-दूसरे की सहायता भली-भाँति कर सकें।"

"विचार तो सुन्दर है, परन्तु मैंने अभी प्राइवेट क्लिनिक खोलने का निर्णय नहीं किया।"

"तो कर लो। जब डॉक्टरी पढ़ी है तो काम तो करना ही है।"

"यह आवश्यक नहीं। और फिर मैं किसी हस्पताल में भी काम पा सकती हूँ।"

"क्या तुमको किसी हस्पताल में काम मिलने का विश्वास है ? मैं समझता हूँ कि प्राइवेट काम के लिए सदा तैयार रहना चाहिए। आजकल दुकान मिलना अति कठिन है और अभी से यत्न आरम्भ करेंगे तो सम्भव है कि तीन मास तक दुकान मिल सके।"

"मैं व्यर्थ की चिन्ता करना नहीं चाहती। आपको तो किंचित्-मात्र भी इस विषय में चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं। आपके पिताजी के बीसियों मकान व दुकानें हैं। कोई-न-कोई तो खाली होती ही रहती होगी। फिर वे आपके लिए खाली करवा भी सकते हैं।"

"खाली तो होती ही रहती हैं, पर मैं चाहता हूँ कि अमीनुद्दौला में कहीं मिल सकती तो ठीक है।"

"वहीं क्यों ? वह तो बहुत भीड़-भाड़ वाला स्थान है। मैं तो उस स्थान को कभी पसन्द नहीं करूँगी।"

"वहाँ ग्राहक खूब आएँगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं ग्राहकों की संख्या के लिए इतनी चिन्तित नहीं, जितनी आने वाले ग्राहकों की सुख-सुविधा के लिए। स्थान ऐसा होना चाहिए, जहाँ ग्राहकों का ताँगा-मोटर सुगमता से पहुँच सके और खड़ा रह सके। क्लिनिक के अन्दर भी शान्त वातावरण होना चाहिए, जिससे वे अपने कष्ट का निश्चिन्त होकर वर्णन कर सकें तथा हम दत्त-चित्त हो सुन सकें।"

"तुम तो एक-दो ग्राहकों से ही सन्तोष करना चाहती हो। मैं चाहता हूँ कि प्रातः से सायं तक भीड़ लगी रहे।"

"पसन्द अपनी-अपनी है।"

"देखिए, आप मेरे प्रस्ताव पर विचार कीजिएगा। यदि मेरी राय से आपकी राय मिल गई तो मैं इस विषय में बहुत-कुछ कर सकता हूँ।"

"धन्यवाद ! मैं विचार करूँगी। यदि मेरे विचार बदल गए तो आपको बता दूँगी।"

"पर यह निर्णय शीघ्र करना चाहिए।"

"यत्न करूँगी।"

: ७ :

नीलमणि का सुशीलकुमार को कहना कि उसका यह विचार कि वह हरभजनसिंह के साथ काम करने को अच्छा समझेगी, एक भ्रम है, उसको कुछ विचित्र प्रतीत हुआ था। उसको दो वर्ष पूर्व की बात स्मरण हो आई, जब वे भारत-भ्रमण पर गए हुए थे। तब उसने अनुभव किया था कि नीला हरभजनसिंह की ओर आकर्षित नहीं, प्रत्युत हरभजनसिंह का व्यवहार ही भ्रम उत्पन्न करने वाला था। आज फिर उसको यही समझ आया।

सुशीलकुमार इतनी तो बुद्धि रखता था कि नीलमणि एक सुन्दर लड़की है। भ्रमण के दिनों में उसको यह भी पता चला था कि वह अति सुशील है। इन दिनों हस्पताल में उसके साथ काम करने पर, उसकी एक बात और विदित हुई थी कि उसकी विचार-शक्ति अति सन्तुलित है। रोगी को देखती हो अथवा किसी से बातचीत करती हो, वह अपनी बात बहुत नाप-तोलकर कहती है।

इन सब बातों के ज्ञान के साथ आज उसको यह पता चला कि उसका और उसके साथियों का विचार था कि उसका हरभजनसिंह से विवाह होगा, भ्रम है।

उसके अपने मन में उससे विवाह का कभी विचार उत्पन्न नहीं हुआ था। वह एक शिष्ट बंगाली परिवार का लड़का था। उसका पिता उत्तर प्रदेश में चीफ़ इञ्जीनियर था। वेतन बहुत अच्छा था और ऊपर से भी अच्छी आय होती थी। राज्य तथा राज्याधिकारियों में मिस्टर नीलरत्न भट्टाचार्य का एक प्रतिष्ठित स्थान था।

लखनऊ के बंगाली समुदाय का भट्टाचार्य के परिवार से बहुत अच्छा सम्बन्ध था और आरम्भ से ही सुशीलकुमार के मस्तिष्क में यह बात समा चुकी थी कि अच्छी-से-अच्छी बंगाली लड़की उसको मिल सकती है। अतएव बंगाली समुदाय से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाहर उसका ध्यान इस विषय में कभी गया ही नहीं था।

सुशील के परीक्षा पास करने के पश्चात् तो भट्टाचार्य के परिवार को और विशेष रूप से सुशीलकुमार को उन सब परिवारों से निमन्त्रण आ रहे थे, जिनमें विवाह योग्य लड़कियाँ थीं। कई लड़कियाँ उससे घनिष्ठता का सम्बन्ध उत्पन्न करने का यत्न भी कर रही थीं। वह अपने मन में उनके गुण-अवगुणों का अवलोकन भी कर रहा था। इन सब लड़कियों में मनमोहन सरकार की लड़की रेणु, बहुत आगे आ चुकी थी।

आज इस बात को जान कि नीलमणि किसी से भी विवाह करने के लिए वचनबद्ध नहीं, उसके मन में बंगाली लड़कियों के साथ इसका भी मुकाबला होने लगा। इसी विचार में वह घर जा पहुँचा। उसका पिता रेलवे रोड पर एक कोठी में रहता था। कोठी के बाहर मनमोहन सरकार की मोटर खड़ी थी। वह समझ गया कि सरकार बाबू के घर से उसके विवाह की चर्चा करने आए हुए हैं। इस कारण वह अन्तःपुर में जाने के स्थान बैठक में आ पहुँचा। वह वहाँ एकान्त में बैठकर नीलमणि के कहने पर मनन करना चाहता था।

मनमोहन सरकार अमीनाबाद पार्क में बिसाती की दुकान करता था। पिछले युद्ध-काल में उसने बहुत धन कमाया था और उसके परिवार की स्त्रियाँ जब किसी के घर जाती थीं तो प्रायः सोने से लदी होती थीं। ये गुण सुशील के माता-पिता के लिए बहुत बड़े थे। सुशील इनको देख-देखकर ऊब चुका था। अब नीलमणि से मुकाबला करने पर सरकार बाबू का धनी होना, उसको अवगुण ही प्रतीत हुआ था।

वह बैठक में पहुँचा तो वहाँ सरकार बाबू को अपने पिता से बातचीत करते देख वह घबराकर द्वार में से ही वापस होने लगा। इस समय उसके पिता की नज़र उस पर पड़ गई। नीलरत्न ने सुशील को इस प्रकार लौटते देख बुला लिया।

"सुशील, इधर आओ।"

विवश वह भीतर गया। पिता ने उसको एक कुर्सी पर बैठने को कहा और बताया, "देखो, ये रेणु के विषय में कहने आए हैं।"

सुशील समझता था कि क्या कहने आए हैं। इस पर भी उसने पूछा, "रेणु को क्या है बाबा?"

"रेणु को क्या है? तो तुम जानते नहीं कि क्या है? वह सत्रह वर्ष की हो गई है, उसका विवाह होना चाहिए।"

"बस! मैंने समझा कि कोई शारीरिक कष्ट है और किसी डॉक्टर से कहना है। क्षमा करें सरकार बाबू! आजकल हस्पताल में काम करने से मेरे दिमाग में यही बात भर रही है। हाँ, तो किसी लड़के पर नज़र है सरकार बाबू की?"

"हाँ।" उत्तर सुशील के पिता ने दिया, "नीलरत्न भट्टाचार्य के पुत्र सुशीलकुमार, एम० बी०, बी० एस० पर इनकी दृष्टि गई है। इनका कहना है कि इस डॉक्टर ने रेणु को देखा है और उसको पसन्द किया है। मैं तुमसे पूछना चाहता हूँ कि क्या सत्य ही तुमने इस लड़की को पसन्द किया है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतना कह दोनों वृद्धजन हँसने लगे। यूँ तो अपने पिता की इस विवेचना पर सुशील भी हँस पड़ता, परन्तु आज वह इस विषय पर बहुत फूँक-फूँककर पग रख रहा था। इस कारण वह केवल मुस्कराकर ही रह गया।

मनमोहन और नीलरत्न ने समझा कि बड़ों की उपस्थिति में उसका केवल मुस्कराना उनके लिए आदर का सूचक है। वे प्रश्न-भरी दृष्टि से उसकी ओर देखते रहे।

सुशील ने कुछ विचारकर कहा, "पिताजी, रेणु को सुशीलकुमार ने देखा है, पसन्द भी किया है; परन्तु जहाँ तक मैं समझा हूँ उसने उसको विवाह करने के लिए पसन्द नहीं किया।"

"तो क्या उसका अचार डालने के लिए पसन्द किया है?"

"नहीं पिताजी, वह जानता है कि रेणु गाजर-मूली नहीं है। वह लड़की है और लड़कियों का अचार नहीं डाला जाता। परन्तु....लड़कियों से केवल विवाह ही किया जाता है, ऐसी उसकी धारणा नहीं है। रेणु गाती है, उसका स्वर बहुत ही मधुर है। उसे संगीत का अर्थात् स्वर, ताल, लय का बहुत अच्छा ज्ञान है। सुशील रेणु का संगीत बहुत पसन्द करता है। अब आपने रेणु के विषय में यह बताया है कि वह विवाह के योग्य है। आपने यह भी बताया है कि सरकार बाबू सुशीलकुमार को इस प्रकार सम्मानित करना चाहते हैं। अब वह रेणु को इस दृष्टि से देखकर बताएगा कि वह विवाह से उत्पन्न उसके प्रति उत्तरदायित्व को पसन्द करता है अथवा नहीं।"

"कब तक बताएगा?"

"यूँ तो आप जब भी कहें कुछ-न-कुछ उत्तर तो वह दे ही सकता है, परन्तु यह उत्तर भली-भाँति विचार किया हुआ नहीं होगा। पीछे यह उत्तर ग़लत भी सिद्ध हो सकता है। आप लोग उसको इस विषय पर इस ढंग से विचार करने का अवसर दीजिए। उसके मन की भावना आपको यथासमय विदित हो जायगी।"

"देखो सुशील, रेणु मुझको बहुत पसन्द है।"

"यह आपकी पसन्द भी विचारणीय सिफ़ारिश है, परन्तु मैं तो यही पूछूँगा कि आपने उसको लड़की मानकर पसन्द किया है अथवा पतोहू मानकर?"

"कैसी गधों की-सी बातें करते हो? क्या लड़की बनाने के लिए भी पसन्द करने की गुंजाइश होती है? वह तो भगवान् जैसी दे, वैसी ही स्वीकार करनी होती है। पतोहू ही तो पसन्द कर, ली जाती है।"

"यदि आप आज्ञा देते हैं तो मैं आपकी पसन्द को स्वीकार कर लेता हूँ। यदि आप मेरी प्रार्थना मानें तो मैं अपने मन में निर्णय करने के लिए कुछ समय माँगूँगा।"

पच्चीस वर्ष के युवा पुत्र को इस प्रकार विनीत प्रार्थना करते देख नीलरत्न का मुख बन्द हो गया। उसने कहा, "मैं समझता हूँ कि इसको समय मिलना चाहिए। क्यों सरकार बाबू?"

"जी, ठीक है। यह निश्चय करने में इनको परस्पर मिलने-जुलने का अवसर मिलना चाहिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह मैं उत्पन्न कर लूँगा।"

"ठीक है। मुझको भी इसमें सहायता करने दो, सुशील!" सरकार ने कहा।

"हाँ-हाँ, मुझको क्या आपत्ति हो सकती है?"

"तो बताओ। किस दिन हमारे यहाँ चाय पर आओगे?"

"मेरी सायंकाल की ड्यूटी सप्ताह में दो बार होती है। बुधवार और शनिवार, इन दो दिनों को छोड़कर जब भी आपको सुविधा हो।"

बात तय हो गई। अगले रविवार सायं चार बजे का निमन्त्रण सुशीलकुमार को मिल गया। जब मनमोहन सरकार और उसकी धर्मपत्नी तथा उनकी लड़की रेणु चले गए तो सुशीलकुमार ने अपने पिता से कहा, "बाबा, मैंने रेणु से विवाह के विषय में अभी विचार ही नहीं किया।"

"तो किसी अन्य के विषय में कभी विचार किया है?"

"हाँ बाबा, परन्तु यह विचार कर कि अभी तो मैं कुछ भी नहीं कमाता, मैंने उससे प्रस्ताव नहीं किया। मेरा विचार है कि मुझको अपनी प्रैक्टिस जमा लेनी चाहिए और पीछे विवाह के विषय में बातचीत करनी चाहिए।"

"और यदि तुमको प्रैक्टिस जमाते दस वर्ष लग गए तो? तब तक तो तुम्हारी चिड़िया को कोई बाज उड़ाकर ले जायगा। दूसरे, तुम बूढ़े हो जाओगे, तब विवाह कराकर क्या करोगे?"

"देखो, मेरा सुझाव यह है कि विवाह पहले कराओ और प्रैक्टिस धीरे-धीरे जमती रहेगी। इतना ध्यान रखना चाहिए कि पत्नी में अनुकूलन-शक्ति हो। तुम ग़रीब हो तो वह ग़रीब बनकर रह सके। भाग्य से तुम्हारे पास धन आ जाय तो वह धन के भार को सह सके।"

"धन्यवाद बाबा! मैं अब आपके सुझाव के अनुसार ही खोज करूँगा।"

"हाँ, इसी विचार से मैंने रेणु की खोज की है।"

:८:

परन्तु इसी विचार से सुशील ने रेणु को अस्वीकार कर दिया। रविवार के दिन सुशील मनमोहन बाबू के घर गया और उसका स्वागत वहाँ बहुत ही सज-धज के साथ किया गया। रेणु भी रेशमी वस्त्र, जिन पर जरी का काम हो रहा था, पहने और भूषणों से सजी-धजी उसकी प्रतीक्षा में बैठी थी। सुशील का रेणु से पूर्व का परिचय था, इस कारण दोनों जब समीप-समीप बैठे तो परस्पर निस्संकोच भाव से बातें करने लगे। रेणु कुछ तो कपड़ों और भूषणों से लदी होने के कारण और कुछ इस विचार के प्रभाव से कि सुशील उसको पसन्द करने आया है, चंचलता अनुभव कर रही थी, परन्तु जब सुशील ने बात आरम्भ कर दी तो उसका भय मिट गया। सुशील ने पूछा, "रेणु, यह आज इतनी सज-धज के साथ कहाँ जाने की तैयारी है?"

"कहीं भी तो नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो घर के सब भूषण तुम्हीं ने क्यों पहन लिये हैं ?"

"हमारे घर में यही सब नहीं हैं। ये केवल मेरे हैं, इसी कारण मैंने पहने हैं।"

"परन्तु पहले तो तुम घर पर इस प्रकार सजकर नहीं बैठती थीं ?"

"आज कुछ विशेष बात है।"

"मैं आज की विशेषता समझता हूँ, परन्तु ये तुमने स्वयं पहने हैं या तुम्हारी माता ने पहनाए हैं ?"

"मैंने स्वयं पहने हैं। मेरी माता ने तो केवल यह कहा था कि जब मेरा विवाह होगा तो मेरे पिता मुझको दस हज़ार रुपया देंगे। इतना ही मेरे पति को मिलेगा। यदि मेरे पति कोई कारोबार चलाना चाहेंगे तो वे उसमें भी सहायता देंगे।"

सुशील इतने धन-सम्पद् के प्रदर्शन पर चकित रह गया। उसने मन-ही-मन अनुमान लगाया कि रेणु को विवाहने के लिए उसके पिता पचास हज़ार तक व्यय करेंगे।

सुशील के मन में इस बात की प्रतिक्रिया उससे सर्वथा भिन्न हुई, जिसका अनुमान रेणु के माता-पिता करते थे। उसको रेणु के माता-पिता सर्वथा फूहड़ प्रतीत हुए। इसके अतिरिक्त रेणु अभी सर्वथा बालिका ही प्रतीत हुई। इस पर उसने अपने भाव रेणु को बता देने उचित समझे। उसने कहा, "बहुत भाग्यशाली होगा तुम्हारा पति। मैं उसको बधाई दूँगा।"

रेणु मुस्कराई और बोली, "इसका अर्थ यह हुआ कि आपको इतना दहेज पसन्द है ?"

"नापसन्द किसको हो सकता है! किसी को कुबेर का कोष मिलता हो तो वह इन्कार नहीं कर सकता। इस पर भी विवाह तो कोष के आधार पर नहीं किया जा सकता। यह धन-दौलत बहुत-कुछ होने पर भी कुछ नहीं है। विवाह में सबसे आवश्यक वस्तु तो लड़का और लड़की होते हैं। ये देना-लेना उनके मुकाबले गौण है।"

"साथ ही जब इतना कुछ आना हो तो उसके रखने के लिए स्थान और साधन भी तो होने चाहिए।"

"तो मैं पिताजी को कहकर एक सेफ़ भी साथ ले लूँगी।"

"तब तो बोझा और अधिक हो जायगा।"

"तो फिर क्या किया जाय ?" रेणु ने अभिप्राय नहीं समझा।

"देखो रेणु, मैं तुमको देखने आया था, तुम्हारे भूषणों को नहीं। तुमने अपना बहुत-कुछ इन भूषणों के पीछे छिपा लिया है। इससे बहुत कठिनाई हो रही है।"

चाय के साथ खाने के लिए भी बहुत बढ़िया सामान था। चाय के पश्चात् सरकार बाबू और उनकी पत्नी ने ऐसा अवसर उत्पन्न कर दिया कि रेणु और सुशील दोनों एक कमरे में अकेले रह गए। रेणु ने कहा, "हम पिछले रविवार आपके घर गए थे।"

"मुझको विदित है। मैं बाहर पिताजी से एक आवश्यक विषय पर परामर्श कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा था।"

"उस समय मैंने ये भूषण और वस्त्र नहीं पहने हुए थे।"

"तो अब क्यों पहने हैं ?"

"इस कारण कि कदाचित् इनमें कुछ अच्छी लग सकूँ।"

"हाँ, कुछ सुन्दर तो लग रही हो। परन्तु मैं तो कुछ और ही देखने आया था।"

"क्या ?"

"तुम्हारे मन का विकास।"

"तो आप मेरी परीक्षा लेंगे ?"

"ले ली है।"

"कितने नम्बर दिए हैं आपने ?"

"परचा घर जाकर देखूँगा।"

"पर परीक्षाफल तो पता चलेगा ? कब तक आशा कर सकती हूँ ?"

इस पर दोनों हँस पड़े। रेणु ने कहा, "परीक्षक तो बहुत ही भयानक जन्तु होते हैं। जब तक स्कूल में पढ़ती रही हूँ, परीक्षकों से डरती रही हूँ।"

"सत्य ही परीक्षक बहुत ही भयंकर प्राणी होते हैं। पर क्या किया जाए ? उनके बिना काम भी तो नहीं चल सकता।"

"पर ये परीक्षाएँ कब तक चलेंगी ? मैं जब स्कूल से निकली थी तो भगवान् का धन्यवाद किया था। समझी थी कि परीक्षाओं से छुट्टी हुई और अब तो बिना पढ़ाई के ही परीक्षा हो रही है।"

उसी रात सुशील के माता-पिता उससे पूछने लगे, "क्या बात हुई है सुशील ?"

"बाबा, चाय और खाने के पदार्थ बहुत बढ़िया थे। कोठी बहुत ही भली-भाँति सजाई गई थी। रेणु भी दस हज़ार से अधिक के भूषणों से लदी थी। इन भूषणों तथा कपड़ों सहित वह मेरे साथ सिनेमा चलने का आग्रह कर रही थी। बहुत मुश्किल से जान छुड़ाकर आया हूँ।"

सुशील का पिता हँस पड़ा और उसकी माता ने कहा, "बेटा, हमारे समुदाय में दहेज की प्रथा जो है। रेणु के माता-पिता ने समझा होगा कि तुम आनाकानी दहेज के कारण कर रहे हो। इसी से उन्होंने यह दिखाने का यत्न किया होगा।"

"ठीक है माँ ! यह एक बहुत ही फूहड़ प्रथा है। एक बात और हुई है। बातों-ही-बातों में रेणु ने बता दिया कि उसके विवाह पर दस हज़ार रुपया उसको और दस हज़ार उसके पति को मिलेगा। साथ ही यदि रेणु का पति कोई कारोबार करना चाहेगा तो उसमें भी उसकी सहायता होगी।"

"मेरा विचार है कि अब तो हमको मान जाना चाहिए।"

सुशील ने आँखें नीची किए हुए कहा, "नहीं माँ ! इन बातों ने मेरे मन पर कुछ अच्छा प्रभाव नहीं बनाया। अभी और विचार करने दो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ९ :

सुशीलकुमार ने नीलमणि से कभी विवाह के विषय में चर्चा नहीं की थी। इधर सरकार बाबू रेणु के लिए ज़ोर देने लगे तो उसका ध्यान नीला की ओर भी गया। इस ध्यान जाने में एक कारण नीला का यह कथन भी था कि वह हरभजनसिंह को किसी प्रकार भी उससे उपमा नहीं देती। उसके मन में अब यह इच्छा होने लगी थी कि नीला से इस विषय पर बात करके देखे।

लगभग तीन मास से वे इकट्ठे हस्पताल में ड्यूटी दे रहे थे और इस काल में वह नीलमणि के आचार-विचार के विषय में बहुत-कुछ जान गया था। यह सब ज्ञान उसको नीलमणि के समीप ही ले जाने वाला सिद्ध हुआ था।

स्वराज्य-प्राप्ति के पश्चात् नगरों की जनसंख्या एकदम बढ़ी थी, परन्तु इस वृद्धि के साथ हस्पतालों और डिस्पेंसरियों में वृद्धि नहीं हुई थी। परिणाम यह हो रहा था कि नगर के सब हस्पतालों तथा डिस्पेंसरियों में रोगियों की भीड़ लगी रहती थी। रोगियों के देखने का समय मध्याह्न बारह बजे तक समाप्त हो जाता था, परन्तु आए हुए रोगियों को देख सकने में प्रायः दो बज जाते थे। कइयों को तो केवल टालने के लिए कुछ भी लिख दिया जाता था।

सुशीलकुमार थक जाया करता था। डॉक्टर भाटिया प्रायः बारह बजे काम सुशील और नीला को सौंपकर चला जाया करता था और नीला सुशील को रोके रखती थी— "ज़रा ठहरिए।" कभी कहती—"बस इनको देख लें तो चलेंगे।" फिर कहती—"ये बेचारे कहाँ जाएँगे।" कभी काम बहुत अधिक होने पर कह देती—"दवाई तो सबको मिलनी ही चाहिए।"

सुशीलकुमार कभी कह देता, "नीलादेवी, अब तो दिमाग भी थक गया है।"

"हम दोनों के दिमाग में एक जैसा मैटर (पदार्थ) ही तो भरा हुआ है। आप क्यों थक जाते हैं? मैं तो देखिए, अभी तक तरो-ताज़ा हूँ।"

सुशील लज्जित हो, उठकर जाने का साहस नहीं करता था।

इस प्रकार दोनों में घनिष्ठता बढ़ती जाती थी। इस पर भी सुशील को साहस नहीं होता था कि वह विवाह के विषय में बातचीत करे।

रेणु के पिता के घर की घटना के पश्चात् उसने बात चलाने का निश्चय कर लिया। हस्पताल से दोनों निकले तो बाइसिकलें हाथ में पकड़े हुए दोनों सड़क पर चले आए। जब नीला अपनी बाइसिकल पर चढ़ने लगी तो सुशील ने कहा, "नीलादेवी, यदि आज समय हो तो सायंकाल चाय का मेरा निमन्त्रण स्वीकार कर लें।"

"आज क्या बात है?" नीला नित्य से इस विलक्षणता को देख पूछने लगी।

"कुछ विशेष बात तो नहीं। इस पर भी बात यह है कि मैं अब 'सोशल' होने का यत्न कर रहा हूँ।"

"तो कोई और भी वहाँ पर आ रहा है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आज तो केवल आप ही आ रही हैं।"

"तो पहले किसी और को भी निमन्त्रण दे चुके हैं ?"

"दे तो नहीं चुका। हाँ, निमन्त्रण स्वीकार कर चुका हूँ। हमने अब कारोबार करना है और इसके लिए हमको दूसरों से मेल-जोल का अभ्यास डालना चाहिए।"

"तो किसके यहाँ आप निमन्त्रण पा चुके हैं ?"

"कल ही गया था। एक मनमोहन सरकार हैं। उनकी लड़की रेणु का निमन्त्रण था।"

"क्या आप लड़कियों के ही निमन्त्रण स्वीकार करेंगे और उनको ही निमन्त्रण देंगे ?"

"नहीं, यह बात नहीं। इस पर भी मैं यह अनुभव करता हूँ कि स्त्री-वर्ग से मेरा कम सम्पर्क है। इस कारण इस वर्ग से ही मुझको अधिक मेल-जोल उत्पन्न करने की आवश्यकता है।"

नीला ने निमन्त्रण के उत्तर में कहा, "मुझको निमन्त्रण स्वीकार करने में आपत्ति नहीं, पर देख लीजिए आपको मेरी कम्पनी (संगत) कहीं बहुत फीकी प्रतीत न हो।"

इस उत्तर से सुशील को बहुत प्रसन्नता हुई और उसने कहा, "तजरबा करने में क्या हानि हो सकती है ?"

बात तय हो गई। सुशीलकुमार के विचार से वह आधी सफलता पा गया था। इससे वह घर पहुँच चाय का प्रबन्ध करने लगा। जब उसने माँ से कहा, "माँ, आज मेहमान आ रहे हैं, चाय का प्रबन्ध होना चाहिए।"

तो माँ ने पूछा, "कितने मेहमान होंगे ?"

"एक।"

"बस ! तो जो उस समय कहोगे प्रबन्ध हो जायगा। मैं समझी थी कि बहुत लोग होंगे और मेज़-कुर्सी का भी प्रबन्ध करना होगा।"

माँ ने पूछा नहीं कि मेहमान कौन है और सुशील ने बताया नहीं। ठीक पाँच बजे नीला आई और सुशील उसको कोठी के ड्राइंगरूम में ले गया। वहीं चाय का प्रबन्ध था। सुशील ने उसको बिठाते हुए कहा, "मुझको डर लग रहा था कि कहीं आप अस्वीकार न कर दें।"

"डर की क्या बात थी ? मैं नहीं मानती तो कोई और मान जाती।"

"मैंने अपने जीवन का यह कार्यक्रम अभी नया आरम्भ किया है और यदि आरम्भ में ही असफलता मिलती तो बहुत कठिनाई होती। इसके अतिरिक्त परिचितों में चुनाव भी तो एक बात है। यह कोई गाजर-मूली खरीदने की बात तो है नहीं, जो एक नहीं तो दूसरी से भी काम चल सकता है।"

"खैर, अब तो आपको कठिनाई नहीं हुई न ? मैं मेल-जोल को पसन्द करती हूँ, परन्तु वह किसी प्रयोजन-विशेष से नहीं होना चाहिए। मेल-जोल तो स्वयं एक भारी उद्देश्य है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं सोचता हूँ कि आपका परिचय अपनी माँ और बहन से करा दूँ। आप इसको पसन्द करेंगी ?"

"यह तो सौभाग्य की बात होगी।"

सुशील ने आवाज़ दी, "दास ! दास !" एक नौकर आया तो उसने कहा, "देखो, रजनी है तो उसको बुला लाओ। माँ से कहना, एक मेहमान आए हैं, वे चाय के लिए आ जाएँ तो ठीक रहेगा।"

रजनी आई। बंगालियों में गौरवर्णीय लोग बहुत कम होते हैं, इस पर भी उनका अभाव नहीं। रजनी गोरे रंग की और भँवरे समान काले बालों वाली लड़की थी। वह अभी चौदह-पन्द्रह वर्ष की बालिका-मात्र ही थी।

"देखो रजनी !" सुशील ने उससे नीला का परिचय कराया, "यह हैं डॉक्टर नीलमणि। आजकल मेरे साथ हस्पताल में काम कर रही हैं।"

तत्पश्चात् उसने रजनी का परिचय करा दिया। उसने कहा, "नीलादेवी, यह है मेरी बहन रजनी, पिता की लाडली और मेरे साथ लड़ने वाली।"

रजनी ने हाथ जोड़ नमस्कार की तो नीला ने बाँह से पकड़कर उसे अपने समीप सोफा पर बिठा लिया। इस समय सुशील की माँ भी आ गई। सुशील ने खड़े होकर नीला का परिचय कराया। नीला ने हाथ जोड़े तो सुशील की माँ ने उसके सिर पर प्यार देकर कहा, "जुग-जुग जियो बेटी !"

बैठते हुए सुशील की माँ ने कहा, "तुम भी कुछ मूर्ख हो सुशील ! कहते थे कि मेहमान आ रहे हैं। ये मेहमान हैं क्या ? यह नहीं बताया कि एक लड़की आ रही है। लड़कियाँ भी कहीं मेहमान होती हैं ! वे तो जब आती हैं तो घर की लड़की बनकर ही आती हैं।"

नीला को बातचीत का ढंग बहुत पसन्द आया। सुशील की माँ ने बिना पुत्र को मध्यस्थ बनाए सीधा नीला से पूछना आरम्भ कर दिया, "तुम्हारे पिता क्या करते हैं, बेटी ?"

"डॉक्टर हैं, माताजी ! राधाकृष्ण सक्सेना नाम है। नाम तो सुना होगा ?"

"केवल सुना ही नहीं, बल्कि उनसे चिकित्सा भी कराई है। बहुत भाग्यशालिनी हो बेटी ! डॉक्टर बहुत अच्छे आदमी हैं। सुशील के पिता तो उनको बहुत अच्छी तरह से जानते हैं।"

इस प्रकार बातचीत चलती रही और संकोच मिटता गया। डेढ़ घंटे-भर नीला वहाँ रही और इस काल में दोनों को एक-दूसरे के परिवारों का पूर्ण परिचय हो गया।

सुशील के पिता आए तो सुशील की माँ ने आवाज दे बुला लिया, "इधर आइए न ! देखिए, घर पर कौन आया है !"

नीलरत्न ड्राइंगरूम में आया तो सुशील की माँ ने नीला का परिचय दे दिया।

"अच्छा !" विस्मय में नीलरत्न ने कहा। उसने नीला को सम्बोधन करके पूछा, "सुनाओ, डॉक्टर कैसे हैं ? अब तो चिरकाल से उनके यहाँ जाने का अवसर नहीं मिला। सुशील, तुमने बहुत अच्छा किया है, जो नीलादेवी को आमन्त्रित किया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीला का डेढ़ घंटा बहुत ही सुगमता से व्यतीत हुआ। रजनी ने भी बँगला में एक गीत गाया और पीछे उसने वायलिन बजाकर सुनाया।

जब नीला जाने लगी, तो सुशील की माँ ने बहुत ही स्नेह से प्यार दिया और कहा, "बेटी, कभी-कभी ऐसे ही आ जाया करो, बहुत अच्छा लगता है।"

: १० :

जब नीला चली गई तो सुशीलकुमार की माँ ने सुशील को बिठाकर पूछा, "यह कैसे आई थी, बेटा?"

नीलरत्न भी वहाँ बैठा था। सुशील के उत्तर देने से पूर्व उसने कह दिया, "दिखाने के लिए लाया था कि रेणु से यह अच्छी है।"

सुशील अपने मन की बात इस प्रकार प्रकट होती जान लज्जा से लाल हो गया। वह अभी विचार ही कर रहा था कि किस प्रकार बात आरम्भ करे कि सुशील की माँ ने कहा, "यह बंगालिन नहीं है। दूसरे, यह कायस्थ है। तीसरे, उत्तर भारत की रहने वाली है, अतएव हमारे रहन-सहन के ढंग से अपरिचित है। रेणु का स्थान यह नहीं ले सकती।"

"माँ!" सुशीलकुमार ने कहा, "मेरी नीला से विवाह के विषय में कोई बात नहीं हुई। वह मेरे साथ पढ़ती रही है और अब हस्पताल में मेरे साथ काम करती है। इसी नाते इसको चाय का निमन्त्रण दिया था। अब पिताजी के मन में यह विचार आया है तो मैं अपने मन की बात बताता हूँ। वह कायस्थ के घर पैदा होकर भी कर्म से ब्राह्मण है। आज स्वतन्त्र भारत में तो 'कास्टलैस-सोसायटी' (जात-पातरहित समाज) का निर्माण हो रहा है। आचार-विचार इसका बहुत अच्छा है और जो-कुछ हमारे घर की विशेषता है वह रेणु से अधिक सुगमता से यह सीख सकती है।"

"नहीं, सुशील! मैं तो बंगाली लड़की ही लाऊँगी।"

"पर माँ, अभी तो विवाह की बात नहीं चली। यदि इस ओर मेरी रुचि हुई तो विचार कर लेंगे।"

इस पर नीलरत्न ने कहा, "मेरे विचार में लड़की अच्छी है। यदि उससे विवाह कर सको तो कुछ आपत्ति नहीं हो सकती। केवल एक बात है। यदि तुम पढ़े-लिखे युवक उत्तर भारत की गोरी लड़कियों से विवाह करने लगोगे तो बंगाली लड़कियाँ कहाँ जाएँगी? सुशील, अपनी बहन रजनी का भी विचार कर लो।"

"यह समस्या पिताजी, ऐसी नहीं, जिसको एक-आध व्यक्ति सुलझा सके।"

"इसी कारण तो बँगला समाज ने यह व्यवस्था की है कि बंगाली लड़कियों से विवाह किया जाय। विशेष रूप से पढ़े-लिखे और धनी परिवारों के लड़कों को तो अपने बंगाली समुदाय का ध्यान रखना चाहिए। देखो सुशील, इस विषय में अभी हठ नहीं करना चाहिए।"

सुशील अभी नीला के विचारों से परिचित नहीं था, इस कारण वह चुप रहा। यूँ तो वह रेणु और नीला में कोई तुलना नहीं समझता था, परन्तु उसकी माँ ने पूछ लिया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"रेणु के विषय में तुम्हारा क्या विचार है ?"

"रेणु से मेरा विवाह नहीं होगा।"

"क्यों ?"

"रेणु और उसके पिता को धन का अभिमान है। वे धन के आवरण में असली रेणु को छिपाए हुए हैं और मैं नहीं जान सका कि वह क्या है ?"

"तुमको धन नहीं चाहिए क्या ?"

"धन किसको नहीं चाहिए ? परन्तु विचारणीय बात यह है कि कितना धन पाने के लिए कितना आत्म-सम्मान देना पड़ेगा ?"

"आत्म-सम्मान तो उनका जायगा जो लड़की देंगे। तुम्हारा क्या जायगा ?"

"बाबा !" सुशील ने अपने पिता से पूछा, "माँ क्या लाई थीं अपने मायके से ?"

"वह ज़माना दूसरा था। मेरे पिता एक क्लर्क थे, जिनका वेतन साठ रुपए मासिक था। अब तुम्हारे पिता प्रान्त के चीफ़ इञ्जीनियर हैं, जो दो हज़ार रुपए महीना पाते हैं। इसके अतिरिक्त सब जानते हैं कि मैं लाखों का मालिक हूँ। तुम भी मुझसे अधिक पढ़े हो। मैं अपने विवाह के समय स्कूल की दसवीं श्रेणी में पढ़ता था, तुम एम० बी०, बी० एस० हो।"

"फिर भी कितना दिया था हमारे नाना ने ?"

"पाँच सौ लड़की की विदाई के समय और बस कुछ नहीं।"

"इस पर भी हम निर्धन नहीं रहे। बाबा, ससुराल से लेकर कौन धनी बना है ?"

"वह ठीक है, पर जब मिलता है तो क्यों फेंक दिया जाय ?"

"मैं फेंक देने की बात तो कह नहीं रहा। मैं तो कह रहा हूँ कि लेने के बदले कुछ देना भी पड़ेगा। रुपए के लोभ में वह लड़की, जो मुझको पसन्द नहीं है, लेनी पड़ेगी। यह घाटे का सौदा नहीं है क्या ?"

"क्या बात पसन्द नहीं है रेणु में ?" माँ ने पूछा।

"कोई एक बात हो तो बताऊँ। यहाँ तो सब-की-सब बातें घटिया हैं।"

"तो ऐसा करो।" नीलरत्न ने कहा, "कोई अन्य बंगाली लड़की, जिसको तुम अपने योग्य समझते हो, बता दो।"

"यदि कोई मिल गई तो बता दूँगा।"

जीवन में पहली बार सुशील को अपने माता-पिता के विचारों का भास हुआ। इतना तो वह जानता था कि उसके पिता के मन में बंगाली समुदाय के लिए भारी संवेदना है। उन्होंने अपने दफ्तर को बंगाली युवकों से भर रखा था। ठेकों में भी बंगालियों को अन्य स्थान वालों से उपमा मिलती थी। इस पर भी वह समझता था कि विवाह को वे साधारण आर्थिक बातों के स्तर पर नहीं ला रखेंगे। उन जैसा पढ़ा-लिखा व्यक्ति अपने पुत्र पर इस प्रकार के प्रतिबंध लगाएगा, वह विचार भी नहीं कर सकता था।

अगले दिन वह नीला से मिला तो नीला ने उसकी माँ के प्रति अपनी कृतज्ञता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकट की। उसने कहा, "बहुत ही सुहृदय हैं वे। कितना मीठा बोलती हैं! सुशील बाबू, उनसे कहिएगा कि मैं उनकी बहुत कृतज्ञ हूँ।"

"आपने स्वयं ही क्यों नहीं कह दिया?"

"मैं उनको अपने से बड़ा मान मन की बात कहने में झेंप गई थी।"

"जानती हैं कि उन्होंने आपके मेरे निमन्त्रण को स्वीकार करने का क्या अर्थ समझा था?"

"क्या?"

"वे समझी थीं कि यह निमन्त्रण देकर मैं आपके सामने विवाह का प्रस्ताव रख रहा हूँ और आप इसको अस्वीकार नहीं कर रहीं।"

"इसी कारण उनका व्यवहार इतना मधुर और स्नेहमय था क्या?"

"यह बात नहीं नीला! मैंने निमन्त्रण इस विचार से नहीं दिया था और मैं जानता हूँ कि आपके मन में भी इस विषय में कोई विचार नहीं था। यह बात मैंने भरसक अपनी माँ के मन पर अंकित करने का यत्न किया भी है। परन्तु वे मेरे कथन को सत्य नहीं मानतीं और ज्यूँ-ज्यूँ मैं इस बात से इन्कार करता हूँ, वे मेरे पर विश्वास न कर मुझको इस सम्बन्ध से मना करती हैं।"

"अर्थात् वे मेरा आपके साथ विवाह पसन्द नहीं करतीं।"

"बिल्कुल नहीं।"

"तब भी उनका व्यवहार इतना स्नेहमय था?"

"यह तो उनका स्वभाव है। इस पर भी मैं चाहता हूँ कि आप कभी मुझको और साथ में उनको चाय पर निमन्त्रण दें और मैं देखना चाहता हूँ कि अब इस पूर्ण घटना के पश्चात् उनका व्यवहार कैसा रहता है?"

"सुशील बाबू, बड़ों को परीक्षा में डालना मुझको भला प्रतीत नहीं होता। अभी तक उनका चित्र मेरे मन में बहुत अच्छा बना हुआ है। मैं उसको बिगाड़ना नहीं चाहती। वह बना रहे तो हानि क्या है?"

"हानि केवल यह है कि माँ के विचारों का ज्ञान, जो मैं प्राप्त करना चाहता हूँ, नहीं कर सकूँगा।"

"बुद्धिमान लोग तो एक ही बात से पूर्ण बात का ज्ञान पा जाते हैं। आपको माताजी की इतनी बात से समझ जाना चाहिए कि वे आपका मेरे साथ विवाह पसन्द नहीं करतीं। मैं समझ रही हूँ कि वे ठीक ही कर रही हैं और उन्होंने आपको सचेत कर दिया है।"

"तो इसका अर्थ यह है कि आप हमको कभी निमन्त्रण नहीं देंगी?"

"निमन्त्रण की बात सर्वथा पृथक् है। इसका विवाह से, अथवा विवाह के विषय में आपकी माताजी के विचार जानने से, कोई सम्बन्ध नहीं। मैं आपकी माताजी की, किसी विषय में परीक्षा लेने के लिए निमन्त्रण नहीं दूँगी।"

"तो ऐसे ही दे दीजिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"एक शर्त पर कि मेरे विवाह की चर्चा वहाँ पर नहीं होगी।"

"यदि वे करेंगी तो क्या होगा?"

"आप नहीं करना।"

सुशीलकुमार का इस बात की चर्चा करने का उद्देश्य केवल यह था कि नीलमणि को इस दिशा में विचार करने की प्रेरणा मिल सके। वह चाहता था कि उसको पता लग जाय कि ऐसे लोग हैं, जो एक बंगाली युवक को भी उससे विवाह करने की इच्छा करने वाला समझ सकते हैं।

इतना मात्र सुझाव देने के पश्चात् वह शेष के लिए अवसर ढूँढना चाहता था।

: ११ :

एक दिन नीलादेवी का निमन्त्रण सुशील को मिला। निमन्त्रण डॉक्टर राधाकृष्ण की ओर से था। निमन्त्रण था—'मिस्टर एण्ड मिसेज़ डॉक्टर सक्सेना रिक्वैस्ट दि प्लैज़र ऑफ़ मिस्टर एण्ड मिसेज़ भट्टाचार्य विद् फेमिली ऐट ए टी-पार्टी टु सैलिब्रेट दि ट्वन्टी-फोर्थ बर्थडे ऑफ़ देयर डियर डॉटर नीलादेवी, एम० बी०, बी० एस०।'

जब यह निमन्त्रण सुशीलकुमार के पिता को मिला तो उसने सुशील को बुलाकर निमन्त्रण दिखाया। सुशील ने देखते ही पूछा, "तो आप चलेंगे?"

"मेरे लिए इन्कार करना अति कठिन है। डॉक्टर राधाकृष्ण मेरे चिकित्सक हैं। परन्तु मुझको भय है कि यह परिस्थिति तुमने उत्पन्न की है। तुम हमको डॉक्टर की लड़की के साथ अपने विवाह की ओर धकेल रहे हो।"

"बाबा, मैं कैसे धकेल सकता हूँ? आप जैसा उचित समझें, करें। मैं तो उसको अपनी सहपाठिन मान ही यहाँ लाया था। अब उसने निमन्त्रण दिया है तो आप जानें, आपका काम जाने।"

"तुम जा रहे हो या नहीं? तुम्हारी माँ तो नहीं जा रही।"

"क्यों?"

"वे नहीं चाहतीं कि उत्तर भारत की रहने वाली उनकी पतोहू बने।"

"पर इस निमन्त्रण का उसके पतोहू बनने से क्या सम्बन्ध है?"

"यह तुम उनको बता देना। मैं तो जा रहा हूँ। तुम जाओगे अथवा नहीं?"

"मुझको तो पृथक् निमन्त्रण मिला है।"

"तो यह परिवार किसके लिए लिखा है?"

"रजनी को साथ ले जाने के लिए।"

"ओह! अब समझा हूँ। अपनी माँ को तुम मना लो।"

रात के भोजन के समय सुशील ने माँ से पूछा, "माँ, बाबा कहते हैं कि तुम डॉक्टर राधाकृष्ण के निमन्त्रण को अस्वीकार कर रही हो। क्यों?"

"जब हम किसी से मिलते हैं तो मीठी-मीठी बातें तो करनी ही होती हैं और इन मीठी बातों का कोई ग़लत अर्थ लगा सकता है। मैं उसको प्यार दूँगी और वह समझेगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि मैं उसको अपनी बहू बनाने की स्वीकृति दे रही हूँ। मैं यह भ्रम उत्पन्न होने नहीं देना चाहती।"

"माँ, मैंने उसको तुम्हारे और बाबा के विचार बता दिए हैं। मैंने उसको बताया है कि उस दिन के निमन्त्रण पर आने के अर्थ मेरे माता-पिता ऐसा लगाते हैं और मैंने उनकी धारणा को ग़लत बताया है।"

"इस पर उसने क्या कहा था?"

"उसने कुछ उत्तर तो नहीं दिया। और मैं समझता हूँ कि वह आपके विचारों पर विस्मय करती थी।"

"तुमने यह भी बताया था क्या कि हम क्यों उसके साथ तुम्हारा विवाह पसन्द नहीं करते?"

"मुझको यह बताते हुए कि आपने उसको बंगाली न होने के कारण पसन्द नहीं किया, लज्जा लगती है। मैं यह किसी को नहीं कहूँगा।"

"इसमें लज्जा की कौन-सी बात है? घर की सम्पत्ति घर में ही रखना बुरा है क्या?"

"नहीं, यह तो बुरी बात नहीं। बुरी बात है घर को बंगालियों तक सीमित रखना। हम भारतीय हैं। भारत हमारा घर है।"

"और पूर्ण मानव-समाज क्यों नहीं?"

"उसको कॉलोनी कह सकते हैं। एक कॉलोनी में कई घर हैं।"

"मैं तो उसको अपने मन की बात बता दूँगी।"

"तो अपने को उसकी दृष्टि में छोटा बना लोगी।"

"मुझको छोटा बनने में संकोच नहीं होता।"

सुशील की माँ भी दावत पर गई। सुशीलकुमार एक पार्कर पैन भेंट के लिए ले गया। सबसे विस्मयजनक बात यह थी कि नीला के सहपाठियों में से चार-पाँच अन्य विद्यार्थी भी आमन्त्रित थे। हरभजनसिंह और उसकी छोटी बहन अमृतकौर भी आए हुए थे। डॉक्टर भाटिया और डॉक्टर खन्ना भी उपस्थित थे। पचास के लगभग अभ्यागत थे।

नीला के एक ओर सुशील की माँ और दूसरी ओर माधुरी का भाई प्रबोध बैठा था। सुशीलकुमार और हरभजनसिंह साथ-साथ बैठे हुए थे। इनके साथ हरभजनसिंह की बहन अमृत भी थी। यह प्रबन्ध हरभजनसिंह और सुशील दोनों के लिए अरुचिकर था। सुशीलकुमार तो परिस्थिति को समझ अमृत से बातें करने लगा, "किस श्रेणी में पढ़ती हैं आप?"

अमृत ने आँखें नीची किए हुए कहा, "इण्टर में।"

"क्या विषय लिये हैं?"

"इतिहास तथा गणित।"

"गणित कठिन नहीं लगता आपको?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरा प्रिय विषय है।"

"पर गणित पढ़कर क्या करोगी ?"

"मैं तो काम करने के लिए नहीं पढ़ती। मैं पढ़ने के लिए ही पढ़ती हूँ।"

"हाँ, पिताजी ने बहुत कमाया है न! आपको काम करने की क्या आवश्यकता है ?"

"ठीक है। परन्तु मैंने तो विवाह करना है न! फिर काम करने के लिए मुझको चिन्ता करने की क्या आवश्यकता है ?"

"ओह !" सुशील मन-ही-मन अमृतकौर के विचारों को पसन्द कर रहा था। इस पर भी उसने कहा, "कहीं किसी ग़रीब से विवाह हो गया अथवा विवाह के पश्चात् उसका काम छूट गया, तो आप उसकी कुछ सहायता नहीं कर सकेंगी ?"

"सहायता क्या पैसा कमा कर देने से ही होती है ? सैकड़ों उपाय हैं सहायता के।"

"किस स्कूल में पढ़ती थीं आप ?"

"सेंट टॉमस हाई स्कूल में।"

"किस कॉलेज में दाखिल हुई हो ?"

"मनकापुर कॉलेज में।"

"यह सब आपको स्कूल और कॉलेज में पढ़ाया गया है ?"

"स्कूलों और कॉलेजों में ये बातें नहीं बताई जातीं। वहाँ न तो नौकरी करने की बात होती है, न ही ना करने की।"

हरभजनसिंह इस समय नीला की ओर देख रहा था। नीला प्रबोध से घुल-घुलकर बातें कर रही थी। यूँ तो सुशीलकुमार भी बीच-बीच में नीला की ओर देख लेता था, परन्तु उसको अमृतकौर की बातें अधिक रुचिकर लग रही थीं। उसने अमृत को मन की बात बताने में प्रोत्साहित करते हुए कहा, "इस पर भी अमृत देवीजी, पढ़ाई के अतिरिक्त कुछ तो और सीखती ही होंगी ?"

"हाँ, वह तो है ही। मैं बहुत अच्छी रसोई बना सकती हूँ। मैं अच्छे अपटू-डेट फैशन के कपड़े सी सकती हूँ। मैं नर्सिंग की शिक्षा प्राप्त कर रही हूँ। मैं गुरुमुखी पढ़ी हूँ और हिन्दी तथा संस्कृत पढ़ती हूँ। अंग्रेज़ी तो जानती ही हूँ।"

"बहुत अच्छी लड़की हो तुम। मुझको तुम्हारे विचार बहुत पसन्द हैं।"

"आप तो भैया के सहपाठी थे न ?"

"हाँ, अब भी सहपाठी ही हूँ। अभी हम हस्पताल में रोगी देखने का काम सीखते हैं।"

इस समय हरभजनसिंह ने सुशील को सम्बोधन कर कहा, "सुशील, जानते हो वह नीला के साथ कौन बैठा है ?"

"कोई होगा।" सुशील ने नीला के विषय में बात करने में अरुचि प्रकट करते हुए कहा, "मैं तो तुम्हारी बहन से बहुत मज़ेदार बातें कर रहा हूँ।"

हरभजनसिंह का ध्यान अब अमृत की ओर चला गया। उसने पूछा, "अमृत, क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बातें कर रही हो सुशीलजी से ?"

"मेरी पढ़ाई के विषय में पूछ रहे थे।"

सुशील ने बताया, "मैंने कहा था कि आज प्रत्येक लड़की नौकरी अथवा किसी प्रकार की आय करने के लिए पढ़ाई करती है और यह तो गणित पढ़ रही है, इससे क्या होगा ? इस पर इसने बताया है कि यह तो पढ़ाई के लिए ही पढ़ाई कर रही है, कमाई के लिए नहीं। कमाई तो जिससे इसका विवाह होगा, वह करेगा।"

हरभजनसिंह हँस पड़ा। वह कहने लगा, "अमृत की मुझसे भी इस विषय में बातचीत हुई है। इसका कहना है कि यदि विवाह नहीं हुआ तब भी तो मेरे पिताजी की सम्पत्ति में से इसको मेरे बराबर भाग मिलेगा ही। कानून बदल गया है न ?"

"बहुत ही समझदार लड़की है।" सुशील ने कहा।

"हाँ, परन्तु बातें करने में।"

"तो क्या पढ़ने में नहीं ?"

"पढ़ाई की बात मैं नहीं कर रहा। मैं तो इसके कपड़ों की बात कह रहा हूँ।"

"क्या है इसके कपड़ों को ?"

"हमारी कम्युनिटी में ये फैशन में नहीं माने जाते।"

"परन्तु यह जानती तो बहुत-कुछ है।"

"हाँ, यह पढ़ाई-लिखाई के अतिरिक्त नृत्य और संगीत भी सीखती है।"

"तब तो सोने पर सुहागा है। हमारे समुदाय में तो कोई भी लड़की सभ्य नहीं समझी जाती, जब तक वह इन दो कलाओं में कुछ-न-कुछ ज्ञान न प्राप्त कर ले। हमारे पिताजी जीवन-भर नौकरी करते रहने से नौकरी की बहुत महिमा मानते हैं। मेरे लिए भी वे किसी हस्पताल में काम ढूँढ रहे हैं।"

अब अमृत ने बीच में बात काटकर कहा, "मेरी इच्छा है कि बंगाली समाज में कभी संगीत इत्यादि का कार्यक्रम हो, तो देखूँ।"

"यह तो बहुत ही साधारण-सी बात है। मैं इसका प्रबन्ध कर दूँगा। मेरी बहन रजनी को जानती हो ?"

"आपके साथ आते तो देखा था, परन्तु आपने परिचय नहीं कराया।"

"वह देखो, नीलादेवी के समीप बैठी हुई है।"

अमृत ने देखा और कहा, "तो चलिए, उससे मिल लें।"

हरभजनसिंह तो पहले ही नीला के पास चला गया था। ये भी वहाँ जा पहुँचे।

जब ये गए तो हरभजनसिंह नीला को एक जोड़ी सोने के टॉप्स भेंट कर रहा था, "मैं आपको इस शुभ अवसर पर बधाई देने आया हूँ और देखिए, मैं समझता हूँ कि आपको अस्वीकार नहीं होने चाहिएँ।"

"ओह, ये तो बहुत कीमती प्रतीत होते हैं ! आपने इतना कष्ट क्यों किया ?"

"आपने इसको स्वीकार कर लिया, अतएव कष्ट मिट गया है। मुझको भय था कि कहीं आप अस्वीकार न कर दें।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वैसे तो मैं समझती हूँ कि इतनी कीमती वस्तु हमको नहीं लेनी चाहिए। कीमती भेंट से ही स्नेह प्रकट होता हो, मैं ऐसा नहीं मानती। इस पर भी जब आप लोग ये लाए हैं तो इन्कार करना तो और भी बुरी बात है।"

"आप देखेंगे क्या कि मुझको किस-किसने क्या-क्या भेंट दी है?"

इस समय सुशील ने भी पार्कर पेन, जो वह भेंट देने के लिए लाया था, निकालकर नीलादेवी के सामने रख दिया। नीला ने पेन लेकर मुस्कराते हुए कहा, "तो आइए, दिखाऊँ।"

अब नीला हरभजनसिंह और सुशीलकुमार के साथ चली तो अमृत, जो सुशील के साथ वहाँ आई थी और रजनी, जो नीला के पास बैठी थी, भी साथ-साथ चल पड़ीं। इन सबको एक ओर जाते देख पार्टी पर अन्य आए हुए व्यक्ति भी इस ओर देखने लगे। एक कोने में एक मेज़ पर वे सब वस्तुएँ, जो नीला को भेंट में मिली थीं, रखी थीं। ये सब वहाँ गए तो सुशील को उन सब कीमती वस्तुओं को देखकर आश्चर्य हुआ। वास्तव में डॉक्टर साहब की अपनी ख्याति और दूसरों से सम्बन्ध के कारण ही इतनी भेंट की वस्तुएँ आई थीं।

: १२ :

सुशील की माँ उठकर सुशील के पिता के पास चली गई थी। वहाँ डॉक्टर राधाकृष्ण उससे बातें कर रहा था। सुशील का पिता डॉक्टर राधाकृष्ण से सुशील के विषय में बता रहा था। उसने बताया था कि नगर में डॉक्टरों की इतनी भरमार हो गई है कि किसी नए चिकित्सक के लिए काम स्थापित करना अति कठिन हो रहा है। इस कारण उसने सुशील को किसी हस्पताल में नौकरी कराने का विचार किया है। डॉक्टर राधाकृष्ण का विचार था कि हस्पतालों में साधन सुविधा से मिल सकते हैं। इस कारण डॉक्टरी चिकित्सा, जो साधनों के बिना चल ही नहीं सकती, हस्पतालों में ही ठीक चल सकती है।

"तो आप मेरे विचार को पसन्द करते हैं न?" बाबू नीलरत्न ने पूछा।

"अच्छे विचार हैं। इस पर भी सब-के-सब पास करने वाले लड़के तो हस्पतालों में काम पा नहीं सकते। बहुतों को तो अपनी प्रैक्टिस किसी नगर अथवा गाँव में चलानी ही होगी।"

"मैं समझता हूँ कि नौकरी प्रथम चुनाव होना चाहिए। इसके न मिल सकने पर किसी नगर में काम खोलना पड़ेगा, और किसी नगर में भी काम न बन सकने पर ही किसी गाँव का विचार किया जा सकता है।"

"किसी डॉक्टरी कॉलेज में पढ़कर, जहाँ दो-ढाई सौ रुपए मास का खर्चा हो, कौन किसी गाँव में जाकर काम करेगा?"

"वे जाएँगे, जो न नौकरी पा सकेंगे और न ही किसी नगर में अपना काम जमा सकेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुशील की माँ, जो समीप बैठी ये बातें सुन रही थी, कहने लगी, "डॉक्टर साहब, अब सुशील की सगाई बाबू मनमोहन सरकार की लड़की के साथ हो रही है। सरकार बाबू भी यह पसन्द नहीं करते कि उनका दामाद लखनऊ से कहीं बाहर जाय। लखनऊ में तो किसी हस्पताल में नौकरी ही करनी पड़ेगी। कुछ साल तक नौकरी कर अपना काम किया जा सकेगा।"

सुशील की माँ का विचार था कि उसको यह बात नीला के माता-पिता को बता देनी चाहिए कि सुशील का विवाह सरकार बाबू की लड़की से हो रहा है।

दूसरी ओर हरभजनसिंह को इतनी भेंट में आई वस्तुओं को देखकर यह सन्देह हो गया कि भेंट देने वाले सब लोग नीला से विवाह के इच्छुक हैं। आज उसको यह जानकर बहुत ही अचम्भा हुआ कि सुशील भी नीला की इच्छा करने वालों में एक है।

वह अभी यह देख ही रहा था कि नीला के पिता एक अन्य युवक को साथ लिये हुए वहाँ आ गए। उसने नीला को पुकारकर कहा, "नीला, यह देखो, ये तुम्हारे लिए क्या लाए हैं।"

यह एक ओवरकोट था—बहुत बढ़िया ऊनी कपड़े का। गले पर लोमड़ी की खाल का कॉलर बना था और कोट के किनारों पर किसी अन्य जानवर की खाल लगी थी।

नीला इस भेंट के लाने वाले की ओर प्रश्न-भरी दृष्टि से देख रही थी। डॉक्टर राधाकृष्ण उसके देखने का अर्थ समझ कहने लगा, "तुमने इसको पहचाना नहीं। मेरे मित्र श्रीचरण को तो जानती हो न! ये उनके सुपुत्र रामचरण हैं। आजकल काश्मीर में फॉरेस्ट रेंजर लगे हुए हैं।"

"ओह, अब पहचान गई हूँ! बहुत काल के पश्चात् भेंट हुई है न! मैं पाँचवीं श्रेणी में थी, जब आपको अन्तिम बार देखा था।"

इस बार उस युवक ने कहा, "शुक्र है, याद तो आया। बारह वर्ष हो गए हैं। एक युग बदल गया है। तीन फुट की नीला पाँच फुट छः इंच की हो गई है। राम के कन्धे पर चढ़कर कूदने वाली नीला अब डॉक्टरनी बन गई है।"

"और आप भी तो अब अफ़सर बन गए हैं।"

"हाँ, जंगलों की मिट्टी छानने के लिए।"

डॉक्टर राधाकृष्ण ने सबको एक मेज़ पर आमन्त्रित कर लिया और चाय पीने का आग्रह किया। चाय तो सब पी चुके थे, परन्तु जब नीला बनाने लगी तो एक-एक प्याला और लेने पर राज़ी हो गए।

: १३ :

हरभजनसिंह को ऐसा समझ आया कि नीला से विवाह करने के लिए कई उम्मीदवार हैं। इस पर भी वह अपने मन में यह विचार कर कि वह लखपति का लड़का है, एम० बी०, बी० एस० की परीक्षा में प्रथम रहा है, साथ ही सर्जरी में विशेषज्ञ होने जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुशील की माँ, जो समीप बैठी ये बातें सुन रही थी, कहने लगी, "डॉक्टर साहब, अब सुशील की सगाई बाबू मनमोहन सरकार की लड़की के साथ हो रही है। सरकार बाबू भी यह पसन्द नहीं करते कि उनका दामाद लखनऊ से कहीं बाहर जाय। लखनऊ में तो किसी हस्पताल में नौकरी ही करनी पड़ेगी। कुछ साल तक नौकरी कर अपना काम किया जा सकेगा।"

सुशील की माँ का विचार था कि उसको यह बात नीला के माता-पिता को बता देनी चाहिए कि सुशील का विवाह सरकार बाबू की लड़की से हो रहा है।

दूसरी ओर हरभजनसिंह को इतनी भेंट में आई वस्तुओं को देखकर यह सन्देह हो गया कि भेंट देने वाले सब लोग नीला से विवाह के इच्छुक हैं। आज उसको यह जानकर बहुत ही अचम्भा हुआ कि सुशील भी नीला की इच्छा करने वालों में एक है।

वह अभी यह देख ही रहा था कि नीला के पिता एक अन्य युवक को साथ लिये हुए वहाँ आ गए। उसने नीला को पुकारकर कहा, "नीला, यह देखो, ये तुम्हारे लिए क्या लाए हैं।"

यह एक ओवरकोट था—बहुत बढ़िया ऊनी कपड़े का। गले पर लोमड़ी की खाल का कॉलर बना था और कोट के किनारों पर किसी अन्य जानवर की खाल लगी थी।

नीला इस भेंट के लाने वाले की ओर प्रश्न-भरी दृष्टि से देख रही थी। डॉक्टर राधाकृष्ण उसके देखने का अर्थ समझ कहने लगा, "तुमने इसको पहचाना नहीं। मेरे मित्र श्रीचरण को तो जानती हो न! ये उनके सुपुत्र रामचरण हैं। आजकल काश्मीर में फॉरेस्ट रेंजर लगे हुए हैं।"

"ओह, अब पहचान गई हूँ! बहुत काल के पश्चात् भेंट हुई है न! मैं पाँचवीं श्रेणी में थी, जब आपको अन्तिम बार देखा था।"

इस बार उस युवक ने कहा, "शुक्र है, याद तो आया। बारह वर्ष हो गए हैं। एक युग बदल गया है। तीन फुट की नीला पाँच फुट छः इंच की हो गई है। राम के कन्धे पर चढ़कर कूदने वाली नीला अब डॉक्टरनी बन गई है।"

"और आप भी तो अब अफ़सर बन गए हैं।"

"हाँ, जंगलों की मिट्टी छानने के लिए।"

डॉक्टर राधाकृष्ण ने सबको एक मेज़ पर आमन्त्रित कर लिया और चाय पीने का आग्रह किया। चाय तो सब पी चुके थे, परन्तु जब नीला बनाने लगी तो एक-एक प्याला और लेने पर राज़ी हो गए।

: १३ :

हरभजनसिंह को ऐसा समझ आया कि नीला से विवाह करने के लिए कई उम्मीदवार हैं। इस पर भी वह अपने मन में यह विचार कर कि वह लखपति का लड़का है, एम० बी०, बी० एस० की परीक्षा में प्रथम रहा है, साथ ही सर्जरी में विशेषज्ञ होने जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा है, वह अपने को अन्य सब उम्मीदवारों से श्रेष्ठ मानता था। वह समझता था कि यदि नीला में कुछ भी बुद्धि है, तो उसके चुनाव में तो उसी को आना चाहिए।

वह अपनी तुलना प्रबोध, सुशील और इस नव-आगन्तुक से करता था और अपने को किसी प्रकार भी कम नहीं पाता था। उसको कुछ यह समझ आया कि नीला के पिता ने यह जन्म-दिन का समारोह नीला को अपना पति चुनने का अवसर देने के लिए किया है। इस कारण वह कुछ ऐसा अवसर ढूँढ रहा था कि नीला से पृथक् में बात कर सके। वह अवसर समारोह में नहीं मिल सका। इस पर भी हरभजनसिंह जैसा दृढ़ विचार वाला व्यक्ति बिना अपने उद्देश्य में कुछ भी प्रयत्न किए वहाँ से जा नहीं सका। उसने लड़की से बात न कर सकने पर लड़की के पिता से ही बात कर दी। उसने डॉक्टर राधाकृष्ण को अकेले पा समीप जाकर कहा, "डॉक्टर साहब, आपका आज का समारोह बहुत ही सफल हुआ है। मैं इस पर आपको बधाई देता हूँ।"

"हाँ, पर इसका श्रेय आप जैसे सज्जनों को ही है। आप मेरे निमन्त्रण पर अपना अमूल्य समय देकर आए और लड़की को स्नेह-भरे उपहार दिए, इस कारण मैं आपका भारी कृतज्ञ हूँ। मैं आपका बहुत ही आदर करता हूँ।"

"मैं," हरभजनसिंह ने बात बदलकर कहा, "मैं एक अत्यावश्यक विषय में आपसे बात करना चाहता हूँ।"

"हाँ, कहिए।"

"मैं नीला से विवाह करने का इच्छुक हूँ। मैं जानता हूँ कि वह आपकी इच्छा के विरुद्ध इस विषय में कुछ नहीं कहेगी। अतएव मैं आपसे अपने विषय में कुछ कहना चाहता हूँ।"

"हाँ, कहिए।"

"मेरे पिता की सम्पत्ति इस समय पच्चीस लाख रुपए से ऊपर है और मैं अपने पिता का अकेला लड़का हूँ।

"मैं एम० बी०, बी० एस० में प्रथम रहा हूँ।

"मैं इस समय डॉक्टर रशीद के साथ सर्जरी का अभ्यास करता हूँ।

"मैंने, अपने क्लिनिक के लिए अमीनुद्दौला पार्क में एक बहुत बड़ी दूकान ले ली है।

"मैं नीला से प्रेम करता हूँ और समझता हूँ कि वह इस बात से परिचित है।"

इतना कह वह डॉक्टर राधाकृष्ण का मुख देखने लगा। वह डॉक्टर साहब से कुछ कहे जाने की आशा करता था। डॉक्टर साहब ने उसको चुप देख कहा, "आपने नीला से इस विषय में चर्चा की है क्या?"

"ऐसे ही संकेत-मात्र बात हुई है और उससे कुछ उत्तर नहीं मिला।"

"सरदार हरभजनसिंह, आज चार लड़कों ने मुझको नीला के विषय में कहा है। आप पाँचवें हैं। मैंने जो कुछ उन चारों को कहा है, वही आपको कहता हूँ। मैं आप सबके विषय में उससे कहूँगा। परन्तु निर्णय करना उसका काम है। यदि उसने निर्णय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप तक पहुँचाने का काम मुझको सौंपा, तो आपको यथासमय सूचित कर दूँगा।"

जब हरभजनसिंह को पता चला कि नीला से विवाह करने वाले चार अन्य उम्मीदवार भी हैं, तो उसके पाँव तले से मिट्टी खिसक गई। वह मन में विचार करता था कि वे कौन-कौन हो सकते हैं? उसको अभी तक सन्देह था सुशील, प्रबोध और रामचरण पर। चौथे के विषय में वह कुछ नहीं जानता था। उसने साहस करके पूछा, "क्या उम्मीदवारों के नाम जान सकता हूँ?"

"नाम बताना उचित नहीं। इस पर भी आप सभ्य और सुशील हैं। इस कारण आपके लिए इतना कर सकता हूँ कि यदि आपको किसी पर सन्देह हो तो पूछ सकते हैं कि वह मेरे पास इस प्रयोजन से आया है या नहीं। मैं आपको हाँ अथवा ना में बता दूँगा।"

हरभजनसिंह ने इसको भी सुअवसर समझा। इस कारण उसने पूछा, "क्या एक सुशीलकुमार हैं?"

"नहीं। वे मेरे पास अभी तक नहीं आए। मैं उनसे यह आशा तो करता था, परन्तु उन्होंने मुझसे अभी तक इस विषय में बात नहीं की।"

इससे तो हरभजनसिंह को भारी विस्मय हुआ। इसका अर्थ यह हुआ कि कम-से-कम दो हैं, जो उसके ज्ञान के बाहर हैं। उसने फिर पूछा, "तो क्या एक प्रबोधजी हैं।"

"हाँ, एक वे हैं।"

"दूसरे श्री रामचरण हैं क्या?"

"नहीं, वह तो नीला को बहन मानते हैं।"

"तो फिर और कौन हो सकते हैं?"

"अनुमान लगाओ।"

हरभजनसिंह इससे अधिक अनुमान नहीं लगा सका। इस कारण बात बदलकर उसने पूछा, "कोई भी हो, मैं तो यह समझता हूँ कि आप चाहे नीलादेवी को कितनी भी स्वतन्त्रता दें, वह आपकी सम्मति से ही अपना निर्णय बनाएगी। अतएव आपके सम्मुख मैं अपना निवेदन लेकर आया हूँ। मैं आशा करता हूँ कि आप इस विषय में मेरे अनुकूल सम्मति देंगे।"

"मिस्टर हरभजनसिंह, नीला के विषय में आपका अनुमान ठीक ही प्रतीत होता है। वह मेरी सम्मति माँगेगी और कदाचित् उसको मान्यता भी देगी, परन्तु मुझको अपनी सम्मति बनाने के लिए आपका दिया गया विवरण पर्याप्त प्रतीत नहीं हुआ है।"

"आप आज्ञा करिए। और किस विषय में आप जानना चाहते हैं?"

"देखिए, प्रबोध से इस विषय में मेरी बातचीत हुई है और उससे मैंने पूछा था कि वह नास्तिक है और यदि उसकी पत्नी ने उसके घर में ही किसी देवी-देवता का प्रतिष्ठान कर लिया तो वह क्या करेगा?

"वह इसका उत्तर नहीं दे सका। इस पर मैंने उसको कहा था—प्रबोध बेटा, पहले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने मन को समझाने का प्रयत्न करो। गृहस्थ एक संयुक्त जीवन है। एक से अधिक प्राणियों के इकट्ठे रहने का नाम परिवार है और गृहस्थ तथा परिवार पर्यायवाचक शब्द हैं। इकट्ठे रहने के कुछ नियम हैं। उन नियमों में सहिष्णुता, सुहृदयता और परस्पर अनुकूलन-क्रिया अत्यावश्यक हैं। धन, ख्याति और बुद्धि का विकास तो आते-जाते रहते हैं। इनका गृहस्थ-जीवन से कुछ अधिक सम्बन्ध नहीं है।"

हरभजनसिंह इसका अर्थ समझने में लगा था कि डॉक्टर राधाकृष्ण ने एक प्रश्न कर दिया, "मान लो तुम्हारी पत्नी अपनी सन्तान को केशधारी बनाना नहीं चाहती, तो तुम क्या करोगे?"

यह प्रश्न इतना नग्न था कि हरभजनसिंह को समझने में कठिनाई नहीं हुई। उसने कहा, "डॉक्टर साहब, मैं आपका आशय समझ गया हूँ। इसका उत्तर मैं विचारकर दूँगा। यह प्रश्न केवल मेरे विचारों और भावनाओं से ही सम्बन्ध नहीं रखता, प्रत्युत इसका सम्बन्ध तो मेरे माता-पिता और अन्य सम्बन्धियों से भी है।"

"ठीक है। यह मैंने एक ऐसी बात कही है, जिसकी सम्भावना हो सकती है। इस पर भी विश्वास से नहीं कहा जा सकता कि यह अवश्य होगी ही। इस विचार-स्वातन्त्र्य का प्रकटीकरण किसी अन्य रूप में भी हो सकता है।"

: १४ :

सुशील भी इस चाय पार्टी पर यह विचार कर आया था कि नीला से विवाह के विषय में विचार करेगा, परन्तु उसके विचारों में एकदम परिवर्तन हुआ, जब उसने अमृतकौर को देखा।

उसको अमृत नीला से अधिक सुन्दर और विकसित मन की लड़की प्रतीत हुई। जब वह नीला को अपनी भेंट, एक पार्कर पैन, दे चुका और उसको अन्य लोगों से मिली भेंट की वस्तुएँ देख चुका तो वह पुनः अपने स्थान पर लौट आया। अमृत और रजनी पहले ही वहाँ पहुँच चुकी थीं। हरभजनसिंह डॉक्टर राधाकृष्ण से बातें कर रहा था। जब वह उनके पास पहुँचा तो अमृत ने पूछा, "कितने का खरीदा है यह पैन आपने?"

"यह पचासी रुपए का मिला है। पाँच वर्ष तक वह मेरी सहपाठिन रही है और अब हस्पताल में सहयोगिन है। अब आगे भगवान् जाने कौन किधर जायगा। अतएव मैंने अपनी एक स्मृति उसको देनी उचित समझी।"

"मैंने समझा था कि आप भी नीला से विवाह के उम्मीदवार हैं। भैया ने ममी से कहकर एक बढ़िया टॉप्स का जोड़ा मँगवाया है। वे आज विवाह का प्रस्ताव करने वाले हैं।"

"तुम्हारे भैया ने यह तुमको बताया है क्या?"

"मुझको तो नहीं बताया। वह माँ से कह रहे थे और मैंने सुन लिया था।"

"तुम क्या समझती हो? नीला तुम्हारी भाभी बनने योग्य है क्या?"

"मैं उसको अच्छी तरह नहीं जानती, अभी दूर से ही देखा है। पर जब भैया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसको पसन्द करते हैं, तो ठीक ही होगी।"

"वह तुम जैसी सुन्दर तो है नहीं।"

अमृत का मुख लाल हो गया। इस पर भी उसने हँसकर कहा, "सुन्दर का अर्थ मैं नहीं समझी। वह मुझसे कहीं अधिक पढ़ी-लिखी और लम्बी-ऊँची है। मुझको तो वह बहुत ही भली प्रतीत हो रही है।"

"भली तो वह है ही, पर अमृत, तुम अपने विषय में बहुत कम जानती हो। कारण यह है कि तुम्हारी बुद्धि और मन के विकास का अनुमान लगाने वाला तुम्हारे घर में शायद कोई नहीं।

"मैं चाहता हूँ कि एक दिन वहाँ जाऊँ, जहाँ तुम्हारा नृत्य तथा संगीत हो रहा हो। यदि उसमें भी तुमको वैसे ही पाया, जैसा मैं अपने मन में तुम्हारा चित्र बना बैठा हूँ, तो मैं तुमको एक आदर्श लड़की मानने लगूँगा।"

अमृत की ऐसी प्रशंसा पहले किसी ने भी उसके मुख पर नहीं की थी। यह ठीक था कि उसको नृत्य और संगीत में बहुत रुचि थी और उसको सिखाने वाले कहते थे कि वह इन कलाओं में बहुत उन्नति कर रही है। परन्तु उसका किसी के मन में कुछ चित्र बन गया है और वह बहुत ही सुन्दर और मधुर है, यह बात उसके मन में एक विशेष प्रकार की गुदगुदी उत्पन्न करने वाली थी।

उसने केवल यह कहा, "आप कोई ऐसा अवसर बनाइए, जहाँ मैं आपके समुदाय की कला-प्रवीणता देख सकूँ और जहाँ मैं भी अपनी योग्यता दिखा सकूँ।"

"बहुत ठीक। मैं शीघ्र ही ऐसा कोई प्रबन्ध करने का यत्न करूँगा। हमारी एक नाट्‌य-सभा है। उसके किसी समारोह पर तुमको बुलाऊँगा।"

यह अवसर बहुत शीघ्र आया। नीला के जन्म-दिन के एक मास के भीतर ही बँगला नाटक-मण्डली ने संगीत-समारोह किया। कवि-सम्राट् श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर की पुण्य-स्मृति में यह समारोह किया गया और व्यवसायी तथा अव्यवसायी हर प्रकार के संगीतज्ञों के कला-प्रदर्शन का प्रबन्ध था। बच्चों, युवकों तथा वृद्ध-जनों को भी इसमें भाग लेने का अवसर दिया गया। इसी प्रकार उस समारोह में पुरुष और स्त्रियाँ भी भाग ले रही थीं। बंगाली समुदाय से बाहर के भी एक-दो भाग ले रहे थे और उनमें एक अमृतकौर भी थी।

समारोह का प्रबन्ध गंगाप्रसाद हॉल में किया गया और वहाँ परदे इत्यादि लगाकर सजावट कर दी गई।

अमृत अपने शिक्षक और अपने परिचित तबला बजाने वाले को साथ लाई थी। वाद्यों में वह वीणा बजाती थी। यह पंजाबी समुदाय में एक नवीन बात थी।

कार्यक्रम ऐसा रखा गया था कि बारी-बारी से एक व्यवसायी संगीतज्ञ और तदनन्तर एक अव्यवसायी कला-विज्ञ मंच पर आता था और कला-प्रदर्शन करता था। इसी प्रकार एक बच्चा, एक युवक और एक वृद्ध अपना कार्य दिखाता था। भाग लेने वालों में स्त्रियाँ अधिक थीं। यह भिन्नता दर्शकों में रुचि बनाए रखने के लिए थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुशीलकुमार इस नाटक-मण्डली का, जिसकी ओर से यह समारोह किया जा रहा था, मन्त्री था। वही मंच पर आकर कलाकारों का परिचय दे रहा था। दर्शकों में नीला, प्रबोध, हरभजनसिंह, रामचन्द्र और अन्य कई अबंगाली भी थे। नीला के माता-पिता तथा माधुरी भी आमंत्रित थे। इस प्रकार एक विराट् समारोह का प्रबन्ध किया गया था।

आरम्भ, बन्दे मातरम् के गीत से किया गया। एक दर्जन दस वर्ष से छोटी बालिकाओं द्वारा यह वन्दना अति मधुर स्वर, ताल-लय के साथ गाई गई। इस समय सब दर्शकगण खड़े होकर राष्ट्रीय गान सुनते रहे।

तत्पश्चात् विधिवत् कार्य आरम्भ हुआ। नृत्य-गान और वाद्य-वादन चलता रहा। कार्यक्रम के मध्य में अमृतकौर की बारी आई। उसके वाद्य-वादन, संगीत और नृत्य तीनों कार्यक्रम होने वाले थे। ऐसा प्रतीत होता था कि सुशील ने उसके लिए समय सबसे अधिक विशेष रूप से रखा था। सुशील को भय था कि कहीं उसकी कला, दर्शकों के लिए रोचक न हुई तो भद्द हो जायगी, इस कारण उसने अमृत के मंच पर आने से पूर्व उससे कह दिया, "देखो अमृत, यदि रंग जमा तो तुमको पूरा समय दिया जायगा और यदि श्रोतागण उकताने लगे तो मैं तुमको मंच के किनारे लगी लाल बत्ती जलाकर संकेत कर दूँगा और तुमको शीघ्र ही बन्द कर देना होगा।"

"आप चिन्ता न करें, मैं लाल बत्ती का ध्यान रखूँगी।"

पश्चात् सुशील ने श्रोतागणों को अमृतकौर का परिचय कराया। "नगर के विख्यात उस्ताद सीतापुर वाले तिवारीजी की ये शिष्या हैं। ठाकुरबाबू के लिए मन में श्रद्धा और भक्ति से ही प्रेरित होकर इन्होंने हमारा निमन्त्रण स्वीकार किया है। ये पहले वीणा पर वागेश्वरी बजाएँगी। तदनन्तर हिन्दी में मालकोस सुनाएँगी और पश्चात् अपना नृत्य दिखाएँगी।"

अभी तक सब कार्यक्रम बँगला में ही चल रहा था। वाद्य-यन्त्रों में भी कोई बाँसुरी और कोई बैंजो बजाने वाला ही आया था। नृत्य भी छोटे-छोटे बच्चों के ही हुए थे। इस कारण एक युवती को वीणा लेकर मंच पर आते देख सब दत्त-चित्त हो गए।

अमृत ने वीणा बजाई। ज्यों-ज्यों मीड़ और आलाप निकलते गए, श्रोतागण मन्त्र-मुग्ध की भाँति बैठे सुनते रहे। धीरे-धीरे संगीत की गति बढ़ने लगी। तबले वाले की उँगलियाँ तबले पर नाचने लगीं। झनक-झीं-झनक-झीं की ध्वनि से हॉल विकम्पित होने लगा और श्रोतागणों के सिर झूमने लगे।

वीणा-वादन घोर करतल-ध्वनि में बन्द हुआ। यद्यपि श्रोतागणों का आग्रह था कि एक और धुन बजाई जाय, परन्तु सुशील ने कह दिया, "कार्यक्रम लम्बा होने के कारण यह सम्भव नहीं है।"

अतएव मालकोस के आलाप आरम्भ हुए। आलापों के पश्चात् बोल, बोलतान, तानें हुईं। प्रत्येक बार जब तान सम पर आकर तबले वाले के साथ समाप्त होती तो वाह-वाह से हॉल गूँज उठता।

आधे घंटे के संगीत के पश्चात् अमृत ने उठकर हाथ जोड़ श्रोतागणों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्यवाद किया और कहा, "मैं अपना समय इन दो ही 'आइटमों' पर ले चुकी हूँ, अतएव अब क्षमा चाहती हूँ।" दर्शकों ने शोर मचा दिया, "नृत्य अवश्य हो, नृत्य अवश्य हो।"

इस पर सुशील ने मंच पर आकर कहा, "एक लड़की रजनी ने अपना समय अमृत देवीजी के लिए दे दिया है। अतः मैं उनसे प्रार्थना करता हूँ कि वह अपने नृत्य के कार्यक्रम को न रोकें।"

विवश पाँव में घुँघरू बाँधकर अमृत मञ्च पर आ गई और उसका उस्ताद स्वयं तबला बजाने के लिए मंच पर आ बैठा। एक़ साथी वायलिन बजाने लगा। अमृत नाचने लगी।

इस रात अमृत ने अपने पूर्ण यत्न से नृत्य किया। चार घंटे के कार्यक्रम में अमृत का कार्य सबसे लम्बा और प्रशंसनीय रहा।

समारोह के पश्चात् जब अमृत जाने लगी तो सुशील, नीला और अन्य परिचितों ने अमृत को इस सफल कला-प्रदर्शन पर बधाई दी। अमृत बहुत प्रसन्न थी। जब वह हॉल के बाहर निकल हरभजनसिंह के साथ मोटर में सवार होने लगी तो सुशील आ गया और उसने अमृत का बहुत ही धन्यवाद किया। अमृत ने कहा, "मेरी एक लालसा पूरी नहीं हुई। मैं रजनी का संगीत सुनना चाहती थी।"

"वह तो हम तुमको किसी दिन घर पर ही सुनवा देंगे।"

"ज़रूर!"

"हाँ, ज़रूर।"

: १५ :

हरभजनसिंह ने अमृत को इतना अच्छा गाते-बजाते पहले नहीं सुना था। इससे वह विस्मय में पूछने लगा, "आज क्या बात थी अमृत? तुमने बहुत ही अच्छा गाया है?"

वे मोटर में घर जा रहे थे। अमृत ने उत्तर में कहा, "मैंने सुन रखा था कि बंगाली लोग संगीत में बहुत ही प्रवीण होते हैं। इस कारण मैं बहुत अभ्यास करके यहाँ आई थी।"

"तो विशेष तैयारी थी, इस समारोह के लिंए?"

"मैं विचार करती थी कि आपके मित्र सुशील क्या समझेंगे कि पंजाबी भी कलाकार होते हैं अथवा नहीं।"

"तो सुशील को निराश न करने का भी विचार था।"

अमृत को हरभजनसिंह की बातों में कुछ व्यंग्य-सा प्रतीत हुआ, इस कारण उसने बात बदल दी। उसने पूछ लिया, "भैया, नीला का क्या हुआ?"

"नीला का क्या होना था?" हरभजन ने विस्मय में पूछा।

"आपसे सगाई। कुछ निश्चय हुआ?"

"उसने इन्कार कर दिया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बिल्कुल ?"

"हाँ। उसने कहा कि उसने कभी मन में चिन्तन भी नहीं किया था कि उसका विवाह किसी सिख केशधारी से होगा।"

"इसका क्या अभिप्राय ?"

"वह हमारे सम्प्रदाय के लोगों को पक्षपातयुक्त संकुचित विचार के समझती है।"

"तो आपने उसका भ्रम निवारण नहीं किया ?"

"कैसे करता ? वह बात तो सत्य कहती थी। उसने एक घटना बताई और मैं उस घटना का साक्षी हूँ। पिछले वर्ष वैशाखी के दिन गुरुद्वारा में लंगर था। सब संगत को भोज में निमन्त्रण था। प्रभुदयाल की माता, माधुरी और नीला भी लंगर में सेवा-कार्य करने के लिए आई थीं और खाना बनाने वालों का हाथ बँटा रही थीं। उस समय सरदार कर्तारसिंह, गुरुद्वारा के मन्त्री की पत्नी आई और ऊँची आवाज़ में बोली, 'जिन बहनों ने अमृत नहीं छका, वे भोजन बनाने का कार्य न करें।'

"परिणामस्वरूप प्रभुदयाल की माता, माधुरी, नीला और कुछ अन्य हिन्दुओं के घरों से आई स्त्रियाँ काम छोड़ पीछे हट गईं। प्रभुदयाल की माता को भोजन करने को कहा गया, परन्तु नीला और माधुरी उनको लेकर बिना भोजन पाए चली आईं। प्रभुदयाल की माता ने भी इस आदेश को अपमानजनक माना, परन्तु उन्होंने नीला और माधुरी से सौगंध ले ली कि वे घर जाकर किसी को यह बात नहीं बताएँगी।"

इस समय मोटर कोठी पर पहुँच गई थी। मोटर को 'गैरेज' के सामने खड़ी करके भी हरभजनसिंह मोटर से नीचे नहीं उतरा। उसने एक लम्बी साँस खींचकर कहा, "हिंदुओं में भंगी-चमारों के हाथ का नहीं खाया जाता। इस विषय में भी वे बदल रहे हैं, परन्तु हमने अमृत छके हुओं की एक नवीन जाति बना ली है और दूसरों को चूहड़ा-चमार समझने लगे हैं।

"ऐसी अवस्था में नीला ने ठीक ही कहा है कि वह किसी सिख से विवाह नहीं कर सकती।"

"पर आपको कहना चाहिए था कि आप इतने संकुचित विचार के नहीं हैं।"

"कहा था, परंतु उसने कहा, 'हम हिंदुओं ने छुआछूत का विचार त्याग दिया है। परंतु जब तक आप अपनी उदारता का प्रमाण नहीं देते, तब तक कौन आपके कहने का विश्वास करेगा ?' फिर उसने कहा, 'विवाह करने से आप एक लड़की को अपने घर लाते हैं। घर में केवल पति ही तो नहीं होता। पति के संबंधी भी होते हैं और उनके भावों का भी तो ध्यान करना है ही। आपका समाज पाँच ककारों को न रखने वालों को अपने से निकृष्ट समझता है और आपके माता-पिता उस समाज का एक अंग हैं तो फिर आपके विशाल विचारों का कुछ अर्थ नहीं रह जाता।"

अमृत इसको सुन गम्भीर हो गई। हरभजनसिंह ने गाड़ी से उतरकर अमृत के उतरने के लिए गाड़ी का दरवाज़ा खोल दिया। वह विचारों में खोई हुई उतरी और अन्यमनस्क भाव से कोठी में चली गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात-भर उसको नींद नहीं आई। उसको कुछ ऐसा समझ आया कि नीला की कथा सत्य नहीं हो सकती। वह इसकी सचाई जानने के लिए उत्सुक थी। इस कारण वह दिन चढ़ने की प्रतीक्षा करने लगी।

अगले दिन वह अपनी माँ के पास गई और उससे बैशाखी के दिन के लंगर की बात पूछने लगी। उसने वह सब बात, जो हरभजनसिंह ने उसको बताई थी, कहकर पूछा, "क्या यह सच है, मम्मी ?"

"क्यों ?"

"इसी कारण नीला ने भैया से विवाह करने से इन्कार कर दिया है।"

"तो कोई और पंजाबी लड़की मिल जायगी। हरभजनसिंह तो उसके पीछे पागल हो रहा है। क्या लगा हुआ है उसको ?"

"माँ, तो यह बात सत्य थी न ?"

"तो हुआ क्या ? हमारे पंथ में अमृत-पान किए हुओं को श्रेष्ठ मानते हैं।"

"वैसे ही हिन्दुओं में यज्ञोपवीत पहनने वालों को ऊँचा माना जाता है। तो अन्तर क्या हुआ ?"

"पर वे तो छोटी जाति वालों को यज्ञोपवीत देते ही नहीं। हम तो सबको अमृत पीने को देते हैं।"

"अब आर्यसमाजी तो चमारों को भी यज्ञोपवीत देने लगे हैं, पर मम्मी, मैं तो यह पूछती हूँ कि यज्ञोपवीत न पहनने वाले और अमृत न पिए हुए अछूत क्यों हो गए ?"

"हाँ। गुरुद्वारे में उनकी प्रतिष्ठा नहीं हो सकती।"

"तभी नीला ने एक ऊँची जाति वाले से विवाह करने से इन्कार कर दिया है।"

"देखो अमृत," उसकी माँ ने कहा, "दिल्ली के एक प्रसिद्ध प्रोफ़ेसर सरदार निरंजनसिंह ने अपनी लड़की का रिश्ता भेजा है और वे बीस हज़ार रुपया दहेज में देने वाले हैं। सम्पत्ति में चौथा भाग पृथक् मिलेगा।"

अमृत ने कुछ उत्तर नहीं दिया और वहाँ से चली आई। आज जब वह कॉलेज जाने लगी तो हरभजनसिंह से कहने लगी, "भैया, तीस रुपए उधार तो दो।"

"क्या करना है ?"

"चाहिए। महीने की पहली तारीख को खर्चा मिलने पर दे दूँगी।"

हरभजनसिंह ने अपनी मेज़ के दराज़ में से सौ रुपए का एक नोट निकालकर देते हुए कहा, "टूटे हुए नहीं हैं। शेष सायंकाल वापस कर देना।"

आज बुधवार था। हरभजनसिंह को सायंकाल भी हस्पताल जाना था। अमृत का कॉलेज दो बजे ही समाप्त हो जाता था। हरभजनसिंह को रुपयों की आवश्यकता थी। इस कारण वह अमृत के लौटने की प्रतीक्षा करने लगा। जब अमृत चार बजे तक भी नहीं आई तो हरभजनसिंह माँ से बीस रुपए उधार लेकर चला गया। जाते हुए कह गया, "अमृत के पास मेरे सत्तर रुपए हैं। माँ, ये बीस उनमें से ले लेना।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: १६ :

अमृत पाँच बजे के लगभग आई। आते ही वह अपने कमरे में चली गई और वहाँ जाकर दरवाज़ा भीतर से बन्द कर, सिर से कपड़ा उतार शीशे के सामने खड़ी हो, अपने कटे बालों को देखने लगी। बाल काटने वाले ने उस पर लहरें बनाने तथा नीचे कुंडल बनाने के तीस रुपए लिये थे। इसी के लिए वह हरभजनसिंह से रुपए ले गई थी।

अमृत ने अपने को दर्पण में देखा तो उसको समझ आया कि उसका सौन्दर्य दुगुना हो गया है। अपने सौन्दर्य को देखने के साथ-साथ वह सिख रूढ़िवादियों से अपने विद्रोह को स्मरण कर हा-हा कर हँस पड़ी। उसके मस्तिष्क में घर वालों का छटपटाना नृत्य करने लगा और मन-ही-मन वह उस संघर्ष का, जो अब होने वाला था, स्मरण कर गर्व से फूलने लगी। उसके मुख से अनायास ही निकल गया, "बहुत मज़ा रहेगा।"

वह अभी दर्पण में अपने मुख को देख ही रही थी कि किसी ने बाहर से उसके कमरे का दरवाज़ा खटखटाया। वह मन में विचार करती थी कि यदि दरवाज़ा खटखटाने वाली उसकी माँ हो तो बहुत मज़ा रहे। उसका विचार था कि माँ पहले तो नाराज़ होगी, परन्तु वह जल्दी ही मान जायगी।

दरवाज़ा जब कई बार खटखटाया जा चुका तो उसने आराम से सिर पर ओढ़नी की और दरवाज़े की ओर घूमकर पूछा, "कौन ?"

"मैं।" अमृत समझ गई कि माँ है। उसने सिर पर कपड़ा रहने दिया और दरवाज़ा खोल दिया। माँ ने भीतर आते ही पूछा, "क्या कर रही हो अमृत ?"

"आराम कर रही थी मम्मी !"

इतना कह वह पलँग पर बैठ गई। माँ पलँग के पास रखी कुरसी पर बैठ गई। बैठकर उसने कहा, "हरभजन कह गया है कि उसके रुपयों में से बीस रुपए मैं ले लूँ।"

अमृत ने आते ही पर्स अपने सिरहाने के नीचे रख दिया था। घूमकर वह उसको उठाने लगी तो उसके सिर से कपड़ा उतर गया। माँ ने उसके घुँघराले कटे बाल देख लिये। वह 'ओह !' कहकर विस्मित रह गई। अमृत ने पर्स उठा लिया और सीधी हो पर्स में से रुपए निकालने लगी, तो माँ ने एक चपत उसके मुख पर लगाते हुए कहा, "यह सिर कब मुँडाया है ?"

अमृत को चपत लगने की आशा नहीं थी। इस कारण वह एक क्षण तक तो भौंचक्की हो माँ का मुख देखती रह गई, परन्तु तुरन्त ही अपने को सँभालकर बोली, "आज ही कटाए हैं मम्मी ! क्यों, अच्छे नहीं लगे ?"

"नहीं। चुड़ैल लगती हो।"

"बहुत सुन्दर लगती हूँ, माँ !"

"तुम अन्धी हो रही हो। तुमको अपने माता-पिता के अपमान की चिन्ता नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे सम्बन्धी, तुम्हारे पिता और उनके मित्र, यहाँ तक कि नौकर-चाकर भी बातें बनाएँगे। अब तुम गुरुद्वारे में भी नहीं जा सकोगी।"

"इसीलिए तो कटाए हैं। मम्मी, गुरुद्वारा छोड़कर बाहर विशाल संसार में मेरे लिए द्वार खुल गए हैं।"

"चुप, बक-बक बन्द करो।"

"पर हुआ क्या है? मेरे मामा-मौसियाँ तो इसको पसन्द ही करेंगी।"

"मुझको उनसे क्या है?"

"तो मुझसे भी कुछ नहीं रहेगा क्या?"

"अच्छा देखो, कमरे से बाहर नहीं निकलना।" इतना कह वह बीस रुपए ले अमृत के कमरे का दरवाज़ा बाहर से बन्द कर चली गई।

अमृत अभी तक अपने गाल पर चपत की वेदना को चुपचाप सह रही थी। अब माँ के चले जाने पर, वह उठी और दर्पण में मुख देखने लगी। गाल चुन-चुन कर रही थी और लाल हो गई थी। उसने ड्रेसिंग टेबल पर से क्रीम उठाई और उँगली से थोड़ी लेकर लाल हुए गाल पर मलने लगी।

क्रीम लगाने से उसको शान्ति मिली और उसने मुस्कराते हुए अपने प्रतिबिम्ब से कहा, 'देखो अमृत, यह आज़ादी की प्रथम यन्त्रणा है। अभी तो और मुसीबत आने वाली है। धैर्य से सहन करने के लिए तैयार हो जाओ। अन्तिम विजय तुम्हारी होगी।'

इतना कह वह फिर हँस पड़ी। पश्चात् वह मन में यह विचारती हुई कि सुशील अब उसको कैसे पाएगा, पलँग पर लेट गई। उसको स्मरण हो आया कि सुशील ने उसको कहा था, 'नीला तुमसे कम सुन्दर है।' फिर कहा था, 'कदाचित् तुम्हारे शरीर और मन के सौन्दर्य का अनुमान लगाने वाला तुम्हारे घर में कोई नहीं।'

वह मन में विचार करती थी कि अब तो सुशील को उस पर मोहित हो जाना चाहिए। उसका विचार था कि अब वह लखनऊ की एक-दो सर्वश्रेष्ठ सुन्दरियों में गिनी जानी चाहिए।

इस प्रकार के विचारों में मग्न सुशील की मधुर स्मृति में खोई हुई वह सो गई। उसकी नींद तब खुली जब उसके कमरे का द्वार खुला। उसने मुख उठाकर देखा। कमरे में अँधेरा हो रहा था। वह समझी कि वह दो घंटे तक सोई है। हरभजनसिंह ने बिजली का स्विच दबाया तो प्रकाश हो गया। उसने देखा कि हरभजनसिंह के साथ उसके माता-पिता भी हैं। तीनों भीतर आ गए तो उसकी माँ ने दरवाज़ा भीतर से बन्द कर लिया और तीनों उसके पलँग के पास आकर खड़े हो गए।

सरदार वढ़ियामसिंह ने बहुत ही नम्र भाव में कहा, "अमृत, यह तुमने क्या किया है?"

"व्यर्थ की दासता से छुट्टी पाई है, भापाजी!"

हरभजन ने दो कुरसियाँ दीवार के समीप से उठाकर पलँग के समीप रख दीं। एक कुरसी वहाँ पहले ही रखी थी। तीनों कुरसियों पर बैठ गए। अब पिता ने पूछा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"दासता किस बात की थी बेटी ?"

"बालों को कैंची लगाने की मनाही थी। साथ ही इस बात का अभिमान था कि हम पाँच ककारों को रखने वाले न रखने वालों से श्रेष्ठ हैं। यह अभिमान अब हट गया है और अब मैं संसार के अन्य कोटि-कोटि मानवों के बराबर हो गई हूँ।"

"पर हिन्दुस्तान में सब औरतें बाल रखती हैं। यहाँ लम्बे बाल सौन्दर्य का लक्षण समझे जाते हैं।"

"भापाजी, सौन्दर्य की धारणा दिन-प्रतिदिन बदल रही है। आज इतने बालों को ही अच्छा समझा जाता है। जैसे पहनने के कपड़ों में धारणाएँ बदल रही हैं, वैसे ही अन्य शृंगार-प्रसाधनों में भी है।"

"तुमने अमृत भी तो पिया हुआ है ?"

"बाल कट जाने से वह निकल नहीं जायगा।"

"पर उस समय कुछ प्रतिज्ञा भी तो की थी ?"

"हाँ। वह व्यर्थ की प्रतिज्ञा थी। उसका धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं है।"

"परन्तु इसका प्रभाव मुझ पर तो पड़ सकता है।"

"क्या प्रभाव आप पर पड़ सकता है ?"

"मेरी प्रतिष्ठा समाज में कम हो जायगी।"

"क्यों ? आपने क्या किया है ?"

"तुमने प्रतिज्ञा भंग की है और तुम मेरी बेटी हो।"

"मैंने प्रतिज्ञा भंग नहीं की और यदि की है तो उसका उत्तरदायित्व मुझ पर है !"

"पर लोग तो इतनी बात समझ नहीं सकते।"

"जो नासमझ हैं, उनके समाज में आप रहते क्यों हैं ? इस समाज को छोड़ दीजिए। न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।"

"देखो अमृत, तुम अभी नाबालिग़ हो। मैं तुमको आज्ञा देता हूँ कि जब तक तुम्हारे केश फिर लम्बे नहीं हो जाते, तब तक इस कमरे से बाहर तुम कदम नहीं रखो।"

"तो कॉलेज की पढ़ाई ?"

"कुछ ज़रूरत नहीं उसकी।"

"अच्छी बात है, आप बाहर से ताला लगा दीजिए, नहीं तो मैं बाहर चली जाऊँगी और बाज़ार में घूमूँगी।"

"मेरा कहा भी नहीं मानोगी ?"

"कोई समझ की बात हो तो मानूँ। मैं...."

पिता को क्रोध चढ़ आया और उसने भी एक ज़ोर का चाँटा उसके मुख पर दे मारा।

अमृत चाँटे के बल से पलँग पर लोट-पोट हो गई। हरभजनसिंह अपने स्थान से उठ खड़ा हुआ। उसे उठता देख वढ़ियामसिंह ने कहा, "बैठो हरभजनसिंह, मेरी बात अभी समाप्त नहीं हुई।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं समझता हूँ कि हो गई है। आपने इसको पीटा और समझ लिया कि ठीक किया है।"

"नहीं, यह तो कुछ भी नहीं। यदि यह इस कमरे से बाहर गई तो इसकी टाँगें तोड़ डालूँगा।"

इतना कह वह उठ खड़ा हुआ। अमृत ने कुछ पीछे हटकर कहा, "अगर दरवाज़ा बन्द नहीं होगा और कोई रोकने वाला नहीं होगा तो मैं जहाँ मन करेगा, जाऊँगी। चुपचाप अन्दर बैठे रहने का मतलब यह होगा कि मैं अपनी भूल मानती हूँ।"

"दरवाज़ा बन्द कर दूँगा और बाहर पहरा बैठा दूँगा।" इतना कह वढ़ियामसिंह कमरे से बाहर निकल गया।

हरभजनसिंह भी जाने लगा तो उसको रुपयों की याद आ गई। उसने कहा, "अमृत, कुछ रुपए बचे हैं या नहीं?"

"भैया, उस बटुए में रखे हैं, ले लो।"

हरभजनसिंह ने बटुए में से पचास रुपए निकाल लिए और उनको अपनी जेब में रख कमरे से बाहर चला गया। अमृत की माँ पीछे रह गई थी। उसने नम्रता से कहा, "अमृत बेटी, हठ ठीक नहीं होता। पहले तो तुमने भूल की और ऊपर से बहस करती हो?"

"मम्मी, अब जाओगी भी या नहीं?"

"क्यों नहीं?"

"मैं अपने मुख पर सेंक करना चाहती हूँ। तुम जाओ तो करूँ।"

"लाओ, मैं कर दूँ।"

"नहीं। चपत लगाने वाले क्या सेंक करेंगे! तुम जाओ माँ! भापाजी से कह देना कि इस समय तो मेरा मुख सूज गया है। जब ठीक हुआ तो मैं बाहर जाऊँगी। मैं अपनी इच्छा से कैद होना नहीं चाहती। अपने-आप छिपकर बैठने के अर्थ होंगे कि मैं अपनी भूल मान गई हूँ। मुझको अपनी भूल समझ नहीं आई, इस कारण मुझको छिपकर बैठने की आवश्यकता नहीं। जिसको मुझे छिपाकर रखने की आवश्यकता है, वह मुझे ताला लगाकर रखे।"

"लातों के भूत बातों से नहीं मानते। तुमको ताला लगाना ही होगा।" माँ ने भी क्रोध में कह दिया।

इतना कह माँ वहाँ से उठी और कमरे से बाहर चली गई। बाहर दरवाज़े को बन्द कर कुंडा चढ़ा दिया।

: १७ :

अमृत के संगीत और नृत्य ने नीला और प्रबोध के मन पर भी बहुत गहरा प्रभाव उत्पन्न किया। नीला, प्रबोध और माधुरी 'रवि-स्मृति समारोह' से पैदल लौट रहे थे। माधुरी को संगीतादि में कोई विशेष रुचि नहीं थी। वह तो प्रबोध के आग्रह पर ही चली आई थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्ग में प्रबोध ने नीला से कहा, "ऐसा प्रतीत होता है कि हरभजनसिंह का परिवार सभ्य और शिक्षित है। जिस परिवार की लड़की इतना अच्छा गा और नाच सकती है, उसका जीवन-स्तर श्रेष्ठ ही होना चाहिए।"

माधुरी ने कहा, "नाच और गाना तो बाहरी बातें हैं। यह आवश्यक नहीं कि अच्छे गाने वाले श्रेष्ठ विचारों के ही हों।"

नीला ने हँसते हुए कहा, "मैं समझती हूँ कि प्रबोधजी का परिचय अमृत से करा दिया जाय और हो सके तो इस श्रेष्ठ परिवार की लड़की से प्रबोधजी का नाता करा दिया जाय।"

"तो क्या सब श्रेष्ठ लोगों से नाते ही जोड़े जाते हैं?"

"क्या विवाह के लिए अमृत अच्छी लड़की नहीं?"

"यह केवल नाच-गाना देखने से कैसे कह सकता हूँ?"

"इस पर भी इतना तो कहा ही जा सकता है कि उसका परिवार पढ़े-लिखे लोगों का है। प्रबोध भैया, लड़की बहुत अच्छी है। गोरी है, नखशिख भी अच्छे हैं, लम्बी चाल की है। और क्या चाहते हैं आप?"

"मैं चाहता हूँ तुम्हारा सिर। तुम्हारी बातों से तो यह पता चलता है कि आखिर तुम्हारा विवाह हरभजनसिंह से होगा ही।"

"वाह! यह कैसे सिद्ध हो गया?"

"तुम अमृत के विषय में 'कन्वैसिंग' जो कर रही हो। इससे तो यही प्रतीत होता है कि तुम्हारा उस लड़की पर कुछ तो अधिकार हो गया है।"

"वाह जी वाह! यह कैसे सिद्ध हो गया? क्या इञ्जीनियरिंग पढ़ने से मनुष्य युक्तिहीन हो जाता है। किसी दूकान पर रखे सेबों की प्रशंसा करूँ तो क्या मैं दूकान की मालिक हो गई?"

"अच्छा नीला, यह बताओ, तुम मुझसे विवाह के लिए क्यों तैयार नहीं होतीं?"

"बहुत अच्छा समय ढूँढा है बात करने का? वह देखिए, हमारा मकान आ गया है।"

"तो इस बात को करने के लिए कोई मुहूर्त्त निकलवाना चाहिए?"

"इसमें सन्देह ही क्या है? रात के ग्यारह बजे, सड़क पर चलते हुए विवाह की कन्वैसिंग नहीं की जाती।"

"तो कल मैं इस विषय पर बात करने आऊँ?"

"ज्योतिषी से पूछकर आइएगा।"

"मेरे ज्योतिषी तो तुम ही हो?"

"मैंने तो आपके विषय में ज्योतिष लगा रखा है।"

"क्या?"

"इस समय बाज़ार में चलते-चलते तो बताया नहीं जा सकता। किसी ठीक समय आइए तो बता दूँगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगले मध्याह्न के समय प्रबोध नीला के घर जा पहुँचा। नीला के पिता अपने क्लिनिक से लौटे तो प्रबोध को बैठा देख पूछने लगे, "कैसे आए हो, प्रबोध ?"

"नीला ने आज मध्याह्न के भोजन पर बुलाया है।"

"उसके आने में तो अभी एक घंटा है। वह डेढ़ बजे से पहले हस्पताल से नहीं लौटती।"

"तो मैं कुछ जल्दी आ गया हूँ। अब विचार है कि यहीं उसकी प्रतीक्षा करूँ।"

"हाँ-हाँ, मेरा यह अभिप्राय नहीं था कि तुम चले जाओ। मैं तो यह कह रहा था कि यदि बहुत भूख लगी है, तो मेरे साथ ही भोजन कर लो।"

"नहीं जी, कुछ ऐसी जल्दी नहीं। आप भोजन कीजिए।"

वह ड्राइंगरूम में बैठा हुआ एक पुस्तक पढ़ रहा था। डॉक्टर राधाकृष्ण भोजन करने चला गया। भोजन कर विश्राम के लिए वह अपने कमरे में जाकर लेट गया।

डॉक्टर को विश्वास हो रहा था कि नीला ने प्रबोध को जब इस प्रकार आमन्त्रित किया है, तो उसने प्रबोध के विषय में मन में कुछ निश्चय कर लिया प्रतीत होता है। यद्यपि वह प्रबोध को एक प्रकार से निराश कर चुका था, तो भी वह इस सम्बन्ध से प्रसन्न ही था। प्रबोध उसके मित्र का लड़का था और बच्चे भी बाल्यकाल से एक-दूसरे को जानते थे। डॉक्टर राधाकृष्ण प्रबोध को कम-से-कम हरभजनसिंह से अच्छा समझता था।

नीला की माँ आई तो उससे इसी विषय पर बातें होने लगीं। नीला की माँ ने बताया, "जन्मोत्सव के दिन सुशीलकुमार की माँ ने मुझसे नीला के विवाह के विषय में पूछ-गीछ की थी। उसने पूछा था कि नीला की सगाई कहीं की है अथवा नहीं। मैंने जब बताया कि अभी नहीं तो कहने लगी कि नीला बहुत अच्छी लड़की है, बहुत ही प्यारी लगती है। किसी भाग्यशाली के घर ही वह जायगी।

"मैंने समझा कि सुशील के विषय में वह कहने जा रही है, परन्तु उसने सुशील के विषय में बताया कि उन्होंने उसके विषय में सरकार बाबू की लड़की का चुनाव कर रखा है। लड़की गाना बहुत अच्छा गाती है। दसवीं श्रेणी तक पढ़ी है और घर का काम-काज बहुत अच्छा करती है। उसने यह भी बताया कि बंगाली लड़कों की बंगाली लड़कियों से ही पट सकती है। खान-पान, रहन-सहन और मन की भावनाएँ विवाह-सम्बन्ध के लिए समान होनी आवश्यक हैं।

"मुझको कुछ ऐसा समझ आया कि वह मुझको सचेत करने के लिए कह रही है कि नीला सुशील की ओर ध्यान न दे।"

डॉक्टर राधाकृष्ण हँस पड़ा और बोला, "तुम्हारा विचार ठीक ही है। इधर कठिनाई यह है कि नीला के विषय में हम कुछ समझ भी तो नहीं रहे। उसकी रुचि का तो कुछ पता ही नहीं चलता।"

"देखें प्रबोध से वह क्या कहती है। लड़का अच्छा है। पढ़ा-लिखा है। पैसे वाला भी है और कारोबारी परिवार का है। नौकरी करने वालों में उन्नति की एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीमा-सी रहती है। उनको विचारों के एक ढर्रे पर चलने का स्वभाव-सा बन जाता है। परिणाम यह होता है कि उनमें नवीनता लोप हो जाती है।"

डॉक्टर राधाकृष्ण लेटा तो खुर्राटे भरने लगा और नीला की माँ घर के काम में लग गई।

नीला डेढ़ बजे आई और ड्राइंगरूम में प्रबोध को बैठे देखकर रात की बातें स्मरण कर गम्भीर हो गई। उसने पूछा, "आप भोजन करेंगे क्या?"

"इसीलिए तो बैठा हूँ।"

"मैंने समझा था कि किसी ज्योतिषी की प्रेरणा से आए हैं।"

"हाँ, वह भी है; परन्तु पिताजी ने बताया था कि तुम अभी भोजन करने आने वाली हो। मैंने समझा कि एक पन्थ दो काज हो जाएँगे। भोजन करने के लिए घर नहीं जाना पड़ेगा।"

"तो आइए, मुझको तो बहुत भूख लग रही है।"

: १८ :

"देखो नीला!" प्रवोध ने भोजन करते-करते कहा, "मैंने गैरेज ले लिया है और उसमें उचित मशीनरी फिट हो गई है। पेट्रोल का पम्प, हवा भरने की मशीन और ग्राहकों की अन्य सुविधा के प्रबन्ध भी हो गए हैं। अब तो खोलने के लिए कोई अच्छा दिन देख रहा हूँ। काम तो चलेगा ही।

"अब केवल एक काम रह गया है और उसमें तुम्हारी सहायता की आवश्यकता है।"

"किस बात में मेरी सहायता चाहते हैं?"

"अपना घर बनाने में।"

"जहाँ इतना लम्बा कारोबार आपने अपने ही बल पर खोल लिया है, वहाँ घर बनाना कौन बड़ा काम है? किसी ठेकेदार को ठेका दे दीजिए और वह घर बनाकर तैयार कर देगा।"

"नहीं देवीजी! मेरा अभिप्राय दीवारें और छत निर्माण करना नहीं। मेरा प्रयोजन घर-गृहस्थी से है। उसमें मैं तुमको सहयोगिन बनाना चाहता हूँ।"

"हाँ, एक बात स्मरण आ गई है। आप तो समाजवादी हैं न! यह बताइए कि अपने कारखाने में मालिक बनकर रहेंगे अथवा नौकर?"

"यूँ तो समाजवादी समाज की स्थापना करना सरकार का काम है। सरकार ने इस बात की घोषणा भी कर दी है। इस पर भी मैं तो अपने कारखाने में सब काम करने वालों के समान ही अपने को समझना चाहूँगा। मैं ऐसा कर रहा हूँ कि सरमाए का भाग निकालकर शेष सब काम करने वाले कर्मचारियों को बाँट दूँगा।"

"कितना सरमाया लगा रहे हैं?"

"चालीस हज़ार खर्च हो गया है। कुछ और भी होगा। यह पचास हज़ार बिना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूद के पिताजी से मिला है। यह मैं पाँच किश्तों में पिताजी को लौटा देना चाहता हूँ। शेष लाभ सब काम करने वालों का होगा। मैं भी एक काम करने वाले के रूप में ही होऊँगा।"

"तो आप अभी भी इस विचार पर विश्वास रखते हैं कि परिश्रम बिना बुद्धि के हीन नहीं होता?"

"हाँ। मैं अपने कारखाने को एक आदर्श समाजवादी संस्था बनाने जा रहा हूँ।"

"आपको विश्वास है कि आपका यह प्रबन्ध ठीक रहेगा?"

"बिल्कुल।"

"तो मैं आपको बधाई दूँगी, जब आप पिताजी का धन दे सकेंगे।"

"तो तुमको मेरी योजना की सफलता में सन्देह है क्या?"

"हाँ। मैं समझती हूँ कि यह अस्वाभाविक है।"

"नहीं। इसी कारण कदाचित् तुम मुझसे विवाह पसन्द नहीं करतीं?"

"नहीं, यह बात नहीं। आप अपनी तथा अपने पिताजी की सम्पत्ति को जिस भाँति चाहें व्यय करें। मेरा इससे कोई सम्बन्ध नहीं। मैं तो अपनी स्वतन्त्रता के लिए चिन्तित हूँ। मैं चाहती हूँ कि मैं अपने निजी आचार और व्यवहार में पूर्ण रूप से स्वतन्त्र रह सकूँ। मैं बुद्धि की बहुत महत्ता मानती हूँ और मैं एक बुद्धिशील लड़की हूँ।

"सरदार हरभजनसिंह पाँच वर्ष से मेरे पीछे घूम रहे हैं, परन्तु वह सिखिज़्म के अनन्य भक्त हैं। चार-पाँच दिन की बात है, मैंने पूछा था कि क्या वे सिखिज़्म को मानवता से ऊपर समझते हैं? वे इसका अभिप्राय नहीं समझे। मैंने अपने कथन की व्याख्या कर दी और कहा कि आप अमृत पिए हुओं के अतिरिक्त मनुष्य को मनुष्य समझते हैं क्या? मैंने उनको उनके गुरुद्वारे की एक घटना बताई, जिस पर वे निरुत्तर हो गए। मैंने पूछा कि क्या वे अपने गुरुद्वारे को, जहाँ मानव को मानव नहीं समझा जाता, छोड़ने को तैयार हैं? वह उत्तर नहीं दे सके। मैंने उनसे कह दिया कि मैं 'इज़्मों' के कीचड़ में फँसे हुए व्यक्ति से विवाह नहीं कर सकती।

"सुशीलकुमार भी मुझसे विवाह के लिए उत्सुक प्रतीत होते थे। उस दिन उनकी माँ मेरी माताजी से कह गईं कि बंगाली लड़के की बंगाली लड़की से ही पट सकती है। मैं समझती हूँ कि वे भी प्रॉविंश्यलिज़्म में फँसी हुई हैं। सुशील की माँ भी एक प्रकार के 'इज़्म' की बेड़ियों में जकड़ी हैं और इसी कारण वह मुख पर आई बात कह नहीं सकीं।

"एक अन्य हैं। वे कालाकेकर के ज़मींदार के लड़के हैं। पिताजी से चिकित्सा कराते थे। कहीं मुझ पर दृष्टि पड़ गई तो पिताजी से प्रस्ताव कर बैठे। मुझको पता चला कि वे आर्यसमाजी हैं और उन्होंने अपने इलाके में महादेवजी के मन्दिर को मूर्ति-शून्य कर दिया है। जब पिताजी से आज्ञा ले वे मुझसे मिले और विवाह का प्रस्ताव किया, तो मैंने बताया कि मैं तो हनुमानजी की उपासना करती हूँ और इसमें उनको आपत्ति होगी।

"इस पर वे कहने लगे, 'आपत्ति तो है परन्तु इसके लिए झगड़ा नहीं करूँगा।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने कहा, 'झगड़े की बात नहीं। मैं वहाँ हनुमानजी के मन्दिर में पूजा के लिए जाया करूँगी।'

"वे बोले, 'हमारे इलाके में हनुमानजी की कोई मूर्ति नहीं रही।'

'मैं यदि वहाँ एक मन्दिर बनवा लूँ तो?'

'पर आप ऐसा क्यों करेंगी? एक मिट्टी की मूर्ति में कौन विशेषता है?'

'विशेषता तो उनमें है, जिनकी वह मूर्ति है। मूर्ति तो केवल चिह्न-मात्र है।'

'पर क्या उनके पूँछ थी?'

'मैं कैसे कह सकती हूँ कि नहीं थी। मैंने स्वयं तो देखा नहीं उनको।'

'पर मनुष्यों के तो पूँछ होती नहीं।'

'कदाचित् वे मनुष्य नहीं थे। वे क्या थे यह कहना कठिन है। इतना ही कहा जा सकता है कि वे श्रीराम के, जो आर्य संस्कृति की रक्षा के लिए युद्ध कर रहे थे, भक्त, सहायक और सहयोगी थे।'

'मूर्ति-पूजा तो मूर्खता है।' उनका कहना था।

"इस पर मैं चुप रही। एक बार उनका पत्र आया, जिसमें उन्होंने अपने प्रस्ताव का उत्तर माँगा। मैंने उत्तर दे दिया, 'मैं विचार-स्वातन्त्र्य को अपने जीवन से भी अधिक मूल्यवान् मानती हूँ और मेरा पति ही मुझको यह अधिकार नहीं दे सकेगा तो दूसरों से यह स्वतन्त्रता कैसे माँग सकूँगी? मेरा आपसे विवाह नहीं हो सकेगा।'

"अब आप भी मेरे सम्मुख विवाह का प्रस्ताव रखे हुए हैं। आपके आर्थिक आयोजन से मेरा कोई सरोकार नहीं। मैंने तो यह बात इस कारण पूछी थी कि आपके कम्युनिज़्म के विषय में विचारों का पता करूँ। मैं जानना चाहती थी कि वे अभी हैं अथवा मिट गए हैं? मुझको भी 'इज़्मों' से भय लगता है। इस कारण मैं आपके प्रस्ताव का उत्तर अभी हाँ में नहीं दे सकती।"

"परन्तु नीला, कम्युनिज़्म तो इस्लाम, सिख, ईसाई इत्यादि 'इज़्मों' की भाँति नहीं है। यह तो केवल आर्थिक व्यवस्था के लिए है।"

"देखिए प्रबोधजी, 'इज़्म' में विरोधी के लिए असहनशीलता की गन्ध आती है। कम्युनिज़्म में भी वही असहनशीलता विद्यमान् है, जो किसी भी दूसरे 'इज़्म' में है। क्या यह सत्य नहीं कि कम्युनिस्ट अपने विरोधी के नाश के लिए प्रत्येक उपाय क्षम्य समझते हैं?"

"तुम ठीक कहती हो। इसमें कारण है कि सरमायादार भी तो मज़दूरों के नाश के लिए यत्नशील रहता है।"

"मुझको आज से सौ वर्ष पहले की बातों का पता नहीं। मैं तो आज के हिन्दुस्तान की बात जानती हूँ। आज यहाँ तो कोई मज़दूर मारा नहीं जा रहा। मज़दूरों के अधिकार कानून से निश्चित किए जा चुके हैं। इस अवस्था में तो वर्ग-युद्ध और वर्ग-घृणा की आवश्यकता नहीं रही।"

"कानून अभी सन्तोषजनक नहीं हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो इनको सन्तोषजनक बनाने के लिए यत्न किया जा सकता है। परन्तु सरमायादारी स्वयं तो अवाञ्छनीय नहीं हो सकती। बिना सरमाया के काम भी तो नहीं चल सकता न ?"

"यही तो मतभेद की बात है। सरमाया एक स्थान पर एकत्रित हो जाने मात्र से ही कर्मचारियों पर अन्याय होने लगता है।"

"पर बिना सरमाए के काम भी तो नहीं चल सकता। कम्युनिस्टों को भी तो सरमाए की आवश्यकता पड़ जाती है। अन्तर केवल यह आ पड़ता है कि कम्युनिस्ट प्रपंच में सरमायादार केवल राज्य होता है और वैयक्तिक स्वतन्त्रता के प्रपंच में राज्य के अतिरिक्त कई अन्य लोग भी सरमायादारी करते हैं। कम्युनिस्ट ढाँचे में तो सरमाया एक स्थान पर सर्वाधिक एकत्रित होता है।

"मशीन-युग में बिना सरमाए के कार्य नहीं चल सकता। साथ ही मशीनों की सहायता से एक व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं से अधिक निर्माण कर सकता है। परिणाम यह हो रहा है कि धन एकत्रित होगा। प्रश्न यह है कि वह धन किसके पास जमा हो ? योजना बनाने वाले तथा मेहनत और युक्ति से कार्य करने वाले के पास धन जमा हो अथवा देश के शासकों के पास ? शासन तो 'माता का माल' है। कार्य करने वालों के पास पूँजी तो एक स्थान पर एकत्रित नहीं मानी जा सकती। तो शासन में कौन-सा गुण है कि इसके पास जमा हो सके।"

"देश के शासक शासन करते हैं, इस कारण उनको कर दिया जाता है। वे न तो आविष्कारक हैं, न ही कारखानों के संचालक, तो उनके पास धन क्यों एकत्रित हो ?"

"इस कारण कि वे जनता के प्रतिनिधि हैं।"

"जनता के प्रतिनिधि वे अवश्य हैं। उनका उस वस्तु पर अथवा उस कार्य-फल पर अधिकार होना चाहिए, जिसको जनता सामूहिक रूप में बनाती है। जिसको सब जनता नहीं बना सकती, जिसका निर्माण सर्वसाधारण के वश का नहीं, उस पर जनता के प्रतिनिधियों का अधिकार तो न्याय नहीं कहा जा सकता।"

"हमारा कहना तो यह है कि प्रत्येक कार्य, प्रत्येक कारखाना, प्रत्येक व्यवसाय देश की साझी सम्पत्ति है। इस कारण देश के प्रतिनिधियों का उन पर अधिकार होना ही चाहिए।"

"यह आपका कहना है अथवा इसमें कोई प्रमाण भी है। कैसे एक व्यवसाय सबकी साझी सम्पत्ति हो गया ? उदाहरण के रूप में बीमा कम्पनियाँ हैं। कुछ व्यक्तियों ने मिलकर एक व्यवसाय चलाया और लोगों में बीमा कराने का चलन कराया। यह ठीक है कि बीमा कराने वाले लोग संख्या में बहुत हैं, परन्तु यह व्यवसाय न तो साझे प्रयत्न का फल है, न ही इसकी उन्नति सबके साझे का परिणाम है। इस पर जनता के प्रतिनिधियों का अधिकार क्यों हो, समझ नहीं आता ?"

"इसमें कारण यह है कि बीमा कम्पनी वालों ने बहुत लूट मचा रखी थी।"

"उस लूट को बन्द करने के लिए कानून बनाए जा सकते थे। उदाहरण के रूप में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीमे की किश्त के विषय में यह नियम बनाया जा सकता था कि बीमा की दर निश्चित रकम से अधिक न हो। साथ ही बीमा की रकम देने के समय ग्राहकों की सुविधा के लिए भी कानून बनाए जा सकते हैं। यह कहाँ की युक्ति है कि शासन, जो चोर और साधु में न्याय स्थापित करने वाला है, वह स्वयं ही मालिक हो जाय?"

"व्यवसाय में तो कुछ सीमा तक तुम्हारी बात ठीक भी हो सकती है; परन्तु नीलादेवी, कारखानों में यह युक्ति ठीक नहीं बैठती। मान लो एक कपड़ा मिल है। उसमें सहस्रों प्रकार की मशीनें लगी हैं। उन मशीनों के आविष्कारक तो भूखे मर गए और लाभ उठा रहे हैं कारखानों के मालिक।"

"उन मशीनों के मोल में से जितना चाहें, आविष्कारकों तथा उनके वारिसों को सरकार दिला दे। यह बात तो समझ में आती है, परन्तु कारखानों की ही सरकार मालिक बन जाय, यह कहाँ की युक्ति है! एक कारखाने का मालिक मशीनें खरीदकर लगाता है, वह मशीनों के आविष्कारकों से क्या सम्बन्ध रखता है?"

इस समय भोजन समाप्त हो गया था। दोनों हाथ-धो, कुल्ला कर फिर ड्राइंगरूम में आ गए।

:१९:

प्रबोध ने कहा, "देखिए नीलादेवी, यदि इसी प्रकार लड़कियाँ विवाह से पूर्व अपने होने वाले पतियों के विचारों की छानबीन करने लगें तो विवाह कभी हो ही न सकेंगे। सब लड़के-लड़कियाँ कुँवारे ही रह जाएँ।"

"बात यह है कि अब वह परिस्थिति नहीं है, जो यहाँ पर कुछ वर्ष पहले थी। अब भारत में लड़कियाँ भी बाप की सम्पत्ति की उत्तराधिकारिणी बन गई हैं। पहले तो बाप की ज़ायदाद केवल लड़कों को ही मिलती थी। लड़कियों के पालन-पोषण का कर्तव्य उनके पति महोदयों को प्राप्त था। लड़कियों की अपनी सम्पत्ति होने से वह यह जानने का अधिकार रखती हैं कि उनके पति समानता के ढोंग में उनकी सम्पत्ति हड़प तो नहीं कर लेंगे?"

"पति-पत्नी का झगड़ा तो रहेगा ही नहीं, राष्ट्रीयकरण से तो यह समस्या समूल नष्ट हो जायगी।"

"यह कोई युक्ति नहीं; सरकार पति-पत्नी में झगड़े को मिटाने के स्थान दोनों की सम्पत्ति को अपने पास रखना चाहती है। यह तो 'बन्दर बाँट' वाली बात हो गई।

"इसके अतिरिक्त राज्य का कार्य है यह देखना कि समाज में प्रत्येक व्यक्ति को अपनी-अपनी योग्यता और मेहनत के अनुसार पारिश्रमिक मिलता है अथवा नहीं, न कि सबके पारिश्रमिक को अपने पास ले लेना और फिर उसको अपनी इच्छानुसार बाँटने लगना।

"मान लीजिए कि मशीन के आविष्कारक को मशीन बनाने के कारखाने वाले उचित रॉयल्टी नहीं देते, तो सरकार इसमें हस्तक्षेप कर सकती है, परन्तु इस हस्तक्षेप का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह अर्थ नहीं कि सरकार मशीनें बनाने के कारखाने को स्वयं ही समेट ले और फिर अपनी इच्छानुसार रॉयल्टी दे अथवा न दे।"

"तो फिर किस प्रकार सरमायादार वर्ग के अन्याय और अत्याचार से कर्मचारियों को बचाया जा सकता है?"

"उपाय तो सरल है। कानून से सबका परिश्रम निश्चय किया जा सकता है।"

"यह तो बहुत कठिन काम है। इसको यदि असम्भव कह दिया जाए तो अनुचित न होगा।"

"यह एक चोर पकड़ने से कम कठिन है। किसी व्यवसाय में किस-किस वर्ग के लोग कार्य करते हैं, उनका निश्चय कर सबका उस कार्य में भाग निश्चय कर दिया जाय।"

"इस सब झगड़े से छुट्टी पाने के लिए यह ठीक क्यों नहीं कि सरकार सब-कुछ अपने हाथ में ले?"

"यह इस कारण उचित नहीं कि प्रजातन्त्र सरकार बनती है राजनीतिक पार्टियों के बल पर। अतएव सरकार की सम्पत्ति, सरकार की नौकरियाँ, सरकार के पुरस्कार और सरकार द्वारा दिए जाने वाले पारिश्रमिक उनको मिलते हैं, जो सरकार बनाने वाले दल में होते हैं।

"यदि किसी पुरस्कार अथवा पारिश्रमिक के अधिकारी को अपना भाग न मिले तो उसके लिए सरकार से दावा करके लेना न केवल कठिन प्रत्युत असम्भव ही होगा। सरकार ही अपराधी होगी और सरकार ही दावे का निर्णय करने वाली न्यायकर्ता होगी।

"यही बात मज़दूरों की होगी। यदि किसी कारखाने की मालिक सरकार होगी और किसी मज़दूर को उजरत उचित नहीं मिलेगी तो वह मज़दूर दावा किस पर करेगा? सरकार के विरुद्ध दावे की निर्णायक भी सरकार ही होगी।

"यदि सरकार ही मालिक हो, सरकार ही दुकानदार और सरकार ही न्याय करने वाली हो, मज़दूर अथवा ग्राहक अपनी शिकायत किसके पास लेकर जायगा?"

"पर सरकार तो जनता की होगी, इस कारण जनता से अन्याय क्यों करेगी?"

"जनता की कैसे होगी?"

"निर्वाचन से।"

"निर्वाचन में संसद की एक जगह के लिए केवल एक व्यक्ति खड़ा हो सकेगा अथवा एक से अधिक?"

"एक से अधिक भी हो सकेंगे।"

"तो जनता के दो अथवा अधिक भाग हो जाएँगे। सफल उम्मीदवार को जनता का एक भाग ही मतदान करेगा। स्वाभाविक रूप से सफल सदस्य जनता के उस भाग की ही सहायता करेगा, जिसने उसको मत दिया होगा। वह विपक्षियों का न तो प्रतिनिधि है और न ही वह उनके साथ न्याय कर सकेगा।"

"निर्वाचन के पश्चात् वह अपने को सबका प्रतिनिधि मान लेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कैसे मान लेगा? यह न सत्य होगा, न सम्भव। कारण यह कि पाँच वर्ष के पश्चात् उसने पुनः चुनाव लड़ना होगा। वह अपने सहायकों को धन और पद से प्रसन्न करेगा।"

"तो फिर क्या हो?"

"मैंने तो बता दिया है, परन्तु आपत्ति केवल इस बात पर है कि कोई राष्ट्रीयकरण पसन्द करता है अथवा नहीं, उन दोनों को अपने पक्ष के सिद्ध करने और उसके प्रतिपादन करने की स्वतन्त्रता तो होनी चाहिए। मैं तो विचार करने और अपने विचार का प्रसार करने की ही स्वीकृति चाहती हूँ।"

: २० :

प्रबोध को नीला की युक्तियाँ समझ नहीं आईं। साथ ही वह यह समझता था कि समाज में पहले सबको स्वतन्त्रता दे देना और फिर उसके दुरुपयोग को रोकने के लिए कानून बनाना अन्धकार ढोने के समान है। वह समझता था कि समाज का अर्थ ही यह है कि सब मिल-जुलकर रहें और सबकी आवश्यकताएँ और कठिनाइयाँ समाज की चिन्ता का विषय हों। इससे व्यक्ति बहुत प्रसन्न होगा।

परन्तु नीला से विवाह भी तो करना था। वह सुन्दर है, सभ्य है और फिर डॉक्टरी पढ़ी है। कम-से-कम अपने निर्वाह के लिए कमा सकेगी। ऐसी लड़की तो अन्य कहीं ढूँढने पर भी नहीं मिलेगी। अतएव उसने नीला को दूसरे ढंग से मनाना आरम्भ किया। उसने पूछा, "नीला, तुम मुझसे प्रेम करती हो अथवा नहीं?"

"आपका यह जानने से क्या प्रयोजन है?"

"मैं अभी तुम्हारा भ्रम दूर कर दूँगा। पहले यह बताओ तुम मुझसे घृणा करती हो अथवा प्रेम?"

"देखिए, मैं आपको अपने मन का विश्लेषण करके बताती हूँ। आप एक योग्य वर हैं। आपको मैं बचपन से जानती हूँ। यदि मेरी मानसिक स्वतन्त्रता और विकास में बाधा न हो तो मैं अपने सब परिचितों से आपको उपमा दूँगी। अब इसको प्रेम समझो अथवा जो मन करे सो समझो।"

"तुम मेरे कहने का अभिप्राय नहीं समझीं। देखो, मैं समझाता हूँ। प्रेम एक मानसिक सम्मोहन है, जिसमें एक व्यक्ति दूसरे के लिए सब-कुछ न्योछावर कर सकता है।"

"मेरी अवस्था यह नहीं। मैं अपने मन की स्वतन्त्रता किसी भी व्यक्ति को प्रसन्न करने के लिए छोड़ नहीं सकती। इन अर्थों में मेरा किसी से प्रेम नहीं है। मैं तो समझती हूँ कि प्रेम के अर्थ हैं एक-दूसरे के भावों का आदर करना और कोई ऐसा कार्य न करना, जिससे प्रेमी के मन को ठेस पहुँचे। ऐसा प्रेम एक-पक्षीय नहीं हो सकता। कारण यह है कि इसमें सम्मोहन नहीं है, परन्तु सोच-विचारकर स्वीकार की हुई एक स्थिति है।"

"तो ऐसा ही सही। क्या तुम मन में मेरे लिए आदर रखती हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, अभी तक तो है। अभी आपने यह नहीं कहा कि आप अपने विचारों को स्वीकार कराने के लिए मुझको विवश करेंगे अथवा नहीं, मेरा प्रश्न यह है और आपने उसका उत्तर नहीं दिया ?"

"मैं समझता हूँ कि भारत सरकार की भाँति हम अपने घर में भी दो सैक्टर (क्षेत्र) खोल सकते हैं, अर्थात् प्राइवेट सैक्टर और पब्लिक सैक्टर। जैसे भारत सरकार के ये दोनों क्षेत्र साथ-साथ काम कर रहे हैं, वैसे ही हम भी घर में दोनों क्षेत्रों को चला सकेंगे।"

"परन्तु भारत सरकार की भाँति तो कार्य नहीं चल सकेगा। हाँ, यदि आप यह वचन दें कि आप अपने ढंग से जीवन चलाते हुए, मेरे ढंग से मुझको जीवन चलाने की स्वतन्त्रता देंगे तो हम परस्पर साथ-साथ रहना स्वीकार कर लेंगे।"

"आओ नीला, हम अपना घर बनाएँ ताकि हम एक-दूसरे का आदर कर सकें और अपने साझे कामों में सहयोग दे सकें।"

नीला इसका उत्तर न दे सकी। वह गम्भीर विचार में पड़ गई। वह विचार करती थी कि यदि ऐसा हो सके और अपने साझे व्यवहार में सहयोग दे सकें तो क्या हानि है। परन्तु वह सोचने लगी कि यदि का उत्तर क्या है? वह सोचती थी कि विवाह के पश्चात् यदि प्रबोध ने वचन-भंग किया तो क्या होगा? यह ठीक है कि विवाह-विच्छेद का कानून बन गया है, परन्तु यह कोई शुभ कार्य तो है नहीं। न ही यह आर्थिक तथा धार्मिक स्वतन्त्रता के लिए मिल सकेगा। इस पर भी वह प्रबोध को बाल्यकाल से जानती थी और समझती थी कि वह उससे किया गया वचन भंग नहीं करेगा। इस पर भी उसको एक तरकीब सूझी। उसने कहा, "यदि आप ऐसा कहते हैं तो आप मेरे-आपके सम्बन्ध में, जैसे विचार आपने अभी व्यक्त किए हैं, एक पत्र में लिखकर भेज दें। मैं उन विचारों को आराम से बैठकर पढ़ूँगी, विचार करूँगी और फिर उत्तर दूँगी।"

"मैं लिख दूँगा, परन्तु मैं यह चाहता हूँ कि यदि कोई बात उससे स्पष्ट न हो तो विवाह से इन्कार करने के स्थान उसको स्पष्ट कराने का यत्न करना चाहिए। मैं तुमसे प्रेम करता हूँ और प्रत्येक शर्त पर तुमसे विवाह करने को उद्यत हूँ।"

"अच्छी बात है। यदि आपकी प्रेम की परिभाषा के अनुसार मैं इसको अपने प्रति सम्मोहन समझूँ तो फिर आप मेरी बात मान ही जाएँगे। आप लिखिए।"

इसके दूसरे दिन प्रबोध का पत्र नीला को मिला। उसमें प्रबोध ने लिखा—

"मैं मानसिक स्वतन्त्रता को मनुष्य की एक परम प्रिय वस्तु समझता हूँ। मैं वचन देता हूँ कि तुम्हारे विचारों का आदर करूँगा और जब तक तुम्हारा व्यवहार मेरे कामों में बाधक नहीं होगा, मैं उसमें किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं करूँगा।"

इस पत्र को नीला ने पढ़ा और उस पर विचार किया और कई दिन के मनन के पश्चात् उसने उत्तर लिख दिया—

"आप अपने पिताजी से कहकर मेरे पिताजी से विवाह की तिथि इत्यादि निश्चित करा लीजिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: २१ :

अमृतकौर, माँ के बाहर से कुंडा लगा जाने पर पलँग पर लेट गई और इस विकट समस्या का सुझाव ढूँढने लगी। वह यह भली-भाँति समझती थी कि कुछ काल तक घर में खिच-खिच चलेगी और पश्चात् उसके माता-पिता सन्तोष कर चुप कर रहेंगे। वह विचार तो यह कर रही थी कि यह खिच-खिच का काल किस प्रकार कम-से-कम किया जाय। उसको अपने और माता-पिता में बीच-बचाव करने के लिए केवल दो ही व्यक्ति समझ आ रहे थे—एक हरभजनसिंह और दूसरा उसका मामा विष्णुसहाय। विष्णुसहाय सिख नहीं था और वह अमृत के व्यवहार को इतना बुरा नहीं समझता था। इस पर भी वह अपने भाई हरभजनसिंह पर अधिक आशा रखती थी।

इतना विचारकर वह हरभजनसिंह को बुलाकर परामर्श करने का विचार करने लगी। इस समय नौकर खाना लेकर आया। अमृत ने उससे पूछा, "सोहनू, भैया घर पर आए हैं अथवा नहीं?"

सोहनू ने कमरे में आते ही अमृत के कटे घुँघराले बालों को देखा था। वह देख विस्मय में खड़ा रह गया। उसने हाथ में थाली पकड़ी हुई थी। वह उस थाली को मेज़ पर रखना भूल गया और बालों की ओर ही देखता रहा। उसने अमृत के कहने को भी नहीं सुना था। उसको चुप खड़ा देख अमृत ने पूछा, "क्या देख रहे हो? थाली क्यों नहीं रखते?"

सोहनू को अभी भी होश नहीं आया। अमृत के बालों को देख उसके मन में अनेकानेक विचार उठने लगे थे। इस पर अमृत ने कुछ डाँटकर कहा, "सोहनू, खाना रखो।"

डाँटे जाने पर उसको चेतना हुई और वह 'हाँ सरकार!' कहकर थाली को एक तिपाई पर रखने के लिए आगे बढ़ा।

"क्या देख रहे थे, सोहनू?" अमृत उसके विस्मय का कारण समझ मुस्कराई।

अब सोहनू की ज़बान खुली और उसने कहा, "माँजी ने कहा था कि खाना देकर बाहर से ताला लगा दूँ। विचार कर रहा था कि इस आज्ञा का क्या अर्थ है, और आपके बाल देख मेरे मन में ज्ञान हो रहा था। इसीलिए अमृत बहन! खाना रखना भूल गया था। क्षमा करना।"

सोहनसिंह बचपन से इस घर में नौकरी करता था। इस कारण वह अमृत के साथ खेला था और अन्य नौकरों से अधिक अमृत के साथ खुलकर बात कर सकता था। अमृत ने पूछा, "तो क्या बाल अब अच्छे नहीं लगते?"

"लगते तो हैं, परन्तु····माताजी नाराज़ मालूम होती हैं।"

"अच्छा बताओ, भैया आए हैं अथवा नहीं?"

"नहीं आए। पर अमृत बहन, अब क्या होगा?"

"किसका क्या होगा?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"माताजी नाराज़ हैं।"

"भैया मना लेंगे।"

अमृत भोजन करने लगी। सोहनू सामने खड़ा रहा। उसका मतलब था कि कोई वस्तु चाहिए तो ला दे। साथ ही वह देख रहा था कि बाल कट जाने से अमृत का सौन्दर्य और भी निखर आया है। उसको बचपन की बात स्मरण हो आई। अमृत उसके केश पकड़कर खींच लिया करती थी और उसकी माँ कहा करती थी, 'अमृत, केशों को हाथ लगाना गुरु महाराज का अपमान करना है।' आज अमृत के केश कटवाने पर माँ कितनी नाराज़ हुई होगी, वह अनुमान लगा रहा था।

अमृत ने भोजन करते हुए कहा, "भैया आएँ तो उनको यहाँ भेज देना।"

"परन्तु माँजी ने तो ताला लगाने के लिए कहा है।"

"तो लगा देना।"

"फिर भैयाजी कैसे मिलेंगे?"

"ताला तोड़ लेंगे।"

सोहनू कुछ काल तक विचार करता रहा। पश्चात् कहने लगा, "दरवाज़ा तोड़ना ठीक नहीं है।"

अंमृत भोजन कर चुकी तो सोने के कमरे के साथ बने गुसलखाने में हाथ धोने चली गई। सोहनू अभी उसके केश ही देख रहा था। वह मन में विचार करता था, 'अमृत ने यह क्यों किया है?'

अमृत आई तो उसने बर्तन उठाते हुए पूछ ही लिया, "अमृत बीबी, यह क्यों किया है?"

"तुमको क्या? जाओ, अपना काम करो।"

"यह ठीक नहीं हुआ।" इतना कह बर्तन उठाकर वह कमरे के बाहर चला गया।

अमृत के मन में आया कि एक चपत सोहनू के मुख पर लगा दे, परन्तु यह विचारकर कि इससे झगड़ा नहीं करना चाहिए, कदाचित् उसकी आवश्यकता पड़ जाय, वह हँस पड़ी।

इस पर भी सोहनू अधिक काल तक ठहरा नहीं। उसने जूठे बर्तन कमरे के बाहर भूमि पर रख दरवाज़ा बन्द कर दिया। अमृत ने ताला लगाने का शब्द सुना और हताश होकर पलँग पर लेट गई।

हरभजनसिंह बाज़ार से लौटा तो रात के दस बज रहे थे। वह अपने कमरे में जाने के स्थान पहले अमृत के कमरे में चला आया। दरवाज़ा खोल भीतर आया तो अमृत ने प्रसन्न हो कहा, "भैया··· !"

वह पूछना चाहती थी कि माँ ने चाबी दे दी है क्या? परन्तु अपने भाई के सिर पर पगड़ी उलट-पुलट बँधी देख और दाढ़ी-मूँछ सफा देख विस्मय में मुख देखती रह गई। हरभजनसिंह अमृत के विस्मय का कारण समझ, सिर से पगड़ी उतारकर बोला, "देखो अमृत, मैंने विचार किया कि मैं पीछे क्यों रह जाऊँ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरभजनसिंह ने भी केश कटवाकर बाल फ़ैशन से बनवाए हुए थे। अमृत समझती थी कि उसके विषय में तो कदाचित् उसके माता-पिता चुप भी कर जाते क्योंकि उसने घर से बाहर नहीं जाना, परन्तु भैया के विषय में तो आगबबूला हो जाएँगे। भैया ने दिन-भर घर से बाहर घूमना है और एक ही दिन में बात नगर-भर में विख्यात हो जायगी। साथ ही वह यह विचार करती थी कि अब माता-पिता से उसकी सन्धि कराने वाला क़ोई नहीं रहा।

अमृत अभी भी अपने भाई का मुख देख रही थी। उसको इस प्रकार चुप देख हरभजनसिंह ने कहा, "कल मुझको दिल्ली के एक प्रोफ़ेसर साहब अपनी लड़की का रिश्ता करने के विचार से देखने आ रहे हैं, इस कारण मैंने यह उचित समझा है कि वह बात जो पीछे होने वाली है, आज ही हो जाय तो ठीक है। सो हज़ामत बनवा आया हूँ।"

"पिताजी ने देखा है?"

"मैं अभी उनके पास नहीं गया। कोठी के फाटक पर सोहनू खड़ा था और उसने बताया है कि तुमने मुझको बुलाया है।"

"परन्तु अब आप मेरी क्या सहायता कर सकते हैं? अब तो आपने भी मेरे साथ बग़ावत कर दी है।"

"दोनों की सहायता एकदम ही हो जायगी। मैं हज़ामत बनवाकर मामाजी के घर गया था। उन्होंने हमारी इस बात को पसन्द तो नहीं किया। इस पर भी कहते थे कि रक्त पानी से गाढ़ा होता है। जैसे उन्होंने अपनी बहन एक सिख से विवाहने में संकोच नहीं किया था, वैसे ही अपने भानजे को पुनः हिन्दू होते देख उनको बुरा नहीं लगा। वे कहते थे कि यदि हम उनके घर रहने के लिए गए तो वे हमको अपने घर से निकालेंगे नहीं।"

"पर मैं तो चाहती थी कि आप माता-पिता को समझाकर मेरे विषय में राज़ी कराते। अब आपके समझाने का कुछ भी प्रभाव नहीं रहेगा।"

"अब मामाजी समझा-बुझाएँगे। तुम कुछ चिन्ता न करो। पिताजी को हमारी बात माननी पड़ेगी। वे तुमको तो क़ैद भी कर सकते हैं, पर मुझको कैसे रोकेंगे? मैं इक्कीस वर्ष से ऊपर का हो चुका हूँ और अपने क्लिनिक में अपने निर्वाह के लिए कमा सकता हूँ।"

"तो अब क्या किया जाय?"

: २२ :

"चलो मेरे साथ। हम दोनों पिताजी के सामने चलते हैं और तुम सुनती जाना, मैं सब बातचीत कर लूँगा।"

"पर उन्होंने तो मुझको ताले में बंद करवाया हुआ है।"

"जब मैं आया था, तब ताला तो लगा नहीं था?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सोहनू ने लगाया तो था।"

दोनों बाहर आ दरवाज़ा देखने गए। ताला लगा था, परंतु कुंडे को बिना साँकल चढ़ाए। हरभजनसिंह देखकर हँस पड़ा। उसने कहा, "मूर्ख सोहनू ने भारी भूल कर दी प्रतीत होती है। खैर, हमको तो लाभ ही हुआ है।"

"मैं समझती हूँ कि भूल नहीं की। उसने जान-बूझकर ताला ऐसे लगाया है।"

कुछ विचारकर हरभजनसिंह ने कहा, "चलो, यह झगड़ा भी भविष्य के लिए समाप्त कर आएँ।"

अमृत ने अब और कुछ नहीं कहा। वह हरभजनसिंह के साथ कोठी के उस बाजू की ओर चल पड़ी, जिधर उसके पिता का कमरा था। सरदार वढ़ियामसिंह के घर गुरुद्वारा कमेटी के मन्त्री और गुरुद्वारे से संबंधित कुछ लोग आए हुए थे। वे डाइनिंग हॉल में भोजन कर रहे थे।

हरभजनसिंह सिर से नंगा था और उसकी दाढ़ी-मूँछ सफा थी। इस कारण वह जब अमृतकौर के साथ वहाँ पहुँचा तो पहले किसी ने पहचाना ही नहीं। पीछे जब उसके पिता ने उसको पहचाना तो उसका मुख विवर्ण हो गया। वह अवाक् उन दोनों को देखता रह गया।

हरभजनसिंह ने हाथ जोड़कर गुरुद्वारा कमेटी के मन्त्री को 'सत श्री अकाल' कहा। पश्चात् एक कुरसी पर बैठ, अमृत को अपने समीप बिठाकर बैरे से कहने लगा, "हम भी खाएँगे।"

"मैं खा चुकी हूँ।" अमृत ने कह दिया।

बैरा और अन्य सब लोग विस्मय में मुख देख रहे थे। उनको अपनी ओर बितर-बितर विस्मय से देखते हुए पा, हरभजनसिंह ने बैरे को डाँटकर कहा, "देख क्या रहे हो? मेरे लिए खाना लाओ।"

वढ़ियामसिंह के मन में भारी संघर्ष चल रहा था। उसका मन कहता था कि दोनों, पुत्र और पुत्री को, घर से बाहर निकाल दे। इस पर भी उसके मुख से बात नहीं निकलती थी। वह विचार करता था कि दे-लेकर जीवन-भर में यही दो संतान तो कमाई हैं। इनको किसी बात के लिए विवश करना ठीक नहीं।

बात मन्त्री, गुरुद्वारा कमेटी ने आरंभ कर दी। उसने कहा, "हरभजनसिंह, यह क्या करा दिया है?"

"तेईस वर्ष की आयु तक तो सिर पर केश रखकर देखे हैं। अब ज़रा इनके बिना भी देखना चाहता हूँ। ये जीवन में बाधा बनने लग गए थे।"

"आपको हम गुरुमुख समझते थे। धर्म की महिमा इस छोटी-सी असुविधा से बहुत बड़ी है सरदार साहब!"

"गुरुमुख तो अब भी हूँ। दस में से नौ गुरु तो केशधारी नहीं थे। कम-से-कम उनका अभिमुख तो हूँ ही। मैंने धर्म को भी नहीं छोड़ा।"

"ये धर्म के लक्षण माने जाते हैं, हरभजन!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"धर्म के लक्षण? कहाँ लिखा है? यह आज आपसे नई बात सुनी है।"

मन्त्री बेचारा बहुत पढ़ा-लिखा आदमी नहीं था, इस कारण चुप कर गया। वढ़ियामसिंह ने बात आगे चला दी। इस समय तक वह अपने मन को दृढ़ बना चुका था। उसने पूछा, "यह हत्या तुम दोनों ने परस्पर राय करके की है अथवा अपने-अपने मन से?"

"भापाजी, जब आपने अमृत को चाँटा मारा था, तभी मैंने भी उसका साथ देने का निश्चय किया था और अब मैं आया हूँ कि मुझको भी मुख पर चपत लगाइए।"

"तुमको चपत? नहीं, तुमको नहीं प्रत्युत अपने मुख पर चपत लगानी चाहिए, जो मैंने तुम दोनों को कॉलेज में शिक्षा देकर भूल की है।"

"कॉलेज का इसमें क्या दोष है? यह तो प्रतिक्रिया है, जो-कुछ हम देखते रहे हैं।" अमृत ने बात में दखल देते हुए कहा।

"क्या देखा है आपने?" एक और सज्जन ने, जो मन्त्री के समीप बैठा हुआ भोजन करने में व्यस्त था, पूछा।

"मैंने इतिहास में पढ़ा है कि गुरु महाराज ने गौ और ब्राह्मण की रक्षा के लिए पन्थ का निर्माण किया था और गौ तथा ब्राह्मण की प्रतिष्ठा हिन्दू धर्म का सार है। अब आप लोग तो अपने को हिन्दू धर्म से पृथक् एक धर्म और जाति मानने लगे हैं।"

"देखो अमृत बीबी, इस प्रकार के तर्क ही मनुष्य को पतन की ओर ले जाते हैं।"

"पर हम अपने को किसी प्रकार भी पतित नहीं मानते। हममें आज के परिवर्तन के पश्चात् किसी प्रकार का भी नैतिक पतन आया हो, दिखाई नहीं देता।"

"तुम दशम गुरु महाराज के सिखों के लिए पाँच ककारों के विधान को ठीक नहीं समझते।"

"उन्होंने अपने काल में जो-कुछ कहा, वह ठीक ही होगा। मैं उस समय की अवस्था को नहीं जानती। एक बात मुझको समझ नहीं आ रही। उन्होंने एक ओर तो कह दिया कि तुर्कों का विश्वास नहीं करना। इस विषय में उनका कहना है कि हाथ को तेल में भिगोकर यदि तिलों के ढेर में डाला जाय, तो जितने तिल हाथ को लग जाएँ, उतनी ही कसमें एक तुर्क खाए तो भी उस पर विश्वास नहीं करना। इतना कुछ कहने पर भी श्री गुरु महाराज ने अपना नौकर एक तुर्क रखा हुआ था, जिसने उनकी हत्या कर दी थी।

"क्या इसका यह अर्थ नहीं कि गुरु महाराज भूल भी कर सकते थे? जो-कुछ उन्होंने कहा अथवा किया, वह उस समय के लिए ठीक हो सकता है, परन्तु आज समय बदल रहा है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि इन पाँच ककारों का धर्म के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है।"

"यह सिख पन्थ में रहने वालों का चिह्न है।"

"तो हम सिख पन्थ में नहीं रहे न? तो क्या आप केवल सिख पन्थ वालों से ही सम्बन्ध रखेंगे? मैं पन्थों से ऊपर हो गया हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं पन्थ के अन्दर हूँ, ऊपर नहीं।" वढ़ियामसिंह ने कहा।

"तो ठीक है। हम आपके अधिमान्य व्यवहार (Preferred-treatment) के अधिकारी नहीं रहे न? न सही। बंगाली बंगालियों को, गुजराती गुजरातियों को अथवा मुसलमान मुसलमानों को और ब्राह्मण ब्राह्मणों को, इसी प्रकार मज़दूर मज़दूरों को तथा पैसे वाले पैसे वालों को, अधिमान्य व्यवहार देते हैं। हम इस प्रकार के सम्प्रदायवादियों से बाहर रहना चाहते हैं। धर्म और पन्थ के नाम पर दलबन्दी, आर्थिक विचारों के नाम पर दलबन्दी अथवा राजनीतिक विचारों के नाम पर दलबन्दी सब-की-सब अवाञ्छनीय हैं।

"दलबन्दी भले और बुरे में, चोर और साधु में, सहनशील और असहनशील में, इसी प्रकार ईमानदार और बेईमान में होनी चाहिए।"

"हरभजनसिंह!" सरदार वढ़ियामसिंह ने बहस बन्द करते हुए कहा, "यह बहस व्यर्थ की है। तुम हमारी संगत में नहीं रहना चाहते तो न सही, परन्तु गुरु महाराज से दी गई व्यवस्था का मज़ाक तो न उड़ाओ।"

इस समय रसोइया भोजन लाया। सब लोग तो पहले ही खा रहे थे। यह खाना हरभजनसिंह के लिए था, परन्तु वढ़ियामसिंह ने रसोइए से कह दिया, "वीरसिंह, यहाँ नहीं, इनका खाना इनके कमरे में ले जाओ। ये हमारी संगत में नहीं रहना चाहते।"

हरभजनसिंह और अमृतकौर उठ खड़े हुए, "तो क्या हम भंगी-चमार हो गए हैं अथवा चोर-डाकू हो गए हैं?"

"उनसे भी बुरे। मेरे लिए तुम नहीं रहे और समझो कि मैं तुम्हारे लिए नहीं रहा।"

हरभजनसिंह इससे अधिक बात सुनने की शक्ति नहीं रखता था और वह बिना कुछ और कहे डाइनिंग हॉल से बाहर निकल गया। इस पर अमृत, जो अभी भी वहाँ खड़ी थी, कहने लगी, "भापाजी, हम हैं तो आपके बच्चे ही। इन बाहरी लक्षणों के बदलने से हमारा रक्त तो बदल नहीं गया।"

"मर जाने पर तो बदल जाता है न! तो समझो कि मैं मर गया हूँ।"

अमृत इस बात को सुन अवाक् रह गई। हरभजनसिंह ने बाहर से आवाज़ दे दी, "अमृत, आ जाओ। यहाँ हमारी बात समझी नहीं जा रही।"

: २३ :

हरभजनसिंह और अमृत अपने मामा के घर चले गए। विष्णुसहाय, अमृत का मामा, अगले दिन वढ़ियामसिंह के घर उससे मिलने आया। उसकी बहन और बहनोई बहुत ही परेशान हो रहे थे। वढ़ियामसिंह का विचार था कि गुरुद्वारा कमेटी के सदस्यों के सम्मुख अमृत इत्यादि को नहीं आना चाहिए था और यदि वे आए थे, तो उनको उसके क्रोध की ओर ध्यान नहीं देना चाहिए था। वढ़ियामसिंह का यह भी विचार था कि उसका पुत्र और पुत्री किसी मित्र के घर गए हैं और प्रातःकाल वे लौट आएँगे। वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं आए, परन्तु विष्णुसहाय आया। उसे आए देख वढ़ियामसिंह को सन्तोष तो हुआ, परन्तु रोब दिखाने के लिए उसने क्रोध की मुद्रा बनाए रखी। उसने विष्णुसहाय के आने की ओर ध्यान ही नहीं दिया। विष्णुसहाय अपने-आप ही बैठकर कहने लगा, "भापाजी, रात हरभजनसिंह और अमृत वहाँ पहुँचे तो कहने लगे कि आपने उनको घर से निकाल दिया है।"

"निकाला तो नहीं, हाँ, कुछ डाँटा अवश्य था। परन्तु विष्णुसहाय, तुमको पता होना चाहिए कि उन्होंने गुरुद्वारा कमेटी के सदस्यों के सामने मेरा अपमान कर दिया था। केश कटवाए थे तो क्या उसका प्रचार करना भी ज़रूरी था? मेरे मुख पर उन्होंने कालिख पोत दी तो मैं क्या करता?"

"वे तो बच्चे हैं। आप बड़े हैं, आपको तो बुद्धिमान और कारोबारी आदमी की भाँति व्यवहार करना चाहिए। आपको आपे से बाहर नहीं होना चाहिए था।"

"सिख केश कटवाने को बहुत बुरा मानते हैं।"

"उनके मानने से क्या होता है? आप तो इसको बुरा नहीं मानते न?"

"मैं भी तो इसको अच्छा नहीं समझता।"

"ठीक है। पर वह अच्छा और बुरा आप अपने लिए कह सकते हैं। देखिए भापाजी, हम स्वयं केश नहीं रखते, परन्तु हम अपनी बात किसी दूसरे पर थोपते नहीं। हमने आपसे कभी बहन के विवाह से पूर्व तथा पश्चात् नहीं कहा कि आपने केश क्यों रखे हैं? हमने बहन का विवाह आपके साथ करने में कोई खराबी नहीं समझी।"

"आपको इसमें खराबी क्यों मालूम होती? आपकी बहन तो हिन्दू धर्म के कीचड़ से निक़लकर गुरु महाराज के चरणों में आ गई थी। यहाँ तो बात उलटी हुई है। गुरु महाराज की शरण छोड़कर वे कीचड़ में जा फँसे हैं।"

"इस पर भी भापा, हम सिख नहीं बने। यदि हम अपनी बहन को किसी ऊँची पदवी पर गया समझते तो हम भी सिख बन जाते। हमको तो हिन्दू धर्म कीचड़ नहीं, प्रत्युत सागर प्रतीत होता है। उस सागर का सिख भी एक भाग ही हैं।"

"नहीं, हम हिन्दू नहीं हैं। गुरु महाराज ने सिख धर्म का निर्माण ही इस कारण किया था कि वे हिन्दुओं में कुछ खराबी देखते थे। हिन्दू धर्म में सुधार करने के लिए ही उन्होंने सिख धर्म की स्थापना की थी।"

विष्णुसहाय को आज पहली बार अपनी बहन को इनके घर देने का खेद हुआ। इस पर भी उसने अपने बहनोई की बात को समझने के लिए कहा, "आप हिन्दू नहीं हैं तो इसका अभिप्राय यह हुआ कि हमने जान-बूझकर अपनी बहन को हिन्दू धर्म से बाहर किया था? उस बेचारी ने तो आपसे विवाह के लिए नहीं कहा था। वह तो गऊ थी। हमने जिसके हाथ उसका रस्सा पकड़ा दिया, वह उसके साथ चली गई। तो उसको हिन्दू धर्म से पतित करने का पाप हम पर है?

"इस पर भी भापा, हम ऐसा नहीं समझते थे। हम तो सिखों को हिन्दुओं की एक शाखा ही समझते थे। गुरु महाराज ने हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए कुछ बहादुर आदमियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की एक टोली बना दी थी। हम इस इतिहास पर विश्वास करते थे। यदि पता होता कि आप हिन्दुओं से इतनी घृणा करते हैं तो...."

वह कहने लगा था कि यह विवाह कभी न होता, परन्तु उसके मुख से यह बात नहीं निकली। इस पर भी वढ़ियामसिंह ने इस चुप्पी का अर्थ समझकर कह दिया, "तो अब अपनी बहन को वापस ले जाओ और उसको पतित होने से बचा लो।"

"यदि ऐसा हो सकता तो कर लेते। भापा, मैं आपको इतना हठी नहीं समझता था। अच्छा, अब मैं जाता हूँ।" इतना कह विष्णुसहाय उठकर जाने लगा तो वढ़ियामसिंह ने उसको हाथ के संकेत से रोककर कहा, "ठहरो, मैं तुम्हारी बहन को बुलाकर तुम्हारे सामने ही निर्णय कर देना चाहता हूँ।"

इस पर विष्णुसहाय को भी क्रोध चढ़ आया। उसने कहा, "ठीक है, उससे पूछ लो। यदि वह आपके घर में नहीं रह सकेगी तो उसको भी ले जाना होगा।"

वढ़ियामसिंह उठकर भीतर चला गया और दो मिनट के बाद हरभजन की माँ को बाँह से पकड़कर ले आया। उसको विष्णुसहाय के सामने खड़ी करके कहने लगा, "देखो भागन, यह तुम्हारा भाई कहता है कि यदि उसको पता होता तो तुम्हारा मुझसे विवाह न करता।"

"किस बात का पता होता, यह भी बता दो न?" विष्णुसहाय ने कहा।

"हाँ-हाँ, बताता हूँ। मैंने कहा कि एक सिख के घर आने से कीचड़ से निकलकर गुरु-चरणों में आ गई हो। इस पर यह कहने लगा कि यदि इसको मेरे विचारों का पता होता तो तुम्हारा मुझसे विवाह न करता। बताओ, क्या तुम पुनः कीचड़ में जाना चाहती हो?"

विष्णुसहाय का मुख क्रोध से ताँबे की भाँति लाल हो रहा था। इस पर भी वह चुप था और देखना चाहता था कि उसकी बहन क्या चाहती है।

भागन ने वहीं भूमि पर बैठते हुए कहा, "मैं एक हिन्दू की बेटी होकर अपने पति का घर छोड़कर जा नहीं सकती। ये जैसे भी हैं, मेरे पति हैं। सुना है विष्णु.... ! तुम यहाँ से चले जाओ। यह बात विवाह से पहले सोचनी थी।"

विष्णु परिस्थिति की विषमता को समझता था। इस कारण वह जाने के लिए घूमा तो वढ़ियामसिंह ने कहा, "विष्णु, अभी सुनो ! हरभजन और अमृत को जाते ही भेज दो, वरना ठीक नहीं होगा।"

"देखो भापा, मैंने उनको पकड़कर नहीं रखा हुआ। मेरे घर के दरवाज़े खुले हैं। जाओ, उनको ले आओ। मुझको कुछ नहीं कहना।"

इतना कह वह घर से बाहर निकल गया।

विष्णुसहाय के चले जाने के पश्चात् वढ़ियामसिंह ने अपनी पत्नी से कहा, "अब तो पता चल गया है कि वे अपने मामा के घर हैं। तुम जाओ और उनको ले आओ न!"

"चली तो जाती हूँ, पर मुझको यह बताइए कि आप मुझको भी घर से निकाल देने के लिए तैयार हो गए थे? आखिर क्या हो गया है आपको?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वढ़ियामसिंह बहुत खिसियाया और कहने लगा, "इस बात को छोड़ो। मुझको क्रोध चढ़ आया था।"

"मैं तो चली जाती हूँ, परन्तु वे इस प्रकार अब आएँगे नहीं। वे पूछेंगे कि आप उनको पीटेंगे तो नहीं और उनको गाली तो नहीं देंगे।"

"तुम तो जानती हो कि मुझको क्रोध आ जाता है, तो फिर मैं भूल जाता हूँ कि क्या उचित है और क्या अनुचित।"

"तो एक बात कीजिए। मेरे साथ चलिए। मैं भीतर चलकर बात करूँगी, परन्तु यदि उन्होंने कोई शर्त रखी तो आपसे राय तो कर लूँगी।"

"तुम स्वयं विचार कर लेना। मुझको अब मत ले जाओ।"

"मैं तो उनको रात भी जाने न देती। उन्होंने धर्म के विरुद्ध कुछ किया है अथवा वे धर्म पर आरूढ़ हैं, इसका निर्णय करने वाली मैं कौन हूँ। मैं तो उनको जाकर कहूँगी कि घर पर चलकर रहो। मैं माँ हूँ और वे चाहे कुछ करें, मेरे बेटे ही रहेंगे।"

"तब तो तुम सब-कुछ बिगाड़ दोगी। चलो, मैं भी चलता हूँ। मैं मोटर में रहूँगा और तुम भीतर जाकर बुला लाना।"

अतएव दोनों मोटर में सवार होकर विष्णुसहाय के घर जा पहुँचे।

विष्णुसहाय के घर पहुँचने से पूर्व ही हरभजनसिंह तो चला गया था और अमृत कॉलेज की तैयारी कर रही थी। विष्णुसहाय ने अमृत को केवल इतना बताया, "तुम्हारे पिता तुमको इस रूप में घर लेने के लिए तैयार नहीं।" कहते-कहते उसकी आँखें आँसुओं से भर आई।

अमृत ने देखा तो भयभीत हो पूछा, "मामाजी, क्या हुआ है वहाँ?"

"कुछ नहीं, वे तो तुम्हारी माँ को भी घर से निकाल देने को तैयार थे। परमात्मा भागन को सौभाग्यवती रखे, उसने बात टाल दी।"

अमृत के माथे पर त्योरी चढ़ गई। उसने कुछ कहा नहीं, परन्तु वह विचार कर रही थी कि यदि माँ को भी निकाल दिया गया तो क्या होगा? वह अपने मन में कुछ समझ नहीं सकी थी। यह विचार कर कि सायंकाल अपने भाई से इस विषय में कुछ निर्णय करेगी, उसने अपने मामा से कहा, "आप चिन्ता न करें। हम यहाँ से भी चले जाएँगे।"

"यहाँ से जाने पर तो बात और भी बिगड़ जायगी। यहाँ रहोगी तो अन्त में सुलह होकर रहेगी।"

अमृत रात को आते समय अपनी किताबें तो लाई नहीं थी। इस कारण एक कापी और पैंसिल बाज़ार से मोल लेने के लिए दो रुपए मामा से लेकर घर से निकली। ज्यूँ ही वह दरवाज़े से निकली कि उसने अपनी माँ को मोटर से निकल घर की ओर आते देखा। यह देख उसका माथा ठनका। उसको समझ आया कि उसके पिता ने उसकी माँ को भी घर से निकाल दिया है। इससे भागकर उसको मिली और पूछने लगी, "तो माँ, तुम भी आ गई हो?"

"हाँ, पर तुमको लेने के लिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हम जाने के लिए नहीं आए।"

"तो किसलिए आए हो?"

"माँ, जिस घर में मनुष्य का मान मनुष्य के नाते न होकर सिर पर बाल रखने से हो, वहाँ रहकर क्या करेंगे? हम अपने मान की रक्षा के लिए आए हैं।"

"देखो, तुम्हारे पिताजी भी आए हैं। वे मोटर में बैठे हैं।"

अमृत एक क्षण तो अन्यमनस्क भाव से खड़ी रही, फिर माँ को वहीं छोड़ मोटर के समीप जा खड़ी हुई। उसने हाथ जोड़कर कहा, "भापाजी, सत् श्री अकाल!"

"चलो अमृत! तुम्हारा यहाँ मामा के घर रहना ठीक नहीं है।"

"आप भीतर तो आइए। मामाजी कहते थे कि आप बहुत नाराज़ हैं। कहो तो मामाजी को यहाँ बुलाऊँ?"

"नहीं, मैं तुमको लेने आया हूँ।"

"और भैया को नहीं।"

"नहीं, उसने मेरे मुख पर कालिख पोत दी है।"

"उन्होंने भी तो वही कुछ किया है, जो मैंने किया है, फिर उन पर अधिक रोष क्यों?"

"देखो अमृत, तुम अब कॉलेज पढ़ने नहीं जाओगी, घर पर ही रहोगी। इस कारण तुमको तो कोई देखेगा नहीं। दो-चार महीने में केश फिर वैसे ही हो जाएँगे, तब तुम गुरुद्वारा इत्यादि में जा सकोगी। परन्तु हरभजन की बात दूसरी है। वह तो हस्पताल में जायगा ही और उसको लोग देखेंगे ही। उसके मित्र और मेरे परिचित सब उसको देखेंगे और जान जाएँगे कि उसने बाल कटा लिये हैं। दो दिन में यह विख्यात हो जायगा कि वढ़ियामसिंह ठेकेदार के लड़के ने केश कटवा दिए हैं। इस अवस्था में मेरी इज़्ज़त तो इस प्रकार ही बच सकेगी कि उसको घर पर न आने दूँ और उसको अपनी ज़ायदाद से फारख़ती दे दूँ।"

"तो मैं भी नहीं जाऊँगी। आएँगे तो हम दोनों इकट्ठे ही आएँगे।"

इतना कह अमृतकौर कॉलेज जाने के लिए चल पड़ी। वढ़ियामसिंह ने मोटर से नीचे उतर मार्ग रोककर कहा, "इस प्रकार नहीं मानोगी तो मैं बलपूर्वक पकड़कर ले जाऊँगा।"

"यह आपकी इच्छा है। मैं अपनी इच्छा से नहीं जाऊँगी।"

इस समय विष्णुसहाय यह समाचार पा कि उसकी बहन और बहनोई आए हैं, मकान के बाहर आ गया। वढ़ियामसिंह ने अमृत को बाँह से पकड़कर मोटर की ओर घसीटा तो अमृत भूमि पर लेट गई। वढ़ियामसिंह ने अपनी पत्नी से कहा, "तुम इसकी टाँगें पकड़ो और मैं बाँहें पकड़ता हूँ।"

भागन को यह बात पसन्द नहीं आई। उसने कहा, "छोड़ दो इसको। पढ़ी-लिखी लड़की के साथ इस प्रकार का व्यवहार नहीं किया जा सकता। उठो अमृत, चलो, घर के भीतर चलो। देखो, मार्ग पर चलते-फिरते लोग तमाशा देखने लगे हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वढ़ियामसिंह ने उसकी बाँहों को छोड़ा तो वह उठकर घर के भीतर चली गई। उसकी माँ भी उसके साथ गई। विष्णुसहाय ने वढ़ियामसिंह से कहा, "भापा आओ, तुम भी आओ। चलो, उसको समझाओ और ले जाओ।"

वढ़ियामसिंह राह चलते लोगों को इकट्ठा होते देख मकान के भीतर चला आया। उसको यही ठीक प्रतीत हुआ। सबके पीछे-पीछे विष्णुसहाय भी घर में आ गया।

राह चलते लोग मोटर-ड्राइवर से पूछने लगे, "क्या बात है भाई?"

मोटर-ड्राइवर ज़िला बर्दवान का रहने वाला ठाकुर था। उसने कह दिया, "लड़की ने सिर के बाल कटा दिए हैं, इस पर माता-पिता ने लड़की को पीटा है और वह भागकर मामा के घर आ गई है।"

: २४ :

एक घंटे की बातचीत के उपरांत समझौता हो गया। यह निर्णय हुआ कि सायंकाल अमृतकौर और हरभजनसिंह घर चले जाएँगे। वे गुरुद्वारे तथा सिखों की संगत में नहीं जाया करेंगे। वे, जब घर में मेहमान आए होंगे, डाइनिंग हॉल में खाना नहीं खाएँगे। वे सिख धर्म की निन्दा नहीं किया करेंगे। इस सब-कुछ करने पर माता-पिता उन्हें केश रखने को विवश नहीं करेंगे। यदि उनकी अपनी इच्छा कभी होगी तो वे पुनः पौल ले सकते हैं।

इस प्रकार शर्त करके वढ़ियामसिंह और उसकी पत्नी अपनी कोठी लौट गए। कॉलेज का समय निकल चुका था। अतएव अमृत कॉलेज जाने के स्थान हस्पताल की ओर चल पड़ी। जब वह वहाँ पहुँची तो हस्पताल की मुख्य इमारत की ओर चली गई। वहाँ वह नीला और सुशील के वार्ड में जा पहुँची।

एक बज चुका था और नीला तथा सुशील अपना कार्य समाप्त कर हाथ धो रहे थे। सुशीलकुमार की दृष्टि उधर गई तो उसने समझा कि कोई नया रोगी आया है। उसने नीला से कहा, "लो, एक और आ गई है। क्या अब इसको भी देखेंगी?"

नीला ने घूमकर देखा तो पहचान गई। उसने कहा, "यह रोगी नहीं है। पर…" वह आगे नहीं कह सकी। अमृत के कटे बालों पर बने कुंडल उसके कन्धों पर लटकते दिखाई पड़ गए थे।

"ओह!" सुशील ने भी उसको पहचाना तो विस्मय में देखता रह गया। अमृत इस फैशन में तो उसको बहुत भली प्रतीत हुई, "यह क्या हो गया है अमृतजी?" उसने पूछा।

"चुप रहिए, महाभारत का युद्ध करके आ रही हूँ।"

"कौरव कौन थे?" नीला ने पूछा।

अमृत हँस पड़ी और पूछने लगी, "भैया कहाँ मिलेंगे?"

उत्तर सुशील ने दिया, "आज एक ऑपरेशन हो रहा है। मालूम नहीं कि खाली हुए हैं अथवा नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"किधर है, ऑपरेशन थिएटर ?"

"चलो, मैं साथ चलता हूँ।" सुशील ने कहा।

नीला हाथ धो, तौलिए से पोंछ और अपना ऐपरॉन उतार घर जाने को तैयार हो रही थी कि सुशील ने कहा, "ज़रा अमृतजी को इनके भाई का पता कर दें तो चलते हैं।"

"बहुत भूख लगी है, सुशील बाबू !"

"चलिए, आपको कार्लटन में खिला दूँगा।"

"दिवाला पिट जाएगा।"

"आप चलिए तो, दिवाला भी स्वीकार है। क्यों अमृत, खाना तो नहीं खाया ?"

"खाया तो नहीं लेकिन वहाँ पाँच रुपए एक खाने के लग जाएँगे।"

"तो क्या हुआ ? हम चार ही तो होंगे।"

"चौथा कौन ? मैं तो जा नहीं रही।" नीला ने कहा।

"वाह, यह कैसे हो सकता है ? आज मैं बहुत प्रसन्न हूँ नीलादेवी ! आपको भी उस प्रसन्नता में सम्मिलित होना चाहिए।"

"क्या बात है ? किस बात की प्रसन्नता है ?"

"वहीं होटल में चलकर बताऊँगा।"

नीला जानती थी कि सुशीलकुमार की सरकार बाबू की लड़की से सगाई होने वाली है। सुशील की माँ ने उसकी माँ को बताया था। इस कारण वह समझी कि दावत उसी के उपलक्ष्य में हो सकती है, इससे चुप रही। तीनों ऑपरेशन थिएटर की ओर चल पड़े। ऑपरेशन समाप्त कर लड़के और डॉक्टर बाहर निकल रहे थे। यह देख सुशील ने कहा, "ऑपरेशन समाप्त हो गया प्रतीत होता है। अब नीलादेवी को अधिक काल तक कष्ट नहीं उठाना पड़ेगा। यहीं से टैक्सी लेकर चल देंगे।"

"हरभजनसिंह की गाड़ी होगी।" नीला ने सुझाव उपस्थित कर दिया।

अमृत ने कह दिया, "नहीं, आज वे गाड़ी में नहीं आए। गाड़ी बिगड़ गई थी।"

इस समय तक सब ऑपरेशन थिएटर के बाहर जा पहुँचे थे। न तो नीला ने और न ही सुशील ने हरभजनसिंह को पहचाना। वह सिर से नंगा और हजामत बनवाए खड़ा था। अमृत जब उसके सामने जाकर खड़ी हो गई, तो वे समझ गए कि बहन-भाई ने मिलकर संसार की विशाल बिरादरी में पदार्पण किया है। सुशील तो खिलखिलाकर हँस पड़ा। हरभजन के हस्पताल के साथी तो पहले ही उसकी हँसी उड़ा चुके थे। अब सुशील को हँसते देख फिर हँसने लगे।

"यह क्या हुआ है, हरभजन ?"

हरभजन इन सबके विस्मय करने पर हँसता रहा और उसने उत्तर नहीं दिया। जब हँसी बन्द हो गई तो नीला ने कहा, "चलिए, आपको सुशीलजी निमन्त्रण दे रहे हैं।"

"कहाँ के लिए और क्यों ?"

"लंच के लिए, और कुछ बात है जो ये होटल में चलकर बताएँगे।"

"हाँ।" सुशील ने बात स्पष्ट कर दी, "कहीं पहले बता दिया तो आप निमन्त्रण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्वीकार भी कर सकते हैं।"

इस पर नीला ने कह दिया, "ओह, यह बात है। तब तो बिना जाने निमन्त्रण स्वीकार नहीं करना चाहिए।"

"परन्तु आप तो स्वीकार कर चुकी हैं। अब आप ना कैसे कर सकती हैं ?"

"तो मुझको अस्वीकार होगा क्या ?" हरभजन ने पूछा।

"कह नहीं सकता कि मेरी प्रसन्नता का कारण किसी के दुःख का कारण हो जाय।"

"एक मित्र की प्रसन्नता किसके लिए दुःख का कारण हो सकती है ?"

"बताना बहुत कठिन है। सम्भव है कि वह सुख का भी कारण हो जाय।"

"पहेली मत डालो सुशील !" हरभजनसिंह ने कहा, "आज घर पर महाभारत करने जा रहा हूँ। मुझको भय है कि कहीं यहाँ पर ही झगड़ा न हो जाय ?"

"हरभजन, घर का महाभारत तो अमृतजी लड़ आई हैं। क्यों अमृत ?"

सब हस्पताल से निकल टैक्सी-स्टैंड की ओर चल पड़े। हरभजन चलता-चलता खड़ा हो गया और अमृत की ओर देखने लगा। अमृत ने सुशीलकुमार के समर्थन में कहा, "सुशील बाबू ठीक कहते हैं। मैं महाभारत लड़कर जीत आई हूँ। पिताजी से समझौता हो गया है।"

167858
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

"क्या हुआ है ?"

"हम यहाँ से अपने घर जाएँगे।"

"यह जीत कैसे हो गई ?"

"इसके साथ और भी बातें तय हो गई हैं। घर चलकर बताऊँगी।"

"तब तो सत्य ही दावत खानी चाहिए।"

"तो भैया, तुम्हीं दावत खिला दो न !"

"नहीं।" सुशील ने हरभजन के कहने से पहले ही कह दिया, "आज तो दावत मेरी ओर से ही होगी। हरभजनसिंह कल दावत दे सकता है।"

नीला को भूख लगी हुई थी। उसने टैक्सी वाले को हाथ के संकेत से बुला लिया। सब उसमें बैठे और कार्लटन को चल पड़े।

होटल के डाइनिंग हॉल में जब खाना परोसा जा रहा था, सुशील ने अपने निमन्त्रण का कारण बता दिया। उसने कहा, "अमृतजी ने अपने बाल कटवाकर घरवालों से विद्रोह किया है और जिस महाभारत की ओर इन्होंने संकेत किया है, वह हम सब समझते हैं। मैं बंगाली होने के नाते विद्रोहियों का भक्त हूँ। अमृत के विद्रोह के उपलक्ष्य में ही मैंने यह दावत दी है।"

"क्या विद्रोह कोई अच्छी बात है ?" नीला ने पूछा।

"हाँ, जब अपने अधिकारों के लिए पुरानी रूढ़ियों से किया जाय।"

"दूसरों को देखकर ही प्रसन्न होते हैं, सुशील बाबू ! या कुछ स्वयं भी कर सकने की योग्यता रखते हैं ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीला जानती थी कि सुशील के माता-पिता प्रान्तीयता में कितने रत हैं। सुशील ने नीला के कटाक्ष का यह अर्थ समझा कि वह अपने माता-पिता के भावों के विरुद्ध खड़ा नहीं हो सकता। इस कारण उसने कह दिया, "देखिए, हम सब यहाँ मित्र हैं। इस कारण एक-दूसरे का रहस्य मन में ही रख सकते हैं। मैं आपको एक गूढ़ रहस्य की बात बताता हूँ।

"एक दिन मैंने नीलाजी को घर पर चाय के लिए बुलाया। ये कृपा कर आईं। मेरी माताजी ने समझा कि मैं नीलादेवी से विवाह करने की इच्छा रखता हूँ। मैंने बहुत कहा कि चाय देने का यह उद्देश्य नहीं है, परन्तु वे मानी ही नहीं और वे तथा पिताजी मेरा विवाह एक बंगाली लड़की से करने का प्रबन्ध कर रहे हैं। मैं मान नहीं रहा।

"आज माता-पिता के रूढ़िवाद के विरुद्ध अमृतजी को विद्रोह करते देख मेरे मन में उत्साह भर आया है। मैं भी यह विद्रोह की पताका अपने घर में ले जाना चाहता हूँ। यह है दूसरा कारण मेरे आज के निमन्त्रण का। मैं अमृतजी का कृतज्ञ हूँ कि उन्होंने मुझको अपना मार्ग दिखा दिया है।"

"कैसे विद्रोह करेंगे आप?" नीला ने विस्मय में पूछा।

"मैं एक अबंगाली लड़की से ही विवाह करने का हठ करूँगा और विद्रोह कर दूँगा।"

"पर वह लड़की और उसके माता-पिता मानेंगे तभी न?"

"बस, आज से ही इसके लिए यत्न आरम्भ कर दूँगा।"

"वह कौन है, जिस पर आपकी दृष्टि लगी है। मैं उसको सचेत कर देना चाहती हूँ कि वह एक निपट विद्रोही के चंगुल में न फँसे।"

"नीलादेवी, आप नहीं जानतीं कि एक बंगाली युवक आँधी के समान होता है। उसके सामने कोई वस्तु नहीं ठहर सकती। इस पर भी एक बंगाली विद्रोही तो 'साइक्लोन' का प्रतिरूप ही होगा। बड़े-बड़े मकानों को भी वह उड़ा ले जाने की सामर्थ्य रखता है।"

इस समय भोजन का एक कोर्स आ गया था। सब खाने लगे थे। अमृत अपने मन में सुशील के लिए अति कोमल विचार रखती थी। इस कारण वह यह जानने के लिए उत्सुक थी कि सुशील किसको अपना साथी बनाना स्वीकार करेगा। इस पर भी वह अपने भावों को प्रकट करना नहीं चाहती थी। वह हृदय से इस वार्तालाप के और आगे चलने को देखना चाहती थी। जब सुशील ने अपने मन की बात कही तो अन्य बैठे हुओं की भी इच्छा हो गई कि वह किसको अपनी इच्छा का निशाना बनाना चाहता है। इस कारण हरभजनसिंह ने कहा, "मैं समझता हूँ कि सुशील का अभिप्राय नीलादेवी से है। नीलादेवी सुशील के घर चाय पीने गईं। इस पर सुशील की माँ ने उसके नीलादेवी से विवाह को पसन्द नहीं किया। वे सुशील का एक बंगाली लड़की से विवाह पसन्द करती हैं। अब सुशील बाबू अमृत के उदाहरण से उत्साहित हो माता-पिता के विरुद्ध विद्रोह करना चाहते हैं। मैं इस सबका अर्थ यह लगाता हूँ कि ये महाशय आँधी बन नीलादेवी को उड़ा ले जाने पर तुले हुए हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुझको नीलादेवी पर बहुत दया आती है। वास्तव में आप तो जानते हैं कि मैं भी नीलादेवी से विवाह करने का एक प्रार्थी हूँ—आज से नहीं, कई वर्षों से। नीलादेवी ने मुझको रिजैक्ट कर दिया है। इस बिना पर कि सिख हिन्दुओं से घृणा करते हैं और उनको अपने से छोटा समझते हैं। सिख हिन्दुओं को धार्मिक स्वतन्त्रता भी देना नहीं चाहते। आज मैं भी अपने बाल कटाकर यही सिद्ध कर रहा हूँ कि मैं सिख नहीं हूँ।

"मैं आँधी बनकर तो नहीं आया। मैं शरद्-ऋतु की धूप की भाँति मधुर तथा स्निग्ध ताप बन इनके हृदय की हिम को पिघलाने का यत्न करना चाहता हूँ।"

नीला अपने विषय में अपने दो साथियों को इस प्रकार बातें करते देख खिलखिलाकर हँस पड़ी। हँसकर उसने कहा, "एक बात समझ में आई है कि सिर के बाल कट जाने से मस्तिष्क कविता करने लगता है। मधुर, स्निग्ध, ताप, हिम बहुत सुन्दर उपमा है। देखना तो यह है कि आँधी और सूर्य का ताप एक स्थान पर एकत्रित होने वाले हैं, कहीं दोनों अपने गुण एक-दूसरे से टकराकर निःशेष न कर लें।"

"मैं एक बात स्पष्ट कर देना चाहता हूँ।" सुशील ने कहा, "मैं हरभजनसिंह के ताप का विरोध करने नहीं आ रहा।"

"अर्थात् तुम्हारी दृष्टि नीलादेवी पर नहीं है?" हरभजनसिंह ने प्रसन्नता से देदीप्यमान होते हुए पूछा, "तो मैदान साफ़ है!"

"हाँ।" सुशील ने कहा।

"तो वह कौन है?" नीला ने बात अपने पर से बदलते हुए पूछा।

"समय पर पता चल जायगा। अभी आज की यह दावत तो अमृतजी के विद्रोह के उपलक्ष्य में ही समझनी चाहिए।"

"यदि आप अपना चुनाव बता देते तो आज की दावत में रंग जम जाता।" अमृत ने झिझकते हुए कहा।

"मुझको डर है कि कहीं आपमें से कोई भाँजी न मार दे।"

"मैं वचन देती हूँ कि मैं आपकी निन्दा नहीं करूँगी।"

"पर नीलादेवी ने तो चुनौती दे दी है। वे तो मेरे लक्ष्यबिन्दु को सचेत करने के लिए कह रही हैं।" सुशील का कहना था।

हरभजनसिंह ने मिन्नत करने के भाव में कह दिया, "नीलादेवी, आपको तो ऐसा नहीं करना चाहिए। सुशील हमारे सहपाठी हैं, साथी हैं और मित्र हैं।"

"मुझको इनमें कोई गुण प्रतीत नहीं होता।" नीला ने मुस्कराते हुए कहा।

सुशील ने हँसते हुए कहा, "लोमड़ी को दाख न मिली तो कहने लगी, 'थू कड़वी'।"

"ओह, तो मैं लोमड़ी हूँ!"

"नहीं तो मेरी निन्दा क्यों करेंगी? क्या मैं लँगड़ा हूँ, लुंजा हूँ अथवा अपाहिज हूँ?"

"आप विद्रोह करेंगे न, इस कारण! आज माता-पिता से विद्रोह करेंगे, कल पत्नी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से भी विद्रोह कर सकते हैं। मुझको विद्रोह के स्थान सत्याग्रह पसन्द है।"

"मुझको विद्रोह पसन्द है।" अमृत ने कह दिया, "मैं स्वयं एक विद्रोही हूँ और मुझको विद्रोही बहुत अच्छे लगते हैं।"

"तब तो ठीक है।" सुशील ने प्रसन्नवदऩ हो कहा, "मेरी विजय का प्रथम चरण तो शुभ पड़ा है।"

"ओह, समझी !" नीला ने कहा, "तो यह बात है। विद्रोही-विद्रोही की खूब पटेगी।"

अमृत हँसी तो सब हँसने लगे। सुशील बहुत प्रसन्न था। उसने अपने मन के भाव अपनी प्रेमिका पर व्यक्त कर दिए थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो

: १ :

प्रबोध से विवाह के पश्चात् ही नीला को यह समझ आया कि वह डॉक्टर बनकर भी, यदि अपने पति की आय पर निर्भर रही, तो वह अपनी स्वतन्त्रता, जिसको वह अपने मन में बचपन से ही प्रश्रय दे रही थी, निर्मूल हो जायगी। इस कारण उसको अपना चिकित्सा-कार्य आरम्भ करने के लिए चिकित्सालय खोलना आवश्यक हो गया।

इसमें एक कारण यह भी हो गया कि प्रबोध का कारखाना अभी खर्चा निकालने के योग्य नहीं हुआ था। नीला ने जब इस विषय में बात की तो प्रबोध ने उत्तर में कहा, "नीलादेवी, मैंने कहा था न कि मेरा कारखाना सहचारिता की प्रथा पर चलेगा। मैं चाहता हूँ कि उसकी कमाई अभी कुछ वर्ष तक उसमें ही डाली जाय, जिससे उसमें लगा सरमाया कारखाने का अपना ही हो जाय। मैं अभी घर के खर्च के लिए उसमें से निकाल नहीं सकता। यह बात एक-दो वर्ष के उपरान्त हो सकेगी।"

"यदि आप यह करना चाहते हैं कि पिताजी से लिया धन, शीघ्रातिशीघ्र वापस कर दिया जाय तो मैं इस प्रयास में आपकी पूर्ण सहायता करूँगी। मैं अविलम्ब अपना चिकित्सालय खोलकर घर के खर्चे के लिए पैदा करने लगूँगी।"

उसके विवाह के समय उसके पिता ने दस सहस्र रुपए की कीमत का सामान और भूषण दिए थे। इसमें लगभग दो सहस्र रुपया नक़द भी था। उससे नीला ने अपना कार्यारम्भ करने का विचार कर लिया। अगले ही दिन वह चिकित्सालय के लिए स्थान ढूँढने में लग गई। प्रबोध ने विवाह होते ही एक कोठी रायबरेली रोड पर किराए पर ले ली थी और वह अपने माता-पिता से पृथक् रहने लगा था। यद्यपि प्रबोध की माता ने इसको कुछ अच्छा नहीं समझा था, परन्तु प्रभुदयाल, जो विलायत के आचार-विचार को ठीक समझता था, इस बात में लड़के को प्रोत्साहन देता रहा। कोठी नगर से दूर होने के कारण चिकित्सालय के लिए उपयुक्त स्थान नहीं था। इस कारण नीला को अपने निवास-स्थान से पृथक् दूर आकर चिकित्सा-कार्य करने के लिए स्थान ढूँढना पड़ा।

दो-चार दिन में वह नगर के सब प्रमुख स्थानों में घूम गई। वह कोई बैठकनुमा दूकान चाहती थी और उसमें वह बच्चों और औरतों के लिए चिकित्सा-कार्य करना चाहती थी।

इस खोज में वह अमीनुद्दौला पार्क में से भी गुज़री, जहाँ उसने हरभजनसिंह का क्लिनिक देखा। पहले दिन तो वह उसके आगे से गुज़र गई। उसकी इच्छा साझेदारी में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम करने की नहीं थी, इस कारण उसने दूकान की खोज में हरभजनसिंह से बात नहीं की। परन्तु जब कई दिन की खोज के पश्चात् भी उसको उपयुक्त स्थान नहीं मिल सका तो वह अपनी खोज में हरभजनसिंह से सहायता लेने के लिए उसके क्लिनिक में जा खड़ी हुई।

यह तीन दर की एक बड़ी-सी दूकान थी। हरभजन एक कोने में बैठा था। उसने चीर-फाड़ के लिए ही प्रबन्ध किया था। दूकान में बहुत-सा स्थान खाली पड़ा था।

जब नीला दूकान में आई, तो हरभजनसिंह किसी से बातें कर रहा था। नीला एक ओर खड़ी हो दूकान में स्थान तथा उसका फर्नीचर देखने लगी। हरभजनसिंह ने उसको देखा तो उठकर खड़ा हो गया और आगे बढ़कर हाथ जोड़कर बोला, "आइए डॉक्टर नीला, आज आपके दर्शनों का सौभाग्य कैसे मिला है ?"

"अपने क्लिनिक के लिए कोई स्थान ढूँढ रही थी कि आपको बैठा देख मिलने चली आई हूँ। मैंने समझा कि शायद आप पहचान सकें।"

हरभजनसिंह ने नीला को सिर से पाँव तक देखकर कहा, "कुछ बदला दिखाई नहीं देता। पहचानने में कोई कठिनाई नहीं हुई।"

"कुछ परिवर्तन तो हुआ ही है। यदि आपकी मोटी दृष्टि उसको नहीं देख सकी तो अच्छा ही है। बताइए काम-धन्धा कैसा है ?"

"माइनर ऑपरेशन के केस तो आते ही रहते हैं। हाँ, तीन मास में एक मेजर ऑपरेशन का केस मिला और वह भी भगवान् की कृपा से 'राम नाम सत्य' हो गया।"

"ओह ! क्या था उसको ?"

"गाल स्टोन निकालने में यह हो गया।"

"वैसे तो अब कुछ मिलने लगा है क्या ?"

"जब पढ़ता था, तो समझता था कि ऑपरेशन-पर-ऑपरेशन करने को मिलेंगे, परन्तु तीन महीने में एक ऐसा केस आया और उसमें भी असफलता देख निरुत्साह हो गया हूँ।

"समझा था कि महीने में दो-तीन हज़ार रुपया पैदा करना साधारण-सी बात होगी, परन्तु नौबत तीन-चार सौ तक भी नहीं जाती। इतना तो दूकान का खर्चा ही है।"

"यह ठीक है। परन्तु अभी तो आरम्भ ही है न ! चार महीने में यदि तीन सौ तक नौबत पहुँच गई है तो ठीक ही है।"

"मुझको भय है कि यदि एक-दो वर्ष तक मेजर ऑपरेशन न आए तो अभ्यास छूट जाएगा।"

"और जब ऑपरेशन के केस आने लगेंगे तो पुनः अभ्यास हो जायगा।"

"बहुत आशावादी हो, नीलादेवी ! जब काम आरम्भ करोगी तो पता चलेगा।"

"काम तो करना ही है, चाहे पता चले या न चले।"

इस पर हरभजनसिंह नीला को दूकान का फर्नीचर और चीर-फाड़ का सामान दिखाने लगा। दिखाते हुए उसने कहा, "सब सामान पर मैं पाँच हज़ार तक व्यय कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुका हूँ। अभी दस हज़ार और चाहिए। मैं साथ-साथ पैथोलॉजिकल लैबोरेटरी खोलना चाहता हूँ और एक ऐक्सरे का आला लगाना चाहता हूँ।"

"पिताजी से माँग लीजिए न! आपको रुपए की कमी होनी नहीं चाहिए।"

"जब से मैंने केश कटवाए हैं, पिताजी ने मेरा बहिष्कार कर रखा है। वे मेरे साथ बोलते भी नहीं। रहता तो कोठी में ही हूँ, परन्तु उनके दर्शन किए सप्ताह ही व्यतीत हो जाते हैं।"

"बहुत विचित्र बात है। तो जो रुपया लगाया है, वह कहाँ से आया है?"

"मामाजी से पाँच हज़ार उधार लिया था, वह सब व्यय हो चुका है। यही कारण है कि मैं अपनी आय बढ़ाने में लगा हुआ हूँ। मैं उनका ऋण शीघ्र ही उतारने का यत्न कर रहा हूँ। मैंने कुछ बीमा-कम्पनियों में डॉक्टर बनने के लिए प्रार्थना की हुई थी, परन्तु उन पर सरकार ने अधिकार कर लिया है और अब वहाँ क्या होगा, कहा नहीं जा सकता।"

: २ :

नीला इस परिस्थिति को देख अपने को भाग्यवान मानती थी, जो हरभजनसिंह से विवाह के लिए राजी नहीं हुई। प्रबोध में और चाहे जो भी दोष हो, पर उसने उसको चिकित्सा-कार्य के लिए विवश नहीं किया था। प्रबोध के पिताजी ने लड़के को काम पर लगाने के लिए पूरी सहायता की थी।

हरभजनसिंह ने उसको चुप देख पूछ लिया, "आपको क्लिनिक के लिए स्थान मिला अथवा नहीं?"

"नहीं, अभी नहीं मिला।"

"कितना स्थान चाहिए आपको?"

"बहुत अधिक नहीं चाहिए। बीस गज़-स्क्वेयर मिल जाय तो मैं अपना सब प्रबन्ध कर लूँगी।"

"इसी दूकान का आधा क्यों नहीं ले लेतीं?"

"क्या आप अब भी देंगे?"

"क्यों नहीं? आधा किराया आप दे दें तो ज़रूर दे दूँगा।"

"कितना देना पड़ेगा?"

"पूरी दूकान का डेढ़ सौ देता हूँ। पचहत्तर रुपए आप दे दीजिएगा। सफ़ाई के लिए एक नौकर रखा हुआ है। वह भी दोनों स्थानों पर काम कर देगा। उसका आधा वेतन, आधा बिजली-पानी का खर्चा। सब मिल-मिलाकर आपको सवा सौ खर्च बैठ जायगा।"

"विचार कर लीजिए। मैं तो तैयार हूँ।"

"तो ऐसा कीजिए, आप किराया पेशगी देकर कल से अपनी फ़िटिंग करवाना आरम्भ कर दीजिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हरभजनजी, बहुत ही धन्यवाद। मैं समझती थी कि आप नहीं मानेंगे। इसी कारण कई दिन से इधर-उधर भटक रही थी और आप तक आने का साहस नहीं कर सकी।"

"यह सन्देह और संकोच क्यों हो रहा था? मैंने तो आपको आज से छः मास पूर्व ही यह प्रस्ताव दिया था।"

"तब आप मुझसे विवाह के लिए इच्छुक थे। अब मेरा विवाह प्रबोधजी से हो चुका है।"

"नीला, एक बात पूछूँ? नाराज़ तो न हो जाओगी?"

"नाराज़ क्यों हूँगी? पूछिए, क्या पूछना चाहते हैं?"

"आप अपने विवाहित-जीवन से सन्तुष्ट हैं?"

"असन्तोष के लिए कोई कारण प्रतीत नहीं हुआ। आपने यह बात क्यों पूछी है?"

"पिछले दो मास से मेरा प्रबोधजी से मेल हो रहा है। उनके हाव-भाव से मुझको कुछ ऐसा भास हुआ है कि वे विवाहित जीवन से सन्तुष्ट नहीं। उनका मेल-मिलाप अपने से निम्न कोटि के मनुष्यों से बहुत है।"

"मुझको ऐसी कोई बात विदित नहीं, जिससे मैं उनके व्यवहार को पसन्द न करूँ। हम अपने निजी जीवन में स्वतन्त्र हैं। पारिवारिक जीवन में हम एक-दूसरे के विरुद्ध किसी प्रकार का काम नहीं करते।"

हरभजनसिंह गम्भीर हो कुछ विचार करने लगा। इसके अनन्तर उसने उसके निजी जीवन में झाँकने के लिए क्षमा माँगी। नीला ने कहा, "क्षमा की कोई आवश्यकता नहीं। मुझको आपका पूछना कुछ बुरा नहीं लगा। मैं समझती हूँ कि आपका इस पूछने का उद्देश्य मेरा हित ही है।"

"मेरे साथ तो मज़ाक ही हुआ है।" हरभजन ने कमरे की छत की ओर देखते हुए कहा, "सरदार निरंजनसिंह दिल्ली यूनिवर्सिटी के बायोलॉजी के प्रोफेसर हैं। उनकी पत्नी और लड़की मुझको विवाह के लिए देखने आई थीं। दोनों पसन्द करके चली गईं, परन्तु प्रोफेसर साहब ने मुझको केशधारी न होने से अस्वीकार कर दिया है। उनका एक पत्र आया था, जिसमें उन्होंने लिखा था—'मुझको विदित हुआ है कि आपने एक हिन्दू लड़की से विवाह करने के लिए केश शहीद करवा दिए हैं। उस लड़की ने विवाह कहीं अन्यत्र कर लिया है। अब आप केश रखवा लें, जिससे आपका विवाह पन्थ के भीतर हो सके।'

"मैंने लिख दिया है—'यह ठीक है कि मैंने केश एक हिन्दू लड़की के कहने पर कटवाए हैं। उसने कहा था कि ये दासता का चिह्न है। जब एक बार कटवा लिये तो जो आनन्द अनुभव करता हूँ, वह केश पुनः रखने की स्वीकृति नहीं देता। उस लड़की ने विवाह तो किसी अन्य से कर लिया है। इसका कारण यह है कि वह लड़की विवाह का अर्थ एक परिवार को छोड़कर किसी दूसरे परिवार में सम्मिलित होना समझती है। उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार में मेरे परिवार में अभी भी रूढ़िवादी विद्यमान है और उसने ऐसे परिवार में आना स्वीकार नहीं किया।'

"उस पत्र का उत्तर आया है। उसमें लिखा है कि उनकी लड़की किसी केशधारी से ही विवाह करना चाहती है।

"इस उत्तर का परिणाम यह हुआ है कि माता-पिता और भी अधिक रुष्ट हो गए हैं। वे इस सम्बन्ध से पचास हज़ार की आशा लगाए हुए थे।"

"तो इसमें हँसी की क्या बात है? आपको सिख-समुदाय से विवाह की आशा ही नहीं करनी चाहिए।"

"मैंने न तो आशा की थी, न इच्छा। वे स्वयं ही देखने आए और स्वयं ही ऐसा भाव बनाने लगे, जैसे मेरी प्रार्थना को उन्होंने रद्द कर दिया है। परन्तु एक और मज़ेदार बात हुई है। मुझको दिल्ली से एक लड़की का पत्र आया है। वह मुझसे विवाह करना चाहती है। लड़की का नाम वही है जो प्रोफेसर निरंजनसिंह की लड़की का है।"

"उसने अपना पता लिखा है क्या?"

"हाँ, परन्तु यह उसका अपना पता प्रतीत नहीं होता। ऐसा मालूम होता है कि अपनी एक सहेली की मार्फ़त उत्तर मँगवाया है।"

"तो एक बात कीजिए। उसको अपना एक चित्र भेजने के लिए लिखिए।"

"यह तो मैंने लिख दिया है। साथ ही यह भी लिखा है कि एक सिख-परिवार में पैदा होकर, हरभजनसिंह नाम रखते हुए भी मैं सिख पन्थी नहीं हूँ।"

"कब तक उत्तर आने की आशा है?"

"देखें।"

"तो ठीक है, अभी तो इसको मज़ाक समझने की आवश्यकता नहीं।"

"मज़ाक तो यह है कि हिन्दू मुझसे विवाह करना नहीं चाहते। वे मुझ पर सन्देह करते हैं कि मैं विवाह के पश्चात् पुनः केश, दाढ़ी रख लूँगा और सिख मुझको पतित हुआ समझते हैं।"

"कौन हिन्दू ऐसा समझते हैं?"

"पूछकर क्या करेंगी आप?"

"जानने में हानि है क्या?"

"आप भी तो यही समझती थीं।"

"नहीं, मुझको आपकी सत्यता पर संदेह नहीं था, मुझको प्रबोधजी अधिक प्रिय हैं।"

"तो आप मुझको यह बात कहकर सिख रूढ़िवादी हैं, मुझको सिख-धर्म छोड़ने के लिए क्यों कह रही थीं?"

"यह कहा था मानवता के नाते। इसका विवाह के साथ कोई संबंध नहीं था।"

"पर कम्युनिज़्म एक प्रकार का पक्षपातपूर्ण मत नहीं है क्या?"

"है। परन्तु प्रबोधजी ने वचन दिया है कि वे बुद्धि से इसको ठीक समझते हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन मुझको अपनी स्वतन्त्रता रखने की स्वीकृति देते हैं। साथ ही उनके माता-पिता, जिनके साथ मेरा सम्बन्ध बन गया है, उदार हिन्दू विचार रखते हैं।"

"हाँ, यदि प्रबोध अपनी बात का पालन न कर सके तो?"

"क्यों नहीं करेंगे?"

"इसलिए कि वह कम्युनिस्ट है। उसके विचारों में कार्य-सिद्धि मुख्य और साधन गौण होते हैं।"

"प्रबोधजी ऐसे नहीं हैं।"

: ३ :

अगले दिन नीला ने दो सौ रुपया हरभजनसिंह के पास जमा करा दिया और फर्नीचर फिट करवाना आरम्भ कर दिया। पन्द्रह दिन में नीला का चिकित्सालय हरभजनसिंह के चिकित्सालय के साथ खुल गया। नीला के पास औरतें और बच्चे चिकित्सा के लिए आने लगे। वह ऑपरेशन के केस हरभजनसिंह को देने लगी। इस प्रकार दिन व्यतीत होने लगे। नीला का काम चलने लगा और हरभजनसिंह के काम में भी उन्नति होने लगी।

सुशीलकुमार की बलरामपुर हस्पताल में हाउस-सर्जन के रूप में नौकरी लग गई। वह नित्य इनसे मिलने दूकान पर आया करता था। वहाँ प्रायः अमृत से उसकी भेंट हो जाया करती थी। अमृत अभी भी कॉलेज में पढ़ती थी। दोनों जिस हाव-भाव से रहते थे, उससे यह प्रायः निश्चय ही प्रतीत होता था कि दोनों का विवाह होगा। अमृत अपने बालिग होने की प्रतीक्षा कर रही थी।

इस मेल-मिलाप को कई मास हो चुके थे। इस समय यह समाचार विख्यात होने लगा कि नीलरत्न भट्टाचार्य के लड़के सुशीलकुमार, हाउस-सर्जन बलरामपुर हस्पताल, का विवाह मनमोहन सरकार की लड़की से होने वाला है। नीला सरकार बाबू की स्त्री की चिकित्सा करती थी। उससे ही उसको यह बात पता चली थी। उसने, जो अमृत और सुशील के परस्पर व्यवहार को जानती थी, यह समाचार हरभजनसिंह को बता दिया। बात अमृत से की गई तो उसने कह दिया कि सुशील बाबू समय टालने के लिए इस भ्रम को दूर नहीं कर रहे। यद्यपि इस बात से सन्तोष नहीं हुआ तो भी हरभजनसिंह ने अमृत के बालिग हो जाने तक इस चर्चा को आगे नहीं चलाया।

इस समय एक घटना घटी। अमृत के माता-पिता ने अमृत का विवाह रचा दिया। गुरुद्वारा कमेटी के मन्त्री सरदार कर्तारसिंह के सुपुत्र सरदार प्रीतमसिंह ने सगाई स्वीकार कर ली। प्रीतमसिंह ने एम० ए० पास कर पंजाब के शिक्षा-विभाग में नौकरी कर ली थी। वह जालन्धर में डिस्ट्रिक्ट इन्स्पेक्टर नियुक्त हुआ था।

सरदार वढ़ियामसिंह ने दोपहर के समय सरदार कर्तारसिंह के घर सगाई का शकुन भेजा तो कर्तारसिंह के घर की स्त्रियाँ अमृत को देखने और उसको भूषण, कपड़े इत्यादि देने के लिए उसी सायंकाल आईं। वह सब-कुछ इतना चुपचाप किया गया कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमृत को इसका उस समय ही पता चला, जब उसकी होने वाली ससुराल की स्त्रियाँ उसको घेरकर खड़ी हो गईं। अमृत कॉलेज से आकर कमरे में बैठी ही थी।

अमृत की माँ उन स्त्रियों के साथ थी। एक स्त्री भूषणों का डिब्बा और कपड़ों का जोड़ा उठाए हुए साथ थी। यह स्त्री अमृत के सामने आई और उसके सिर पर प्यार देने लगी। अमृत इस समय कुरसी पर बैठी हुई थीं, अन्य स्त्रियाँ समीप रखी कुरसियों पर बैठ गई थीं। इस समय अमृत की माँ ने कहा, "अमृत बेटी, इनके चरण-स्पर्श करो। ये तुम्हारी सास हैं।"

अमृत का मुख विवर्ण हो गया। वह काठ की पुतली की भाँति बैठी-की-बैठी रह गई। उस स्त्री ने भूषणों का डिब्बा खोला और उसमें से एक कंठी निकालकर अमृत के गले में डालने के लिए हाथ बढ़ाया। अब अमृत को समझ आया कि क्या हो रहा है। उसने कंठी दोनों हाथ बढ़ाकर पकड़ ली और अपने सामने रख ली। अमृत की माँ ने कहा, "बेचारी को लज्जा लग रही है।"

"सब ठीक हो जाएगा।" दूसरी स्त्री ने कहा और अमृत का माथा चूम लिया। इसके पश्चात् वह सामान, जो वे स्त्रियाँ लाई थीं, अमृत के सामने रखकर, बधाइयाँ देकर कमरे के बाहर चली गईं।

उनके चले जाने के पश्चात् अमृतकौर कमरे से निकली और सीधी अपने भाई की दूकान पर जा पहुँची। वहाँ हरभजनसिंह को रोगी देखने के कमरे में ले जाकर रो-रोकर पूर्ण घटना बताने लगी।

हरभजनसिंह यह समाचार सुन बहुत चिन्तित हुआ। इस विषय में उसने नीला से राय करनी उचित समझी। वह अमृत को वहीं छोड़ नीला के चिकित्सालय में चला गया। जब नीला रोगियों को देखकर खाली हुई तो हरभजनसिंह उसको अपनी दूकान में ले आया और रोती हुई अमृत को दिखाकर कहने लगा, "उस आदमी के लड़के से अमृत का विवाह किया जा रहा है, जिसके सामने हम बाल कटवाने के पश्चात् जा भी नहीं सकते थे।"

"तो इसको आपकी विजय समझूँ अथवा पराजय?"

"इन लोगों की धूर्तता। जहाँ तक मैं समझता हूँ, विवाह के पश्चात् ये लोग अमृत को विवश करेंगे कि वह उनकी भाँति ही रहे।"

"तो इसका अभिप्राय यह हुआ कि जीवन-संघर्ष आरम्भ हो गया है। यदि और कोई बात न हो तो अमृत अपनी ससुराल में जाकर स्वतन्त्रता का अलख जगा दे।"

"नीलादेवी, यह नहीं। मेरा तो यह कहना है कि मैं वहाँ विवाह पसन्द नहीं करती।"

"क्यों? जब तुम्हारे माता-पिता वहाँ विवाह पसन्द करते हैं, तो तुम कैसे इन्कार कर सकती हो? तुम अभी नाबालिग हो।"

"मैं तीन-चार मास में बालिग होने वाली हूँ। मैं तब तक के लिए ठहरना चाहती हूँ, जिससे मैं स्वतन्त्रतापूर्वक विचार कर सकूँ।"

"यह विवाह कब हो रहा है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह मालूम नहीं है।"

"तो पहले यह पता करना चाहिए।"

इस पर हरभजनसिंह को इस बात का पता करने को कहा गया।

अमृतकौर ने कहा, "भैया, मैं इस लड़के से विवाह नहीं करूँगी। मैंने इसको देखा है। वह मुझे पसन्द नहीं है।"

"यदि वह तुमको अपनी निज की बातों में स्वतन्त्रता दे दे, तब भी क्या तुम पसन्द नहीं करोगी?"

"नीलादेवी, मैंने सुशीलजी को विवाह का वचन दिया हुआ है। इस कारण मैं अन्य किसी से विवाह नहीं कर सकती।"

"कब वचन दिया है? हमारा तो विचार है कि उसका विवाह मनमोहन सरकार की लड़की से हो रहा है।"

"मैं जानती हूँ। साथ ही मैं आपको बताना चाहती हूँ कि समय निकालने के लिए यह सब एक प्रकार से अभिनय किया जा रहा है।"

इस पर हरभजनसिंह ने कह दिया, "बहुत ही विचित्र बात है। मैं सुशील बाबू को चिरकाल से जानता हूँ। उसके कहने पर कोई भी विश्वास नहीं करता। वह भावुक आदमी है और भावनाएँ तरल पदार्थ की भाँति परिस्थितियों के बर्तन में पड़, उसी के रूप की हो जाती हैं।"

"परन्तु मैं सुशील बाबू से प्रेम करती हूँ।"

"प्रेम क्या होता है? क्या यह पसन्द का दूसरा नाम नहीं? पसन्द तो बदल भी सकती है। यदि सुशील के विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करने पर विचार बदल जाएँ, तो पसन्द क्यों नहीं बदल सकती?"

"प्रेम पसन्द से भिन्न वस्तु है। पसन्द का सम्बन्ध केवल शरीर से होता है। प्रेम मन का विषय है। यह एक प्रकार का सम्मोहन है।"

"नहीं अमृत!" हरभजनसिंह ने कुछ डाँटकर कहा, "यह ठीक है कि तुम प्रीतमसिंह को पसन्द नहीं करतीं और हमें तुमको उसके साथ विवाह करने पर विवश नहीं करना चाहिए। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं हो सकता कि हम तुमको एक ऐसे व्यक्ति के सम्मोहन में फँसने दें, जिसका भरोसा ही नहीं किया जा सकता। देखो, पसन्द केवल शरीर के रूप-रंग की ही नहीं होती। पसन्द किसी के विचारों की, किसी के संस्कारों की अथवा किसी के स्वभाव की भी हो सकती है। प्रत्येक विषय में पसन्द, जैसा मैंने बताया है, समय पाकर और ज्ञान-वृद्धि से बदल सकती है।"

अमृत इस प्रकार की युक्तियों का कुछ भी उत्तर नहीं रखती थी। इस पर भी वह अपने मन में यह इच्छा रखती थी कि हरभजन के सब अनुमान असत्य हों।

इस समय नीला ने अमृत से कहा, "अमृत, क्यों न तुम्हारे भैया सरदार कर्तारसिंह से मिलकर उसके विचारों का परिचय प्राप्त करें और यदि तुम मुझ पर विश्वास रखती हो तो मैं क्यों न सुशील से मिलकर उसके विचारों का पता करूँ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमृत चुप थी। वह समझ नहीं रही थी कि उसको क्या करना चाहिए। उसके चुप रहने का यह अर्थ लिया गया कि वह स्वीकार करती है कि उसका भाई और नीला उन दोनों परिवारों का ज्ञान प्राप्त करें, जिनके युवक उससे विवाह के इच्छुक हैं।

बात यहीं समाप्त हो गई और नीला अपने चिकित्सालय में चली गई। उसके चले जाने के पश्चात् हरभजन ने अमृत से कहा, "मैं प्रेम को एक निरर्थक वस्तु मानने लगा हूँ। मैं पहले नीला से प्रेम करता था। मैं समझता था कि यदि उसने मेरे अतिरिक्त किसी अन्य से विवाह किया तो मेरा 'हार्ट फेल' हो जायगा। नीला का विवाह हो गया और मैं अभी भी जीवित-जागृत हूँ।

"अब मैं दो अन्य लड़कियों से विवाह की बातचीत कर रहा हूँ। मैंने अब प्रेम को एक ओर रख दिया है और दोनों के गुण-अवगुणों का अध्ययन कर रहा हूँ। मैं समझता हूँ कि मन के इस भाव में मैं ग़लती नहीं करूँगा।"

"वे कौन हैं भैया?"

"एक है नीला की सहेली माधुरी, और दूसरी है प्रोफेसर निरंजनसिंह की लड़की लीलावती।"

"प्रोफ़ेसर निरंजनसिंह से तो बातचीत टूट चुकी थी।"

"हाँ, परन्तु उसकी लड़की से अभी भी बात चल रही है। वह इस विषय में अपने माता-पिता से विद्रोह करना चाहती है। वह लखनऊ आकर मुझसे मिल चुकी है और उसकी चिट्ठी-पत्री आती रहती है।"

"और यह माधुरी कैसी लगी है?"

"अच्छी है। सभ्य, सुशील और शान्त स्वभाव की है, परन्तु कुछ काली है।"

"और लीलावती गौर वर्ण की होकर भी क़ाले मन की निकली तो?"

"यही तो इतने दिनों से जानने का यत्न कर रहा हूँ।"

"भैया, तुम दोनों में से किसी से भी प्रेम नहीं करते, तो फिर उनको उत्तर क्यों नहीं दे देते?"

"मैं प्रेम नाम की वस्तु को नहीं जानता। मैं पसन्द को ही सब-कुछ समझता हूँ। यदि बाहर का रूप-लावण्य देखना होता तो अब तक विवाह प्रोफेसर साहब की लड़की से हो चुका होता। मैं उनके मन की अवस्था को जानने का यत्न कर रहा हूँ।"

"तो फिर मैं क्या करूँ?"

"तुम घर जाओ। मैं प्रोफेसर साहब से मिलकर आता हूँ।"

:४:

अमृत भीगी बिल्ली की भाँति दूकान से निकल गई। रात के आठ बजे रोगियों से छुट्टी पा हरभजनसिंह सरदार कर्तारसिंह के घर जा पहुँचा। सरदार कर्तारसिंह भोजन कर रहा था। हरभजनसिंह के आने की सूचना पा, भोजन छोड़ बाहर चला आया और हरभजनसिंह को बाहर बैठक में ले जा तथा बिठाकर पूछने लगा, "सुनाइए डॉक्टर साहब,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैसे आना हुआ ?"

"मैं प्रीतमसिंह से मिलने आया था।"

"क्या काम है ?"

"आज उसकी अमृत से सगाई हुई है न ?"

"वह तो जालन्धर में है। उसकी नियुक्ति पंजाब शिक्षा-विभाग में हो गई है।"

"सच ? किस पदवी पर ?"

"वह वहाँ इन्स्पेक्टर ऑफ़ स्कूल्स लग गया है।"

"यह तो बहुत ही प्रसन्नता की बात है। ऐसा मालूम होता है कि यह सगाई की बातचीत सब आपके द्वारा ही हुई है।"

"हाँ।"

"पर आप तो मेरे और अमृत के सख्त खिलाफ़ थे। अब यह सगाई और उसके लिए सब प्रयत्न एक विस्मयजनक बात प्रतीत होती है।"

"हरभजन बेटा, संसार में बहुत-सी बातें हैं, जो समझ का विषय नहीं। उनको समझने की आवश्यकता भी नहीं। परिस्थितियाँ और आवश्यकताएँ मनुष्य के कार्यों के संचालन में, बुद्धि से अधिक प्रभाव रखती हैं।"

"तायाजी, उन परिस्थितियों का ज्ञान प्राप्त करने ही आया हूँ। मेरा विचार था कि प्रीतमसिंह इस सम्बन्ध में प्रमुख व्यक्ति है। इसी कारण उससे मिलना चाहता था। यदि आपका इसमें हाथ है, तो आप इस बात पर प्रकाश डाल सकेंगे।"

"तुम्हारा अनुमान कि प्रीतमसिंह इसमें प्रमुख व्यक्ति है, ठीक ही है। मैं तो केवल उसके एजेन्ट के रूप में ही काम करता हूँ। अमृत गुरुद्वारे में आया करती थी और प्रीतमसिंह ने उसको देखा था। अब नौकरी मिलने पर उसने लिखा कि उसके विवाह का प्रबन्ध अमृत से किया जाय। इस पर मैंने उसको लिखा भी कि लड़की सिख धर्म से विचलित हो चुकी है। उसने केश कटवा दिए हैं और वह बहुत ही हठी लड़की है।

"इस पर उसने लिखा कि वह इस बात को जानता है। वह उससे ही विवाह करेगा। वह चंचल घोड़े की सवारी को सदैव पसन्द करता रहा है।

"मैंने उसको फिर लिखा कि मैं और उसकी माता पन्थ से विद्रोह करने वाली लड़की को अपनी पतोहू नहीं बना सकते।

"उसका उत्तर था कि वह तो उसको अपनी बीवी बनाना चाहता है, चाहे हमारी पतोहू बने अथवा न बने।

"मेरे यह लिखने पर कि वह उसको भी केश कटवाने की राय देगी, तो उसने लिखा कि यदि वह ऐसा कहेगी तो वह केश कटवा देगा। इस पर भी उसको आशा थी कि जब वह उसको प्रत्येक प्रकार की धार्मिक स्वतन्त्रता देने के लिए तैयार है, तो वह उसको ऐसी कोई बात नहीं कहेगी, जो उसकी स्वतन्त्रता में बाधक हो। उसने यह भी लिखा कि यदि हमने इस विषय में यत्न नहीं किया तो वह स्वयं लखनऊ आकर लड़की से बातचीत कर लेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने ये सब बातें तुम्हारे पिता सरदार वढ़ियामसिंहजी को बता दी हैं और वे राज़ी हो गए हैं।"

हरभजनसिंह इस सब कथन को सुनकर भौंचक्का रह गया। कर्तारसिंह ने उसको चुप देख यह समझा कि कदाचित् वह उसके कथन पर विश्वास नहीं कर रहा है। इस कारण उसने भीतर जाकर चिट्ठियों का एक बंडल लाकर हरभजनसिंह के सामने रख दिया। हरभजनसिंह ने बंडल खोल चिट्ठियाँ निकालकर बीच-बीच में पढ़ीं। जब उसको उनमें कर्तारसिंह का समर्थन मिला तो उसने कहा, "मेरे मन का संशय निवारण हो गया है। मैं एक प्रार्थना आपसे करना चाहता हूँ कि यदि अमृत इन पत्रों को पढ़ना चाहे तो क्या इनको आप एक दिन के लिए दे सकेंगे ?"

"क्यों नहीं ? मैं समझता हूँ कि वह इनको पढ़कर प्रसन्न होगी। इनके पढ़ने से उसके भावी जीवन पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा।"

हरभजनसिंह अमृत को इस परिस्थिति से अवगत करने के लिए मन में योजना बनाता हुआ अपने घर लौट आया। जब से उसका अपने माता-पिता से केशों के विषय में झगड़ा हुआ था, वह केवल आवश्यक कार्य पड़ने पर ही उनसे मिलता था। भोजन अपने कमरे में ही करता था। अतएव वह सीधा अमृत के कमरे में गया। वहाँ कमरे में उसके माता-पिता चिन्ता-ग्रस्त खड़े थे। उसने उनको इस प्रकार खड़े देख पूछा, "क्या बात है पिताजी ? अमृत कहाँ है ?"

"तो तुम्हारे साथ नहीं थी क्या ?"

"दूकान पर गई थी और वहाँ से दो घंटे हुए हैं, घर लौट आई थी।"

"यहाँ से वह पाँच बजे की गई हुई है। अब नौ बज रहे हैं।"

हरभजनसिंह को भी चिन्ता लग गई। उसका विचार था कि वह अपनी सखी मनोरमा के घर गई होगी। उसने जब अपना सन्देह बताया तो माँ ने कहा, "हमने उनके घर पर टेलीफोन किया था। वह वहाँ पर नहीं है।"

"तो माधुरी के घर से पता करना था।"

"तो यह तुम करो। उनके घर में भी तो टेलीफोन है।"

हरभजन ने अपने पिता के कार्यालय से बैरिस्टर प्रभुदयाल को टेलीफोन कर माधुरी को बुलाकर पूछा, "अमृत आपके यहाँ तो नहीं आई ?"

"क्यों, क्या बात है ?"

"दूकान से वह घर की ओर आई थी। दो घंटे से ऊपर हो चुके हैं और अभी तक नहीं पहुँची।"

माधुरी ने बताया कि वह वहाँ नहीं गई। इसके पश्चात् हरभजनसिंह सुशील के घर जाने के लिए पुनः मोटर पर सवार हो चल पड़ा। आजकल सुशील गोमती के पास अपने हस्पताल के साथ बने बँगलों में से एक में रहता था। वहाँ उसकी कोठी में टेलीफोन नहीं था। सुशील अपनी कोठी में नहीं था। वहाँ से हरभजनसिंह सुशील के पिता के घर गया। वह वहाँ पर भी नहीं था। अब उसको मामा की याद आई और वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहाँ जा पहुँचा। अमृत वहाँ भी नहीं थी। हरभजनसिंह शीघ्र घर लौट आया। वह समझता था कि कदाचित् वह घर लौट आई हो। वह अभी नहीं आई थी। वह पुनः मोटर पर उसको ढूँढने चल पड़ा। वह नीला के घर जा पहुँचा। प्रबोध ने अपनी कोठी रायबरेली रोड पर ले रखी थी। वहाँ भी टेलीफोन नहीं था।

प्रबोध बैठा सिगार पी रहा था और नीला एक मेडिकल जर्नल पढ़ रही थी। दोनों हरभजनसिंह को इस समय आते देख आश्चर्य में उसका मुख देखने लगे। प्रबोध ने विस्मय में पूछा, "हरभजनजी, इतनी रात गए इधर कहाँ घूम रहे हैं ?"

"नीलादेवी से एक काम था। इस कारण छः मील मोटर भगानी पड़ी है।"

नीला उठकर बरामदे में आ गई। हरभजनसिंह ने अमृत के विषय में बताया। नीला कुछ समझ नहीं सकी। उसने एक बात बताई, "मैं चिकित्सालय से हज़रतगंज में एक रोगी को देखने गई थी। जब वहाँ से निकली तो सुशील नरही की ओर से पैदल चला आ रहा था। मैंने नमस्कार कर पूछा कि किधर से आ रहे हैं, तो उसने कहा कि वह एक मित्र के घर गया हुआ था और वहाँ से अपने घर को जा रहा है। इस पर मैंने उसके विवाह की बात चला दी। उसका कहना था, 'माता-पिता रेणु से विवाह करने का हठ कर रहे हैं। मैं समझता हूँ कि उनको नाराज़ करना ठीक नहीं। यद्यपि मैं रेणु को बिल्कुल पसन्द नहीं करता, तो भी माता-पिता से सम्बन्ध-विच्छेद नहीं कर सकता।' "

"मैंने पूछा—'क्या अमृत को आपने विवाह का वचन दिया हुआ है ?'

'नहीं। मैंने उसको कोई वचन नहीं दिया। हाँ, वह मुझसे विवाह करने के लिए उत्सुक प्रतीत होती है। मैंने उसके विषय में बहुत विचार किया है। अमृत से मेरे विवाह के लिए न तो मेरे माता-पिता राज़ी हैं, न ही अमृत के। ऐसे विवाह से किसी का भी कल्याण मुझको समझ नहीं आता।'

"इसके पश्चात् इधर-उधर की बातें होती रहीं। जब हम म्यूटिनी-मेमोरियल के पास पहुँचे तो उसने टैक्सी मँगाई और मुझको यह कह कि उसने हस्पताल में एक अत्यावश्यक केस देखने जाना है, टैक्सी में सवार हो हस्पताल की ओर चला गया।

"मैं समझती हूँ कि सुशील से अमृत का विवाह नहीं होगा।"

"पर वह गई कहाँ है ?"

इसका उत्तर नीला के पास नहीं था। निराश हरभजनसिंह घर लौट आया। वहाँ उसकी माँ और पिता अभी भी अमृत की प्रतीक्षा कर रहे थे। वे हरभजन को अकेला आते देख बहुत दुःख अनुभव करने लगे।

वे रात-भर उसके लौट आने की प्रतीक्षा करते रहे, परन्तु वह नहीं आई।

प्रातःकाल हरभजनसिंह अपने पिता के पास जाकर कहने लगा, "आप उसकी सगाई करने से पहले मुझसे तो पूछ लेते। न मुझसे राय की, न अमृत से।"

"हमको क्या मालूम था कि वह अब बिल्कुल बागी हो गई है। मेरी सगाई मेरे पिता ने की थी और मेरे पिता की मेरे बाबा ने। प्रीतमसिंह की सगाई करने उसके पिता आए थे। कुछ हमारे ही घर में हो गया है कि बड़ों का बच्चों पर अधिकार ही नहीं रहा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह बात नहीं भापाजी, आप वे बातें करते हैं, जो सन् १९२० और १९०१ की थीं। रही कर्तारसिंह की बात, वह अपने लड़के की इच्छा से विवाह का प्रस्ताव लेकर आया था। मैं प्रीतमसिंह की अपने पिता के नाम चिट्ठियाँ पढ़कर आया हूँ। एक बात और बताता हूँ। रात सरदार कर्तारसिंह से मेरी बातचीत हुई थी। उसने कहा था कि अक्ल से अधिक परिस्थितियाँ और आवश्यकताएँ मनुष्य के कामों को प्रेरणा देती हैं।"

"यह तो उसने मुझसे भी कहा था।"

"परन्तु आपने उसके कहने का लाभ नहीं उठाया। आपने अपने घर की परिस्थिति और अमृत की आवश्यकता की ओर ध्यान नहीं दिया। साथ ही आज स्वराज्य हो गया है और इस समय प्रत्येक व्यक्ति अपने प्रत्येक क्षेत्र में स्वतन्त्रता चाहता है।"

"मैंने यह साधारण-सी बात समझी थी। क्या लिखा था उसने अपनी चिट्ठियों में?"

"उन चिट्ठियों में प्रीतमसिंह ने लिखा है कि अमृत के विषय में वह सब-कुछ जानता है और वह, यदि अमृत चाहे तो, अपने बाल भी कटवाने को राज़ी है। यदि आप सगाई से पूर्व ये चिट्ठियाँ अमृत को दिखा देते तो इनका प्रभाव उस पर अच्छा ही होता।"

"अच्छा बाबा, तुम अब उसको ढूँढकर लाओ। जो-कुछ वह कहेगी हम मान जाएँगे।"

"देखिए, यत्न कर रहा हूँ। रात को तो सफलता नहीं मिली।"

सरदार वढ़ियामसिंह और उसकी पत्नी का यह विचार था कि हरभजनसिंह अमृत के विषय में जानता है, परन्तु बताना नहीं चाहता। इस कारण वे उसकी खुशामद करने लगे। वढ़ियामसिंह ने कहा, "देखो हरभजन, अब बूढ़ा हो गया हूँ। मेरा सब-कुछ तुम्हारा ही है। अब तो मैंने अपनी आत्मा भी तुम लोगों को बेच दी है। अमृत को ढूँढ लाओ और जो-कुछ वह कहेगी, मानूँगा।"

: ५ :

अमृत का पता नहीं चला। दिन-पर-दिन व्यतीत होते गए और अमृत के माता-पिता तथा अन्य परिचितों को उसके लौटने की निराशा हो गई। हरभजनसिंह ने समाचार-पत्रों में विज्ञापन छपवा दिया। उनमें उसने लिखवाया कि अमृत के माता-पिता उसकी प्रत्येक बात मानने को तैयार हैं, उसको घर आ जाना चाहिए।

इन विज्ञापनों से सरदार कर्तारसिंह और सरदार प्रीतमसिंह को अमृत के घर से भाग जाने का समाचार मिल गया और सगाई टूट गई।

इन दिनों हरभजनसिंह अमृत का पता लगाने में संलग्न रहा। वह दूकान पर कम-से-कम आवश्यक समय ही देता था और नीला से उसकी भेंट बहुत कम होती थी। माधुरी से मिले भी बहुत काल हो गया था। अमृत को घर से गए तीन मास के लगभग हो गए थे और लाख यत्न करने पर भी उसका पता नहीं चला था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माधुरी कई बार हरभजनसिंह से मिलने आई थी, परन्तु वह दूकान पर नहीं मिलता था। एक दिन वह नीला के पास बैठी हरभजन और अमृत के विषय में बातचीत कर रही थी कि एक लड़की हरभजनसिंह को पूछती हुई वहाँ आई। वह नीला से पूछने लगी, "डॉक्टर हरभजनसिंह के चपरासी ने बताया है कि आप बता सकती हैं कि डॉक्टर साहब कब आएँगे ?"

"डॉक्टर साहब बताकर नहीं गए, इसलिए कह नहीं सकती। इस पर भी वे प्रायः बारह बजे से पहले आ जाया करते हैं।"

"मुझको आज ही पंजाब मेल से जाना है। इस कारण मेरा तुरन्त मिलना अत्यावश्यक है।"

"कोई ऐसा काम हो, जिसमें मैं आपकी सहायता कर सकती हूँ, तो आज्ञा कीजिए। मैं यथाशक्ति सहायता करूँगी।"

"आप मुझको एक बजे से पहले उनसे मिला दीजिए, यही मेरी सहायता है।"

"आप कहाँ से आई हैं ?"

लड़की की आँखें झुक गईं। उसने धीरे से कहा, "यदि मैं आपके प्रश्न का उत्तर न दूँ तो आप क्षमा नहीं करेंगी क्या ?"

नीला इस प्रकार का उत्तर सुन चकित रह गई। यह उत्तर हृदय की शुद्धता का सूचक ही कहा जा सकता था। नीला को सन्देह तो था कि वह दिल्ली से आई है और प्रोफ़ेसर निरंजनसिंह की लड़की है। इस पर भी वह विचार कर रही थी कि उससे अपना सन्देह निवारण करे अथवा नहीं। साथ ही उसको हरभजनसिंह के माधुरी से विवाह की चर्चा का भी ज्ञान था। इस कारण उसने बात आगे नहीं चलाई। उसने कहा, "कुछ हानि नहीं। आपका पता जानने से मुझको कुछ काम भी नहीं। आप यहाँ बैठिए। मैं टेलीफोन से उनके घर और मित्रों से पता करने का यत्न करती हूँ।"

हरभजनसिंह प्रबोध की फैक्टरी में मिल गया। जब नीला ने उसको बताया कि कोई लड़की उससे पंजाब मेल के समय से पहले मिलने आई है, तो उसने कहा, "मैं दस मिनट में आता हूँ। वह दिल्ली से आई मालूम होती है।"

"मेरा भी यही विचार है, पर मैंने उससे पूछा नहीं। माधुरी भी यहाँ बैठी आपकी प्रतीक्षा कर रही है।"

"नीला !" हरभजनसिंह ने घबराकर टेलीफोन में कहा, "परमात्मा के लिए माधुरी को वहाँ से टाल दो। मैं उन दोनों को परस्पर बातचीत करने का अवसर देना नहीं चाहता। अभी बात खोल देने का समय नहीं आया।

"अच्छा देखो, तुम माधुरी को यहाँ भेज दो। उससे मिलकर मैं आधे घंटे में दूकान पर आ जाऊँगा। उस लड़की को वहीं मेरी प्रतीक्षा करने दो।"

"वहाँ प्रबोधजी नहीं हैं क्या ?"

"हैं तो, परन्तु एक विकट झगड़े में फँसे हैं।"

"क्या झगड़ा है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरभजनसिंह को समझ आ गया कि उसने एक भारी भूल कर दी है। उसको प्रबोध के विषय में कुछ नहीं कहना चाहिए था। परन्तु बात मुख से निकल गई। उसने और अधिक बात न कहने के लिए टेलीफोन बन्द कर दिया। नीला विस्मय में टेलीफोन के समीप खड़ी रही।

कुछ विचारकर वह अपनी दूकान में आई तो माधुरी से बोली, "प्रबोधजी के कारखाने में कुछ झगड़ा है। डॉक्टर साहब ने तुम्हें वहाँ बुलाया है।"

माधुरी बिना एक भी शब्द कहे उठ खड़ी हुई और टैक्सी लेकर अपने भाई के कारखाने को चली गई।

उसके चले जाने के बाद उसने दूसरी लड़की से कहा, "डॉक्टर साहब आधे घंटे में यहाँ आ जाएँगे। आप बैठें।"

नीला अपने कार्य में व्यस्त हो गई। वह केवल बच्चों और औरतों की चिकित्सा करती थी। भारतीय समाज में सबसे अधिक रोगी इन्हीं दो वर्गों में मिलते हैं। परिणाम यह हो रहा था कि नीला का काम दिन-दुगुना रात-चौगुना उन्नति कर रहा था।

हरभजनसिंह का काम बहुत कम था। कभी मास में एक-आध बड़ा ऑपरेशन आ जाता, तो सौ-दौ सौ रुपया मिल जाता। दिन में छः-सात मरहम-पट्टी के केस आ जाते थे। इस प्रकार वह केवल अपनी दूकान का खर्चा ही निकाल सकता था।

हरभज़न और नीला ने अपना एक संयुक्त दवाईखाना खोला हुआ था, जिसमें उनके दिए नुस्खे बनते थे। दवाईखाने का ठेका हरभजनसिंह के मामा के लड़के को मिला हुआ था। इससे भी हरभजनसिंह को कुछ विशेष आय नहीं होती थी। उसके अपने रोगी बहुत कम होते थे और इस कारण नुस्खे भी कम होते थे। एक-दो मास से हरभजनसिंह एक इन्श्योरेंस कम्पनी का मेडिकल ऑफ़िसर नियुक्त हो गया था। इससे उसको डेढ़-दो सौ मासिक की आय होने लगी थी।

जहाँ नीला को हरभजनसिंह से अधिक आय होती थी, वहाँ उसका खर्चा भी अधिक था। उसने अपनी एक छोटी-सी मोटर गाड़ी रखी हुई थी, जो वह स्वयं चलाती थी। इस पर भी गाड़ी का खर्चा डेढ़-दो सौ रुपया महीना पड़ जाता था। कोठी का किराया दो सौ रुपया महीने देना पड़ता था। नौकर का खर्चा, क्लिनिक का खर्चा और साथ ही घर की रोटी-पानी का खर्चा भी वही दे रही थी।

प्रबोध ने पचास हज़ार की मशीनरी लगाई थी। यह रुपया उसने अपने पिताजी से उधार लिया था। कारखाने का किराया और नौकरों का वेतन, यह वह निकालता था। प्रबोध का अपना भी खर्चा था। कारखाना खुले एक वर्ष से ऊपर हो चुका था और अभी तक उसने घर के खर्चे के लिए कारखाने में से कुछ नहीं निकाला था।

जब-जब नीला कारखाने के विषय में प्रबोध से पूछती, वह कह देता था कि नया काम है, अभी उसमें से कुछ निकालने की गुंजाइश नहीं। परिणाम यह हो रहा था कि घर-गृहस्थी का पूर्ण खर्चा नीला को वहन करना पड़ रहा था। उसका काम दिन-प्रतिदिन उन्नति कर रहा था, इस कारण वह इस बोझे की चिन्ता नहीं करती थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ६ :

आज हरभजनसिंह ने टेलीफोन में यह बताया था कि प्रबोध एक झगड़े में फँसा हुआ है। यह उसकी चिन्ता का कारण बन गया। वह एक बजे अपने औषधालय से अवकाश पा, सीधी कोठी को चली जाया करती थी और प्रबोध वहाँ पहले ही पहुँचा होता था। आज वह अपने चिकित्सालय से साढ़े बारह बजे ही निकल पड़ी और घर जाने के स्थान कारखाने को चल पड़ी। उसने देखा कि कारखाने के बाहर कर्मचारी धरना दे रहे हैं। वह भीतर गई तो प्रबोध को अपने कार्यालय में बैठे हुए कर्मचारियों के नेता से बातचीत करते देखकर दरवाज़े में खड़ी रह गई।

प्रबोध नीला को वहाँ देख बहुत झेंपा और उसने पूछा, "आज भोजन नहीं करना क्या?"

"आपके साथ ही तो करना है, चलिए।"

"मेरे पास मेरी अपनी कार है। मैं आ जाऊँगा।"

"नहीं, इकट्ठे चलेंगे।" यह कह, वह एक कुर्सी पर बैठ गई।

"नीला, तुम चलो। मैं इनसे एक आवश्यक बात कर रहा हूँ। बस, पाँच मिनट में आता हूँ।"

"तो मैं पाँच मिनट यहीं प्रतीक्षा नहीं कर सकती क्या?"

"इन कारखाने की बातों में तुमको रुचि तो है नहीं। व्यर्थ में दिमाग खराब होगा।"

"आज इसका भी मज़ा लेना चाहती हूँ।"

कर्मचारियों के नेता ने समझा कि बात आगे नहीं चल सकेगी। इस कारण वह उठ खड़ा हुआ और कहने लगा, "प्रबोध बाबू, शेष बात कल करेंगे। हड़ताल अभी कल भी चलेगी।"

"नहीं, मैं आज ही इसका फैसला कर देना चाहता हूँ। आप ढाई बजे आ जाइएगा। शेष बातों पर उस समय बात कर लेंगे।"

"मुझको सायंकाल काम है, मैं आ नहीं सकूँगा।"

"इनका क्या परिचय है?" नीला ने प्रबोध की ओर देखकर पूछा।

"ये ऑटोमोबाइल वर्कर्ज़ यूनियन के प्रधान हैं। इनका नाम श्री शिशिर कुमार बैनर्जी है।"

"आप किस कम्पनी में काम करते हैं?"

"ये काम नहीं करते। ये यूनियन के प्रधान हैं।"

उत्तर शिशिर कुमार ने दिया, "कर्मचारी वर्ग की सेवा मेरा काम है।"

"ओह, समझ गई! आप 'ऐजिटेटरों' के दल में हैं।"

"इस शब्द में एक व्यंग्य भरा हुआ है। वास्तव में मैं ऐजिटेटर तो हूँ, परन्तु व्यर्थ की ऐजिटेशन करना मेरा काम नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह तो इस हड़ताल का इतिहास जानने पर पता चलेगा। चलिए प्रबोधजी, इनसे बातचीत कल कर ली जाएगी।"

"नीला, तुमको यह पता होना चाहिए कि लगभग तीन सौ रुपए प्रतिदिन के हिसाब से हानि हो रही है। एक-एक दिन कठिनाई से व्यतीत हो रहा है।"

"कितने दिन से यह हड़ताल चल रही है?"

"एक मास से ऊपर हो गया है।"

"तो जहाँ इतनी हानि हो चुकी है, वहाँ तीन सौ रुपए और सही। चलिए, बहुत भूख लगी है।"

विवश प्रबोध भी उठा और तीनों कारखाने से बाहर आ गए। आज प्रबोध नीला की मोटर में ही घर को चल पड़ा। मार्ग में नीला ने कहा, "मैं हरभजनसिंह को ढूँढ रही थी। हर स्थान पर, जहाँ उसके मिल जाने की आशा थी, टेलीफोन किया और वे मिले आपके कारखाने में। उन्होंने बताया कि आप एक झगड़े में फँसे हुए हैं। इस कारण मैंने उचित समझा कि देखूँ ऐसा कौन-सा झगड़ा है, जिसका मुझको ज्ञान नहीं और हरभजनसिंह को ज्ञान है।

"क्या मैं जान सकती हूँ कि हरभजनसिंह का इस कारखाने में क्या अधिकार है, जो मुझसे अधिक यहाँ का उसको ज्ञान रहता है?

"उसका इन बातों को जानने का अधिकार कितना अधिक है, यह तो एक बात है। मैं समझती हूँ कि आपके किसी झगड़े में फँस जाने पर सर्वप्रथम मुझको पता चलना चाहिए था, यह दूसरी बात है।"

"नीला, मैंने इस कारखाने के झगड़े में तुमको घसीटने का यत्न नहीं किया। इसको व्यर्थ समझ, अपने-आप ही इसकी समस्याओं को सुलझाने का यत्न करता रहा हूँ।"

"व्यर्थ क्यों है? क्या इसकी उन्नति अथवा इसकी हानि से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं? और फिर हरभजनसिंह का क्या सम्बन्ध है?"

"बात यह है कि पिताजी से इसके लिए पचास हज़ार लिया था और पीछे और रुपए की आवश्यकता पड़ी तो बैंक से लिया और जब बैंक से और नहीं मिल सका तो हरभजनसिंह के मामा से उधार लिया था। इस समय उनका दस हज़ार रुपया कारखाने में लगा हुआ है।"

"तो यह रुपया आपने सरमाया बढ़ाने के लिए लिया था अथवा चालू खर्चे के लिए?"

"एक ही बात है। पिताजी से लिया रुपया तथा बैंक से लिया हुआ रुपया खर्च हो जाने पर ही उनसे लेने की आवश्यकता पड़ी थी।"

"पिताजी को भी तो हड़ताल की सूचना दी होगी?"

"नहीं, उनको बताने की आवश्यकता नहीं समझी। इसी प्रकार बैंक को भी यह बताना ठीक नहीं था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं समझती हूँ कि यह ठीक नहीं हुआ। जिसका दस हज़ार लगा हुआ है, उसको तो आपने कारखाने की स्थिति से परिचित रखा है और जिसका पचास हज़ार लगा है, उनको आपने बताया ही नहीं।"

"बात यह है कि मैंने कारखाने के कर्मचारियों को वेतन-भत्ते और अन्य सुविधाएँ दूसरे कारखाने वालों से अधिक दे रखी हैं। इस वर्ष का हिसाब बनाने पर पता चला कि लाभ नाम मात्र का ही हुआ है। मैंने हरभजनसिंह से राय की तो उसने मुझको राय दी कि वेतन और भत्ते में कमी की जाय। अतएव मैंने बीस प्रतिशत भत्ते और वेतन में कमी कर दी और कारखाने के काम करने के घंटों को बढ़ा दिया। इस पर कर्मचारियों ने पहले तो नोटिस दिया और पीछे हड़ताल कर दी। मैंने नोटिस के समय और अब हड़ताल के समय भी एक-एक कर्मचारी को बुलाकर समझाया कि इस कमी करने पर भी उनका वेतन किसी भी दूसरे ऐसे कारखाने के कर्मचारियों से कम नहीं है। परन्तु ये नहीं माने और हड़ताल कर दी है।"

"यह बात तो आपकी समझ आती है, परन्तु यह समझ नहीं आता कि हरभजनसिंह की राय आपने ली और मान ली, परन्तु आपने पिताजी से इस विषय में बात भी नहीं की, उनकी राय मानना तो दूर रहा।"

"वे वकील हैं और बूर्जुआ मनोवृत्ति रखते हैं। उनसे बात करने पर तो बात सुलझने के स्थान पर बिगड़ने की अधिक सम्भावना थी।"

"तो अब बात सुलझ गई है क्या?"

"वास्तव में कुछ भी नहीं सुलझी। असली बात, जिसके लिए एक मास से हड़ताल हो रही है, वह है वेतन में कटौती। इस पर शिशिर कुमार चट्टान की भाँति डटा हुआ है।"

"तो किस बात पर समझौता हो गया है?"

"काम करने के घंटों पर।"

"काम करने के घंटे तो कानून के नियत हैं न?"

"हाँ, परन्तु मैंने कुछ रियायत कर रखी थी।"

"कितना लाभ हुआ था पिछले वर्ष में?"

"केवल पाँच सौ पचपन रुपए।"

"आपने अपना वेतन कितना निकाला है?"

"वेतन कुछ नहीं। कारण यह कि मालिक लाभ का हकदार होता है, वेतन का नहीं।"

"तो इसका अर्थ यह हुआ कि पिछले वर्ष कारखाने में हानि हुई है?"

"हाँ, असल बात तो यही है।"

"तो अब बात क्या थी, जो निश्चित नहीं हो रही थी?"

"बताया तो है कि वेतन और भत्ते की बात वे नहीं मानते। साथ ही काम करने के घंटे बढ़ाने के प्रतिकार में पिछले वर्ष का बोनस माँगते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बोनस ? जब लाभ नहीं हुआ तो बोनस कैसा ?"

"वे लाभ में से बोनस नहीं चाहते। वे तो काम अधिक करने के लिए प्रोत्साहन चाहते.हैं।"

"मैं समझती हूँ कि पिताजी को पूर्ण परिस्थिति से अवगत कर देना चाहिए।''

"वे मेरे मन की बात को समझ नहीं सकेंगे।"

"कुछ भी हो। जब उनका दिया धन कारखाने में लगा हुआ है, तो उनको कारखाने की हालत से परिचित कराना ही चाहिए।"

: ७ :

सायंकाल प्रबोध कारखाने में नहीं गया। वह पिताजी को कारखाने की अवस्था बताने के लिए उनसे मिलने चला गया। प्रभुदयाल कारखाने की अवस्था सुन कहने लगा, "मैं तो इसमें तुम्हारी बैलेन्स-शीट देखे बिना राय नहीं दे सकता। तुम्हारे कारखाने में हो रहा काम देखकर मैं समझता था कि तुमको कम-से-कम बीस हज़ार रुपए का लाभ होगा। मुझको आश्चर्य है कि लाभ के स्थान पर हानि हुई है।"

बैलेन्स-शीट कारखाने में पड़ी थी। इस कारण पिता-पुत्र दोनों कारखाने में चले आए। कारखाने के बाहर कर्मचारी धरना दे रहे थे। प्रभुदयाल उनको वहाँ बैठे देख पूछने लगा, "ये कौन हैं ?"

"ये कारखाने के कर्मचारियों में मे हैं।"

"यहाँ क्या कर रहे हैं ?"

"धरना दे रहे हैं कि कोई काम पर न आ जाय।"

"तो कोई आने का यत्न कर रहा है क्या ?"

"मैं नहीं जानता।"

"ज़रूर कर रहा है।" इस प्रकार प्रभुदयाल ने एक आदमी को सम्बोधन कर पूछा, "यहाँ बैठे क्या कर रहे हो ?"

"किसी काम पर जाने वाले को रोकने के लिए यहाँ बैठे हैं।"

"पर कारखाना तो बन्द है, कौन काम पर आएगा ?"

"क्या जाने कोई आ जाय।"

प्रभुदयाल कारखाने के भीतर चला गया और कार्यालय में पहुँच उसने कहा, "प्रबोध, मैं तो समझता था कि तुम बहुत ही समझदार आदमी हो। तुम यह हड़ताल तोड़ सकते थे। इनके धरना देने से यह बात सिद्ध होती है कि कुछ कर्मचारी ऐसे हैं, जो काम पर आना चाहते हैं। यदि तुममें कुछ भी बुद्धि होती तो अभी तक यह हड़ताल टूटी हुई होती। कब से ये लोग धरना दे रहे हैं ?"

"हड़ताल के आरम्भ होने के तीन-चार दिन पीछे ही यह धरना आरम्भ हो गया था।"

"इससे यह पता चलता है कि आरम्भ से ही ये कर्मचारी एकमत नहीं थे। इनमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ तो ऐसे हैं ही, जो हड़ताल को न्यायसंगत नहीं समझते।"

प्रभुदयाल ने कारखाने की बैलेन्स-शीट देखी। कर्मचारियों की काम की किताब देखी और पश्चात् 'लेज़र' में खर्च का खाता देखा। इसके पश्चात् उसने कागज़ पर कुछ बातें नोट कर लीं।

कारखाने से वह प्रबोध को साथ लेकर नीला के चिकित्सालय में जा पहुँचा। इस समय शाम के सात बज रहे थे। वहाँ रोगियों की भीड़ लगी थी। इस कारण वे हरभजनसिंह की ओर चले गए। वहाँ हरभजनसिंह ने पूछा, "क्या हुआ है, मिस्टर प्रबोध?"

"अभी कुछ नहीं हुआ।"

इस पर हरभजनसिंह ने कहा, "मेरी तो अब भी यही राय है कि कारखाना बन्द कर देना चाहिए। इस ढंग से यह चल नहीं सकता।"

"क्या दोष देखा है आपने?" प्रभुदयाल ने पूछा।

"इस कारखाने में प्रबोध बाबू ने एक 'ऐडवायज़री-कौंसिल' बना रखी है। उसमें कर्मचारियों के प्रतिनिधि सम्मिलित हैं। उस कौंसिल को अधिकार दे रखा है कि किसी कर्मचारी को निकालना अथवा रखना, किसी के वेतन में वृद्धि अथवा कमी करना अथवा किसी की छुट्टी मंजूर करना, ये कार्य वह बहुमत से करे। यह कौंसिल जड़ है इस कारखाने की असफलता की।"

"मैं प्रत्येक काम का ढंग बताता था।" प्रबोध ने कहा।

"कारखाने में मैनेजर कौन था?" प्रभुदयाल ने पूछा।

"यही कौंसिल।"

"मैंने रुपया कौंसिल को नहीं दिया था। तुमने मेरे रुपए को मुझसे पूछे बिना इस कौंसिल के हवाले क्यों कर दिया?"

"आपका रुपया तो मशीनरी में लगा हुआ है। उसमें किसी प्रकार की हानि नहीं हुई।"

"मैं हानि की बात नहीं पूछ रहा। मैं पूछता हूँ कि यह कौंसिल मेरे रुपए से खिलवाड़ करने का क्या अधिकार रखती है?"

"मैं समझता हूँ कि जब कर्मचारी स्वयं अपना प्रबन्ध करें तो अधिक योग्यता से कर सकेंगे।"

"क्या अब भी तुम्हारा यही विचार है?"

"पिछले वर्ष तो जो-कुछ हुआ है, वह अनुभवहीनता के कारण हुआ है। इस वर्ष हानि की सम्भावना नहीं।"

"देखो प्रबोध, जब अनुभव रखने वाले लोग संसार में विद्यमान हैं तो अनुभवहीनों के हाथ में काम देना एक अपराध है। अधिकार अनुभव के आधार पर मिलते हैं।"

"मैं इस कारखाने की अवस्था देखकर इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि यहाँ आरम्भ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से अन्त तक सब-कुछ गलत होता रहा है। इस कारण कल से यह कारखाना बन्द होगा। यह कारखाना किसी अधिकारी के हाथ में देने के पश्चात् खोला जाएगा। इस कारण कारखाना अभी बन्द करने का नोटिस दे दिया जाएगा।"

"इससे भारी पेचीदगियाँ उत्पन्न हो जाएँगी।"

"मैं उनकी सब बातें कानून से आज रात को देख लूँगा। इस पर भी यह तो निश्चय करना होगा कि कारखाना इस रूप में चल नहीं सकता। जो कुछ भी देना पड़े, हम देंगे, परन्तु इस प्रबन्ध को बदलना ही पड़ेगा।"

नीला अपने रोगियों से अवकाश पाकर वहीं आ गई। प्रभुदयाल ने बताया, "मैंने कारखाने का हिसाब देखा है और मुझको यह समझ आया है कि उसकी आर्थिक अवस्था बहुत ही बिगड़ चुकी है। कारखाने को देना है सत्तर हज़ार और इसकी सम्पत्ति है उन्हत्तर हज़ार रुपया, अर्थात् इसमें एक हज़ार रुपए की हानि हुई है।"

"आपने वह डेढ़ हज़ार नहीं गिना, जो अपने जेब-खर्च के लिए ले चुका हूँ।"

"पर इसमें तुमने उस रुपए का सूद नहीं लगाया, जो मैंने तुमको दिया हुआ है।"

"मालिक के रुपए का सूद नहीं लग सकता।"

"इस पर भी पाँच सौ रुपए लाभ तो कुछ लाभ नहीं कहा जा सकता।"

इस पर नीला ने कहा, "पिताजी, यह बात तो स्पष्ट ही है कि कारखाने की हालत अच्छी नहीं है। प्रश्न तो यह है कि इसका कारण ढूँढा जाय और उस कारण को हटाने का यत्न किया जाय।"

"मैंने कारण ढूँढ लिया है और उसका उपाय भी विचार कर लिया है। कारण यह है कि प्रबोध व्यवसाय करना नहीं जानता और इसका उपाय है कि कारखाना कल से किसी व्यवसाय की ऊँच-नीच जानने वाले के हाथ बेच दिया जायगा और प्रबोध वहाँ नौकर होगा।"

इस बात को सुन नीला और हरभजनसिंह मुख देखते रह गए। उनको चुप देख प्रभुदयाल ने आगे कहा, "मैं जानता हूँ कि प्रबोध मन में क्या विचार कर रहा है। वह समझता है कि मैं एक बूर्जुआ मनोवृत्ति का आदमी हूँ और मेरे लिए मानवता की धन के सम्मुख कोई कीमत नहीं है। क्यों प्रबोध, मैंने ठीक जाना है न?"

प्रबोध ने साहस करके कहा, "ठीक-ठीक ऐसा तो नहीं। हाँ, यह तो बात स्पष्ट ही है कि आपने रुपए बचाने का प्रबन्ध तो कर लिया, परन्तु उन मनुष्यों का, जो इस कारखाने में काम कर रहे हैं और उनके बाल-बच्चों का कुछ भी विचार नहीं किया।"

"पहले तो मैंने तुम्हारा विचार किया है। यह बताओ कि तुमने सत्तर-अस्सी हज़ार रुपए को खतरे में डाला हुआ है अथवा नहीं? तुम इस काम के अयोग्य हो अथवा नहीं? देखो, यह मेरा विश्वास है कि वे लोग, जो सागर में तैरना नहीं जानते, सागर में तैरने वालों को गालियाँ देते रहते हैं। जो स्वतन्त्र कार्य करना नहीं जानते, वे नौकरी पाने के लिए यत्नशील रहते हैं। जिनको व्यक्ति अर्थात् मनुष्य की श्रेष्ठता पर विश्वास नहीं होता, वे समाजवाद का आश्रय लेकर व्यक्ति की स्वतन्त्रता का ही नाश कर देना चाहते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। इस सबका परिणाम यह हो जायगा कि समुद्र सूखेगा नहीं, परन्तु सागर में न तैरने वाले रत्नों से वंचित रह जाएँगे। स्वतन्त्र कार्य तो चलेंगे, परन्तु नौकरी पाने की इच्छा वालों को दासता मिल जायगी। इसी प्रकार मानवता डूबेगी नहीं, परन्तु समाजवाद का आश्रय लेने वाले स्वयं डूब जाएँगे।"

:८:

अगले दिन कारखाने के बाहर एक विज्ञापन लगा हुआ मिला। कर्मचारी, जो वहाँ धरना देने आए थे, उस विज्ञापन को पढ़कर चकित रह गए। विज्ञापन में लिखा था— 'यह कारखाना हानि पर जा रहा था, इस कारण यह बेचा जा रहा है। सब कर्मचारियों को यह सूचित किया जाता है कि वे कारखाने के मालिक श्री प्रबोधचन्द्र से मिलकर अपना-अपना हिसाब कर लें।'

सूचना यूनियन के प्रधान के पास भेजी गई और वह भागा हुआ वहाँ चला आया। प्रबोध वहाँ पर नहीं था। कारखाने को ताला लगा था। यूनियन के प्रधान ने सब कर्मचारियों को वहीं कारखाने के बाहर एकत्रित कर मीटिंग कर ली। प्रभुदयाल इस प्रकार की किसी कार्यवाही की आशा करता था और वह प्रातःकाल से ही डिप्टी कमिश्नर से मिलकर कारखाने की रक्षा के लिए पुलिस की नियुक्ति के लिए यत्न कर रहा था। जब कर्मचारी कारखाने के बाहर मीटिंग कर रहे थे, एक दस्ता पुलिस के आदमियों का वहाँ आकर खड़ा हो गया। पहले तो कर्मचारी घबराए और भयभीत हो भागने के लिए तैयार हो गए, परन्तु पुलिस वालों से पूछने पर उनको कुछ सन्तोष हुआ। पुलिस वालों में बन्दूकची भी थे। उनका खर्चा प्रभुदयाल को देना पड़ा था।

आज प्रबोध को कोई काम नहीं था। वह कुछ काल के लिए पिताजी की बैठक पर रहा, पश्चात् वह नीला के चिकित्सालय में आ गया। प्रभुदयाल भी पुलिस को कारखाने पर बिठाकर, वहीं आ गया। नीला ने अपने नौकर को भेजकर पता किया कि कारखाने के बाहर क्या हो रहा है। वह आया और उसने बताया कि मीटिंग में प्रबोध बाबू और नीलादेवी को गालियाँ दी जा रही हैं।

प्रभुदयाल ने एक नोटिस कर्मचारियों के नाम लिखाया और प्रबोध को उसकी बहुत-सी कापियाँ छपवाने के लिए कहकर बताया कि उन पर हस्ताक्षर कर सब कर्मचारियों को भेज दे।

नोटिस इस प्रकार था—"मैंने कारखाने को एक कौंसिल के अधीन कर रखा था। उस कौंसिल ने प्रबन्ध इतना खराब किया है कि कारखाने में लाभ तो दूर रहा, भारी हानि हुई है। इस कारण कारखाना बन्द करना पड़ा है। मेरे बार-बार समझाने पर भी आपने हड़ताल जारी रखी थी। इस हड़ताल के कारण तो यह कारखाना और भी बोझे के नीचे दब गया है। इस कारण मैं आपको यह बताते हुए दुःख अनुभव करता हूँ कि कारखाना अब आगे नहीं चल सकता और आपके अब पुनः इस कारखाने में काम पाने की मैं कोई आशा नहीं दिला सकता। आप कल के बाद किसी भी दिन दोपहर के बारह बजे से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकर तीन बजे तक और सायंकाल आठ बजे से दस बजे तक नीलादेवी के चिकित्सालय में आकर अपना वेतन ले जाएँ। यदि आपको, जो वहाँ से दिया जायगा, ठीक प्रतीत न हो, तो आप कानूनी कार्यवाही कर सकते हैं।"

ये नोटिस छपवाकर बाँट दिए गए और कर्मचारियों के पतों पर रजिस्ट्री कराकर भेज दिए गए। नोटिस मिलने पर तो कर्मचारियों में भारी गड़बड़ मची और यूनियन के कार्यालय में कारखाने को आग लगा देने का षड्यन्त्र होने लगा।

इसके अगले दिन शिशिरकुमार ने पुनः कर्मचारियों की एक बैठक कारखाने के बाहर बुलाई और वहाँ उसने नारे लगवा-लगवाकर उनमें इतना जोश भर दिया कि वे पुलिस का घेरा तोड़कर कारखाने में घुस गए। उन्होंने कारखाने का ताला तोड़ दिया और सामान की तोड़-फोड़ आरम्भ कर दी। इस समय पुलिस ने गोली चला दी, जिससे तीन तो वहीं मौत के घाट उतर गए और एक दर्जन के लगभग घायल हो गए। पाँच कर्मचारी पुलिस ने पकड़ लिये और शेष भाग गए।

जब कारखाने के बाहर गोली चल रही थी, प्रबोध, नीला और प्रभुदयाल भविष्य की योजना बना रहे थे। यह निश्चय हो गया था कि कारखाना प्रभुदयाल के एक सम्बन्धी, जो दिल्ली में मोटर का एक कारखाना रखते थे, खरीद लेंगे और वे अपने यहाँ से एक मैनेजर भेजकर इसका प्रबन्ध ठीक रूप में करा देंगे। वास्तव में खरीददार तो नाम-मात्र का ही था और नए प्रबन्ध का बहाना-मात्र था। यह योजना बन जाने के पश्चात् उस सम्बन्धी को तार द्वारा लखनऊ बुला लिया गया।

इस समय कारखाने के बाहर गोली चलने और तीन कर्मचारियों के मर जाने का समाचार मिला। इस समाचार का प्रभाव प्रभुदयाल पर तो कुछ नहीं हुआ, नीला इससे गम्भीर हो गई, परन्तु प्रबोध ने कह दिया, "यह तो बहुत बुरी बात हुई है। मैं समझता हूँ कि अब भी कोई समझौता हो जाय तो ठीक है।"

"अब लौटने को कोई स्थान नहीं रहा।" प्रभुदयाल ने कह दिया।

नीला कुछ और ही विचार कर रही थी। उसने कहा, "यह तो ठीक है कि गोली चलना ठीक नहीं हुआ। हमको इसका भारी शोक होना ही चाहिए। परन्तु जो वास्तविक अपराधी हैं, वे तो बच गए हैं। यूनियन का प्रधान सबसे बड़ा अपराधी है और वह बच गया है।"

प्रभुदयाल वहाँ से कचहरी चला गया। उसको एक मुकद्दमे में हाज़िर होना था। नीला अपने चिकित्सालय में काम समाप्त कर घर जाने वाली थी कि सुशील और शिशिरकुमार आ गए। नीला इन दोनों को आते देख चकित रह गई। उसने सुशील को कभी भी पहले कम्युनिस्टों के पक्ष में कहते नहीं सुना था। आज वह उसको देखकर बहुत ही हैरान हुई। उसने पूछा, "सुनाइए सुशील बाबू, कैसे आना हुआ है?"

"ये मेरे मित्र हैं।" उसने शिशिरकुमार की ओर संकेत कर कहा, "जब प्रबोधजी के कारखाने के बाहर बहुत लोग घायल हो गए तो यह मुझको मरहमपट्टी करने के लिए ले गए। इनके कार्यालय में जाकर पता चला कि वे कहाँ और क्यों घायल हुए हैं। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर मैंने इनसे कहा कि प्रबोध और आपसे मेरी जान-पहचान है और मैं इसमें आपकी सुलह करवा सकता हूँ।"

"मुझको भारी खेद है कि आप बहुत देर से आए हैं। हमने कारखाना बेचने का निश्चय कर लिया है। एक ग्राहक भी मिल गया है। मेरा विचार है कि एक-दो दिन में लिखा-पढ़ी हो जायगी। अब हम कुछ नहीं कर सकते।"

सुशील ने कहा, "शिशिर बाबू का विचार है कि वह बिक्री दिखावा मात्र ही है। वास्तव में यह कारखाने के कर्मचारियों को नौकरी से पृथक् करने के लिए बहाना-मात्र है।"

"मैं इस विषय में कुछ कहना नहीं चाहती। इस पर भी यह माना जा सकता है कि शिशिर बाबू बिल्कुल ग़लत नहीं हैं। जब कर्मचारियों की प्रबन्ध-कौंसिल ने अनुचित ढंग से कारखाने को लूटना आरम्भ कर दिया था, तो उनको भी, जिनका रुपया इसमें लगा हुआ है, अपने रुपए की रक्षा के लिए प्रत्येक उपाय प्रयोग में लाने का अधिकार होना चाहिए।"

शिशिरकुमार ने अपने अनुमान की पुष्टि पाकर उत्साहित हो पूछा, "प्रबन्धकारिणी कौंसिल ने कौन अनुचित बात की है? क्या आप उसका कोई उदाहरण दे सकती हैं?"

"एक नहीं बीसियों हैं। मैं पिछली रात ही आपकी इस कौंसिल की कार्यवाही पढ़ रही थी। बीसियों स्थानों पर प्रबोधजी ने किसी कर्मचारी के बिना छुट्टी चले जाने अथवा काम समय पर समाप्त न करने और अन्य इसी प्रकार की शिकायतें की हैं और कौंसिल ने उनको क्षमा कर दिया है। कई स्थानों पर तो उनको बिना सूचना दिए छुट्टी करने का वेतन भी दिया है।

"पिताजी ने कारखाने की 'वर्क-बुक' और कौंसिल की कार्यवाही की रिपोर्ट एक ऑडिटर को दे दी है। वे कौंसिल की अनियमित बातों की सूची बनवाना चाहते हैं, जिससे कर्मचारी यदि मुकद्दमा करने का साहस करें तो उनकी अनियमित बातों को वह कोर्ट में उपस्थित कर सकें।"

सुशील विस्मय में पूछने लगा, "तो प्रबोधजी ने इस कौंसिल को तोड़ क्यों नहीं दिया?"

"इसका ठीक-ठीक उत्तर तो वे ही दे सकते हैं। मेरा अनुमान है कि वे सहचारिता के भाव (idea of co-operation) के सम्मोहन में थे और मोहित व्यक्ति की भाँति वे उचित-अनुचित, वर्तमान-भविष्य और अधिकारी-अनधिकारी में भेद-भाव नहीं कर सके।"

"मैंने स्त्रियों को पुरुषों पर और पुरुषों को स्त्रियों पर मोहित होते तो सुना है, परन्तु विचारधाराओं के सम्मोहन की बात तो आपसे ही सुन रहा हूँ।" सुशील ने मुस्कराते हुए कहा।

"इसका कारण यह है कि आप मेडिकल कॉलेज में पढ़ते हुए बाहरी संसार से आँखें मूँदे हुए जीवन व्यतीत करते रहे हैं। आपने इतिहास और समाज-विज्ञान की ओर कभी ध्यान नहीं दिया। तभी तो आपको विचारों के सम्मोहन के विषय में ज्ञान नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखिए, मैं आपको बताती हूँ, संसार में जितने भी इज़्म हैं, वे और उनका चलना केवल-मात्र भाव तथा भावनाओं के सम्मोहन के उदाहरण ही हैं। एक बंगाली किसी बंगाली की अनुचित रूप से सहायता करता है, एक मुसलमान किसी बुरे-से-बुरे मुसलमान को अच्छे-से-अच्छे हिन्दू से श्रेष्ठ मानता है, एक मज़दूर मज़दूर की हिमायत करता है और एक पैसे वाला पैसे वाले की। यह सब क्या है ? एक प्रकार से विचारों का सम्मोहन ही तो है।

"जैसे किसी स्त्री के सम्मोहन में फँसा हुआ व्यक्ति उस स्त्री के दुर्गुणों को सुगमता से समझ नहीं सकता, उसी प्रकार एक कम्युनिस्ट विचारों के सम्मोहन में फँसा व्यक्ति इस विचारधारा के न्याय-अन्याय को समझ नहीं सकता। मुझको यही अवस्था प्रबोधजी की प्रतीत हुई है।"

सुशीलकुमार को नीला के कहने में युक्ति और प्रभाव का अनुभव पहले भी कई बार हो चुका था। वह जानता था कि वह अनर्गल बात कभी भी नहीं करती। इस कारण इस अवस्था का विश्लेषण सुन चुप हो गया। उसको प्रबोध के कारखाने में असफलता का कारण ठीक ही प्रतीत हुआ।

शिशिरकुमार ने आज पहली बार नीला की युक्ति को सुना था और वह उससे अत्यन्त प्रभावित हुआ था। वह प्रबोध के कारखाने में हड़ताल के पूर्ण इतिहास का मन में विचार करने लगा और उसको कुछ ऐसा अनुभव हुआ कि वह स्वयं भी एक सुन्दरी के सम्मोहन में फँस जाने की भाँति अपने को कम्युनिस्ट विचारधारा में फँसा हुआ पाता था। इस सम्मोहन में वह इस हड़ताल के औचित्य-अनौचित्य का ध्यान किए बिना, इसमें फँसा हुआ था।

:९:

हरभजनसिंह से लीलावती अन्तिम निर्णय करने आई थी। परन्तु हरभजनसिंह अभी भी किसी निर्णय पर नहीं पहुँचा था। लीलावती स्वयं तो हर प्रकार से विवाहने योग्य ही प्रतीत होती थी, परन्तु वह नीला की बात को स्मरण कर रुक जाता था। नीला का कहना था कि विवाह से केवल लड़के और लड़की का ही सम्बन्ध नहीं होता, प्रत्युत एक परिवार का दूसरे परिवार से भी सम्बन्ध बन जाता है। वह यह विचार करता था कि लीलावती के माता-पिता उसके केश कटवाने से रुष्ट होकर चले गए थे। इससे उनके विचारों का संकुचितपन प्रकट होता था। उसको भय था कि कहीं उनके परिवार के सम्बन्ध के कारण उसका जीवन दुःखमय न हो जाय।

परिणाम यह हुआ था कि लीलावती को उस दिन भी बिना अन्तिम बात जाने लखनऊ से जाना पड़ा। माधुरी भी उसी दिन हरभजनसिंह से मिली थी। तदनन्तर वह नीला के सम्मुख उससे फिर मिल सकी। जब वह अपने विवाह की बात करने लगी तो नीला उनको, परस्पर कुछ निर्णय पर पहुँचने का अवसर देने के लिए अकेला छोड़ रोगी देखने चली गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इससे माधुरी झेंप गई। उसने हरभजनसिंह से कहा भी, "मैं आज अपने विषय में बात नीला भाभी के सम्मुख करने आई थी, परन्तु वह तो भाग गई हैं।"

"मैं समझता हूँ कि उसने ठीक ही किया है। विवाह के विषय में उससे अधिक हमारी अपनी अनुमति होनी चाहिए।"

"देखिए, एक समय आपने स्वयं मुझसे इस विषय में कुछ कहा था। आपको स्मरण है क्या?"

"हाँ, है। जहाँ तक मुझको स्मरण है मैंने कहा था कि मैं आपसे विवाह करने के विषय में विचार कर रहा हूँ। मैं चाहता था कि तुम भी इस विषय पर विचार कर लो, जिससे हम दोनों समय आने पर ठीक प्रकार निर्णय कर सकें।"

"मैं समझती हूँ कि हमको इस विषय में एक निर्णय पर पहुँच जाना चाहिए।"

"बहुत जल्दी है क्या?"

"इस जीवन का क्या भरोसा हो सकता है? विचार बदलते रहते हैं। यह नौका किधर जा लगे, कौन कह सकता है?"

"किसके जीवन का भरोसा नहीं? किसके विचार बदल रहे हैं और किसकी नौका किधर लगने की सम्भावना है?"

"मेरी, आपकी और किसी की भी। मनुष्य स्थिरता चाहता है। जब तक इसको एक आधार न मिल जाय यह पारे की बूँद की भाँति किसी ओर भी फिसल सकता है।"

"तो इसका अभिप्राय यह कि तुमको अब विवाह कर लेना चाहिए।"

"इसी प्रकार समझ लीजिए। पर मैं तो आज आपके विषय में जानने आई हूँ।"

"यदि मैं यह कह दूँ कि मेरा विवाह अभी नहीं होगा तो क्या करोगी?"

"संसार की अनेक लड़कियों की भाँति, जो चाँद पकड़ने के लिए लालायित रहती हैं और पकड़ नहीं पातीं, मैं भी हो जाऊँगी।"

"वे लड़कियाँ, जो चाँद पकड़ने में असफल हो जाती हैं, फिर क्या करती हैं?"

"यह मैं तब उनसे पता करूँगी। अभी तक तो मुझको आशा बनी हुई है।"

हरभजनसिंह कुछ काल तक विचार करता रहा। इसके पश्चात् कुछ रोगी मरहम-पट्टी कराने वाले आए और वह काम में व्यस्त रहा। पाँच-छः रुपए कमाकर वह माधुरी के पास आकर बैठा तो तीन बीमा करने के केस आ गए। वह उनकी परीक्षा में लग गया। जब वह उनसे भी निपट चुका तो माधुरी, जो इस सब समय वहाँ बैठी रही थी, अपनी बात का उत्तर पाने के लिए पुनः कहने लगी, "मैं अब अपना भावी प्रोग्राम बनाना चाहती हूँ। भैया ने कारखाने में प्रबन्ध न कर सकने से पिताजी को भारी हानि पहुँचाई है। यदि मैं भी इसी प्रकार बिना विचार किए उड़ते तारों को पकड़ने में उनकी संचित सम्पत्ति को व्यर्थ गँवाना आरम्भ कर दूँ तो भारी पाप हो जायगा। यदि मेरा विवाह अभी नहीं होना तो मैं ऑक्सफोर्ड जाना चाहती हूँ और वहाँ पी-एच० डी० की तैयारी में लग जाना चाहती हूँ।"

"पर तुम अभी कुछ काल तक प्रतीक्षा नहीं कर सकतीं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"प्रतीक्षा तो कर सकती हूँ, परन्तु वह प्रतीक्षा कार्य करने में होगी, न कि कार्य का निर्णय करने में। अनिश्चित-बुद्धि वाले व्यक्तियों का परिणाम वही होता है, जो प्रबोध भैया का हुआ है।"

"क्या किया है प्रबोध भैया ने?"

"हड़ताल एक मास से चल रही थी और वे किसी निर्णय पर पहुँच नहीं सके थे। परसों नीला भाभी ने कारखाने की दुर्व्यवस्था देखी और उसके सुधारने का निश्चय एक ही दिन में कर अपनी योजना भी बना डाली है। मैं आपको बताती हूँ कि कारखाने के कर्मचारी अभी से होश सँभालने लगे हैं।"

"तो इससे क्या सिद्ध हुआ?"

"इससे यह सिद्ध हुआ है कि मैं आपसे विवाह करना चाहती हूँ, परन्तु आप कुछ निर्णय करते ही नहीं। इस विषय में बातचीत करते हुए एक वर्ष हो चला है। यदि आप किसी निर्णय पर पहुँचने में इतना समय लगा सकते हैं, तो फिर जीवन-कार्य कैसे चलाएँगे? इस छोटे-से जीवन को इस अनिश्चितपन में ही व्यतीत कर देना कुछ अच्छी बात प्रतीत नहीं होती।"

"देखो माधुरी, मेरे अनिश्चितपन में कारण है और वह मैं तुमको बता देना चाहता हूँ। तुम, तीन दिन हुए, मध्याह्न पूर्व यहाँ बैठी थीं, तो एक लड़की मुझसे मिलने आई थी, जो उसी दिन पंजाब मेल से चली गई थी वह भी मुझसे विवाह करना चाहती है। वह भी उस दिन निर्णयात्मक बात करने आई थी।

"अभी तक मैं तुम दोनों में तुलना कर रहा था और किसी निर्णय तक पहुँचने की कठिनाई अनुभव कर रहा था। मैंने तुम दोनों के गुण-अवगुण जानने में ही इतना समय लगाया है।

"मुझको तुम सर्वथा शीतल, सुहृदय, गंभीर, दृढ़-संकल्प, माता-पिता की आज्ञाकारिणी और बुद्धिशील दिखाई दी हो। इसके विपरीत वह लड़की हँसोड़ मुख, बच्चों की भाँति खेलती-कूदती, कुसुम की भाँति प्रफुल्ल वदन, मन के आवेश में आकर काम करने वाली और माता-पिता से बाग़ी प्रतीत हुई। मैं मन से चाहता था कि ये दोनों प्रकार के गुण एक में आ जाएँ। मैं पढ़ा-लिखा होने से गंभीर और बुद्धिशील पत्नी पसन्द करता हूँ, परन्तु इस धरती पर चलता हुआ फूलों से खेलना भी पसंद करता हूँ। मेरे सामने कठिनाई है कि मैं कोई ऐसी लड़की नहीं पा सका, जिसमें दोनों प्रकार के गुण विद्यमान हों।"

"तो फिर उसको क्या कहा है आपने?"

"उसके हँसी के फव्वारों को सुन मैं कहने ही वाला था कि मैं उससे विवाह करूँगा, परन्तु ठीक उसी समय वह बोल उठी, 'मुझको बिना माता-पिता की अनुमति के विवाह करने में बड़ा मज़ा आएगा।'

"मैं हाँ कहता-कहता रुक गया। मेरे मन में आया कि कभी मेरी आज्ञा भंग करने में भी उसको मज़ा आ सकता है। तब मेरी क्या अवस्था होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस विचार के आते ही मैंने उसको कह दिया, 'मैं तुमको दो-तीन दिन में पत्र लिखूँगा और समझता हूँ कि अब तुमको इस कार्य के लिए लखनऊ आना नहीं पड़ेगा।'

"इतना कह मैं उसको गाड़ी पर चढ़ाकर विदा कर आया।"

इस पर माधुरी ने कहा, "यदि आप नाराज़ न हों तो एक बात कहूँ ?"

"कहो।"

"आप उससे—क्या नाम है उसका—विवाह कर लीजिए। किसी लड़की को इस प्रकार वर्षों तक टाल-मटोल करते रहना ठीक नहीं।"

"वह तो मैं तुमसे भी कर रहा हूँ। तो तुमसे ही विवाह क्यों न कर लूँ ?"

"पर मैं कदाचित् इस प्रकार टाली नहीं जा सकूँगी, जिस प्रकार आप उसको टाल रहे हैं। मैं टाल-मटोल में कल्याण नहीं पाती।"

हरभजनसिंह चुप कर गंभीर हो गया। उसने कहा, "अच्छा माधुरी, मैं कल बताऊँगा।"

"अच्छी बात है, मैं समझती हूँ कि अब आपसे इस विषय में और बातचीत करने नहीं आऊँगी।"

इतना कह माधुरी उठकर नीला के चिकित्सालय में चली गई।

: १० :

हरभजनसिंह को भी समझ आ रहा था कि वह दो लड़कियों के जीवन से खिलवाड़ कर रहा है। उसने यह विचार किया कि वह आज अपने पिता से कहकर कुछ-न-कुछ निर्णय कर लेगा। अमृत के घर से भाग जाने के पश्चात् वह अपने माता-पिता को दु:खी करना नहीं चाहता था।

वह विचार करता था कि यदि वह नीला के संकेत पर सिर के बाल न कटवाता तो माधुरी उसको पसन्द नहीं करती। लीलावती तो तब भी पसन्द कर लेती। इस समय उसके मन में संशय उत्पन्न हो गया। लीला ने उसको उसके वर्तमान रूप में ही देखा था। दाढ़ी-मूँछ वाला तथा केशधारी हरभजनसिंह उसने नहीं देखा था। उसको देख वह पसन्द करती अथवा नहीं, कहा नहीं जा सकता था।

इससे अनिश्चित-मन वह अपने पिता से इस विषय में राय करने का विचार कर रात होने पर घर गया। घर पर कर्तारसिंह गुरुद्वारे के विषय में बातचीत करने आया था। हरभजनसिंह उनको बातें करते देख, बाहर से ही अपने कमरे में चला गया। वह वहाँ पहुँचा ही था कि सोहनू उसके पीछे-पीछे वहाँ आकर बोला, "भैया, आज अमृत बीबी की चिट्ठी आई है।"

"कैसे जानते हो ?" हरभजनसिंह ने चौंककर पूछा।

"डाकिया चिट्ठियाँ दे गया था। मैंने उसके हाथ का लिखा पता एक लिफाफे पर देखा है। मैं उसकी लिखावट पहचानता हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोहनसिंह बचपन से उनके यहाँ नौकरी करता था और वह अमृत के साथ खेलता रहा था। पहले जब वह बहुत छोटा था, उसकी माँ इनके यहाँ नौकरी करती थी। उस समय सोहनसिंह सोहनलाल था। उसकी माँ का देहान्त इनकी नौकरी में ही हुआ था। माँ के मरने के बाद सोहनलाल को ले जाने वाला कोई नहीं आया और वह नौकर बना लिया गया। तब से वह उनके घर में था। पीछे उसने भी केश रखने ठीक समझ लिये और वह सोहनसिंह हो गया और सोहनू के नाम से बुलाया जाने लगा। इस कारण उसका कहना कि वह अमृत की लिखावट पहचानता है, विश्वास-योग्य ही था।

जब सोहनू खाना लेने गया तो हरभजन पुनः ड्राइंगरूम की ओर चल पड़ा। वह ड्राइंगरूम के पिछले कमरे से वहाँ जाना चाहता था, परन्तु जब दोनों कमरों के भीतर के द्वार का पर्दा वह हटाने लगा तो उसको कर्तारसिंह यह कहते सुनाई दिया—

"यह सैक्युलर विचार तो कांग्रेस का एक भारी ढोंग है। इस विचार के आधार पर कांग्रेस के वे लोग, जो धर्म तथा मत-मतान्तरों के विषय में कुछ नहीं जानते, इनकी निन्दा कर अपना प्रभुत्व स्थिर रखना चाहते हैं। यह इसी प्रकार है, जैसे किसी जटिल विषय को न समझने की योग्यता रखने वाला विद्यार्थी उस विषय को पाप कहकर सबको उसके पढ़ने से रोकना चाहे।"

वढ़ियामसिंह हँस पड़ा। उसने कहा, "बाबू कर्तारसिंह, तुम ठीक ही कहते हो, भला इसका क्या प्रमाण है?"

"ये असम्प्रदायवादी कांग्रेसी लोग जीवन-भर कांग्रेस के प्रभुत्व को स्थिर रखने के लिए मुसलमानों की पीठ ठोकते रहे। हमारे वर्तमान नेतागण तो मुसलमानों को विधान से अभी भी विशेष अधिकार देने के लिए तैयार थे। अब भी तो ये लोग सिखों से प्रत्येक कीमत पर समझौता करने को तैयार हो गए हैं। यह शिक्षा इन्होंने अंग्रेज़ों से ली थी। ये समझते हैं कि हिन्दुओं में तो सदा एक दल ऐसा रहेगा, जो उनको सहायता देगा। एक स्वतन्त्र विचार के समाज में से एक भाग अपने पक्ष में कर लेना सहज ही है। इस कारण अपना बहुमत रखने के लिए हिन्दू-विरोधी दल को कुछ ले-देकर अपनी ओर रखने से अपना बहुमत रह सकेगा। यही कारण था कि ये लोग हिन्दू हितों का बलिदान कर मुसलमानों को प्रसन्न करने का यत्न करते रहे थे। सबसे पहले इस नीति की सफलता का अनुभव महात्मा गांधी ने कलकत्ता के विशेष अधिवेशन में, जो सन् १९२० में हुआ था, किया था। महात्माजी खिलाफत को कांग्रेस के प्रस्ताव में एक विषय रखने के लिए हठ कर रहे थे। देश के प्रायः सभी नेता इस विषय को एक राजनीतिक संस्था के प्रस्ताव में लाना नहीं चाहते थे। महात्माजी ने मुसलमान डेलिगेट्स की सहायता से देश के तमाम नेताओं को परास्त कर दिया था। अपनी अनेक अयुक्तिसंगत बातों को महात्माजी मुसलमानों की सहायता से सफल बनाते रहे और हिन्दुओं के एक प्रबल समूह को नतमस्तक करते रहे। इसी नीति को चलाते हुए कांग्रेस को देश-विभाजन स्वीकार करना पड़ा।

"महात्माजी की यह नीति कि हिन्दुओं में विरोधी पक्ष को अपने अधीन रखने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए किसी अल्पमत वालों को कुछ ले-देकर अपने साथ मिला अपना प्रभुत्व स्थिर रखना, अभी तक जारी है।

"ऐसी परिस्थिति में यदि सिख, कांग्रेस की इस दुर्बलता से लाभ न उठाएँ तो महामूर्ख माने जाएँगे।

"पंजाब में हिन्दू बहुमत में है। हिन्दुओं का एक प्रबल भाग कांग्रेस के पक्ष में है। हमारा काम तो तभी चल सकता है, जब हम सत्ताधारी दल के साथ समझौता कर लें। यह हमारा सौभाग्य है कि कांग्रेस अभी तक महात्मा गांधीजी की इस दुर्बल नीति का अनुकरण कर रही है। हमको इससे लाभ उठाना चाहिए।"

"हमको इससे क्या लाभ होगा?"

इस समय हरभजनसिंह अपने को दरवाज़े पर खड़ा नहीं रख सका। वह भीतर चला आया और दोनों वृद्धजनों को सत श्री अकाल बुलाकर उनके सामने बैठ गया। उसने अपने पिताजी से पूछा, "क्या वाद-विवाद चल रहा है?"

वढ़ियामसिंह ने बताया, "ये कहते थे कि कल गुरुद्वारा फण्ड में से पाँच हज़ार रुपया अकाली दल की सहायता के लिए पास कर दिया जाय। मेरा कहना था कि गुरुद्वारे का रुपया किसी राजनीतिक कार्य के लिए नहीं देना चाहिए। इस पर आपने कहा है कि राजनीति और धर्म दो पृथक्-पृथक् बातें नहीं हैं। मैंने कहा कि भारत में राज्य धर्मनिरपेक्ष है। इस पर आपने कहा कि यह बात ढोंग है। यह सैक्युलरवाद कांग्रेस के लोगों ने सरल-चित्त हिन्दुओं को धोखे में रखने के लिए एक पर्दा बनाया हुआ है। वास्तव में यह कांग्रेस केवल अपने प्रभुत्व को स्थापित रखने के लिए प्रबल मत-मतान्तरों से सदैव समझौता करने को उद्यत रहती है।"

"यह तो मैंने सुन लिया है। तो आप कल रुपया देने के पक्ष में अपनी सम्मति देने जा रहे हैं क्या?"

"मैंने अभी निर्णय नहीं किया। मैं विचार करता हूँ कि यदि यह सत्य है कि कांग्रेस और उसके द्वारा बनी यह सरकार अल्पमत वालों को कुछ दे-लेकर अपने पक्ष में करने का स्वभाव रखती है, तो क्यों न सिख इससे लाभ उठाएँ?"

"इस कारण पिताजी, कि यह पाप है। जहाँ सरल-चित्त लोगों को धोखा देने वाली कांग्रेस दोषी है, वहाँ इस कार्य में कांग्रेस को सहायता देने वाली संस्थाएँ भी दोषी हैं। क्या कांग्रेस सिखों का बहुमत इस कारण बनाने जा रही है कि वह अपना प्रभुत्व स्थिर रख सके? यह तो देश के साथ द्रोह होगा। किसी एक मतवालों का, राज्यों को काट-छाँटकर, अन्याय से बहुमत बनाना किसी प्रकार भी क्षम्य नहीं।"

"तो क्या करें?" सरदार कर्तारसिंह ने पूछा, "गुरुद्वारे का धन फिर किस काम आएगा?"

"गुरु महाराज के धर्म-प्रचार के लिए।"

"वही करने के लिए तो सिख बहुमत वाला राज्य बनाने का यत्न किया जा रहा है।"

"अर्थात् आप बहुमत प्राप्त करके सत्ता को हथिया कर सिख धर्म का प्रचार करेंगे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या हानि है इसमें ? आज भारत में बौद्ध सम्प्रदाय और महाराज अशोक-वर्धन की भूरि-भूरि प्रशंसा की जा रही है। क्या अशोक ने राजनीति के बल पर बौद्ध-सम्प्रदाय का प्रचार नहीं किया था ? हम करेंगे तो कौन पाप करेंगे ?"

"परन्तु जानते हैं कि महाराज अशोक की इस नीति का क्या परिणाम हुआ था ? महाराज अशोक के जीवन-काल में ही देश में विघटन आरम्भ हो गया था और उसकी मृत्यु के कुछ ही समय पश्चात् विदेशों से आक्रमणकारी यहाँ आने आरम्भ हो गए थे और उनके आक्रमण सफल होने लगे थे।"

"वह जो होगा सो देख लेंगे। अब तो समस्या यह है कि कांग्रेस सिखों को पंजाब में बहुमत दे रही है। वह बहुमत प्राप्त कर क्या हम लाभ न उठाएँ ?

"धर्म क्या है, एक प्रकार के विचारों का समूह ही तो है। आज संसार-भर में राज्य-सत्ता को, विचार-प्रचार का साधन बनाया जा रहा है। वे विचार कहीं कुछ हैं और कहीं कुछ। वास्तविक बात तो यह है कि विचार-विस्तार के लिए राज्य-सत्ता हर स्थान पर प्रयुक्त की जा रही है। रूस क्या कर रहा है और क्या अमेरिका इससे अछूता है ?

"हमारी सरकार एक प्रकार की आर्थिक विचारधारा को राजनीतिक सत्ता प्राप्त कर आगे चला रही है। 'सोशियलिस्टिक पैटर्न ऑफ सोसायटी' पिछले निर्वाचनों में हमारे सामने नहीं था। जब राज्य-सत्ता वर्तमान नेताओं के हाथ में आ गई तो इन्होंने यह नया पद गढ़कर अपने विचारों को चलाने का यत्न किया है। अब फिर निर्वाचन होने वाले हैं और पुनः पंचवर्षीय योजना का बहाना लेकर निर्वाचन लड़े जाएँगे और सफल होने पर सोशियलाइज़ेशन आगे चलाया जायगा।

"उद्देश्य पंचवर्षीय योजना नहीं। इसको तो जो भी दल राज्य बनाएगा, चलाएगा। परन्तु असल बात है सोशियलाइज़ेशन की। वह गौण रखकर निर्वाचन लड़े जाएँगे। यदि कांग्रेस अपने आर्थिक प्रपंच को चलाने के लिए राज्य-सत्ता का प्रयोग कर सकती है, तो हम अपने धार्मिक विचारों के प्रचार के लिए राजनीति को क्यों प्रयोग में नहीं ला सकते ?"

वढ़ियामसिंह ने वाद-विवाद को बन्द करने के विचार से कह दिया, "मैं अभी अपने मन में विचार करना चाहता हूँ कि गुरुद्वारे का धन एक राजनीतिक संस्था को दूँ अथवा नहीं। जैसा मन चाहेगा, वैसा ही मत कल दूँगा।"

इस पर कर्तारसिंह ने कहा, "सरदार वढ़ियामसिंह, रुपया तो मंजूर हो जायगा। बात केवल यह है कि आप बदनाम होना चाहते हैं या नहीं। यदि आप रुपया देने के पक्ष में राय देंगे तो सब शोभा आपको ही मिलने वाली है।"

यह कह कर्तारसिंह विदा माँग चला गया।

: ११ :

जब कर्तारसिंह चला गया तो हरभजन ने पिता से पूछा, "भापाजी, अमृत की चिट्ठी आई है क्या ?"

"किसने कहा है तुमसे ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो आई है न?"

"हाँ, पर मैंने तो किसी को बताया नहीं, तुम्हारी माँ को भी नहीं। तुमको किसने कहा है कि उसने पत्र लिखा है।"

"सोहनू ने कहा है कि उसने एक लिफाफे पर अमृत की लिखावट में पता लिखा देखा है।"

"सोहन ने? यह बहुत ही चालाक हो गया है। मैं तो ख़त पहचान नहीं सका था।"

"उसको अमृत के ख़त की पहचान होगी।"

वढ़ियामसिंह ने जेब में से ख़त निकालकर हरभजन को दिखा दिया। उसने उसमें लिखा था, "पूज्य भापाजी, मैं आज बालिग हो गई हूँ और अब मैं अपना विवाह अपनी इच्छा से कर सकती हूँ।

"आज से तीन मास पहले जब आप मेरा एक 'इन्स्पैक्टर ऑफ स्कूल्स' से विवाह करने वाले थे, मैं बालिग नहीं थी। उस समय मैं कानून से बे-अक्ल थी और अपने विषय में किसी प्रकार की सम्मति रखने के अयोग्य थी। इन तीन महीनों में मेरे में अक्ल आ गई है।

"अतएव अब मैं अपनी बुद्धि से विचार की हुई बात करती हूँ। मैं कलकत्ता में एक मित्र की माता के साथ रहती हूँ। इतने दिनों तक छिपकर रहने का कारण तो आप समझ ही गए होंगे। अब मैं कहती हूँ कि जिस किसी को विवाह करना हो, उसको मुझसे बात कर निर्णय करना चाहिए। इस स्वतन्त्रता के युग में मैं अपनी स्वतन्त्रता का प्रयोग करना चाहती हूँ।

"मेरे इस विचार को जानकर यदि आप मेरा घर से चले जाने का अपराध क्षमा कर दें और मुझको स्वतन्त्रता के उपयोग की स्वीकृति दें तो मुझको घर लौट आने में अति प्रसन्नता होगी।

"मैं पता नहीं लिख रही। यदि आपको मेरा आपके घर लौट आना रुचिकर हो तो मैं पता कर आ जाऊँगी। इस अवस्था में आप मेरे पत्र को चोरी न रखकर अपने मित्रों और सम्बन्धियों को दिखा दें। मुझको उनमें से किसी के द्वारा पता चल जायगा और मैं लौट आऊँगी।

आपकी स्नेह-पात्री अमृत।"

हरभजनसिंह ने पत्र पढ़ा और वापस लौटा दिया। वढ़ियामसिंह ने हरभजनसिंह की ओर देखते हुए पूछा, "कौन हो सकता है, जिसने हमारी अमृत को छिपा रखा है?"

"आपको किस पर सन्देह है?"

"मुझको तो तुम पर सन्देह है।"

"मैं उसका पता नहीं जानता। मुझको सन्देह था कि वह मेरे मित्र सुशीलकुमार की जानकारी में छिपी हुई है। एक समय सुशील उससे विवाह करना चाहता था, परन्तु अमृत के घर जाने के पूर्व ही उसका विचार बदल चुका था। अब सुशील की सगाई बाबू मनमोहन सरकार की लड़की से निश्चित हो चुकी है। घर में विवाह की तैयारी भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरम्भ हो चुकी है। सुशील को तो अमृत के विषय में विचार करने का अवसर भी नहीं। मैंने कई मित्रों द्वारा उससे पता करने का यत्न किया है और सबका यही विश्वास है कि वह सुशील की जानकारी में नहीं है।"

"तुमसे कम मुझको सन्देह है तुम्हारे मामा पर। उसका साला कलकत्ता में रहता है।"

"हो सकता है। तब तो बात सरल है। उसको बुलाकर अपने विचार बता दीजिए। यदि आपने अमृत को क्षमा कर दिया है तो उसको पता चल जायगा।"

"तो तुम्हारा विचार है कि यह धूर्तता विष्णु की ही है?"

"मैं कुछ नहीं कह सकता। यह भी अभी नहीं कह सकता कि यह धूर्तता है अथवा सज्जनता?"

"कब कह सकोगे?"

"जब अमृत आ जायगी और पता चल जायगा कि वह तीन मास में छिपकर कहाँ रही है और अब वह विवाह के विषय में क्या विचार रखती है।"

"मुझको डर है कि वह जहाँ गई है, वहाँ विवाह के विचार से गई थी, परन्तु वहाँ से निराश हो और धोखा खाकर लौट रही है। विष्णु के साले का लड़का कलकत्ता में किसी अच्छे काम पर लगा हुआ है। वहाँ उसकी पटी नहीं। इस कारण अब लौटने का बहाना ढूँढने लगी है।"

"तब भी आपको अपनी लड़की को आश्रय देकर उभारने में लाभ ही है। उसको वापस आने दीजिए और उसके विवाह का कहीं-न-कहीं प्रबन्ध हो जायगा।"

वढ़ियामसिंह ने कुछ काल तक विचार कर कहा, "तो तुम जाओ और अपने मामा से कहो कि अमृत को बुला दे। हम उसकी इच्छा का आदर करेंगे।"

हरभजनसिंह ने भोजन किया और मोटर पर सवार हो अपने मामा के घर चला गया। विष्णुसहाय इतनी रात गए हरभजनसिंह को आए देख विस्मय में पड़ गया। हरभजन ने अमृत की चिट्ठी, जो वह अपने साथ ले आया था, मामा को दिखाई। उसने चिट्ठी पढ़कर हरभजनसिंह को वापस कर दी और उसके मुख पर देखता रहा।

हरभजनसिंह ने कहा, "पिताजी ने कहा कि यदि आपको उसका पता है, तो आप उसको कह दीजिए कि वह आ जाय और उसकी इच्छा का आदर किया जायगा।"

"तुम्हारे पिता का यह निश्चय यद्यपि देर से हुआ है, तो भी बहुत ठीक है। इस पर भी मैं तुमको विश्वास दिलाता हूँ कि वह मेरी जानकारी में नहीं है। मेरा साला परमानन्द वहाँ रहता ज़रूर है, परन्तु मैं उसको वहाँ रखने के स्थान अपने पास रखना अधिक ठीक समझता। वढ़ियामसिंह मेरे घर से उसको ज़बरदस्ती ले जा नहीं सकता था।"

"अमृत ने लिखा है कि हम अपने मित्रों और सम्बन्धियों से अपने मन की बात कह दें और उसको पता चल जायगा।"

"इस पर भी मेरा कहना है कि मेरे पास आती तो मैं उसको यहाँ रखकर उसकी रक्षा कर सकता था। उसको दूर भेजने की आवश्यकता नहीं थी। मेरे विचार में उसको घर से भागना ही नहीं चाहिए था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निराश हरभजनसिंह वहाँ से लौट आया। वढ़ियामसिंह उसकी प्रतीक्षा कर रहा था और जब पुत्र ने मामा की बात बताई तो उसने कहा, "तुम दोनों के अतिरिक्त और किसी पर सन्देह नहीं जाता।"

"तो फिर और किसी से अमृत को पत्र की बात बताने की आवश्यकता नहीं?"

"यह तुम्हीं बताओ, मैं कैसे बता सकता हूँ?"

"मेरी सम्मति तो यह है कि आप कलकत्ता के समाचार-पत्रों में विज्ञापन निकलवा दीजिए। वह पढ़ेगी तो आ जायगी।"

"पहले अपने सब परिचितों को बता दो कि हमने उसको क्षमा कर दिया है। इसके एक सप्ताह तक वह न लौटी तो फिर विज्ञापन देने के विषय में विचार कर लेंगे।"

: १२ :

हरभजनसिंह ने अमृत की चिट्ठी नीला को दिखाई और पश्चात् उन सब लोगों से इस विषय में कहा, जिन-जिनसे अमृत के परिचय होने की बात उसको विदित थी। वढ़ियामसिंह ने भी अपने परिचितों और मित्रों से अपने अमृत को क्षमा कर देने की बात कह दी। उसका कहना था, "अब वह बालिग हो गई है और उसकी इच्छा के बिना विवाह नहीं हो सकता।"

सिख समाज में अमृत के कलकत्ता में मिल जाने से किसी प्रकार की भी प्रसन्नता नहीं हुई। इसके साथ ही स्त्री-समाज में अमृत की निन्दा और भी ज़ोरों से होने लगी। वढ़ियामसिंह का अनुमान कि वह जिसके साथ भागकर गई है उससे लड़कर लौटने वाली है, स्त्रियों को ठीक प्रतीत हुआ।

प्रायः स्त्रियाँ हँस-हँसकर कहती थीं, "हाँ, हरभजन की माँ! लड़की है, अब घर में तुम नहीं रखोगी तो और कौन रखेगा? बेचारी जायगी कहाँ?"

सरदार कर्तारसिंह को भी वढ़ियामसिंह ने अमृत के कलकत्ता में मिल जाने की बात बताई। इस पर उसने पूछा, "किसके साथ भागी थी?"

"यह तो उसने नहीं बताया। हाँ, यह लिखा है कि यदि उसको विवाह करने में स्वतन्त्रता दी जायगी तो वह लौट आएगी।"

"तो वहीं उससे विवाह क्यों नहीं कर लेती, जिसके साथ भाग गई थी, यहाँ आकर हमारा मुख बिरादरी में काला करने से क्या लाभ है?"

"पर यह कैसे कह सकते हैं कि उसने मुख काला किया ही है? वह तो कहती है कि उसकी राय से विवाह होना चाहिए।"

"यही तो मैं कह रहा हूँ कि अपनी इच्छा से विवाह करना है तो यहाँ आकर करने से क्या लाभ होगा? देखिए सरदार साहब, मैं तो पहले ही कहता था कि बाल कटवाए हैं तो मुख काला भी करेगी। आखिर वह होकर ही रहा।"

सरदार वढ़ियामसिंह और उसकी पत्नी जब अपने मित्रों से इस प्रकार की बातें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनते थे तो उनका सिर और आँखें लज्जा से झुक जाती थीं और मुख का रंग विवर्ण हो जाता था।

नीला अमृत का घर से चला जाना पसन्द नहीं करती थी। इस पर भी अब उसका पत्र आ जाने से वह इच्छा करती थी कि वह शीघ्रातिशीघ्र घर लौट आए। अतएव उसने सब मित्रों और परिचितों से अमृत की चिट्ठी और उसके पिता के आश्वासन की बात बता दी।

नीला कारखाने को पुनः खड़ा करने में लगी हुई थी। इस कारण नित्य रात के समय वह, प्रबोध और प्रभुदयाल बैठ जाते थे और कारखाने की भिन्न-भिन्न समस्याओं पर विचार कर निर्णय किया करते थे। एक-एक निर्णय कारखाने की रूपरेखा को बदलता जा रहा था और इसका ज्ञान कर्मचारियों और यूनियन के अधिकारियों को हो रहा था।

कारखाने के कर्मचारियों को जब पता चला कि कारखाना बिक रहा है, तो वे बहुत बेचैनी अनुभव करने लगे। उनमें एक रामदीन था। यह पहले रेल के कारखाने में फिटर का काम करता था और रेल का काम वह वेतन के लोभ में छोड़कर यहाँ आया था। यहाँ एक वर्ष तो काम मज़े में चलता रहा, परन्तु अब हड़ताल के दिनों में उसको दिन के समय तारे दिखाई देने लगे थे।

रामदीन के आश्रय पलने वाले सात प्राणी थे और एक महीने की हड़ताल ने उसके लिए खाने के लाले उत्पन्न कर दिए थे। जब उसके मन में यह बात बैठी कि हड़ताल का परिणाम बेकारी होने वाला है, तो वह कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यालय में जाकर शिशिरकुमार से मिला। उसने उसको स्पष्ट रूप में कह दिया कि यदि उसको दो-तीन दिन तक काम न मिला तो उसके बच्चे भूख से बिलख-बिलखकर दम तोड़ने लगेंगे।

शिशिरकुमार ने उसको समझाने का यत्न किया कि त्याग और तपस्या से एक महान् कार्य में सफलता की आशा की जा सकती है। इस पर रामदीन ने पूछा, "शिशिर बाबू, कौन-सा महान् कार्य है, जिसके लिए आप मुझको अपने बच्चों की कुर्बानी देने को कह रहे हैं?"

"मज़दूर समुदाय की हकूमत लाना और सरमायादारों का ख़ात्मा करना।"

"पर आपने तो मज़दूरों की हकूमत को बरबाद कर दिया है। 'न्यू इण्डिया ऑटोमोबाइल वर्क्स' का प्रबन्ध तो कर्मचारियों की कौंसिल करती थी। आपने वास्तव में हड़ताल उस कौंसिल के प्रबन्ध को तोड़ने के लिए कराई प्रतीत होती है।"

"यह सब-कुछ झूठ और फरेब था।"

शिशिरकुमार ने यह कह तो दिया, परन्तु तुरन्त उसको नीलादेवी की बात स्मरण हो आई। नीला ने कहा था कि विचारधाराओं के सम्मोहन में लोग उचित-अनुचित तथा न्याय-अन्याय को भूल जाते हैं। उसको समझ आया कि वह भी इसी सम्मोहन में कार्य कर रहा है। इससे उसने अपने कथन का संशोधन कर दिया। उसने कहा, "रामदीन, एक काम करो। तुम नीलादेवी के पास चले जाओ और उसको अपने परिवार की अवस्था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बताकर पुनः नौकरी पाने के लिए यत्न कर लो।"

"परन्तु जब आप, जो मज़दूरों के रक्षक हैं, मेरी तथा अन्य कर्मचारियों की अवस्था पर तरस नहीं खा सकते तो एक सरमायादार क्यों हम पर दया दिखाएगा? हम तो उसको गालियाँ निकालते रहे हैं और उसको भारी आर्थिक हानि पहुँचा चुके हैं।"

"पर मैं कर ही क्या सकता हूँ?"

"आप एक बात कर सकते थे और मैं समझता हूँ कि अब भी कर सकते हैं। आप यूनियन के प्रधान हैं, इस कारण पूर्ण यूनियन की ओर से प्रबोध तथा नीलादेवी के पास जाकर क्षमा माँग लें और उनको कहें कि हमको पुनः उचित वेतन पर नौकर रख लें।"

"मैं अपनी पार्टी से आदेश लिये बिना इस बात को नहीं कर सकता।"

"तो आप हमारी प्रैसिडैण्टशिप भी क्या पार्टी के आदेश से ही करते थे?"

"हाँ।"

"तो आप यह हड़ताल भी पार्टी के आदेश से चलवा रहे थे?"

"हाँ।"

"तो पार्टी को हम लोगों की दशा पर दया नहीं आ रही?"

"पार्टी कोर्ट में उनके कारखाने के बेचने पर प्रतिबन्ध लगवाने का यत्न करेगी।"

"इससे हमको क्या मिलेगा? कारखाना कई मास तक बन्द रहेगा और हम बेकार रहेंगे।"

"इसीलिए तो कहता हूँ कि तुम नीला से मिलकर अपनी व्यक्तिगत समस्या का सुझाव ढूँढ लो।"

"और दूसरे कर्मचारियों का क्या होगा?"

"वे भी जाकर अपने-अपने लिये यत्न कर सकते हैं।"

"परन्तु यदि आपने प्रतिबन्ध लगवा दिया तो नीलादेवी हमको काम कहाँ से दे सकेगी?"

"तो इसमें मैं क्या कर सकता हूँ?"

रामदीन निराश लौट आया। उसने अपने साथियों से राय की तो उनमें से कई इस बात के लिए राज़ी हो गए और नीलादेवी के चिकित्सालय में जा पहुँचे।

जब नीलादेवी को उनके आने का कारण पता चला तो उसने कहा, "मैं आपकी कठिनाई को समझती हूँ और अपनी ओर से पूर्ण यत्न करूँगी कि आप फिर काम पर लग सकें। देखिए, कारखाना बिक गया है। उसका मैनेजर दिल्ली से आया हुआ एक व्यक्ति नियत हो चुका है। धन प्रबोधजी के पिता का लग रहा है। जब तक कारखाने को खरीदने वाले सारा रुपया दे नहीं देते, तब तक मैनेजर के साथ मैं भी काम करूँगी और उसके प्रबन्ध में राय दे सकूँगी। मैं आपको वचन देती हूँ कि मेरा यह यत्न रहेगा कि अधिक-से-अधिक पुराने कर्मचारी पुनः नौकरी पा जाएँ।"

"कारखाना कब तक खुल सकेगा?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यदि आपकी यूनियन की ओर से कोई मुकद्दमेबाज़ी न की गई तो एक सप्ताह में ही काम चालू हो जायगा। परन्तु मैंने सुना है कि यूनियन इस बिक्री पर प्रतिबन्ध लगवाने का यत्न करना चाहती है।"

"हम यत्न करेंगे कि ऐसा प्रतिबन्ध न लग सके।"

"हाँ, कीजिए और एक-दो दिन में नौकरी की नई शर्तें, जो छपने गई हुई हैं, आकर ले जाइए और अपना-अपना प्रार्थना-पत्र भरकर दे जाइए।"

: १३ :

शिशिरकुमार गोली चलने और कारखाना बिक जाने के पश्चात् पार्टी का आदेश लेना चाहता था। इस कारण वह पार्टी की मीटिंग बुलाने का यत्न करने लगा। पार्टी द्वारा एक अत्यावश्यक बैठक बुलाई गई और उसमें शिशिर को आदेश मिल गया कि कर्मचारियों को तो नीलादेवी से मिलकर काम पाने का यत्न करना चाहिए और शिशिरकुमार को कारखाने की बिक्री पर कोर्ट द्वारा इन्जंक्शन लगवाने का यत्न करना चाहिए।

शिशिरकुमार, जिस पर नीलादेवी के कथन का प्रभाव हो चुका था, यत्न करता रहा कि मुकद्दमा नहीं करना चाहिए। उसका कहना था कि कर्मचारियों को नौकरी कैसे मिल सकेगी, यदि मुकद्दमा भी आरम्भ कर दिया जायगा तो कारखाना एक लम्बे काल के लिए बन्द हो जायगा।

इस पर उसको आदेश मिला, "तुमको काम करना चाहिए। पार्टी का आदेश है कि मुकद्दमा चला दिया जाय। यह एक महान् नीति से सम्बन्ध रखने वाली बात है। इसमें तो तुमको आदेश का पालन करना चाहिए।"

शिशिरकुमार बहुत निराश हो गया। वह मन में समझता था कि पार्टी की यह आज्ञा व्यर्थ तथा कर्मचारियों पर अन्याय होगी। तो भी उसको आदेश के पालन के बिना कोई उपाय नहीं सूझ रहा था।

पार्टी की मीटिंग समाप्त हुई तो वह उदास मन किंकर्तव्य-विमूढ़ की भाँति वहाँ बैठा रह गया। इस समय एक आदमी ने आकर उससे कहा, "आपको बाहर डॉक्टर सुशीलकुमार बुला रहे हैं।"

वह घबराकर उठा और पार्टी के कार्यालय से बाहर निकल गया। उसके चले जाने के पश्चात् पार्टी के सदस्य परस्पर अनौपचारिक रूप में बातचीत करने लगे। एक सदस्य, जिसका नाम भृगुदत्त था, अपने एक साथी से कहने लगा, "मैं भी इस मुकद्दमे के हक में नहीं था, परन्तु जब मैंने देखा कि शिशिरकुमार पार्टी के आदेश को अयुक्तिसंगत कहने लगा है तो मैंने मुकद्दमे के हक में राय दे दी। युक्ति वही है, जो हम निश्चय करते हैं।"

भृगुदत्त का साथी हँस पड़ा। इस पर भृगुदत्त ने विस्मय में साथी की ओर देखकर पूछा, "क्यों जी, हँस क्यों रहे हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस कारण कि जब युक्ति वही है, जो पार्टी निश्चय करती है तो फिर हमको युक्ति के विषय में विचार करने की आवश्यकता ही क्या है ?"

"इसलिए कि हमने अपने कामों की सफाई जो देनी है।"

"जैसे अयुक्तिसंगत हमारे निर्णय हैं, वैसे ही अयुक्तिसंगत सफाई भी दे दी जाएगी।"

"तो तुम भी इस निर्णय को ग़लत समझते हो क्या ?"

"हाँ।"

"तो तुमने अपना मत इसके पक्ष में क्यों दिया है ?"

"इस कारण कि मैं पार्टी के वैतनिक कार्यकर्ताओं में आने वाला हूँ।"

इस पर भृगुदत्त खिलखिलाकर हँस पड़ा। जब साथी ने प्रश्न-भरी दृष्टि से उसकी ओर देखा तो उसने कहा, "काम करने का यह ढंग दोषपूर्ण है। पार्टी, जो स्वयं कर्मचारियों का प्रतिनिधित्व नहीं करती, उनके विषय में आदेश करने का अधिकार नहीं रखती।"

"तो फिर क्या होगा ?"

"मैं तो कर्मचारियों को कहने वाला हूँ कि अब मुकद्दमे के आश्रय बेकार न बैठे रहें। मेरे पड़ोस में इस फैक्टरी के दो कर्मचारी रहते हैं। बेचारे बहुत बेहाल हैं। उनको तुरन्त अपने काम की खोज कर लेनी चाहिए।"

रामदीन भृगुदत्त के पड़ोसियों में एक था। रात के समय उसको बुलाकर जब भृगुदत्त ने पूर्ण परिस्थिति का वर्णन किया तो उसने भी नीला से हुई बातचीत बता दी।

"तो नीला ने तुम्हें पुनः रख लेने का आश्वासन दिया है क्या ?"

"जी हाँ, उन्होंने कहा तो है, परन्तु यदि शिशिर बाबू ने कारखाने पर मुकद्दमा कर दिया तो फिर नौकरी मिलना कैसे सम्भव है ?"

"तो शिशिर बाबू से कहो कि मुकद्दमा न करें।"

"हम उनसे मिलने के लिए गए थे और पता चला है कि वे कहीं बाहर चले गए हैं।"

"बाहर कहाँ ?"

"यह पता नहीं चला। पार्टी कार्यालय में कोई कह रहा था कि कलकत्ता गए प्रतीत होते हैं।"

"तो इसका अर्थ यह हुआ कि अभी कुछ दिन मुकद्दमा दायर नहीं किया जायगा। तब तक तुम नीलादेवी से मिलकर नौकरी का प्रबन्ध कर लो।"

"यह तो हो जायगा पण्डितजी, परन्तु यदि कारखाना चालू होने पर भी इन्जंक्शन मिल गया, तब भी तो कारखाना बन्द हो जायगा और हमारी नौकरी बीच में ही लटकती रह जायगी।"

"ऐसा करो कि शिशिर बाबू के आने की टोह लेते रहो। जब वह आ जाय तो उसको कहना कि मुकद्दमा करने से पहले मुझसे मिल ले।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन

: १ :

जिस दिन अमृतकौर की प्रीतमसिंह से सगाई हुई, उसी सायंकाल अपने भाई की दूकान पर से उठते हुए उसने अपने भाई से पूछा था, "तो फिर क्या करूँ ?"

हरभजनसिंह ने कहा था, "तुम घर जाओ, मैं सरदार कर्तारसिंह से मिलकर आता हूँ।"

अमृत दूकान से निकली तो घर जाने के स्थान केसर बाग़ और हज़रतगंज की ओर चल पड़ी। वह घर जाने के लिए अपने मन को तैयार नहीं कर सकी। मार्ग में चलते-चलते वह कई प्रकार की सम्भावनाओं का विचार कर रही थी। सरदार कर्तारसिंह से मिलने में वह कोई प्रयोजन नहीं समझती थी। वह इस विषय में हरभजनसिंह से सहमत नहीं थी। इस पर भी वह उसको वहाँ जाने से मना नहीं कर सकी। वह यह भी जानती थी कि यदि उसने अपने पिता से इस सगाई के विषय में अपनी राय बताई तो वह एक ओर तो पीटी जायगी और दूसरी ओर तब तक कैद भी की जा सकती है, जब तक उसका विवाह न हो जाय।

इस परिस्थिति में वह घर लौटने में कुछ भी लाभ नहीं समझती थी। परन्तु प्रश्न था कि घर न जाकर कहाँ जाय? एक बार उसके मन में आया कि अपने मामा के घर चली जाय, परन्तु उसको स्मरण था कि उसके पिता ने उसकी माँ को भी घर से निकाल देने की धमकी दी थी। इसके घोर परिणामों को विचार कर उसके पग न तो घर की ओर जाते थे और न ही अपने मामा के घर की ओर।

वह एक बात जानती थी कि उसके बालिग होने में तीन मास की अवधि है। यदि वह ये तीन मास कहीं छिपकर रह सके तो काम बन सकता है। रह-रहकर वह मामा के घर जाने का विचार करती थी, परन्तु इसकी प्रतिक्रिया अपनी माँ पर होने की सम्भावना का विचार कर वह उधर जाती-जाती लौट आती थी।

यह सब-कुछ अमृत को अति दुस्तर प्रतीत होता था। वह नहीं जानती थी कि किधर जाय। सब-कुछ विचार करने पर भी वह घर जाने के लिए अपने मन को तैयार नहीं कर सकी। इस प्रकार के विचारों में वह हज़रतगंज में चक्कर काट रही थी कि उसके सामने सुशीलकुमार ने खड़े होकर मार्ग रोक लिया। उसको देख उसके मन में एक आशा की किरण जाग पड़ी। उसने मुस्कराते हुए पूछा, "आज यहाँ कैसे ?"

"आज हस्पताल नहीं जाना था, इस कारण सिनेमा देखने चला आया था। तुम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहाँ जा रही हो ? चाय पी ली है क्या ?"

"नहीं। आइए, चाय पिएँ और एक अत्यावश्यक बात है। वह भी कर लेंगे।"

"क्यों ? क्या बात है ? चलो, मैं स्टैण्डर्ड में चाय पीने जा रहा हूँ।"

सुशील ने यह पूछते हुए अमृत की ओर देखा था। यद्यपि सायंकाल हो गया था और कुछ-कुछ अँधेरा हो चला था, इस पर भी सुशील ने अमृत की तरल आँखें देख ली थीं; परन्तु उसने इस तरलता का कारण पूछे बिना स्टैण्डर्ड की ओर पग उठा लिये। अमृत उसके साथ-साथ चल पड़ी।

दोनों रेस्टराँ में पहुँच एक कोने में जा बैठे। अमृत चुप थी, वह अपने आँसू रोकने में लगी हुई थी। सुशील ने उसको चुप देख पूछा, "बहुत दिन के पश्चात् मिले हैं अमृत ! बहुत बातें तुमसे करनी हैं।"

"हूँ।" अमृत ने मुख खोले बिना कह दिया।

"मुझको हस्पताल की पक्की नौकरी मिल गई है। वहाँ पर वेतन तो केवल ढाई सौ रुपए ही है, परन्तु प्रैक्टिस से पर्याप्त आय हो जाती है। आजकल हस्पतालों में बहुत अधिक रोगी आ रहे हैं। इस कारण जो रोगी डॉक्टरों से भेजे हुए आते हैं, उनको प्रवेश सुगमता से मिल जाता है। लोग यह समझते हैं कि यदि हाउस-सर्जन द्वारा हस्पताल में भेजे जाएँगे तो उनको निश्चित रूप में प्रवेश मिल जायगा। अतएव प्रायः रोगी पहले मुझको घर पर दिखाने आते हैं और मेरी फीस देने में अपना भला समझते हैं। मैं उनकी सिफारिश कर देता हूँ और फिर अगले दिन उनके लिए हस्पताल में स्थान बना देता हूँ और ली हुई फीस सार्थक कर देता हूँ। इस प्रकार सौ दो सौ के भीतर नित्य की आय हो रही है।"

अमृत चुपचाप बैठी थी। वह इस समय अपने मन को दृढ़ कर विचार कर रही थी कि किस प्रकार अपनी बात आरम्भ करे।

सुशील कह रहा था, "अभी तक तो अपनी कमाई अपनी कोठी की सजावट में खर्च कर रहा हूँ। मैं चाहता हूँ कि मेरे विवाह से पूर्व मेरा स्थान सभ्य मनुष्यों के रहने योग्य हो जाय। मैं अपनी पत्नी को बहुत ही आराम और आनन्द में रखना चाहता हूँ।"

अमृत अभी भी चुप थी। सुशील कह रहा था, "अगले मास मैं हिन्दुस्तान लैण्डमास्टर मोटर गाड़ी लेने का विचार रखता हूँ। तभी विवाह का आनन्द रहेगा।"

इस समय तक अमृत अपने मन पर काबू पा चुकी थी। उसने अब अपनी बात बताना उचित समझा। उसने पूछा, "पर विवाह कब होगा ?"

"तुमने कहा था न कि तुम्हारे माता-पिता तुम्हारा मेरे साथ विवाह पंसन्द नहीं करेंगे, अतएव तीन मास के उपरान्त जब तुम बालिग हो जाओगी, तभी विवाह कर सकोगी।"

"परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि उस समय से पूर्व ही बाज़ चिड़िया को झपटकर ले जाएगा और आप मुख देखते रह जाएँगे।"

"क्या मतलब ?"

"मेरे माता-पिता ने मेरी सगाई सरदार कर्तारसिंह के सुपुत्र सरदार प्रीतमसिंह से कर दी है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो इसका मतलब यह हुआ कि मैं पीछे रह गया हूँ और कोई अन्य दौड़कर मुझसे आगे निकलता जा रहा है ?"

"हाँ, अब तो एक ही उपाय है कि मैं ये तीन मास कहीं छिपकर निकाल दूँ।"

"ठीक तो है।"

"पर कहाँ छिपूँ ?"

"तो तुमने कुछ विचार किया ?"

"मैं अपने किसी सम्बन्धी के घर जाना नहीं चाहती और मित्रों में आपसे अधिक कौन हो सकता है ?"

सुशील गम्भीर विचार में डूब गया। बैरा चाय लगा गया। अमृत ने चाय बनाना आरम्भ कर दिया। चाय लगाते हुए उसने कहा, "आप अपने को षड्यन्त्रकारी होने की शेख़ी मारते थे। अब समय है कि आप अपनी चतुराई का परिचय दें।"

इस समय तक सुशील का उर्वर मस्तिष्क एक योजना बना चुका था। उसने प्याला उठा चाय का घूँट पीते हुए कहा, "अमृत, मुझ पर विश्वास करो तो एक योजना बताऊँ ?"

"आपको तो मैंने आत्म-समर्पण कर रखा है। आप पर तो अविश्वास का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता।"

उसने प्याला सॉसर में रखकर अमृत की आँखों में देखते हुए कहा, "बर्दवान में मेरे एक मित्र शिशिरकुमार की मौसी रहती है। वह मुझको अपना पुत्र ही मानती है। कहो तो तुमको उसके पास भेज दूँ ?"

"परन्तु यह कब तक हो सकेगा ? मैं तो अब भी घर नहीं जा सकती। मुझको भय है कि मेरे वहाँ जाते ही मुझको मेरे विवाह तक कैद कर रखा जायगा।"

"क्यों ?"

"इस कारण कि मेरे पिता मेरी स्वतंत्र प्रवृत्ति को जानते हैं और उनको यह भी विदित है कि मैं और भाई केशधारी सिखों को पसन्द नहीं करते। मेरे घर से भाग जाने की सम्भावना से बचने के लिए वे मुझको कोठी में कहीं बन्द कर देंगे और एक-दो दिन में मेरा विवाह कर देंगे।"

"इसका अर्थ यह निकला कि अभी प्रबन्ध करना चाहिए।"

"हाँ, मैं अपने मामा के घर जा रही थी, परन्तु जैसा कि मैंने अभी बताया है, मेरा वहाँ रहना उचित नहीं। यदि आपकी देख-रेख में रह सकूँ तो उचित ही होगा।"

चाय पीकर दोनों शिशिरकुमार से मिलने चले गए। वह पार्टी के कार्यालय में था। जब उसने बात सुनी तो वह चिरकाल तक सोच-विचार में पड़ा रहा। सुशील और अमृत दोनों उत्सुकता से उसका मुख देखते रह गए। अन्त में उसने कहा, "मौसी का घर है तो ठीक, परन्तु उनको यह बात बताएँगे तो वे इनको घर पर नहीं रखेंगी।"

"क्यों ?"

"बात स्पष्ट है कि एक कुँवारी लड़की को इसलिए छिपाना कि वह अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माता-पिता द्वारा चुने हुए पति से विवाह करना नहीं चाहती, उनको सर्वथा अरुचिकर होगा। वे प्यार करने के स्थान इनसे घृणा करेंगी और घृणा में मनुष्य जो कुछ भी कर दे कम है।"

"तो क्या किया जाय?"

"एक ही उपाय है। ये नकली रूप में मेरी पत्नी बनकर वहाँ रह सकती हैं। मैं कह दूँगा कि मुझको अभी लखनऊ में मकान नहीं मिला, इस कारण विवाह करते ही चला आया हूँ।"

सुशील इस प्रस्ताव को सुनकर हँस पड़ा और बोला, "यदि नकली रूप में ही बीवी बनाकर रखो तब तो आपत्ति नहीं हो सकती, परन्तु याद रखो शिशिर, कहीं मेरे खेत में मुख डाला तो ठीक नहीं होगा।"

"मैं इस बात की चिन्ता नहीं करता। मैं तो जानता हूँ कि तुम मित्र हो और ये तुम्हारी मंगेतर हैं। मुझको भय इस बात का है कि इनको मेरी पत्नी होने का अभिनय करना होगा, जो ये कर सकेंगी क्या?"

"कर क्यों नहीं सकेगी? क्यों अमृत?"

यह एक प्रकार से अमृत के चरित्र और शिक्षा को चुनौती थी। इससे उसने बहादुरी बताते हुए कह दिया, "अभिनय-मात्र तो कर दूँगी।"

"बस और कुछ नहीं चाहिए। मौसी बहुत अच्छी हैं। मेरे माता-पिता नहीं और वे मुझको अपना पुत्र मानती हैं। इस कारण मेरा अपनी पत्नी को वहाँ ले जाना और उनके पास रखना स्वाभाविक ही है।"

बात तय हो गई। सुशील ने टैक्सी की और अमृत तथा शिशिर को अपने बँगले में ले गया। वहाँ जा उसने अपना बिस्तर अमृत को दिया। साथ ही पाँच सौ रुपए के नोट देकर कहा, "रात को नौ बजे देहरादून-हावड़ा एक्सप्रेस जाती है। उसमें ही चले जाइए।"

"मौसी को एक तार दे दूँ?"

"हाँ, यह ठीक रहेगा।"

अतएव वे वहाँ से टैक्सी में बड़े तार-घर पहुँचे। वहाँ शिशिर ने अपनी मौसी को तार दे दिया।

तार में लिख दिया, "आंटी, ब्रिंगिंग वाइफ़ फ़ॉर स्टे विद यू। रीचिंग टुमारो डी० डी० एक्सप्रेस।"

जब तार दे चुके तो शिशिर ने कहा, "मौसी के कई पत्र आ चुके हैं कि मैं विवाह कर लूँ। अब इस तार के पहुँचते ही वे क्या करेंगी, अनुमान ही लगाया जा सकता है।"

इस पर तीनों हँसने लगे। वहाँ से स्टेशन पर पहुँचे। सुशील का स्टेशन मास्टर से परिचय था। वह भी एक बंगाली महाशय था। उससे कहकर उसने एक फर्स्ट-क्लास 'कूपे' रिज़र्व करवा लिया। गाड़ी के आने पर शिशिर और अमृत को उसमें सवार कर वह लौट पड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्ग में नीलादेवी मिली। वह एक रोगी को देखकर लौट रही थी। नीलादेवी के मस्तिष्क में अमृत का कहना कि वह सुशील से वचनबद्ध है, घूम रहा था। इससे उसने उस समय उसके वहाँ घूमने की बात पूछकर अपने मन की बात पूछ ली, "सुशील, तुम्हारा विवाह कब हो रहा है ?"

"दो-तीन महीने में हो जाएगा।"

"क्या अमृत के विषय में तुम्हारे माता-पिता राज़ी हो गए हैं ?"

"नहीं, और मैं समझता हूँ कि उनको नाराज़ करने में कोई लाभ नहीं है।"

"मैंने सुना था कि आप अपने माता-पिता से विरोध कर अमृत से विवाह करेंगे ?"

सुशील के मन में आया कि अमृत के विषय में उससे बात कर दे, परन्तु फिर उसने सोचा कि उसका घर से भाग जाना उसका अपना रहस्य है और बिना उसकी अनुमति के यह किसी को नहीं बताना चाहिए—हरभजनसिंह को भी नहीं। इतना विचार कर उसने अपने मन को दृढ़ कर कह दिया, "अमृत तथा जिसने आपको बताया है, उसको भ्रम हो गया प्रतीत होता है। मैंने अमृत को कभी किसी प्रकार का वचन नहीं दिया। बात यह है, नीलादेवी, कि जब से आपने मेरे प्रेम को ठुकरा दिया है, मैं विवाह को एक दुनियादारी से अधिक महत्त्व नहीं दे रहा।

"मैं समझता हूँ कि मेरी बीवी को मेरे परिवार में ही रहना है। इस कारण यह आवश्यक है कि उसकी उनसे पट सके। मैं सरकार बाबू की लड़की से विवाह कर रहा हूँ।"

उस समय तक नीला को अमृत के घर से भाग जाने का ज्ञान नहीं था। रात को हरभजनसिंह उससे अमृत के विषय में पूछने आया तो नीला ने वह सब बात ज्यूँ-की-त्यूँ बता दी। इससे हरभजनसिंह को विश्वास हो गया कि सुशीलकुमार से अमृत के विवाह की बात निश्चित नहीं है। साथ ही यह बात भी सिद्ध हो गई कि वह अमृत के विषय में नहीं जानता।

इसके पश्चात् जब-जब हरभजनसिंह सरकार बाबू से मिलता रहा उसको रेणु के विवाह की तैयारी के समाचार मिलते रहे।

: २ :

अमृत ने कह तो दिया कि वह शिशिरकुमार की पत्नी बनने का अभिनय कर देगी, परन्तु यह कार्य उतना सुगम नहीं था, जितना वह समझती थी। शिशिर ने अपना परिचय देना उचित समझा, इस कारण जब गाड़ी लखनऊ से चली तो शिशिर ने कहा, "तुम मेरी पत्नी का नाटक खेलने जा रही हो। इस कारण तुमको मेरा पूर्ण परिचय तो रहना ही चाहिए, लो सुनो।

"मेरे नाना एक मध्यम श्रेणी के क्लर्क थे। उनका परिवार लम्बा-चौड़ा था। पाँच लड़कियाँ और छः लड़के थे। इस कारण उन्होंने अपनी बड़ी लड़की प्रतिमादेवी का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाह बर्दवान के एक ज़मींदार प्रफुल्ल बाबू से कर दिया। विवाह के समय प्रफुल्ल बाबू पचपन वर्ष की आयु के थे। इस समय उनकी पहली पत्नी का देहान्त हो गया था। प्रफुल्ल बाबू प्रतिमादेवी पर मोहित थे और उन्होंने ज़मींदारी छोड़कर अपनी पूर्ण सम्पत्ति उसके नाम लिख दी। बर्दवान में कई मकान थे, झरिया में कोयले की खानों में हिस्से थे। इनके अतिरिक्त टाटा और अन्य कम्पनियों में भी हिस्से थे।

"प्रफुल्ल बाबू का दो वर्ष पश्चात् देहान्त हो गया। प्रतिमादेवी बिना सन्तान के विधवा हो गईं और ज़मींदारी के अतिरिक्त अतुल धन-राशि की स्वामिनी बन गईं।

"यही तो मेरे नाना चाहते थे। परिणाम यह हुआ कि मेरे नाना के परिवार को एक बहुत बड़ा आश्रय मिल गया। प्रतिमादेवी ने अपनी चारों बहनों का विवाह किया और अपने भाइयों की शिक्षा का प्रबन्ध कर दिया।

"मेरी माँ मेरे नाना की दूसरी लड़की थीं। स्वाभाविक रूप से चन्द्रिका, यह मेरी माँ का नाम था, प्रतिमादेवी की परम प्रिय थीं। परन्तु उसका विवाह हुआ और मैं अभी उसके पेट में ही था कि मेरे पिता का देहान्त हो गया। मेरी माँ अपनी ससुराल को छोड़ अपनी बहन प्रतिमादेवी के घर में जाकर रहने लगीं। मेरा जन्म हुआ और उसके कुछ ही पीछे माँ का भी देहान्त हो गया।

"मौसी ने मुझको पाल-पोसकर इतना बड़ा किया है, मुझको एम० ए० तक पढ़ाया है। मेरे विचार सोशियलिज़्म की ओर जाने लगे तो मैं देश में क्रान्ति लाने के उपायों पर विचार करने लगा। अब मैं कम्युनिस्ट पार्टी का एक सदस्य हूँ और उनका वैतनिक कार्यकर्ता हूँ। मेरे इस काम के विषय में मौसी कुछ नहीं जानतीं। उनका विचार है कि मैं अपनी पी-एच० डी० की डिग्री के लिए 'थीसिस' लिख रहा हूँ।

"यद्यपि मुझको वे अपना पुत्र ही मानती हैं, इस पर भी उन्होंने यह न तो घोषित किया है और न ही सिवाय मेरे खर्चे के अतिरिक्त मुझे कुछ लिया-दिया है। मेरा विचार है कि वे मेरे विवाह की प्रतीक्षा कर रही हैं और तभी वे मेरे विषय में विचार करेंगी।

"सुशील को मौसी जानती हैं। दो वर्ष हुए, सुशील एक मास के लिए बर्दवान मेरे साथ रह आया है। अब तुमको अपनी पत्नी के रूप में ले जाने से कई प्रकार की प्रतिक्रियाएँ होने की सम्भावना है। वे मेरी पत्नी को एक अबंगाली लड़की देख नाराज़ हो सकती हैं। वे तुमको सुन्दर देख तुमसे प्रसन्न भी हो सकती हैं। वे बिना उनके ज्ञान के, मुझको विवाह करते सुन नाराज़ हो सकती हैं अथवा एक पढ़ी-लिखी सुशील बहू को घर पर बिना किसी प्रकार का झंझट किए आते देख प्रसन्न भी हो सकती हैं। कह नहीं सकता क्या होगा? इस पर भी इतना तो मुझको विश्वास है कि वे तुमको घर से निकालेंगी नहीं।

"यह है मेरा इतिहास और तुमको भी कुछ इतिहास बनाना पड़ेगा। तुम अपना वास्तविक इतिहास तो बताना नहीं चाहतीं न?"

अमृत ने कहा, "मेरे विषय में आप कह सकते हैं कि मेरे पिता पंजाब से आए हुए एक विस्थापित व्यक्ति थे। आपके पड़ोस में एक घर में रहते थे। उनका एकाएक देहान्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो गया और मैं अकेली रह गई। आपने मुझसे विवाह कर लिया है और मेरी माँ पाकिस्तान में ही मर चुकी थीं।"

"बहुत खूब! अच्छी कहानी रहेगी।"

इस प्रकार एक कहानी बना वे सो रहे। प्रातःकाल जब नींद खुली तो गाड़ी सोन का पुल पार कर रही थी। अमृत खिलखिलाकर हँसी तो शिशिर, जो ऊपर के बर्थ पर सो रहा था, झाँककर नीचे देख पूछने लगा, "क्या बात है, अमृतदेवी?"

"कुछ नहीं, मैं रात-भर सोचती रही हूँ कि आपकी मौसी के सम्मुख मैं आपको क्या कहकर पुकारूँ?"

"हमारे यहाँ रिवाज़ है कि पत्नी पति को 'आप, भद्र, महाशय' इत्यादि शब्दों से सम्बोधन कर पुकारती है।"

"और आप मुझको कैसे पुकारेंगे?"

"मैं, हाँ अमृत डियर, डार्लिंग, प्रिये, ओ, ए इत्यादि सम्बोधनों से।"

"आपकी मौसी हमको एक पृथक् कमरे में सुलाएँगी।"

"वह तो आज रात भी हम सोए हैं।"

"रेल की बात दूसरी है। परन्तु वहाँ तो पत्नी मानकर मुझको आपके पलँग पर बिठाया जायगा।"

"वे, जो इच्छा हो करें। हमने तो नाटक ठीक-ठीक खेलना है।"

अमृत को विश्वास था कि उस जैसी दृढ़ निश्चय वाली लड़की किसी भी परिस्थिति में अपने विचारों पर अटल रह सकती है। शिशिर ने उसको उचित ढंग पर आश्वासन दिया था। इसी कारण वह इस अभिनय में भाग लेने के लिए तैयार हुई थी। इस पर भी इकट्ठे रहने की पहली रात ही वह समझने लगी थी कि इस नाटक के खेलने में कितनी कठिनाई उत्पन्न हो सकती है।

कठिनाई तो बर्दवान स्टेशन पर पहुँचते ही सामने आई। शिशिर की मौसी प्रतिमादेवी और उसके साथ नौकर-चाकर नव-वधू की अगवानी करने आए हुए थे। इतने लोगों को देख, अमृत का दिल बैठने लगा। शिशिर ने उसके कान में कहा, "अमृत, मौसी के चरण-स्पर्श करना।"

"बता तो दीजिएगा कि कौन मौसी हैं?"

"हाँ-हाँ, मेरी ओर ध्यान रखना। मैं भी तो चरण-स्पर्श करूँगा।"

"तब तो ठीक है।"

गाड़ी के खड़े होते ही प्रतिमादेवी डिब्बे में चली आई और वहीं दोनों ने उसके चरण-स्पर्श किए। उसने आशीर्वाद दिया और बहू को उठाकर गले लगाया। एक क्षण के लिए तो वह एक गौरवर्णीय पंजाबी लड़की को बहू के रूप में देख चकित रह गई। शीघ्र ही उसने अपने मन पर काबू पाकर कहा, "शिशिर, यदि तुम्हारे पास बहू के योग्य कपड़े खरीदने को रुपया नहीं था, तो तुमने माँग क्यों नहीं लिया?"

"मौसी, यह सब-कुछ इतना जल्दी हुआ कि रुपया छोड़ तुमको भी न बुला सका।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर चलकर सब बताऊँगा। यह बताओ कि क्या यह सुन्दर नहीं है?"

इस पर प्रतिमादेवी ने अमृत को ध्यानपूर्वक देखा तो अमृत की आँखें झुक गईं। उसने ठुड्डी उठाकर उसको देखा और माथा चूमते हुए कहा, "बहुत सुन्दर है।"

इस समय नौकर भीतर आ सामान उठाने लगे तो शिशिर उनको सामान दिखाकर, अमृत को लेकर गाड़ी से नीचे उतर आया। मौसी ने उससे कान में पूछा, "बहू पढ़ी-लिखी भी है?"

"हाँ, मौसी! बी० ए० पास किया हुआ है।"

मौसी ने फूलों की माला शिशिर के गले में डाल, दोनों को एक ही बार बाँहों में लेकर छाती से लगाते हुए कहा, "चिरंजीव रहो बेटा! सुखपूर्वक रहो और बेटे-बेटियों से सौभाग्यशाली बनो।"

"माँ, अब चलो, स्टेशन पर तमाशा देखने वाले इकट्ठे हो रहे हैं।"

"हाँ, चलो।"

प्रतिमादेवी ने अमृतकौर को अपने साथ लिया और स्टेशन से बाहर निकल आई। नौकर सामान लेकर चल पड़े। शिशिर सबसे आगे-आगे था। उसके साथ प्रतिमादेवी के देवर का लड़का विमलानन्द था। वह इस समय पैंतीस वर्ष का होगा। उसके चार बच्चे थे। बड़ी लड़की की शादी हो चुकी थी और छोटी लड़की शशिकुमारी के लिए उसकी दृष्टि शिशिर पर थी। इस कारण इस विवाह की सूचना से उसको बहुत शोक हुआ था। पिछली बार जब शिशिर बर्दवान में था तो उसने प्रतिमादेवी से शशि के लिए कहलाया था, परन्तु शिशिर ने न तो ना की थी और न ही हाँ। इस पर भी वह आशा बाँधे हुए था। इस लड़की को बहू के रूप में देख वह जल-भुन गया।

विमलानन्द ने शिशिर के साथ चलते हुए कहा, "शिशिर, यह कहाँ से पकड़ लाए हो?"

"लखनऊ से दादा!"

"अब शशि का क्या होगा? वह तुम्हारी कई वर्ष से प्रतीक्षा कर रही है।"

"सो तो ठीक है, परन्तु विवाह के विषय में भविष्यवाणी नहीं की जा सकती। शशि के लिए भी कोई अच्छा प्रबन्ध हो जायगा, दादा!"

"तुमने मुझको भारी धोखा दिया है। यह लड़की तो पंजाबिन प्रतीत होती है।"

"हाँ।"

"सफेद चमड़ी देख बंगाली संस्कृति को भूल गए हो न?"

"यह बहुत अच्छी है दादा!"

"यह गाती है क्या?"

"मुझको पता नहीं।"

"क्या यह नाच सकती है?"

"मैंने देखा नहीं।"

"यह चित्रकला जानती है क्या?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"दादा !" वे स्टेशन से बाहर आ चुके थे, "शेष बात घर चलकर करेंगे।"

विमलानन्द चुप कर रहा। मोटर में प्रतिमादेवी बहू को लेकर बैठ गई। शिशिर को वह बहू के दूसरी ओर बिठाना चाहती थी, परन्तु वह मौसी के दूसरी ओर बैठ गया और बोला, "मौसी, मुझको लज्जा लगती है।"

विमलानन्द दूसरी मोटर में जा बैठा और जब शिशिर इत्यादि की मोटर चली तो वह भी अपनी मोटर ले पीछे-पीछे चल पड़ा। नौकर एक जीप में सामान लादकर साथ-साथ हो लिये।

: ३ :

बर्दवान गाड़ी सायं पाँच बजे पहुँची थी। घर पहुँचते-पहुँचते छः बज गए थे। प्रतिमादेवी ने घर पर बैंड-बाजा मँगवाया हुआ था और मुहल्ले-टोले वालों को निमन्त्रण दिया हुआ था।

धनी विधवा, ज़मींदार की बीवी, सुहृदय, धर्मपरायण होने से प्रतिमादेवी का परिचय और घनिष्ठता लम्बी-चौड़ी थी। यह समाचार पाते ही कि प्रतिमा का गोद लिया पुत्र शिशिरकुमार विवाह कर बहू घर लाया है, तो सैकड़ों स्त्री-पुरुष वर-वधू को देखने तथा बधाई देने उमड़ पड़े।

प्रतिमा ने मोटर में ही शिशिर को डाँटना आरम्भ कर दिया था, "बेटा शिशिर, ये वस्त्र प्रतिमा की पतोहू के योग्य नहीं हैं। मुझको विदित होता तो मैं तुमको पटना में आ मिलती और वहाँ से ही बहू को कपड़े-भूषण पहनाकर लाती। ऐसे कपड़े पहनाती कि सारा बर्दवान चकाचौंध रह जाता।

"तुम एक ही तो मेरे बेटे हो और तुम्हारी ही बहू, विवाह के तुरन्त पीछे इस प्रकार के साधारण कपड़े पहनकर अपनी ससुराल में आए, यह तो तुमने मेरे मुख पर कालिख पोत दी है।"

"पर मौसी, इसका सौन्दर्य देख तो इसके कपड़े और भूषणों पर किसी का भी ध्यान नहीं जायगा। मेरा तो अभी तक नहीं गया था।

"फिर मौसी, तुम कह देना कि लम्बी यात्रा से आ रही है। तनिक स्नान कर वस्त्र पहनेगी, यात्रा में भूषण गिर जाने का डर था।"

"यही तो कठिनाई है। कोई पूछेगा ही क्यों? और मैं बिना पूछे बता कैसे सकूँगी? सब अपने-आप ही मन में विचार करने लगेंगे।"

"तो ये विचार जब तुम इसको सोलह शृंगार कर सबके बीच लाओगी, स्वयमेव मिट जाएँगे।"

"सो तो ठीक कहते हो। पर यह हुआ कैसे कि तुमने इस बात की सूचना भी नहीं भेजी?"

"मौसी, समय ही नहीं था। तुम सारी कथा सुनोगी तो मान जाओगी कि इसके अतिरिक्त कुछ हो ही नहीं सकता था। मैं तो यह जानना चाहता हूँ कि तुमको भली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगी है अथवा नहीं ?"

"विमलानन्द का मुख देखा था ? इस समाचार से वह तो काला पड़ गया था ।"

"हाँ, मुझसे पूछता था कि अब शशि का क्या होगा ? मैंने कह दिया कि उसके लिए प्रबन्ध हो जायगा। मौसी, कोई पूर्णिमा क्रे स्थान अमावस को पसन्द नहीं कर सकता ।"

प्रतिमादेवी मुस्कराई और बोली, "देखो शिशिर, बंगाली लड़कियों की हँसी मत उड़ाओ । उनके अपने गुण हैं, दूसरों के अपने ।

"एक बात कहूँ शिशिर, शशि बहुत लड़ाकी लड़की है। मैं मन-ही-मन नहीं चाहती थी कि तुम्हारा उससे विवाह हो । पर देखें तुमने यह क्या पल्ले बाँध दिया है ?"

इतना कह प्रतिमादेवी ने अमृत की ओर देखा, वह मुस्करा रही थी। अमृत ने एकाएक शिशिर की मौसी को अपनी ओर देखते हुए देखा तो आँखें बन्द कर लीं। प्रतिमा ने उसकी ठुड्डी के नीचे उँगली रखकर मुख को तनिक ऊपर उठाया और कहा, "क्यों बहू, मुझसे झगड़ा करोगी ? अभी बता दो ।"

अमृत ने झुककर मौसी के चरण-स्पर्श कर हाथ अपने सिर को लगाए और मुस्कराकर मौसी की ओर देखा। ऐसा वह सिनेमा-पट पर बंगाली औरतों को करते देख चुकी थी। प्रतिमा इससे गद्‌गद प्रसन्न हो गई और उसने अमृत का मुख दोनों हाथों में पकड़कर उसके दोनों गालों को चूम लिया ।

जब ये घर पर पहुँचे तो उपस्थित लोगों की भीड़ पुष्पमालाएँ लिये आगे आई। इस पर प्रतिमादेवी ने कहा, "ठहरो, बहू को स्नान कर वस्त्र-भूषण पहन लेने दो। वह अभी दीवानखाने में आती है, तभी आप लोग स्वागत कीजिएगा ।"

"शिशिर, शीघ्रता करो । तुम भी स्नानादि कर लो ।" पश्चात् उसने बहू के स्वागत के लिए आए हुए लोगों से कहा, "तब तक आप चाय-पानी पीजिए ।"

अब उसने नौकरों से कहा, "ओ कचेरू, सबको मिठाई खिलाओ और चाय पिलाओ ।"

उसने फिर लोगों से कहा, "आप सब दीवानखाने में बैठिए ।"

अमृत शिशिर के साथ लज्जा और अहसान के नीचे दबी हुई मकान के भीतर चली गई। वह मन में विचार कर रही थी कि वह तो यह समझ रही थी कि शिशिर की मौसी शिशिर को उसके एक अबंगाली लड़की घर में ले आने पर डाँटेगी, उससे नाराज़ होगी और कदाचित् उसको घर से निकल जाने का आदेश देगी। उसको यदि यह आशा होती कि उसका इतना स्वागत किया जायगा और उसको चूमा-चाटा जाएगा, तो वह कदापि यहाँ इस रूप में आने का साहस न करती। परन्तु अब तो नाटक आरम्भ हो गया था। परदा उठ गया था और वह अपने को मञ्च पर खड़ी पाती थी। अब भागकर जाने के लिए स्थान नहीं रहा था।

शिशिर अमृत को लेकर ऊपर की मंज़िल पर अपने कमरे में गया। यह कमरा उसके लिए सदा ठीक किया रहता था। उसने अमृत का मुख विवर्ण देखा तो सब-कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझ गया। उसने कहा, "अमृत, साहस से काम लो। रंगमञ्च पर आई हो तो असफल अभिनेत्री नहीं बनना। देखो, मैं समझता था कि भारी झगड़ा होगा। विमलानन्द मौसी को भड़काकर तैयार रखेगा और हमारे यहाँ पहुँचते ही गालियों की बौछार पड़नी आरम्भ हो जायगी। मैं तुम्हारे लिए मौसी की मिन्नत करूँगा और उधर से मुझको लातें पड़ेंगी; परन्तु जो कुछ हो रहा है वह आशा के विपरीत है। मैं बंगाली-समुदाय की प्रवृत्ति को जानता हूँ। वे किसी अबंगाली लड़की को घर में देखकर प्रसन्न नहीं होते। अच्छा, देखें क्या होता है।"

"मुझको यदि मालूम होता कि आपकी मौसी इतनी स्नेहमयी हैं तो कभी यहाँ न आती। जितनी इनको मेरे यहाँ आने से प्रसन्नता हुई है, उतना ही शोक और दुःख इनको तब होगा, जब इनको पता चलेगा कि यह सब नाटक खेला जा रहा था।"

"अब तो आ गई हो न ! याद रखो कि यह तुम्हारे और मेरे मान-अपमान की बात नहीं, परन्तु मेरी माँ तुल्य इस सुहृदय देवी के दुखी और सुखी करने की बात भी है।"

अमृत शिशिर का मुख देखने लगी। शिशिर ने फिर कहा, "पर एक बात का मैं तुमको आश्वासन दिलाता हूँ कि इस परिस्थिति से तुमसे किसी प्रकार का अनुचित लाभ उठाने का यत्न नहीं किया जायगा। सुशील को मैं अपना बड़ा भाई समझता हूँ। इससे तुम मेरी भाभी हुई।"

इस समय प्रतिमादेवी वहाँ आ पहुँची। उसने बहू को कहा, "चलो मेरे साथ। स्नान कर वस्त्र पहनने हैं और भूषण भी तो तुमने चुनने हैं। नीचे लोग प्रतीक्षा कर रहे हैं और उनको बहुत देर तक बिठाए रखना उचित नहीं होगा।"

शिशिर भी स्नान करने चला गया। जब वह गुसलखाने से निकला तो उसके लिए रेशमी कपड़े पहनने को रखे थे। उसने कुर्ता-धोती पहने तो उसके जल-पान का प्रबन्ध कर दिया गया। उसने अभी मुख में डालने के लिए ग्रास उठाया ही था कि मौसी अमृत को लेकर आ गई।

"चलो शिशिर, नीचे आए लोगों से भेंट कर लें। वे बहू को भेंट देने के लिए भूषणादि लाए हैं।"

शिशिर ने जल-पान छोड़ा और खड़ा हो गया। मौसी के पीछे अमृत भूषणों से लदी खड़ी थी। वह उसकी सज-धज देखकर चकित रह गया। इन वस्त्र-आभूषणों में और बंगाली ढंग के पहिरावे में अमृत को देख शिशिर के मन में एक प्रकार की गुदगुदी होने लगी। इस समय पहली बार उसके मन में टीस उठी और विचार करने लगा कि यदि अमृत उसकी पत्नी होती तो ?

कुछ अधिक विचार करने के लिए समय नहीं था। वह मौसी के साथ-साथ चल पड़ा। अमृत मौसी के दूसरी ओर थी।

शिशिर की मौसी का मकान बहुत बड़ा था। दो-मंज़िले मकान में बीसियों कमरे थे, पाँच गुसलखाने थे और सब मकान अंग्रेज़ी ढंग पर सजा हुआ था। मकान के बाहर एक बहुत बड़ा मैदान था, जिसमें फुलवाड़ी थी और मोटर के लिए सड़क और गैरेज बना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ था। मकान के भीतर एक बड़ा-सा सेहन भी था। मकान के पिछवाड़े और छोटे-छोटे मकान थे, जिनमें प्रतिमादेवी के सम्बन्धी तथा मुख्य नौकर-चाकर रहते थे। विमलानन्द, प्रतिमादेवी के देवर का लड़का, इन्हीं मकानों में से एक में रहता था। वह कुछ काम-धंधा नहीं करता था। जब ज़मींदारी थी, तब वह उसका प्रबन्ध करता था और अब वह प्रतिमादेवी की चाकरी करता था। बाज़ार से सौदा-सुलफ़ ले आता था और खाने को तथा एक सौ रुपए महीने वेतन पाता था।

विमलानन्द की दो लड़कियाँ थीं। बड़ी लड़की सूर्यकुमारी का विवाह हो चुका था। उसका पति पाकिस्तान बनने से पहले ढाका में रहता था। अब वह कलकत्ता में एक सरकारी कार्यालय में सुपरिंटेंडेंट था। वह अपनी गृहस्थी मज़े में चला रहा था।

विमलानन्द की दूसरी लड़की शशिकला पहली से पाँच वर्ष छोटी थी। वह अब पन्द्रह वर्ष की हो गई थी। कई वर्ष से विमलानन्द इस यत्न में था कि शशि की सगाई शिशिरकुमार से हो जाय। उसने इसमें प्रतिमादेवी को भी मध्यस्थ बनाने का यत्न किया था। इस पर भी कुछ निश्चय नहीं हुआ था।

मकान की नीचे की मंज़िल में एक बड़ा-सा कमरा था, जो दीवानखाने के नाम से विख्यात था। दीवानखाने में दरी, जाजम, कालीन, सोफासेट और कुरसियाँ लगी हुई थीं।

दीवारों पर प्रफुल्ल बाबू और उनके पिता-पितामहों के चित्र लगे थे। अन्य सम्बन्धियों के भी चित्र थे। दीवानखाने की छत से एक बहुत बड़ा फ़ानूस लटक रहा था, जिसमें पचास से ऊपर बिजली के बल्ब लगे थे। दीवारों के साथ-साथ भी बीसियों झाड़ इत्यादि लगे थे।

: ४ :

दीवानखाना वर-वधू के स्वागत के लिए लोगों से खचाखच भरा हुआ था। सब बहू को भेंट देने के लिए कुछ-न-कुछ साथ लाए हुए थे और पहनाने को पुष्प-मालाएँ पकड़े थे। निकटस्थ सम्बन्धी भूषण और वस्त्र भी लाए थे।

शिशिर और अमृत को एक कौच पर बिठा दिया गया और बारी-बारी से सम्बन्धी तथा मित्रगण आते गए और इनके गलों में फूल तथा गोटे-किनारी की मालाएँ डालते गए।

अमृत यह सब-कुछ देख रही थी। उसके सम्मुख भेंट में मिल रही वस्तुओं का ढेर लग रहा था। मालाओं से उसका मुख फूलों के नीचे छिपा जा रहा था।

वह यह देख-देखकर अपने इस नाटक में सम्मिलित होने के लिए पश्चात्ताप करने लगी थी। वह विचार करती थी कि जब इन लोगों को पता चलेगा कि यह सब नाटक ही था तो ये कितने नाराज़ होंगे। वे सब प्रतिमादेवी को भी इस धोखा देने में सम्मिलित समझेंगे।

बाहर से आए सब लोग विदा हो गए और केवल घर के लोग ही रह गए, तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परस्पर हँसी-ठट्ठा होने लगा। प्रतिमादेवी ने कहा, "यहीं भोजन कर लिया जाय। पश्चात् सब आराम करेंगे। ये लम्बी यात्रा से आए हैं।"

कचेरू मौसी का विश्वस्त नौकर था। उसने उसे आवाज़ दी, "ओ कचेरू! ये सब सामान उठाकर बहू के कमरे में ले जाओ। देखो, भूषण गिरने न पाएँ और सब सामान वहाँ करीने से रखना। कोई वस्तु टूटे नहीं।"

कचेरू ने अन्य सेवकों को बुलाया और कहा, "यह सब सामान उठाकर बहू के कमरे में ले चलो।"

सामान इतना था कि तीन आदमी भी एकदम उठाकर नहीं ले जा सके। सब भूषण कचेरू ने स्वयं पकड़ लिये और अन्य भेंट का सामान उठवा-उठवाकर ले जाने लगा।

प्रतिमा ने शिशिर को सम्बोधन कर कहा, "आज तार वाला आया और जब बोला कि मेरा तार है तो मेरा हृदय धक-धक करने लगा। तार खोला तो अंग्रेज़ी में था। इस पर विमल को बुलाया और उसे इसको पढ़ने के लिए कहा। विमल ने जब बताया कि शिशिर बहू को लेकर आ रहा है तो बस मेरा मन प्रसन्नता से भर गया। उसी समय घर की सफाई, बहू के लिए कमरा, उसके लिए भूषण, कपड़े, मेहमानों के लिए जलपान की मिठाई और आमन्त्रित किए जाने वालों की सूची, तैयार होने लगी। यह समझो कि उस समय से मुझको एक क्षण का भी अवकाश नहीं मिला।"

शिशिर ने संकोच से कहा, "मौसी, बहुत कष्ट दिया है मैंने तुमको।"

"हट, तुम मेरे बेटे हो शिशिर! घर में बहू आए और यह सब-कुछ न हो, यह भला कैसे हो सकता था? हाँ, एक बात का सन्देह था कि न जाने कैसी बहू ला रहे हो। पर बहू को देख मन प्रसन्नता से भर गया है।

"मैं आज समझी हूँ कि लड़के पढ़ जाने से मूर्ख नहीं बन जाते। तुम्हारा चुनाव मुझको बहुत पसन्द है। बहू सुन्दर स्वर्गीय देवी-सी प्रतीत होती है। क्यों विमल, कैसी लगी है तुमको?"

विमल सबसे पीछे खड़ा था और मन-ही-मन कुढ़ रहा था। उसकी लड़की शशि भी उसके पास खड़ी थी। प्रतिमा ने जब उनको देखा तो आश्चर्य प्रकट करके कहा, "ओ शशि, तुम वहाँ क्यों खड़ी हो? इधर आओ न! तुम्हारी तो चाची लगती है। आओ, माँगो न चाची से कुछ।"

शशि आगे आ अमृत के पाँवों में बैठ गई। अमृत ने मोटर गाड़ी में आते हुए प्रतिमादेवी की बात सुनी थी और वह समझ गई कि यह वही लड़की है, जिसके साथ शिशिर का विवाह होने वाला था और कदाचित् अभी भी हो। वह कृष्ण वर्ण की थी और यूँ भी उसकी रूपरेखा कुछ भद्दी थी। अमृत ने समझा कि यदि यह लड़की जानती है कि शिशिर से उसका विवाह होने वाला था, तो इस समय कितना डाह हो रहा होगा इसको। इस कारण जब वह समीप आई तो उसने शशि को भूमि से उठाकर अपने समीप बिठा लिया और उसकी कमर में हाथ डालकर अपने साथ लगा लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शशि की आँखें डबडबा रही थीं। इस पर अमृत ने अपनी उँगली से एक अँगूठी, जिसमें एक बड़ा-सा माणिक्य लगा था, उतारकर शशि की उँगली में पहना दी और उसका मुख उठाकर, उसको प्यार देने लगी। विमलानन्द की बीवी प्रतिमा की बग़ल में बैठी थी। उसने बहू को पाँच-सौ रुपए से ऊपर के दाम की अँगूठी देते देख कहा, "बहू बेचारी किसी निर्धन परिवार की लड़की प्रतीत होती है। वह भूषणों की कीमत नहीं जानती, अन्यथा इतने मोल की अँगूठी कभी न देती।"

विमलानन्द की बीवी ने तो यह बात अमृत की निन्दा के भाव से कही थी, परन्तु प्रतिमा ने उसका भ्रम निवारण करने के लिए कह दिया, "नहीं, इससे यह तो प्रतीत नहीं होता। वह सब जानती और समझती है। इसका अर्थ उसके हृदय की उदारता ही मानना चाहिए। परीक्षा लेना चाहती हो? अच्छा लो देखो।"

"बहू!" उसने अमृत की ओर देखकर पूछा, "इसको जानती हो बेटी? मेरे देवर की पोती है। इससे तुम्हारी लड़की के समान ही हुई।"

"हाँ मौसी! तभी तो इसको यह दे रही हूँ। मैं तो गले का हार देने वाली थी, परन्तु आपसे डरती थी।"

"क्यों, डरने की कौन बात है इसमें?"

"यह अँगूठी तो छः सौ रुपए की ही हो सकती है, परन्तु हार दो हज़ार रुपए से कम दाम का नहीं हो सकता। यदि आप कहें तो इसके गले में पहना दूँ?"

विमलानन्द और उसकी बहू अवाक् रह गए। प्रतिमा ने कह दिया, "बेटी, मैं बहुत प्रसन्न हूँ आज। तुम जिसको जो चाहो दे सकती हो। इस घर में आकर तुम्हारी पहली इच्छा तो पूरी होनी ही चाहिए। यह शशि तो अपनी ही लड़की है।"

अमृत ने अपने गले से एक हार उतारकर शशि के गले में डाल दिया और उसको गले लगाकर उसका मुख चूमते हुए कहा, "शशि बेटी, भगवान् करे, तेरी मनोकामना पूरी हो।"

:५:

"मुझको यहाँ आने का भारी पश्चात्ताप और दुःख हो रहा है।" अमृत ने सोने के कमरे में पलँग पर बैठते हुए कहा। पलँग बहुत बड़ा था, परन्तु कमरे में एक ही था। शिशिर ने कमरे का दरवाज़ा भीतर से बन्द करते हुए कहा, "तुमने उस चुड़ैल को दो हज़ार रुपए का हार क्यों दे दिया है?"

जब शिशिर दरवाज़ा बन्द कर चुका तो अमृत पलँग से उठ खड़ी हुई और शिशिर से बोली, "बैठिए, मैं अपना बिस्तर भूमि पर लगा लेती हूँ।"

"नहीं, भूमि पर तो मैं सोऊँगा। रानीजी के लिए पलँग लगा है। सो रानीजी, सोइए।"

"शिशिर बाबू, मज़ाक बन्द। यह बैठिए-बैठिए की व्यर्थ की बात छोड़िए। अभिनय नहीं हो रहा, पर्दा गिर गया है। आप बैठिए तो भविष्य के विषय में रिहर्सल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर लें। यह अत्यावश्यक है। आपकी मौसी का व्यवहार सर्वथा अप्रत्याशित है। इतनी सुहृदयता, सहानुभूति और हृदय की आर्द्रता मैंने पहले कहीं नहीं देखी। मैं सुना करती थी कि बंगाली स्त्रियाँ अति भावुक होती हैं। आज मैं इसका प्रत्यक्ष प्रमाण देख रही हूँ।"

"और बंगाली युवकों के विषय में क्या सुन रखा है तुमने?" शिशिर ने मुस्कराते हुए पूछा।

"सुनेंगे आप?"

"हाँ, चाहो तो गाली भी दे सकती हो।"

"नहीं, गाली नहीं दे सकती। जहाँ इतनी सहानुभूति और प्रेम देखा है, वहाँ के लोगों को गाली देने में असमर्थ हूँ। इस पर भी सुन लीजिए। बंगाली युवक षड्यन्त्रकारी, चंचल, चपल और चतुर होते हैं।"

"यह तो बहुत प्रशंसा बखान दी है, अमृतजी!"

"यह प्रशंसा नहीं, न ही यह निन्दा है। ये तो साधन हैं, जिनको भले अथवा बुरे कामों में प्रयोग किया जा सकता है। षड्यन्त्र किसी भले काम के लिए भी प्रयोग किया जा सकता है और कभी डाका डालने के लिए भी। मैंने तो केवल विशेषण गिनाए हैं।"

"तब तो ठीक है। आओ षड्यन्त्र करें, अमृतजी की सहायता के लिए और मौसी को धोखा देने के लिए।"

"इसी बात का मुझको भारी दुःख है। यदि मालूम होता कि यहाँ आकर यह कुछ होने वाला है तो मैं कभी नहीं आती। मेरा हृदय उस दिन की बात का अनुमान कर, जब आपकी मौसी को पता चलेगा कि हमने उनको धोखा दिया है, काँप उठता है।"

"तो एक बात करो न!"

"क्या?"

"हम वास्तव में विवाह कर लें।"

"और आपके मित्र सुशील से दग़ा करें।"

"उसकी अनुमति ले लें।"

"नहीं, यह नहीं हो सकता। मैं उनसे प्रेम करती हूँ।"

"वह क्या होता है?"

"तो आप नहीं जानते?"

"जानता हूँ। पसन्द की हुई वस्तु को प्राप्त करने की लालसा को प्रेम कहते हैं।"

"चलो ऐसा ही सही। मेरे भैया भी यही कहते थे। मैंने सुशील बाबू को पाने के लिए पसन्द किया है।"

"पसन्द तो परिस्थिति और ज्ञान-वृद्धि के साथ बदल जाती है। तो सुशील बाबू की पसन्द भी बदल सकती है।"

अमृत खिलखिलाकर हँस पड़ी। हँसने के पश्चात् वह कहने लगी, "अभी तक कोई ऐसी बात नहीं हुई, जिससे उनके स्थान आपको पसन्द करने लग जाऊँ। हाँ, यदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके स्थान आपकी मौसी को पसन्द करना होता और उनसे विवाह करने की बात हो सकती तो कदाचित् मान जाती। कठिनाई यह है कि विवाह का अभिनय आपके साथ खेल रही हूँ।"

शिशिर खिलखिलाकर हँस पड़ा। अभी तक दोनों खड़े थे। शिशिर ने हँसते हुए कहा, "तो क्या आज विवाद खड़े-खड़े ही चलेगा। तनिक बैठ जाइए और शान्त-चित्त हो योजना बना लेते हैं। उसमें यह भी निश्चय कर लेंगे कि पलँग पर कौन सोए।"

"तो बैठूँ कहाँ पर?"

"पलँग पर। जैसे रेल के डिब्बे में एक ही सीट पर बैठे रहे हैं।"

"ठीक है।" दोनों पलँग पर बैठ गए और बातचीत करने लगे, "देखो, मेरी कथा तो वही है जो वास्तव में है।" शिशिर ने कहा, "बात केवल तुम्हारे विषय में बनानी है। सो तुम्हारे कहने के अनुसार, तुम्हारे पिता सरदार वढ़ियामसिंह पंजाब के विस्थापित व्यक्ति थे। मेरे रहने के स्थान के पड़ोस में रहते थे। तुम अपने पिता की अकेली सन्तान थीं, कॉलेज में पढ़ती थीं। एकाएक तुम्हारे पिता का देहान्त हो गया और तुम निराश्रय रह गईं। मुझसे तुम्हारा परिचय कॉलेज में हुआ था। मैं पी-एच० डी० की तैयारी के लिए कॉलेज और पुस्तकालय में जाया करता था। तुमने मुझको वहाँ देखा था और मुझसे प्रेम करने लगी थीं। पिताजी के देहान्त के पश्चात् अकेला रहना कठिन था। इस कारण हमने तुरन्त विवाह करना उचित समझा। कोर्ट में विवाह कर लिया है। मैं अपनी पढ़ाई में लीन हूँ, इस कारण तुमको अपनी माँ-तुल्य मौसी के पास छोड़ने आया हूँ। क्यों? ठीक नहीं है क्या?"

"हाँ, ठीक है।"

"मैंने मौसी से कहा है कि मुझको शीघ्र ही लौट जाना है। पाँच दिन तक यहाँ रहूँगा। महीने में एक-दो दिन के लिए यहाँ आया करूँगा। यह तब तक चलेगा, जब तक मैं अपना 'थीसिस' यूनिवर्सिटी में भेज नहीं देता।"

"बहुत अच्छा।"

"अब यह विचार करना है कि तीन महीने के पश्चात् कैसे यहाँ से भागना है?"

"यह तो समय आने पर विचार कर लेंगे। अभी यह बताइए कि एक ही कमरे में सोते हुए, भद्र पुरुषों की भाँति रह सकेंगे अथवा नहीं?"

"तुमने मुझको अभद्र कब से समझा है?"

"जब से आपने कहा है कि हम वास्तव में विवाह कर लें।"

"तो मैं अपना कहा वापस लेता हूँ, देवीजी!"

"हाँ, और क्षमा माँगिए। यह कहना-मात्र ही मित्र के साथ दग़ा करना है।"

"ठीक, अपराध हुआ। क्षमा-याचना करता हूँ।"

इस पर दोनों हँस पड़े। अमृत ने कहा, "मैंने क्षमा किया, परन्तु एक शर्त पर। वह यह कि आप पलँग पर सोएँगे और मैं भूमि पर सोऊँगी।"

"आपके कोमल शरीर को कष्ट होगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं रुई में लपेटकर पाली नहीं गई। इस साधारण-सी बात को सहन कर सकती हूँ।"

"तो अच्छी बात है। सहन करो, परन्तु एक और बात है। यहाँ साँप बहुत हैं और भूमि पर सोना भय से रिक्त नहीं।"

"तो क्या यह पुरुषों के लिए नहीं?"

"साँप तो यह नहीं देखता कि पुरुष है अथवा स्त्री।"

"तो जब आप सोने की बात कर रहे थे, तब साँप कहाँ थे?"

"साँप तो थे और रात को निकलने की सम्भावना भी थी, परन्तु यह बात तो उसको ही कहनी चाहिए जो पलँग पर सोने वाला है। जब यह निश्चय हो गया कि मैं ही पलँग पर सोने वाला हूँ तो मैंने सचेत करना उचित समझा है।"

"यह तो एक विकट समस्या बताई है आपने। मुझको साँपों से अत्यन्त भय है।"

"तो बताओ कि अब शर्त का रूप क्या होगा?"

"मैं रात बिना सोए काट दूँगी।"

"नहीं अमृत, आधी रात तुम सो जाओ और आधी रात मैं सो जाता हूँ।"

"हाँ, यह बात ठीक प्रतीत होती है।"

"अब कल की सुन लो। हम कई सम्बन्धियों के घर जाएँगे। वहाँ खाना-पीना, हँसी-मज़ाक होगा। एक-एक शब्द बहुत विचारकर कहना पड़ेगा।"

"यह मैं कर सकूँगी।"

"कुछ ऐसे भी सम्बन्धी और मित्र हैं, जो तुमको अबंगाली होने के कारण पसन्द नहीं करेंगे।"

"मैं उनको पसन्द नहीं करूँगी।"

"ऊँहूँ, यह नहीं। वहाँ भी हमने नाटक खेलना है। तुमने उनके कटाक्षों की ओर ऐसे ध्यान नहीं देना, जैसे चलता हाथी कुत्तों के भौंकने की ओर अवहेलना से देखता है।"

"यह मैं कर लूँगी।"

"हाँ, तो यह बताओ। तुम कुछ गा भी सकती हो? हमारे समुदाय में लड़कियों का यह एक अत्यावश्यक गुण है।"

"कुछ गा-रो सकती हूँ। एक दिन आपकी मौसीजी को सुनाऊँगी।"

"नहीं। कल सायंकाल सब सम्बन्धियों की स्त्रियाँ आएँगी। कदाचित् विमलानन्द की पत्नी इस बात को चलाएगी।"

"तो उसकी लड़की भी गा सकती है क्या?"

"हाँ, वह नृत्य भी करती है।"

"तो आपकी शशि से मेरा मुकाबला होगा क्या?"

"हो सकता है।"

"यत्न करूँगी कि कुछ मुकाबला कर सकूँ। परन्तु यदि मैं अच्छा गा और नाच न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकी तो घर से निकाल दी जाऊँगी क्या ?"

"नहीं, यह नहीं। सब मुझको मूर्ख समझेंगे कि मैं एक ऐसी लड़की को पसन्द कर लाया हूँ, जो ना गा सकती है, ना नाच सकती है। बंगाली लड़कियों को कलामय होना ही चाहिए।"

"मैं बंगाली लड़की तो हूँ नहीं। इस कारण मेरे लिए रियायती अंक भी तो होने चाहिएँ।"

"वे मैं यत्न कर दिलवा दूँगा, परन्तु कुछ तो करना होगा। यदि बकरी की भाँति मैं-मैं ही करती रहीं तो फिर मैं क्या कर सकूँगा ?"

"अच्छा तो अब सोना चाहिए। आप पहले सोएँगे अथवा मैं ?"

"नहीं, तुम सो जाओ। मैं तुमको ढाई बजे उठा दूँगा, तब तुम बैठना और मैं सो जाऊँगा।"

"अच्छी बात। शिशिर बाबू, स्मरण रखना। अभी रात के दस बजे हैं। ठीक ढाई बजे जगा देना। पश्चात् सात बजे तक आप सो सकेंगे। लैम्प जलता रहेगा और आप पलँग के पायँती बैठे रहेंगे।"

: ६ :

जब अमृत उठी तो दिन चढ़ चुका था और शिशिरकुमार उसके पाँवों की ओर गाढ़ी निद्रा में सो रहा था। वह समय पर न जाग सकने के कारण लज्जित हुई। वह उठी और पलँग से नीचे उतर गुसलख़ाने में स्नानादि के लिए चली गई।

प्रातः का अल्पाहार वहीं, नौकरानी लेकर आई और शिशिर को पलँग पर सोते देख सन्तोष अनुभव करने लगी। उसने बाबू को जगाया। शिशिर घबराया हुआ उठा, परन्तु अमृत को वहाँ न देख सन्तोष अनुभव करने लगा। उसने नौकरानी से पूछा, "यमुना, बहू कहाँ है ?"

"स्नान कर रही हैं। मेरे आने से पूर्व ही वे स्नानादि के लिए चली गई थीं।"

"बहुत सबेरा हो गया है न ?"

"नहीं बाबू ! नई बहू है, सोने में रात को देर हो जाना स्वाभाविक ही है।" इतना कह यमुना ने कनखियों से शिशिर की ओर देखा। वह यमुना के कहने का अभिप्राय समझता था। इससे उसका मुख लाल हो गया। वह रात-भर अपने सामने अमृत जैसी सुन्दर लड़की को निःसहाय पड़े देख भाँति-भाँति के विचार करता रहा था।

अमृत थकी हुई थी और लेटते ही सो गई थी। वह कुछ काल तक तो उसके सुन्दर शान्त मुख को देख प्रलोभन के सागर में डुबकियाँ लेता रहा। पश्चात् यह विचार कर कि जब तक लैम्प जलता रहेगा, यह प्रलोभन उसकी आँखों के सम्मुख घूमता रहेगा, वह उठा और लैम्प का स्विच ऑफ़ कर पलँग पर अमृत के पाँवों की ओर बैठकर विचार करने लगा, 'शशि अमृत के सम्मुख अमावस की रात की भाँति काली है। वह गाती अच्छा है, परन्तु गाने में ही पत्नी के सब गुण नहीं समा जाते।' वह विचार करता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था कि अमृत से विवाह का यत्न करे अथवा नहीं। मन में सोचता था कि यह सुशील से दग़ा करना होगा। फिर विचार करता था कि पहले सुशील को नोटिस दे दे, पीछे अमृत से बात करे। परन्तु अमृत मानेगी क्या? सुशील डॉक्टर है, पाँच-दस हज़ार की आय करने वाला है। उसको छोड़ उस जैसे फक्कड़ को भला कैसे पसन्द करेगी वह?

यदि उसको बलपूर्वक अपने अधीन कर लूँ तो वह हल्ला कर देगी, जिससे न केवल वह बदनाम होगी, प्रत्युत मौसी इतनी अपमानित होगी कि वह पुनः मुझसे कोई सम्पर्क नहीं रखेगी।

इसी प्रकार के विचारों में निमग्न उसको झपकी आने लगी। वह विचार-लोक से निकल स्वप्नलोक में जा पहुँचा।

पहाड़ों में नदी के किनारे फूलों की क्यारी में अमृत बैठी थी। वह उसके पास पहुँचा तो वह उठकर भाग खड़ी हुई। वह उसको पकड़ने के लिए उसके पीछे भागा, परन्तु वह कमाल की भागने वाली निकली। वह पकड़ाई नहीं देती थी। वह उससे दूर चली जाती तो खड़ी हो जाती और उसकी ओर देखकर मुस्कराती, मानो उसको और आगे आने का आह्वान करती थी।

वह कभी नदी में स्नान करती दिखाई देती और कभी पहाड़ पर चढ़ती हुई। वह उसके पीछे पागलों की भाँति भागता फिरता था। जब वह थककर हताश हो जाता, तो वह खड़ी हो हाथ से अपनी ओर आने का संकेत करती। वह उत्साह से भर फिर उसकी ओर भाग खड़ा होता।

इस प्रकार के स्वप्नों में उसका पाँव फिसल गया और उसके पाँव में चोट आ गई। इस समय उसको यमुना जगा रही थी। जहाँ उसको चोट आई थी, यमुना उसको उसी स्थान पर छूकर हिला रही थी।

शिशिर भी स्नानादि के लिए उठकर बाहर चला गया। अमृत स्नान कर लौटी तो जलपान के लिए मिठाई-दूध सामने रखा था और समीप यमुना खड़ी थी। अमृत ने पूछा, "क्या नाम है तुम्हारा?"

"सरकार, यमुना।"

"वे कहाँ गए हैं?"

"स्नान करने।"

"तो जलपान उनके आने पर होगा। दूध ले जाओ, ठंडा हो जायगा। जब वे आएँगे तो ले आना।"

यमुना गई तो मौसी आ गई। अमृत ने उठ मौसी के चरण-स्पर्श किए और मौसी ने जब शिशिर के विषय में पूछा तो अमृत ने बताया कि स्नान करने गए हैं।

"तो तुमको भूख लगी होगी? तुम खाओ।"

"नहीं माँ!"

"माँ···!" प्रतिमादेवी ध्यान से अमृत का मुख देखती रह गई।

अमृत ने मौसी को इस प्रकार अपनी ओर देखते हुए पाया तो उसके चरणों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओर देखने लगी। प्रतिमा ने उससे पूछा, "तो तुम मुझको माँ कहकर पुकारोगी ?"

"हाँ, यदि आप ना नहीं करेंगी तो।"

"मौसी क्यों नहीं ?"

"मौसी से माँ अधिक प्यार करती है और मैं प्यार की भूखी हूँ।"

"सच ?" प्रतिमादेवी की आँखें तरल हो उठीं। उसने कहा, "तो फिर पुकारो, फिर पुकारो। मैं 'माँ' शब्द सुनने की भूखी हूँ।" उसने अमृत को अपने समीप घसीटकर गले लगा लिया। उसने रोते हुए कहा, "बेटी अमृत !"

"हाँ माँ !" अमृत भी इस स्नेहमयी के हृदय की हूक सुन आँसू बहाने लगी थी।

इस समय शिशिर स्नान करके कपड़े पहन वहाँ आ गया और दोनों को इस प्रकार गले मिल आँसू बहाते देख खिलखिलाकर हँस पड़ा। दोनों ने शिशिर को देखा तो एक-दूसरे को छोड़कर विस्मय में उसका मुख देखने लगीं। प्रतिमा ने कहा, "हँसे क्यों शिशिर ? अपने विवाह के बाद आज पहली बार मैंने तुम्हारी बहू को माँ कहते सुन आत्म-तृप्ति अनुभव की है।"

"मौसी, इसको आशीर्वाद दो न ! माँ का यही तो कर्त्तव्य है।"

"हाँ।" प्रतिमादेवी ने अमृत के सिर पर हाथ रखकर कहा, "बैठो, सौभाग्य-शालिनी हो। शिशिर के साथ तेरा जन्म-जन्मान्तर का सम्बन्ध बना रहे।"

शिशिर फिर हँसा और कहने लगा, "मौसी, तथास्तु।"

"देखो शिशिर, तुम्हारी मैं मौसी हूँ और इसकी माँ, समझे ! यह होगी मेरी सम्पत्ति की उत्तराधिकारिणी और तुमको मिलेगा केवल पाँच सौ रुपए महीना।"

"तब तो मौसी ! मैंने इससे विवाह कर भूल की है। मुझको जीवन-भर पश्चात्ताप करना होगा।"

"माँजी !" अमृत ने बात बदलकर कहा, "माँजी, मुझको यहाँ आकर पता चला है कि आप इनका विवाह शशि से करने वाली थीं। उस बेचारी को भारी निराशा हुई है। यदि आप अपनी सम्पत्ति में से उसको मेरे जितना दे दें, तो मुझको बहुत प्रसन्नता होगी।"

"एक ही रात में उससे स्नेह जाग पड़ा है।"

"यह बात नहीं, माँजी ! मैं समझती हूँ कि मैंने उसका सब-कुछ छीन लिया है और मैं हृदय से चाहती हूँ कि सब-कुछ उसके साथ बाँट कर लूँ।"

"तो मुझको भी बाँटना चाहती हो ?" शिशिर ने मुस्कराते हुए कहा।

अमृत ने मुस्कराकर उसकी ओर देखा। इस पर मौसी ने कह दिया, "तब तो मुझको भारत सरकार का धन्यवाद करना चाहिए कि उन्होंने दो-दो विवाह रोक दिए हैं। पति तो बँट भी जाएँगे, पर मैं सास बँटना नहीं चाहती।"

इस पर तीनों हँसने लगे।

यमुना जलपान का सामान ले आई तो तीनों जलपान करने लगे। मिठाई खाते हुए प्रतिमादेवी ने कहा, "देखो बेटी अमृत, जो भगवान् करता है, हमारे कर्मानुसार ठीक ही करता है। मैं अपने भाग्य की सराहना करती हूँ कि शिशिर तुमको ले आया है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझको उस चुड़ैल को बहू बनाने की आवश्यकता नहीं पड़ी। शशि को तो दुःख हुआ है अथवा नहीं, कह नहीं सकती। पर हाँ, विमलानन्द को भारी दुःख हुआ है। वह मेरी पूर्ण सम्पत्ति का उत्तराधिकारी बनने वाला था और अब नहीं बन सकेगा।

"देखो शिशिर, तुम आज ही वेणी बाबू के घर चले जाओ। मैंने उनको अपनी वसीयत लिखने के विषय में कहा हुआ है। उनको कहना कि वे आज शीघ्रातिशीघ्र मुझसे मिल लें, जिससे एक-दो दिन में वसीयत लिखकर रजिस्ट्री कर सकूँ।"

शिशिर अवाक् रह गया। अमृत प्रतिमादेवी का मुख बितर-बितर देखती रह गई। वह मन में विचार कर रही थी कि जब इस भली औरत को उनके धोखा देने का पता चलेगा तो इसको कितना दुःख होगा। वह चिन्ताग्रस्त हो चुप रही।

अब प्रतिमा ने अमृत को एक-दो बातें सायंकाल के विषय में बताईं। उसने कहा, "देखो बेटी, आज सायंकाल अपने सब सम्बन्धियों की स्त्रियाँ एकत्रित होंगी। उनको भोजन दिया जायगा और वे तुमको गाने को कहेंगी। हमारे यहाँ यह रिवाज़ है कि ऐसे समय बहू कुछ गाती है और पायल बाँध नाचती है। इस पर सब सम्बन्धी स्त्रियाँ बहू को शकुन देती हैं। सो बेटी, एक आध पद किसी गीत का शिशिर से सीख लेना, तो भद्द नहीं होगी। नाचने की बात तो यह है कि पाँव में पायल बाँधकर तनिक खड़ी हो जाना; बस इतने में ही बात बन जायगी।"

"पर माँ, आपके बेटाजी मुझको सिखाएँगे क्या?"

"मैं कह दूँगी, 'गीत गोविन्द' में से एक-आध पद तुमको बता देगा।"

अमृत मुस्कराकर चुप कर रही।

इस पर प्रतिमा ने बात बदलकर कहा, "देखो शिशिर, रात तुम लोगों के चले आने के पीछे विमलानन्द फिर आया था और कह रहा था कि जब तुमने एक पंजाबी लड़की को परिवार में लाने का दुःसाहस किया है, तो मुझको अपनी सम्पत्ति अपने ससुराल के सम्बन्धियों में बाँट देनी चाहिए। इसी कारण मैंने यह निश्चय कर लिया है कि मैं वसीयत कर ही दूँ। इससे भी विमलानन्द को भारी निराशा होगी।"

"मौसी!" शिशिर ने कहा, "अब ज़माना बहुत जल्दी-जल्दी बदल रहा है। मैं समझता हूँ कि तुम्हारे देहान्त होने तक तो देश का कानून ऐसा हो जायगा कि मृत व्यक्ति की सम्पत्ति की मालिक सरकार हो जाया करेगी।"

"क्यों?"

"इस कारण कि जिसकी कमाई है वही अधिकारी हो सकेगा। यदि तुम मेरे नाम वसीयत कर दोगी तो वह मुझको नहीं मिलेगी। उसके पैदा करने में मेरा हाथ नहीं और उसको मैं नहीं पा सकूँगा।"

"तो मेरी सम्पत्ति को पाने का कौन अधिकारी होगा?"

"सरकार मालिक होगी।"

"सरकार ने इस सम्पत्ति के बनाने में क्या किया है?"

"सरकार ने इस देश में सुरक्षा का प्रबन्ध किया हुआ है। इस कारण वह सम्पत्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के पाने की अधिकारी है।"

"उसके लिए मैं लगातार टैक्स दे रही हूँ।"

"वह काफी नहीं है।"

"तो और अधिक माँग लिया जाता। किसने मना किया था सरकार को!"

"सरकार को अब पता चल रहा है कि टैक्स काफी नहीं था। इस कारण तुम्हारे मरने पर, जो पहले नहीं लिया गया, तब ले लिया जायगा।"

"देखो शिशिर, मैं बहुत पढ़ी-लिखी स्त्री नहीं हूँ। इस पर भी तुमको बताना चाहती हूँ कि मैं इसको किस प्रकार समझती हूँ। जब मेरे पति ने ज़मींदारी अपने हाथ में ली थी तो इन पर भारी कर्ज़ा था। उन्होंने बहुत ही कंजूसी से अपना निर्वाह कर ज़मींदारी का कर्जा उतारा और फिर विवाह कर लिया। विवाहित अवस्था में भी वे बहुत ही सादा जीवन व्यतीत करते थे और जो-कुछ वे इस प्रकार बचा पाते थे, कम्पनियों के हिस्से खरीद-खरीदकर मेरे हाथ में कई लाख की सम्पत्ति छोड़ गए। वह सम्पत्ति उन्होंने मेरे नाम वसीयत कर दी। यदि उनकी कमाई पाप नहीं थी तो उनका एकत्रित धन भी उनका अपना था और वे उसकी वसीयत करने का अधिकार रखते थे। जो-कुछ मुझको उस वसीयत से मिला है, वह मैंने अपने बुद्धि-बल से और भी अधिक कर लिया है। सब टैक्स आदि देकर भी मैंने सम्पत्ति में बढ़ोतरी ही की है। अब जो वस्तु मैंने अपनी मेहनत और किफायतशारी से बनाई है, क्या उसको व्यय करने का मेरा अधिकार नहीं है? मैं उसको, जिसको चाहूँ, क्यों नहीं दे सकती?"

"मौसी!" शिशिर ने समझाने के लिए कहा, "उस धन को पैदा करने में न तो तुमने कुछ किया है, न ही मौसाजी ने कुछ किया है। वह तो मज़दूरों की पैदा की हुई सम्पत्ति है। देखो, टाटा कम्पनी के कितने के हिस्से हैं तुम्हारे?"

"दस लाख से ऊपर के होंगे।"

"ये दस लाख तभी तो लाभ दे सकते हैं, जब मज़दूर काम करें। इस कारण मज़दूर ही उस लाभ के मालिक हो सकते हैं।"

"पर क्या तुम यह नहीं समझते कि मज़दूर के हाथ में जब औज़ार न हों तो वह कुछ भी पैदा नहीं कर सकता। उसके हाथ में टाटा का स्टील का कारखाना हम पैसा लगाने वालों ने दिया है। बिना कारखाने के वे क्या पैदा कर सकते थे?"

"फिर भी मज़दूर को कम मिला है और पैसा लगाने वाले को बहुत अधिक। यह अन्याय हो गया है। इस अन्याय को सरकार सुधारने जा रही है।"

"पैसे वालों का सब-कुछ छीनकर?"

"जब तक वह जीवित रहता है, वह खा-पी सकता है।"

"तो इसका अर्थ यह हुआ कि किफायतशारी पाप हो गया। धन व्यर्थ शराब-मांस में तथा मोटर, हवाई-जहाज में व्यय करना तो ठीक रहा और टाटा जैसे कारखाने में लगाना, जिसमें सहस्रों मज़दूर काम करते हों, ग़लत हो गया। शिशिर, यही पढ़ाई कर रहे हो तुम? क्या लाभ है इस पढ़ाई करने का?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस पर भी मैं एक बात कहती हूँ कि जब तक तुम्हारी सरकार कानून नहीं बनाती, तब तक तो मुझे इसको ठीक हाथों में देने का प्रबन्ध करना ही चाहिए। आज वेणी बाबू से मिलकर वसीयत का काम कर दो।"

शिशिर चुपचाप जलपान करने में लगा रहा। वह मौसी जैसी कम शिक्षित स्त्री को इस प्रकार युक्ति करते देख चकित था। मौसी के कथन ने उसकी विचार-शक्ति को उत्तेजित कर दिया था और अब वह विचार करने लगा था कि क्या देश की सब सम्पत्ति सरकार के हाथ में दे देना ठीक होगा। यदि किसी भी व्यक्ति को धन एकत्रित करने की स्वीकृति नहीं होगी तो लोग मेहनत करेंगे और फिर जितना कुछ पैदा करेंगे उसको क्यों खा-पी नहीं जाएँगे? यदि कहीं उनकी आवश्यकता से अधिक उनके पास आया तो वे व्यर्थ की बातों में क्यों व्यय नहीं करेंगे? उसके कान में, उसकी अनपढ़ मौसी का यह कहना खटक रहा था कि क्या ऐश-आराम में धन व्यय करने से टाटा जैसी कम्पनियों में लगाना, जहाँ सहस्रों मज़दूर काम कर अपना निर्वाह करते हैं, ठीक नहीं?.

उसको चुप देख प्रतिमादेवी ने कहा, "वेणी बाबू से कहना, मेरी सम्पत्ति की सूची उनके पास है। उसमें से एक सहस्र रुपया मासिक तुमको और एक सहस्र रुपया अमृत को आज ही से मिला करेगा और मेरे मरने के पश्चात् आधी सम्पत्ति तुमको और आधी बहू को।"

इस पर अमृत ने कहा, "माँजी, सारी इनके नाम ही क्यों नहीं कर देतीं? मुझको तो ये जो माँगूँगी, दे ही देंगे।"

इस पर प्रतिमा ने कहा, "ठीक है। मैं जानती हूँ कि तुमको भी जो-कुछ दूँगी, आवश्यकता पड़ने पर शिशिर को दे ही दोगी। इस कारण मैं तो तुम दोनों को ही दूँगी।"

: ७ :

शिशिर पाँच दिन तक बर्दवान में रहा। इन दिनों उसने मौसी की वसीयत लिख-लिखाकर रजिस्ट्री करा दी। इस काम में विमलानन्द को सम्मिलित नहीं किया गया। शिशिर ने कई बार कहा था कि कुछ तो विमलानन्द और उसके बच्चों के लिए भी लिख दिया जाय, परन्तु प्रतिमादेवी मानी नहीं। ज्यूँ-ज्यूँ विमलानन्द शिशिर और अमृत की निन्दा करता था, वह उसके विरुद्ध होती जाती थी।

पहली ही सायंकाल, जब परिवार की सब स्त्रियाँ एकत्रित हुई थीं और भोज हो चुका तो विमलानन्द की बीवी ने अमृत की हँसी उड़ाने का यत्न किया। उसने कहा, "हमारा परिवार बर्दवान में एक शिष्ट और सभ्य परिवार माना जाता है। शिशिर ने बाहर की कन्या को इसमें लाकर परिवार की प्रतिष्ठा पर मैल लगाने का यत्न किया है।"

विमलानन्द की पत्नी, प्रतिमादेवी से ओझल होकर, परन्तु उसको सुनाकर कह रही थी। दूसरी स्त्रियाँ कुछ खुशामद के भाव से और कुछ तमाशा देखने के विचार से कह रही थीं, "नहीं-नहीं, शिशिर इतना मूर्ख नहीं हो सकता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यदि वह बहुत ही पढ़ी-लिखी और सभ्य है तो गाना तो जानती ही होगी ?"

"हाँ-हाँ, ज़रूर जानती होगी।" सबने कह दिया और पश्चात् बहू से गाने का आग्रह करने लगीं।

अमृत ने एक-दो बार कहा, "मुझको गाना-बजाना ठीक नहीं आता। आप सब क्षमा करें।"

इस पर तो विमलानन्द की स्त्री ने कह दिया, "बहू, यह तो हमारे यहाँ का रिवाज़ है। यह करना ही होगा। तुम बेसुरा गाओगी तो हम हँसेंगी और सबका चित्त प्रसन्न होगा और फिर हम सब तुमको आशीर्वाद देंगी।"

अमृत देख रही थी कि विमलानन्द की स्त्री का व्यंग्य सुन प्रतिमादेवी का मुख मलिन हो रहा है। प्रतिमादेवी ने कहा, "देखो शशि की माँ, यदि बहू नहीं जानती तो उसकी हँसी उड़ाने की आवश्यकता नहीं। वह नहीं गाएगी।"

अमृत ने देखा कि यह कहते-कहते प्रतिमादेवी की आँखों में आँसू भर आए थे। यह देख अमृत ने कहा, "माँजी, आप व्यर्थ दुखी होती हैं, मैं गाऊँगी।"

"नहीं बेटी, तुम नहीं गाओगी।"

"माँजी, तनिक सुनिए। मैं कुछ तो गा सकूँगी। बहन!" उसने शशि की माँ से कहा, "तो लाओ पायल, मैं नाचूँगी। हाँ. तो मेरे नाचने के साथ मृदंग कौन बजाएगा ?"

"तुम्हारे जेठ बजाएँगे।" शशि की माँ का अभिप्राय विमलानन्द से था।

इस पर प्रतिमादेवी ने कहा, "उसको लज्जा नहीं आएगी, स्त्रियों में बैठकर बजाते हुए ?"

"चाची, जेठ ही तो हैं। बहू बिना मृदंग के नाच जो नहीं सकती।"

"हाँ, बुला लो जेठजी को। मैं तो उनकी लड़की के समान ही हूँ। वे भी देख लेंगे तो क्या होगा ?

"माँजी, मैंने आज एक कमरे में तानपूरा पड़ा देखा था। वह मँगवा दीजिए।"

"तो तुम तानपूरे पर गाओगी ?"

"क्या हानि है ?"

प्रतिमा अवाक् बैठी रह गई। विमलानन्द की स्त्री ने इसको केवल धमकी ही समझा। उसने शशि से कहा, "बेटी शशि, अपने पिताजी को बुला लाओ और उनसे कहना कि अपना मृदंग भी लेते आएँ और तुम अपना तानपूरा उठा लाओ।"

शशि को भी तमाशा सूझने लगा था। वह भागी-भागी गई और अपने पिता को बुला लाई। विमलानन्द अपना मृदंग उठा लाया। शशि तानपूरा लिये हुए आ पहुँची। प्रतिमा ने यमुना को आवाज़ दे बुलाकर कहा, "यमुना जाना, शिशिर बाबू को कहना कि अपना हारमोनियम लेकर आ जाएँ।"

"हारमोनियम का क्या होगा, चाची, तानपूरे से गाने वाले हारमोनियम से नहीं गाते।" विमलानन्द ने कहा।

"वह तो तुम्हारा मृदंग स्वर भरने के लिए मँगवा रही हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमृत हँस पड़ी। वह हँसकर बोली, "जेठजी, मन्द्र धैवत् पर स्वर कर लीजिए।"

"मन्द्र धैवत्? यह कहाँ से लाऊँ?"

"तभी तो माँजी हारमोनियम मँगवाने लगी हैं। अनाड़ी लोगों के लिए ही तो हारमोनियम बनाया गया है।"

विमलानन्द का मुख क्रोध से लाल हो गया। इस पर अमृत ने कहा, "मैं तो आपकी बेटी हूँ, जेठजी। लीजिए, मैं बताती हूँ।"

उसने तानपूरा लेकर मन्द्र धैवत् पर स्वर कर दिया। विमलानन्द ने दो मिनट में तानपूरा स्वर होते देख समझ लिया कि कोई अनाड़ी लड़की नहीं है। परन्तु उसकी स्त्री ने उसके मन के भावों को न समझ कह दिया, "आप पंजाबी लड़कियों की फूँक-फाँक नहीं जानते। आप मृदंग ठीक कीजिए।"

विमलानन्द चुपचाप मृदंग ठीक करने लगा। इस समय शिशिर हारमोनियम लेकर वहाँ आ पहुँचा। हारमोनियम बजा तो मृदंग स्वर हुआ।

इस समय तक तो प्रतिमादेवी का भी साहस बँध गया था। वह समझ गई थी कि उसकी बहू कुछ तो गा ही देगी। उसने मुस्कराते हुए अमृत की ओर देखा तो अमृत ने प्रतिमादेवी के चरणों में सिर रखकर कहा, "माँजी, आशीर्वाद दीजिए।"

प्रतिमा ने उसके सिर पर हाथ फेरा तो उसने तानपूरा उठाकर स्वर भरना आरम्भ कर दिया।

'स-निरेस-नि रे गा-रे ग प-म् ग-रे ग प म् ग म्ग-स-नि रे स।' इतना आलाप होने पर विमलानन्द ने कहा, "चाची, बस अब शकुन डालो। माना, बहू गा सकती है।"

"जेठजी, अब सुन लीजिए। कुछ आपसे माँगूँगी नहीं।"

अमृत ने शुद्ध कल्याण में आलाप जारी रखा, "नि रे स। नि रे ग। रे ग प ध नी सं सं नि ध प म् ग स-म्ग स। नि रे स आ आ······।"

पन्द्रह-बीस मिनट के आलाप चलने के पश्चात् गीत आरम्भ हुआ। उसने गाया—

रे मन मूरख जनम गँवायो।
करि अभिमान विषय रस राच्यो
स्याम सरन नहीं आयो, रे मन मूरख जनम गँवायो।
ये संसार फूल सेमर को
सुन्दर देख लुभायो।
चाखन लाग्यो उड़ि गई रूई
हाथ कुछ नहीं आयो। रे मन मूरख····।
का भयो अब का मन सोचे
पहले नहीं कमायो
सूरदास भगवंत भजन
बिन सिर धुनि-धुनि पछतायो। रे मन मूरख····

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बँगला समाज में कुछ-न-कुछ ज्ञान संगीत का बहुतों को होता है। इससे जिस व्यंग्य से वार्तालाप आरम्भ हुआ था, वह तो आलाप आरम्भ होते ही समाप्त हो गया था। पश्चात् ज्यों-ज्यों बोल, बोल-तान, तान और लय निखरने लगी, त्यों-त्यों सुनने वाली स्त्रियाँ मुग्ध हो सुनती गईं। किसी की इच्छा नहीं होती थी कि बहू को बस करने को कहे। पौन घंटे के पश्चात् संगीत समाप्त हुआ। विमलानन्द मृदंग बजाता-बजाता थककर चूर हो गया था और जब अमृत ने पाँव में पायल बाँधने आरम्भ किए तो वह बोला, "भाभी, अब और मृदंग बजाना मेरे बस की बात नहीं।"

"जेठजी, यह भी देख लीजिए। आपको घर की बहू को नचाने का बहुत शौक था न?"

प्रतिमा तो गीत सुन मुग्ध हो रही थी। वह इतनी गुणवती बहू को पा, फूली नहीं समाती थी। जब विमलानन्द उठकर भाग गया तो उसने अमृत से कहा, "बहू, अब बस करो। तुम्हारा नाच देखेंगे, परन्तु किसी और दिन, जब कोई योग्य मृदंग और वायलिन बजाने वाला मिल जायगा। मैं देख रही थी कि विमलानन्द पीछे छूटता जाता था।"

शेष दिन सरलता से व्यतीत हो गए। प्रतिमादेवी बहू पर बलिहारी हो रही थी। शिशिरकुमार अमृत-जैसी बहू का पति होने पर (यद्यपि अभिनय मात्र में ही) अभिमान अनुभव करता था। विमलानन्द के अतिरिक्त अन्य सब सम्बन्धी शिशिर को ऐसी बहू पाने पर भाग्यशाली मानते थे।

जाने से एक दिन पूर्व, रात के समय, शिशिर ने अमृत से कहा, "देखो अमृत, आज मौसी ने वसीयत रजिस्ट्री करा दी है और उन्होंने तुमको अपनी आधी सम्पत्ति का उत्तराधिकारी माना है।"

"इसीलिए न कि वे मुझको अपनी बहू मानती हैं। जब वे जान जाएँगी कि मैं उनको धोखा दे रही थी, तो वे मुझसे घृणा करने लगेंगी और वसीयत बदल डालेंगी।"

"मेरा तो यहाँ से पत्ता बिल्कुल कट जायगा। मैं मुख दिखाने लायक नहीं रहूँगा।"

"तो शिशिर बाबू, यह बात पहले विचार करनी थी।"

"मुझको क्या मालूम था कि तुम इतनी भली प्रकार नाटक खेल सकोगी। तुमने मौसी के आदर करने में तो वास्तविकता को भी पीछे डाल दिया है। तुम उनके सामने इतनी सरल और भोली बन जाती हो कि मौसी तुम पर न्योछावर होने लगती हैं। इस पर भी मैं क्या जानता था कि तुम ऐसा सुन्दर भजन गाओगी कि मुहल्ले-भर की स्त्रियाँ तुम पर लट्टू हो जाएँगी। यदि यह जानता कि तुम इतने गुण रखती हो, तो सुशील से तुम पर डोरे न डालने का वचन न करता।

"मौसी कहती हैं कि जब तुम उनको माँ कहकर पुकारती हो तो उनके स्तन स्पन्दन करने लगते हैं। यदि तुम बच्ची होतीं तो तुमको वे दूध पिलातीं।"

"सत्य?" अमृत ने विस्मय से पूछा और खिलखिलाकर हँस पड़ी। शिशिर ने फिर कहा, "जानती हो, आज मौसी ने मुझसे क्या कहा है? वे कहने लगीं, 'तुम इतनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुन्दर, सुघड़, सुशील और प्यारी बहू को छोड़कर कैसे जा सकते हो? बहुत कठोर हो तुम।'

"मैंने बहुत कठिनाई से यह समझाया, 'मौसी, मैं उसके सुख के लिए ही यह पढ़ाई कर रहा हूँ। मैं बहुत धन कमाऊँगा और अमृत के चरणों में लाकर रख दूँगा।'

"इस पर वे पूछने लगीं, 'क्या जो-कुछ मैंने दिया है, वह पर्याप्त नहीं?'

'नहीं मौसी, वह इससे भी अधिक की अधिकारिणी है।'

"इससे मौसी को सन्तोष हुआ। पश्चात् उसने पूछा, 'अब कब आओगे?'

"मैंने कहा, 'एक मास के पश्चात्।' "

यह सब सुनकर अमृत गम्भीर हो गई। वह आँखें नीचे किए हुए बोली, "देखिए शिशिर बाबू, मुझको आपकी असुविधा और दुःख का इतना विचार नहीं होता, जितना माँजी के दुःख का। मैं समझती हूँ कि यदि मैं उनका हृदय से आदर न करती होती तो यह नाटक इतनी चतुराई से सम्पन्न न कर सकती। मैं वास्तव में उनका आदर करती हूँ। साथ ही इस बात का मुझको पता है कि मैं सुशील बाबू से प्रेम करती हूँ।"

पाँच रातें, अमृत के पलँग पर उसके पाँवों की ओर पड़े-पड़े शिशिर ने अपने मन पर दृढ़ नियन्त्रण रख अपने मित्र की अमानत पर डाका डाले बिना व्यतीत कर दीं। अमृत यद्यपि अपने मन की दृढ़ता पर विश्वास रखती थी तो भी शिशिर का अपने मन पर काबू देख बहुत प्रभावित हुई थी। वह समझती थी कि शिशिर ने उसके साथ इस अभिनय में भाग लेकर उस पर असीम अहसान किया है।

अगले दिन जब वह विदा हुआ तो अमृत और मौसी उसको स्टेशन पर छोड़ने गईं। अमृत, मौसी के आग्रह कि वह बहू को भूल न जाय और जाते ही तार भेजे, तथा शीघ्र ही आने का यत्न करे, को सुन रो पड़ी।

सबने इन आँसुओं को वियोग का कारण समझा था, परन्तु वास्तविक बात तो अमृत भी नहीं समझी थी। वियोग तो यह था नहीं। मिलन ही नहीं था तो वियोग कैसा?

स्टेशन से लौटते समय मार्ग-भर अमृत के आँसू निकलते रहे। प्रतिमा उसको ढाढस बँधाती रही। घर पहुँचकर वह उसको अपने कमरे में ले गई और गोदी में लेकर प्यार देती रही। इससे तो अमृत फूट-फूटकर रोने लगी। मौसी ने उसको शीतल जल पिलाया और उसके कमरे में ले जाकर पलँग पर सुलाकर कहा, "अमृत बेटी, सो जाओ। सोने से चित्त को शान्ति मिलेगी।"

:८:

जब अमृत सोकर उठी तो उसको अपने पिछली रात के व्यवहार पर अचम्भा हुआ। वह सोचती थी कि वह क्यों रोई थी। यह स्मरण कर कि उस समय वह अपना रहस्य बताने ही वाली थी, काँप उठी।

इस पर भी वह अपनी विकट परिस्थिति पर विचार किए बिना नहीं रह सकी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने पूर्ण घटना को अपने मन में दुहराया और उस पर मनन करने लगी। वह अब पिछली बात पर पश्चात्ताप करना व्यर्थ मान वर्तमान विकट परिस्थिति से निकलने का उपाय सोचना चाहती थी।

एक मार्ग तो था ही। वह इस वर्तमान सुख-सुविधा के जीवन को तीन-चार महीने तक भोगकर चुपचाप यहाँ से भाग जाय, परन्तु वह विचार करती थी कि इसका परिणाम क्या हो सकता है। उसने पिछले पाँच दिन में प्रतिमादेवी के स्वभाव को समझा था। वह अति भावुक स्वभाव रखती थी। उसने देखा था कि केवल माँ का सम्बोधन सुन वह पसीज उठी थी। अपनी बहू पर संगीत-विद्या से अनभिज्ञता का लांछन सुन वह रो पड़ी थी और फिर उसको अच्छा गाते सुन वह गद्गद प्रसन्न हो उठी थी। ऐसी स्त्री के सब सुख-स्वप्न भंग होंगे तो उसको भय हो रहा था कि उसके हृदय की धड़कन बन्द हो जायगी। यदि कहीं ऐसा हुआ तो इस सबका पाप उसके सिर ही होगा।

सुख-आराम से जीवन व्यतीत करती हुई इस भली स्त्री के जीवन में वह अकारण आ टपकी है। इससे उसको जो भी दुःख और हानि होगी, उसका पूर्ण उत्तरदायित्व उस पर ही होगा।

तो फिर क्या करे? इस स्त्री को अपनी सास स्वीकार कर ले। यह हो सकता है शिशिर से विवाह स्वीकार करने पर। पहली रात तो उसको कुछ ऐसा प्रतीत हुआ था कि वह विवाह का इच्छुक है, परन्तु शेष चार रातें वह सर्वथा शान्त और धीर-चित्त प्रतीत होता रहा था। यदि यह मान भी लिया जाय कि शिशिर विवाह पर राज़ी हो जायगा तो क्या यह ठीक है? प्रश्न तो यह था कि सुशील के साथ वचन का क्या हो? क्या वह शिशिर के साथ प्रेम कर सकेगी?

इस समय वह शिशिर और सुशील में तुलना करने लगी थी। शिशिर एम० ए० इतिहास में था और सुशील एम० बी०, बी० एस० और एक हस्तपाल में नौकर, हज़ार-दो हज़ार रुपए मासिक आय रखने वाला। दूसरी ओर शिशिर अब मौसी की वसीयत के पश्चात् एक धनी आदमी था। इस आय के भरोसे वह सुशील को नौकर रख सकता था। इस पर भी सुशील शिशिर से अधिक योग्य और आकर्षक था। सुशील डॉक्टर था और शिशिर कुछ भी नहीं।

यह सब ठीक होने पर भी शिशिर की मौसी सुशील की माँ से अधिक आकर्षक थी। यह ठीक था कि विवाह तो शिशिर अथवा सुशील से होना था, परन्तु विवाह के पश्चात् क्या पति के माता-पिता से कोई सम्पर्क नहीं रहना—एक के माता-पिता घृणा करेंगे और दूसरे की माता वात्सल्यता से ढाँप लेगी।

वह सोचती थी कि क्या विवाह के लिए किसी का डॉक्टर होना आवश्यक है? वह अपने इस प्रश्न पर हँसने लगी। भला पति का डॉक्टर होना किस प्रकार उसके अच्छे पति होने में, किसी प्रकार से भी कारण हो सकता है?

शिशिर ने बताया था कि उसकी मौसी ने एक सहस्र रुपया उसको और एक सहस्र रुपया अमृत को मासिक देने की आज्ञा बैंक वालों को दे दी है। इसके अतिरिक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मौसी के देहावसान पर वह शिशिर के साथ लाखों रुपयों की सम्पत्ति पाएगी। वह इससे अपने को पूर्ण रूप से पराभूत हो गई अनुभव करती थी।

सब लेखा-जोखा करने पर वह इस परिणाम पर पहुँची थी कि सुशील और उसके माता-पिता को एक पलड़े में डाल दे और शिशिर और उसकी मौसी को दूसरे पलड़े में, तो शिशिर वाला पलड़ा अधिक भारी सिद्ध होगा।

शिशिर की मौसी, उसकी धन-सम्पदा, उसका अपना चरित्र और उसका अपना व्यवहार ही इतने श्रेष्ठ थे कि सुशील के गुणों को ढाँप सकते थे। सुशील के अपने गुण उसके माता-पिता के अवगुणों से कुछ कम ही हुए थे।

यह सब-कुछ होने पर भी वह विचार करती थी कि क्या वह सुशील के स्थान पर शिशिर से प्रेम कर सकती है? इस समय उसको हरभजनसिंह और फिर शिशिर की प्रेम की व्याख्या स्मरण हो आई। उनका कहना था कि प्रेम पसन्द को कहते हैं और पसन्द समय, परिस्थिति, आवश्यकता और ज्ञान-वृद्धि के साथ-साथ बदलती रहती है। तो क्या उसकी परिस्थिति ऐसी बदली है कि उसकी पसन्द में अन्तर आ गया है? इस प्रश्न का उत्तर वह नहीं पा सकी।

जहाँ तक उसका जीवन था, वह सरलता के साथ चलने लगा। प्रातः उठकर वह प्रतिमादेवी से मिलने चली जाती। प्रतिमादेवी उससे बहुत पहले जाग जाया करती थी और जब अमृत आती तो वह स्नानादि से निवृत्त हो पूजा भी कर चुकी होती थी। अमृत पूजागृह के बाहर ही मौसी की प्रतीक्षा करती और जब वह पूजा से उठ बाहर निकलती तो उसके चरण-स्पर्श करती और आशीर्वाद लेती। पश्चात् वह अपनी दिनचर्या आरम्भ कर देती। स्नान कर प्रातः का अल्पाहार ले वह संगीत का अभ्यास करने लग जाती। उसने मौसी से कहकर मृदंग बजाने के लिए बीस रुपए मासिक पर एक व्यक्ति नियुक्त कर लिया था। वह नित्य एक घंटा अमृत के अभ्यास के समय आता था और मृदंग बजाकर उसका साथ देता था। पश्चात् वह कोई पुस्तक पढ़ती। मध्याह्न का भोजन वह प्रतिमादेवी के साथ करती। भोजनोपरान्त वह प्रतिमादेवी के कमरे में ही चली जाती और वहाँ पर इधर-उधर की बातें होती रहतीं।

मध्याह्नोत्तर दो बजे के लगभग वह और प्रतिमादेवी आराम करतीं। सायं पाँच बजे चाय पी जाती और पश्चात् दोनों बाज़ार अथवा घोड़ा-गाड़ी में घूमने निकल जातीं। सायंकाल का खाना सबके साथ होता। अन्य सम्बन्धी भी, जो आना चाहते, आ सकते थे। इस समय परिवार-सम्बन्धी बातें होती रहतीं।

इस प्रकार दिन व्यतीत हो रहे थे। अमृत को बर्दवान आए एक मास हो गया था। एक रात भोजन के समय प्रतिमादेवी ने विमलानन्द से कहा, "विमल, मैं सुन रही हूँ कि तुम नौकरों और सम्बन्धियों में बहू की निन्दा कर रहे हो। मैं तुमको बताना चाहती हूँ कि शिशिर ने इससे विवाह किया है। धर्म की वेदी पर बैठकर इसको अर्धांगिनी बनाया है। अतएव अच्छी अथवा बुरी, यह अब मेरे परिवार का अंग है। इसकी निन्दा मेरी निन्दा है। जान गए हो न!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने बहू की निन्दा नहीं की चाची, मैं एक बात पसन्द नहीं करता। वह है एक पंजाबी लड़की का बंगाली घर में आना—विशेष रूप से जब बंगाली लड़कियाँ कुँवारी बैठी हैं। इसमें कौन बुरी बात कह रहा हूँ!"

"तो तुमको यह घर पसन्द नहीं रहा न? तो जाओ तुम, जहाँ तुमको पसन्द आए चले जाओ।"

"चाची, यह तुम अपने साथ ही अन्याय नहीं कर रहीं, परन्तु अपने सम्बन्धियों के साथ और विशेष रूप से बंगाली संस्कृति के साथ भी अन्याय कर रही हो।"

"मेरे साथ जो अन्याय हुआ है, उसकी तुमको चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं। मैं सम्बन्धियों से भी यही कहती हूँ कि मैं उनको किसी प्रकार से हानि नहीं पहुँचा रही। इस पर भी यदि वे मेरे और बहू के कारण किसी प्रकार की हानि हो रही समझते हैं, तो वे यहाँ न आएँ। मैं उनका मान करती हूँ, परन्तु मैं चाहती हूँ कि वे भी मेरा मान करना सीखें। रही संस्कृति की बात, वह मेरी समझ में नहीं आ रही। बंगाली संस्कृति और इस लड़की की संस्कृति में क्या अन्तर है? मुझको तो कुछ भी अन्तर दिखाई नहीं पड़ रहा।"

"देखो चाची, हमारी एक भाषा है, उसमें एक महान् साहित्य है। उस साहित्य के अनुरूप हमारा रहन-सहन है। हमको इसकी रक्षा करनी है। यदि हम अपने लड़के और लड़कियाँ पंजाब, काश्मीर और राजस्थान में बाँटने लगे, तो सब अपनी बातों का मलियामेट हो जायगा। हमारी भाषा बिगड़ जायगी। हमारा साहित्य पतन को प्राप्त होगा और हमारे रस्मो-रिवाज, जिनको हम बंगाली प्यार करते हैं, भ्रष्ट हो जाएँगे।"

"मैं ऐसा नहीं मानती। मैं तो यह समझती हूँ कि बँगला भाषा संस्कृत भाषा का अपभ्रंश है। एक अपभ्रंश का बिगाड़ होगा तो क्या हानि है! अपभ्रंश तो अपभ्रंश ही है, छः आने न सही, दस आने सही। इसी प्रकार साहित्य और रस्मो-रिवाज की बात समझ लेना। कुछ और बदल जाएँगी तो कौन अनर्थ हो जायगा!

"यह कुछ नहीं। देखो, मैं शशि के विवाह का प्रबन्ध कर रही हूँ। यदि तुमने अपने परिवार की ही निन्दा आरम्भ की तो इससे तुम्हारी और तुम्हारी शशि की भी निन्दा हो जायगी।"

"चाची, तुम तो व्यर्थ ही रूठ रही हो। मैं निन्दा नहीं कर रहा। हमारे समाज का प्रत्येक सदस्य अपने समाज के सदस्यों की हिमायत करना चाहता है। जब हम किसी बंगाली को अबंगाली की हिमायत करते देखते हैं, तो उसको हम पसन्द नहीं करते।"

"वे, जो ऐसा करते हैं, सब मूर्ख हैं विमल! मैं नहीं चाहती कि जो मेरे साथ सम्बन्ध रखते हैं, वे भी मूर्खता का व्यवहार करें। बंगाली, पंजाबी, गुजराती, मराठी सब मनुष्य हैं। एक ही देश और शासन में रहने से परस्पर एक-दूसरे के बहुत समीप हैं।

"यूँ तो एक परिवार के लोग दूसरे परिवार वालों से पृथक् हैं ही, परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि एक परिवार की संस्कृति दूसरे परिवार की संस्कृति से भिन्न है। मैं तो भेद-भाव भाषा के आधार पर नहीं मानती। एक मनुष्य कोई भी दूसरी भाषा सीख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता है। यदि भेद-भाव हो सकता है तो वह आचार और व्यवहार के आधार पर होना चाहिए। भेद-भाव होना चाहिए श्रेष्ठ और दुष्ट में, योग्य और अयोग्य में, मनुष्य और पशु में। ये बर्दवान वाले कलकत्ता वालों के, पटना वाले रांची वालों के अथवा लखनऊ वाले इलाहाबाद वालों के विरुद्ध होने लगे तो देश का सत्यानाश तो होगा ही, साथ ही मानवता में पतन भी आएगा।"

"चाची, तुम जग से न्यारी होकर नहीं रह सकतीं।"

"बस। इस विषय में और बात की आवश्यकता नहीं है। मेरी बुद्धि की यही सीमा है। तुम जग में रहो अथवा जग से बाहर रहो, यह तुम्हारा काम है। मैं अपने परिवार में रहना चाहती हूँ। मेरे परिवार का हित श्रेष्ठ और योग्यजनों की पंक्ति में रहने से है।"

इस वार्त्तालाप का प्रभाव अमृत पर भिन्न प्रकार का हुआ। वह समझी थी कि कुछ तो बात है, जिसके कारण सुशील की माता और अब यह विमलानन्द बंगाली समाज को उसके समाज से भिन्न समझता है। इस पर उसका ध्यान अपने पिता के मित्र सरदार कर्तारसिंह के विचारों पर चला गया। वह हिन्दू-समाज को भिन्न मानता था। वह विचार करती थी कि क्या ये दोनों ठीक नहीं हैं? इस प्रश्न ने उसको इस विषय पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने के लिए विवश कर दिया। उस रात वह अपने पलँग पर लेटी-लेटी करवटें बदलती रही और विचार करती रही। उसका मन कर्तारसिंह, सुशील की माता तथा विमलानन्द के विचारों को ठीक मानने के लिए तैयार नहीं होता था। वह यह जानती थी कि सिखों में तथा जैनियों में, इसी प्रकार बंगालियों में तथा पंजाबियों में, भिन्नता तो है, परन्तु इस भिन्नता के कारण क्या एक-दूसरे को सम्पर्क में नहीं आना चाहिए?

सिख, जैन, बौद्ध, आर्यसमाजी इत्यादि भिन्न-भिन्न होते हुए भी क्या एक नहीं हैं? कैसे एक नहीं हैं?

इसी प्रकार पंजाबी, बंगाली, गुजराती इत्यादि ये सब एक नहीं हैं? उसको इसी प्रकार की समस्या ब्राह्मण और क्षत्रिय तथा वैश्यों में दिखाई देती थी। छूत और अछूतों में, काले और गोरों में तथा पीले और लाल वर्ण के लोगों में दिखाई देती थी। ये सीमाएँ क्या वास्तविक और माननीय हैं? इस प्रकार के विचार करते-करते वह अपने पर विचार करने लगी। उसके मन में विचार आने लगा था कि वह क्यों सिख-समुदाय को छोड़कर हिन्दू-समाज में आना चाहती है? अथवा वह पंजाबी समाज को छोड़कर क्यों बंगाली समुदाय में आना चाहती है? साथ ही वह इस सीमा-उल्लंघन में क्यों संकोच तथा हानि नहीं समझती? इस स्तर पर विचार करने से उसके मस्तिष्क में एक प्रकार का प्रकाश होने लगा। वह विचार करती थी कि प्रतिमादेवी के बंगाली महिला होने पर भी वह क्यों उसको पसन्द करती है और क्यों उसका आदर करती है? इस प्रश्न पर बात स्पष्ट होती दिखाई देने लगी। उसको समझ आने लगा कि बंगाली होने से चाहे कुछ भी विशेषताएँ प्रतिमादेवी में हों, पर उसकी सुहृदयता तो बंगाल अथवा पंजाब की बपौती नहीं। ये तो मानवता के गुण हैं। अर्थात् वह प्रतिमादेवी का आदर करती है, क्योंकि उसमें मानवता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का एक गुण प्रचुर मात्रा में विद्यमान है। इससे उसको स्पष्ट समझ आने लगा कि सब मनुष्यों में कुछ समानता है। उसने उस समानता की ओर ही ध्यान दिया है। उसने हिन्दू और सिखों में समानता का ध्यान रखा है। उसने पंजाबी और बंगाली में समानता का ध्यान रखा है। इसका उलट था, जो विमलानन्द इत्यादि के विचारों को बना रहा था। वह भी उसकी समझ में आने लगा। ये लोग बंगाली और पंजाबी अथवा गुजराती और राजस्थानी तथा सिख और जैनों में असमता की ओर ध्यान रखते हुए भेद-भाव मान रहे हैं। इनकी दृष्टि संकुचित है। ये गुणों को छोड़कर अवगुणों को देखने का स्वभाव रखते हैं। यही कारण है कि समानता को न देख, ये भिन्नता को ही सब-कुछ मान बैठे हैं। समदृष्टि समन्वय की सूचक है। भेद की ओर ध्यान विग्रह का कारण होता है।

यूँ तो एक परिवार में भी व्यक्ति-व्यक्ति में भिन्नता के स्थान होते हैं। यदि परस्पर समानता की ओर ध्यान न देकर वहाँ भी भिन्नता की ओर दृष्टि रखी जाय तो वहाँ भी वैमनस्य ही उत्पन्न होगा। वह समझती थी कि उसका भाई हरभजनसिंह और शिशिर की मौसी प्रतिमादेवी भी उसकी भाँति ही दृष्टि रखती है। इससे उसके मन में प्रतिमादेवी के लिए मान और आदर और भी बढ़ गया था।

उसने बर्दवान का जीवन एक अभिनय के रूप में आरम्भ किया था। वह प्रतिमादेवी के चरण-स्पर्श एक नाटक के भाव में करने लगी थी, परन्तु ज्यूँ-ज्यूँ वह प्रतिमादेवी के स्वभाव और विचारों का विश्लेषण करती जाती थी, वह उसको अपने ही विचार और व्यवहार की स्त्री पाती जाती थी और उसके प्रति उसका आदर और भी अधिक होता जाता था।

अब वह यह समझने लगी थी कि वह, उसका भाई, प्रतिमादेवी और इसी प्रकार के अन्य लोग एक ही बिरादरी के अन्तर्गत हैं। वहाँ बिरादरी है मानवता की। जिस रूढ़िवादी व्यवहार को छोड़ वह घर से भागी थी, जिस संकुचित विचारधारा के विरोध में हरभजनसिंह ने केश कटवाए थे, उसी पथ पर चलती हुई प्रतिमादेवी अपने सम्बन्धियों को छोड़कर चली आ रही है।

इस समय उसको नीलादेवी की एक बात स्मरण हो आई कि संसार के सब इज़्म मानव-समाज में छोटे-छोटे घेरे हैं। इन घेरों के कितने भी लाभ और गुण क्यों न हों, वे अभेद्य तथा अनुल्लंघनीय नहीं हैं। ये घेरे मानवता की प्रगति में बाधा नहीं हो सकते।

आज से वह प्रतिमादेवी को एक नए ही रूप में देखने लगी थी। सुशील के माता-पिता उसको प्रतिमादेवी की तुलना में बहुत ही निम्न कोटि के प्रतीत होने लगे।

: ९ :

शिशिरकुमार लखनऊ आया तो वह अविलम्ब सुशील से मिलने गया। सुशील अपने क्वार्टर में सरकार बाबू से बातें कर रहा था। शिशिर आया तो एक ओर चुपचाप बैठ गया। वह न तो अपनी बात सरकार के सामने करना चाहता था और न ही उनके वार्त्तालाप में विघ्न डालना चाहता था। सरकार बाबू कह रहा था, "सुशील बेटा, यह रेणु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की इच्छा है कि तुम अवश्य उसके जन्मदिन पर आओ। हम भी यही चाहते हैं। मैं चाहता हूँ कि उस दिन विवाह की तिथि निश्चय कर ली जाय।"

"विवाह तो अभी शीघ्र हो नहीं सकेगा। रेणु अभी अठारह वर्ष की हुई है। डॉक्टरी सिद्धान्तों के अनुसार विवाह बीस वर्ष की आयु से कम में नहीं होना चाहिए।"

"डॉक्टरों के सिद्धान्त तो विलायत में बनते हैं न! वहाँ की जलवायु यहाँ से बहुत शीतल है। वहाँ की बात यहाँ प्रमाण नहीं हो सकती।

"इस पर भी यदि तुम चाहो तो हम एक-दो मास के लिए ठहर सकते हैं। देखो सुशील, हम भी मनुष्य हैं और जानते हैं कि विवाह की इच्छा कितनी प्रबल होती है। इसको दबाकर रखने से मस्तिष्क पर कुछ अच्छा प्रभाव नहीं पड़ता। जब एक बार विवाह का विचार उत्पन्न हो जाता है तो फिर यह हो ही जाना चाहिए। इसकी अधिक काल तक प्रतीक्षा स्वास्थ्य के विचार से भी ठीक नहीं। तुम यहाँ अकेले रहते हो, वह वहाँ अकेली तुम्हारी प्रतीक्षा में ठंडे श्वास छोड़ती रहती है। यह तो मानवता के विचार से भी उचित प्रतीत नहीं होता।"

"अच्छा जी, मैं आऊँगा और फिर विवाह के विषय में भी विचार कर लेंगे।"

जब सरकार बाबू चले गए तो शिशिर ने पूछा, "सुशील, यह क्या है?"

"यह वही है, जो अमृत वहाँ कर रही है। मैं भी उसकी तरह नाटक कर रहा हूँ। तुम्हारा पत्र बर्दवान से आया था और यह जानकर भारी प्रसन्नता हुई है कि अमृत नाटक बहुत भली-भाँति कर रही है।

"मेरे माता-पिता मेरा विवाह यहाँ पसन्द करते हैं। मैं अमृत को चाहता हूँ। अमृत के माता-पिता उसका विवाह एक अन्य से चाहते हैं। यह सब भारी विडम्बना है और इसमें हम दोनों को यह अस्वाभाविक अभिनय करना पड़ रहा है।

"परन्तु मैं देखता हूँ कि ये लोग मुझको मोह-जाल में फँसाते जाते हैं। जब मैं इनके घर जाता हूँ तो इनकी लड़की मेरे चरण-स्पर्श करती है और मेरे चरणों में बैठती है। मुझको अपना संगीत सुनाती है, कभी वायलिन बजाती है और कभी नृत्य दिखाती है। मेरे लिए पान लगाकर लाती है और मेरा भोजन स्वयं बनाती और मुझको खिलाती है। वह अति सुघड़ भी है।

"यह देखो, मेरे लिए एक ऊनी जर्सी बुनकर भेजी है। कितनी सुन्दर बनी है!"

सुशील ने अपनी पहनी हुई जर्सी दिखाई। तत्पश्चात् एकाएक रेणु की बात छोड़ अमृत की बात पूछने लगा।

शिशिर ने लखनऊ स्टेशन पर गाड़ी में बैठने के समय से लेकर अमृत के बर्दवान स्टेशन पर सरल आँखों से उसको विदा देने तक का पूर्ण वृत्तान्त बता दिया। अपनी मौसी के व्यवहार को भी उसने व्याख्यासहित सुनाया। पश्चात् कहा, "सुशील, हम दोनों ऐसी विकट परिस्थिति में पड़ गए थे कि किसी अज्ञात शक्ति ने ही हमको बचाया प्रतीत होता है। यह शक्ति, जहाँ तक मैं समझता हूँ, अपने मित्र के प्रति सद्भावना ही हो सकती थी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या मतलब ?"

"मतलब नहीं समझे ? पाँच रात-भर एक ही कमरे में और एक ही पलँग पर सोने के लिए विवश होना पड़ा था। अमृत देवी है। अति संयम और धैर्य में वह तुममें निष्ठा बनाकर रह रही है और मैं उसके पाँवों में पड़ा-पड़ा सोते हुए उसकी लातें खाता रहा हूँ।"

सुशील हँस पड़ा। उसने कहा, "तुमने पृथक् सोने का बहाना क्यों नहीं बना लिया ? ऋतुकाल में होने की बात कर लेनी थी।"

"और मौसी को पता चल जाता तो सब नाटक का गोबर-गणेश हो जाता। इस पर भी अभी तक तो तुम विश्वास करो सुशील, तुम्हारी अमानत अछूती वहाँ रख आया हूँ, परन्तु बताऊँ, मौसी क्या कहती थीं ?"

"हाँ-हाँ, कह दो, वे क्या कहती थीं।"

"कहती थीं कि जवान पत्नियों को लम्बे काल के लिए अकेला छोड़कर जाना ठीक नहीं। वह बेचारी मेरे वियोग में तड़पती रहेगी।

"सुशील, यह तुमने मुझको एक भारी मुसीबत में डाल दिया है।"

"अरे भाई, एक मित्र के लिए यह भी थोड़ा कष्ट सहन कर लो न !"

"मैं अपनी बात नहीं कह रहा मित्र ! मैं तो अपनी मौसी की बात कहता हूँ। एक सायंकाल अमृत ने अपना गाना सुनाया। तब से तो मौसी उसको गृह-लक्ष्मी मान, उसकी पूजा करती हैं। जब उनको पता चलेगा कि वह और मैं उनको धोखा देते रहे हैं, तो उनके क्रोध का पारावार नहीं रहेगा।"

"यही बात तो मेरे साथ यहाँ हो रही है। मैं तो अभिनय कर रहा हूँ और एक बालिका और उसके सम्बन्धी मेरे प्रेम में फँसे हुए दिन-रात व्याकुल रहने लगे हैं।

"कल हरभजनसिंह मुझसे मिला था। उसको सन्देह हो रहा था कि मैं ही अमृत को भगाकर रखे हुए हूँ। जब मैंने सरकार बाबू से मिली भेंट की वस्तुएँ दिखाईं, तो कहीं जाकर उसे विश्वास हुआ। जब मैंने उसको रेणु द्वारा लिखा पत्र पढ़कर सुनाया तो वह मुझसे मेरे पर सन्देह करने के लिए क्षमा माँगने लगा। परन्तु इसका परिणाम यह हुआ है कि मेरा रेणु से सम्बन्ध एक पग और आगे बढ़ गया है।"

"सुशील, यह नाटक तो शैतानी काम मालूम होता है। इसको बन्द कर दो। यह तुमको और अन्य सबको, जो इसके सम्बन्ध में आए हुए हैं, नरक में ले जायगा।"

"अभी तो कुछ मास निकालना चाहता हूँ। पश्चात् समय आने पर सोचेंगे कि किस प्रकार इस झंझट से निकलें।"

शिशिर को पार्टी का काम था और सुशील को प्रैक्टिस करनी थी। इस कारण दोनों अमृत का विचार छोड़ अपने-अपने काम में लग गए।

एक मास व्यतीत होने को आया तो शिशिर को मौसी का पत्र मिला। वह इस पत्र को लेकर सुशील के पास चला आया। सुशील ने पत्र देखा। उसमें लिखा था—

"प्रिय शिशिर !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम तो बहू को भूल ही गए प्रतीत होते हो। एक मास में तुमने एक भी पत्र उसको नहीं लिखा। वह बेचारी लज्जावश जिह्वा नहीं खोलती, अन्यथा कौन नहीं जानता कि भरी जवानी में वियोग की रातें काटना कितना कठिन होता है।

"वह दिन से लेकर रात तक कुछ-न-कुछ करती रहती है। यहाँ तक कि सोने से पूर्व मेरे पाँव दबाने चली आती है। बेचारी बेजुबान को और दुःख मत दो। उस विरही के दुःख को देख मेरा कलेजा मुख को आता है। जब मैं तुम्हारे विषय में कुछ कहती हूँ तो उसके आँसू अविरल बहने लगते हैं।

"तुमको भगवान् की सौगन्ध है कि दो-तीन दिन के लिए ही सही, अब चले आओ। पत्नी को ऐसा दुःख देना भारी पाप है, शिशिर!

"मैं कभी मन से पूछती हूँ कि तुमने अब और पढ़कर क्या करना है? पी-एच० डी० करने से क्या होगा? कहीं प्रोफेसर ही तो लग सकोगे? मिलेगा क्या, पाँच सौ रुपए। एक सहस्र रुपए मासिक का तो केवल तुम्हारे लिए प्रबन्ध कर ही दिया है, और मेरा विचार है कि तुम आ जाओ तो तुमको अपने फ़ार्म पर भेज दूँगी और उसकी आय तुमको मिल जाया करेगी। यह मेरे मरने तक है और पीछे तो तुम सर्वेसर्वा होगे।

"उस फार्म में से मेरे नौकर लूट-खसूट करते हुए भी वर्ष में बीस हज़ार का लाभ दिखा देते हैं। मुझको विश्वास है कि यदि तुम प्रबन्ध करोगे तो तुम लाभ को ड्योढ़ा तो कर ही लोगे।

"और तुमको क्या चाहिए? मेरा कहा मानो, तुमको बहू की सौगन्ध है, अब तुम चले आओ। अब मुझको दूसरा पत्र न लिखना पड़े।"

: १० :

सुशील पत्र पढ़ विस्मय में पड़ गया। उसने एक भी शब्द और कहे बिना, अपनी जेब में से एक इत्र-लगा लिफाफा शिशिर के हाथ में देते हुए कहा, "अब तुम इसको पढ़ो।"

शिशिर ने लिफाफे में से पत्र निकाला और पढ़ा। वह पत्र रेणु का लिखा था। पत्र में लिखा था—"प्रियतम! मैं श्याम-वर्ण अवश्य हूँ। रूप-रेखा भी बहुत तीखी नहीं, परन्तु मैं पूछती हूँ कि क्या पत्नी बनने के लिए यही दो गुण हैं? क्या दाम्पत्य-जीवन के लिए सहयोगिता, सहचारिता, सुहृदयता और सहिष्णुता का कुछ मूल्य नहीं? क्या मन के ये गुण शरीर के उक्त गुणों की तुलना में, विवाहित जीवन में, कई सौ गुणा अधिक मूल्यवान् नहीं?

"आपने लिखा है कि आपके भाग्य में भगवान् ने एक श्याम-वर्ण, मोटी नाक और छोटी आँखों वाली लड़की लिख रखी है, इससे आप अपने भाग्य पर सन्तोष ही तो कर सकते हैं।

"मैं कहती हूँ कि आपके भाग्य में भगवान् ने एक दासी, जो दिन-रात आपकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक प्रकार से सेवा करेगी, दी है। मैं भोजन बनाऊँगी, आपके कपड़े सीऊँगी, घर की सफाई करूँगी। आपके कार्य में भी यदि आप चाहें, तो क्लर्क, स्टेनो, टाइपिस्ट और अन्य कई प्रकार से सहायक हो सकूँगी। •

"मैं अंग्रेज़ी बोल सकती हूँ, लिख सकती हूँ, संगीत-कला और चित्रकला से आपका मनोविनोद कर सकती हूँ। सबसे अधिक आपके सुख-दुःख में कन्धे-से-कन्धे लगाकर साथ देने का वचन देती हूँ।

"आपको अपने घर ले जाने का कभी शोक नहीं होगा। मैं आपकी भाषा बोलने वाली, आपके साहित्य के तारतम्य को समझने वाली और उस साहित्य के अनुरूप अपने जीवन को रखने वाली हूँ।

"और अधिक आप क्या माँगते हैं? शारीरिक सौन्दर्य के लिए तो कोई मिट्टी की सुन्दर मूर्ति अपने कमरे में लगा रखिएगा, काम चल जायगा; परन्तु जो इसके अतिरिक्त मैं आपके घर ला रही हूँ, अर्थात् प्रेम, सेवा और तपस्या, वह आपको अन्य कहीं नहीं मिलेगी।"

पत्र तो और बहुत लम्बा था, परन्तु शिशिर ने पत्र वापस करते हुए कहा, "सुशील, जो स्वाभाविक है उसको अस्वाभाविक करना क्यों चाहते हो?"

"मैं करना नहीं चाहता, शिशिर! मेरे बस में होता तो मैं दोनों से विवाह कर लेता, परन्तु आज देश का कानून इसकी स्वीकृति नहीं देता।"

"अर्थात् तुम रेणु को नापसन्द नहीं करते?"

"रूप-लावण्य में तो अमृत अधिक अच्छी है, परन्तु यह मुझसे प्रगाढ़ प्रेम करती है।

"एक दिन की बात बताऊँ? वह यहाँ आई थी और एक घंटा-भर बातचीत करती रही। मैंने उससे कहा, 'रेणु, तुम अकेली क्यों आई हो?'

'तो क्या पाप हो गया है?'

'यदि मैं तुमसे बलात्कार करूँ तो?'

'भला ऐसा क्यों करेंगे? बलात्कार तो पराई स्त्रियों से किया जाता है। मैं तो आपकी अपनी हूँ।'

'पर अभी तो तुम मेरी पत्नी नहीं हुई?'

'कौन कहता है? मैं तो मन-वचन-कर्म से आपको वर चुकी हूँ।'

'तो तुम मेरी पत्नी हो?'

'आपको सन्देह है क्या?'

'हाँ, जब तक मैं तुमको प्राप्त नहीं कर लेता, तब तक तो है।'

'तो आइए, अभी प्राप्त कर लीजिए। मैं तो मन से आपकी दासी बन चुकी हूँ।'

'पर यदि उसके पश्चात् मैंने तुमसे विवाह न किया तो?'

'तो क्या? मैं त्यक्ता पत्नी हो जाऊँगी, इस पर भी पत्नी तो रहूँगी। यह आपकी इच्छा है कि छोड़ें अथवा रखें। मेरा आपको वरण तो हो चुका है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"शिशिर, एक बन्द कमरे में, अकेले क्या कुछ हो सकता है, तुम समझ सकते हो।"

शिशिर खिलखिलाकर हँस पड़ा। उसने पूछा, "तो तुमने उससे सहवास किया है?"

"नहीं मित्र, इतना विश्वास और भरोसा करने वाली भोली-भाली लड़की से विश्वासघात नहीं कर सका। मैं उसको अपनी मोटर में बिठाकर उसके पिता के घर ले गया और वहाँ उसको छोड़ आया। इससे तो मेरा मान उसके हृदय में कई सौ गुना बढ़ गया प्रतीत होता है।"

"सुशील, इस बेचारी से विवाह कर लो और शीघ्र ही।"

"मैं भी यही विचार कर रहा हूँ। परन्तु अमृत का भी तो प्रबन्ध करना है। उसको पत्र लिखूँ, परन्तु क्या लिखूँ और किस प्रकार उसको वचन से मुक्त करूँ? मैं कई दिन से यह सब-कुछ उसको लिखने के लिए यत्न कर रहा हूँ, परन्तु कलम नहीं चलती और यह समस्या मेरे मस्तिष्क को खराब कर रही है।"

"तो जहाँ पहली कठिनाई में तुमने मेरे को शिखण्डी बनाया है, क्या इसमें भी मेरे को अपनी आड़ बनाना चाहते हो?"

"तो तुम इस विषय में भी मेरी सहायता करोगे।"

"पहले से यह काम और भी कठिन है। पहले में तो वह हँसती हुई सम्मिलित हुई थी और इसमें वह रो-रोकर अपनी जान देगी। मुझको और तुमको, कदाचित् पूर्ण बंगाली समाज को गालियाँ देने लगेगी।"

"तुम उससे विवाह क्यों नहीं कर लेते? तुम्हारी मौसी तो प्रसन्न है ही।"

"यह विवाह है, सुशील! गाजर-मूली का बाज़ार नहीं। एक ग्राहक न मिला तो किसी दूसरे के पास चली गई।"

"भारी कठिनाई तो यह है कि मैंने ही उसको तुम्हारे साथ भाग जाने को कहा था।"

"हाँ, और यह भी कहा था कि यदि मैंने तुम्हारी खेती में मुख डाला तो ठीक नहीं होगा।"

"मैं अपना कथन वापस लेता हूँ।"

"पर वह खेती नहीं है, सुशील! वह एक समझदार, सभ्य, सुशील और पढ़ी-लिखी लड़की है।"

"पर क्या तुम उसको पसन्द नहीं करते?"

"मेरी पसन्द का तो प्रश्न ही नहीं पैदा होता। वह तुमसे प्रेम करती है, मुझसे नहीं।"

"तुम उससे कहकर तो देखो। यदि वह तुमको पसन्द है और तुम्हारी मौसी उसको अपनी बहू मानती ही है, तब तो बात सुगम ही है।"

"कैसे सुगम है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आओ, हम षड्यन्त्र करें। आखिर बंगाली मस्तिष्क के लिए यह कौन कठिन बात है!"

शिशिर मन में विचार करता था, 'बड़ा षड्यन्त्रकारी बन आया है। बच्चू! अपनी चतुराई से सोना देकर काँसा पकड़ बैठे हो।' इसके पश्चात् उसने कहा, "मैं कल बर्दवान जा रहा हूँ। मैं उसके विचारों को जानने का यत्न करूँगा और यदि वह कुछ भी तैयार हुई तो फिर मैं अपनी किस्मत आजमाऊँगा।"

"सच?"

"यत्न करूँगा।"

"मैं तुम्हारा बहुत आभारी रहूँगा।"

शिशिर मन-ही-मन मुस्कराता हुआ चला आया। वह विचार करता था, 'अच्छा उल्लू बनेगा।'

: ११ :

शिशिर के मन में यह विश्वास-सा बन रहा था कि सुशील के विवाह के पश्चात् अमृत को विवाह के लिए राजी कर लेना कठिन नहीं होगा। आवश्यक यह था कि सुशील का विवाह अमृत के बालिग होने से पूर्व हो जाय। इसके अतिरिक्त वह कम्युनिस्ट पार्टी का वैतनिक कार्यकर्ता था। विवाह के उपरान्त वह इस कार्य को कर नहीं सकेगा। या तो अमृत को कम्युनिस्ट विचार का बना ले और फिर दोनों पार्टी का कार्य करें। यह इतना सुगम नहीं था। तो वह पार्टी को छोड़ दे, इसको भी वह सुगम नहीं समझता था। वह इसके सिद्धान्तों को मानव-समाज के लिए अति हितकर मानता था और उनके प्रचार को अपने जीवन का ध्येय बना चुका था। इससे भी बढ़कर समस्या फार्म की थी। विवाह के पश्चात् वह फार्म का काम करेगा और फिर कर्मचारियों को कैसे नौकर बनाकर रख सकेगा?

वह लखनऊ ऑटोमोबाइल वर्कर्ज़ यूनियन का प्रधान था। उसको प्रबोध के कारखाने में कर्मचारियों के प्रबन्ध में हस्तक्षेप करने से कारखाने की दुर्गति का पता था। वह वैसा ही हाल अपनी मौसी के फार्म में नहीं करना चाहता था।

एक बात वह समझता था कि यदि अमृत से विवाह नहीं होता तो मौसी के घर से उसका तिनका ही टूट जायगा। वह अभी ऐसा करना नहीं चाहता था। उसके मन में स्पष्ट था कि वर्तमान कांग्रेस राज्य से कम्युनिस्ट पार्टी को कुछ नहीं मिलेगा। आगामी निर्वाचनों में भी कांग्रेस ही देश की शक्तिशाली पार्टी रहेगी। कम्युनिस्ट पार्टी के शक्ति प्राप्त करने में अभी काफी समय था और तब तक उसको मौसी के रुपयों की आवश्यकता थी।

वह यह भी मन में विचार करता था कि अमृत मौसी से प्रसन्न है और मौसी के नाम पर यदि वह उसके सामने प्रस्ताव करेगा तो उसके लिए मानने में सन्देह नहीं हो सकता। प्रश्न तो घुमा-फिराकर वही था कि सुशील का विवाह अमृत के तीन मास के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अज्ञातवास के भीतर ही हो जाय।

इस उधेड़-बुन में वह कार्यालय में जा पहुँचा। वहाँ कार्यालय में यह पत्र देकर कि उसकी मौसी ने तुरन्त बुलाया है, वह बर्दवान के लिए रवाना हो पड़ा। उसने अपने वहाँ पहुँचने की सूचना भी नहीं भेजी।

जब वह घर के फाटक के बाहर गाड़ी खड़ी कर नौकर को आवाज़ देने लगा, तो उसकी आवाज़ अमृत ने सुन ली। वह लपककर खिड़की में देखने गई। शिशिर का सामान नौकर उठाकर चला आ रहा था और शिशिर उसके साथ था। वह उसके इतनी जल्दी लौट आने की आशा नहीं रखती थी। वह मन में विचार कर रही थी कि अब वह कितने दिन वहाँ रहेगा और उसको उतनी रातें उसके साथ बन्द कमरे में रहना पड़ेगा।

इस चिन्ता के साथ-साथ वह लखनऊ के समाचार जानने के लिए भी उत्सुक थी। वह अपने भाई और माता-पिता के विषय में भी जानना चाहती थी। वह सुशील के विषय में भी जानने की इच्छा रखती थी। इसके अतिरिक्त वह जानना चाहती थी कि नीला, प्रबोध इत्यादि उसके भाग जाने को कैसा समझते हैं। अतएव वह शिशिर से एकान्त में मिलने की लालसा कर रही थी। वह स्वागत के लिए द्वार की ओर जाने के स्थान अपने सोने के कमरे में चली गई।

मौसी ने समझा कि वह सबके सामने अपने पति से मिलने में लज्जा अनुभव करती होगी। इस कारण एकान्त में मिलने के लिए अपने कमरे में चली गई है। यह विचारकर वह मुस्कराई।

शिशिर भीतर आया तो प्रतिमादेवी ने उसको प्यार किया और पूछा, "आने की सूचना क्यों नहीं भेजी?"

"मौसी, तुम्हारा पत्र मिला तो चल पड़ा। सुनाओ, अमृत ने तंग तो नहीं किया?"

"नहीं बेटा, वह बेचारी बहुत ही सुशील है। मैं तो अब उसके बिना रह नहीं सकती। उसके आने से मेरा जीवन रसमय हो गया है। अब एक बात करो। उसके एक लड़का पैदा कर दो। बस, मेरी मनोकामना पूरी हो जायगी।"

"मौसी, यह तो भगवान् के हाथ में है न!"

"तुम भगवान् को कब से मानने लगे हो?"

"जब से अमृत को पाया है।"

"सच? तब तो मुझको उसका और भी कृतज्ञ होना चाहिए। उसने मेरे बेटे को सन्मार्ग दिखाया है।"

शिशिर हँस पड़ा। इस पर प्रतिमादेवी ने विस्मय से पूछा, "तो क्या यह ठीक नहीं है?"

शिशिर एक कुर्सी पर बैठ गया। सब बैठक में खड़े थे। प्रतिमा नहीं बैठी। उसने मुस्कराते हुए कहा, "बेटा, जाओ, वह तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है, अभी यहाँ थी, तुम्हारी आवाज़ सुन अपने कमरे में चली गई है।"

"अच्छा मौसी, उससे निपटकर आता हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह कह शिशिर अमृत के कमरे में जा पहुँचा। वह द्वार के समीप खड़ी प्रतीक्षा कर रही थी। शिशिर ने कमरे में आ द्वार बन्द कर लिया और पूछा, "अब तुम सुनाओ।"

"यहाँ सब ठीक है। मैं अपना पार्ट इस खेल में भली-भाँति खेल रही हूँ। मौसी ने पूछा है कुछ?"

"हाँ।" शिशिर ने एक कुर्सी पर बैठते हुए कहा, "कहती थीं कि तुम बहुत अच्छी हो। अब तुम्हारे एक लड़का होने की बात रह गई है। वह हो जाय तो उसकी सब मनोकामना पूरी हो जायगी।"

अमृत का मुख लाल हो गया। शिशिर ने देखा, परन्तु उसको सुझाया नहीं। उसने कहा, "अमृत, बैठो। लखनऊ की बात नहीं सुनोगी?"

"इसीलिए तो यहाँ चली आई हूँ।"

"तुम्हारे माता-पिता और तुम्हारे भाई तुम्हारी खोज में लीन हैं। तुम्हारे भाई का विचार है कि तुमने घर से भागकर भूल की है। नीलादेवी का भी यही विचार है। ये दोनों समझते हैं कि यदि तुम घर में रहकर माता-पिता का विरोध करतीं तो बहुत ठीक रहता।"

"तो आप उनसे स्वयं मिले थे?"

"नहीं, यदि मैं उनसे तुम्हारे विषय में रुचि प्रकट करता तो उनको सन्देह हो जाता कि तुम मेरे पास हो। यह सब मैंने सुशील के द्वारा ही जाना है।"

"मेरे माता-पिता अब मेरे विवाह के विषय में क्या कर रहे हैं?"

"विवाह की बात समाप्त हो गई है। सरदार कर्तारसिंह तुम्हारे पिता से मिले थे और उनको जली-कटी सुना गए हैं। तुम्हारी माता का क्रोध तो शान्त हो गया प्रतीत होता है, परन्तु तुम्हारे पिताजी के विषय में अभी कुछ नहीं कहा जा सकता। कभी तो बहुत नाराज़ होते हैं और कभी कहते हैं कि उनसे भूल हुई है और सगाई से पूर्व तुमसे पूछ लेना चाहिए था।"

"सुशीलजी कैसे हैं?"

"बहुत मज़े में हैं। उनका नाटक भी तुम्हारे नाटक की भाँति एक विकट स्थिति में पहुँच गया है। रेणु उनसे प्रेम करने लगी है और वह उनको किसी सूरत में भी छोड़ने को तैयार नहीं। सरकार बाबू ने पूर्ण नगर में और बंगाली बिरादरी में सुशील और रेणु के विवाह का समाचार विख्यात कर दिया है। सुशील के हस्पताल के सब अधिकारी इस बात को जान गए हैं और प्रत्येक सम्बन्धी और मित्र उसको विवाह के समय देने के लिए भेंट तैयार कर रहे हैं।"

"देखो शिशिर बाबू, मैंने सुशीलजी से कहा था कि यह नीति ठीक नहीं है। यदि इसमें सीमा से दूर गए तो फिर लौटना कठिन हो जायगा। वे न केवल स्वयं इस बनावट के जीवन में फँस गए, प्रत्युत् मुझको भी साथ ही फाँस लिया है।

"मैं अब मौसी के एहसान के नीचे इतनी दब चुकी हूँ कि यहाँ से जाने की बात सोचकर मेरा हृदय काँपता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्यों ?"

"वे क्या समझेंगी ? उनके मन पर इस धोखाधड़ी का क्या प्रभाव होगा ? कहीं उनकी हत्या का पाप मेरे सिर न चढ़ जाय। अभी दो दिन की बात है कि आपके भाई विमलानन्द को उन्होंने बहुत बुरी तरह डाँटा था। वे कहने लगीं, 'विमल, मैं तुमको बताना चाहती हूँ कि शिशिर ने इससे विवाह किया है। धर्म की वेदी पर बैठकर इसको अर्धांगिनी बनाया है। अतएव अच्छी अथवा बुरी यह मेरे परिवार का अंग है। इसकी निन्दा मेरी निन्दा है। जान गए हो ?' "

"तो क्या विमलानन्द ने तुम्हारी निन्दा की थी ?"

"उसने किसको क्या कहा था, मैं नहीं जानती। मौसी ने उसको डाँटा तो वह भीगी बिल्ली की भाँति मैं-मैं करने लगा। मैं तो यह अनुभव कर रही हूँ कि यदि मैं यहाँ से चली गई तो विमलानन्द इत्यादि तो मौसी को कच्चा ही चबा जाएँगे।"

"तो फिर क्या किया जाय ?"

"मैं तो यह चाहती हूँ कि सुशील अब अपना नाटक बन्द करे। वह यहाँ चला आए और मौसी के पाँव पर अपना सिर रख क्षमा माँगे और सब बात सत्य-सत्य बता दे। यदि यह नहीं हो सकता तो लखनऊ में किसी काम के मिल जाने का बहाना कर मुझको आप वहाँ ले चलिए और फिर मौसी को वहाँ बुलाकर सब बात वहाँ ठीक कर ली जाय। ये दोनों बातें दो मास के भीतर हो जानी चाहिएँ। वहाँ आप अपने विवाह का भी प्रबन्ध कर लें, जिससे मौसी को कम-से-कम सदमा पहुँचे।"

शिशिर यह योजना सुन हँस पड़ा। उसने कहा, "इस योजना में बड़े-बड़े छिद्र हैं। प्रथम, सुशील सरकार बाबू से सम्बन्ध-विच्छेद नहीं कर सकता। वह मान भी जाय, तो भी रेणु उसके द्वार पर धूनी रमाकर सत्याग्रह करने लगेगी। नगर-भर में धूम मच जायगी। सुशील की बदनामी होगी तो उसके काम में भी गड़बड़ होगी।

"दूसरा छिद्र है, मौसी का लखनऊ चलना। यह नहीं होगा। यदि मैं हठ करके तुमको लखनऊ ले गया तो भी वह स्वयं नहीं जाएगी और जब तुम्हारा विवाह सुशील से हुआ तो वह अति दुःख अनुभव करेगी।

"तीसरे, मैं किससे विवाह करूँगा ? उसको, जो भी वह हो, मौसी तुमसे अच्छा कभी नहीं समझेंगी। विमलानन्द का मुख भी तभी बन्द हो सकेगा, जब मैं शशि से विवाह के लिए तैयार हो जाऊँ। यह मुझसे नहीं हो सकेगा। मौसी भी इसको पसन्द नहीं करेंगी।"

"तो आपके कहने का अभिप्राय यह हुआ कि मेरी योजना नहीं चलेगी ?"

"बिल्कुल नहीं।"

"तो फिर किया क्या जाय ?"

"मैं क्या जानूँ ? तुम जानो और सुशील जाने। मैंने इस धोखेबाज़ी में सम्मिलित होकर कुछ ठीक नहीं किया। मैं अपनी हानि तो सह लूँगा। मैं तो फक्कड़ हूँ। तुम दोनों अपनी सोच लो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बहुत मुसीबत में फँस गई हूँ।"

"देखो अमृत, मेरी योजना यह है कि यदि सुशील तुमसे विवाह करने की कोई योजना निकाले और यहाँ आकर मौसी के सम्मुख गिड़गिड़ाकर उसके पाँव पकड़ ले और सब रहस्य खोल, तुमको यहाँ से ले जाय तो मैं इस धोखे में अपने भाग के लिए जो भी दण्ड मौसी देगी, सहन कर लूँगा। यदि वह ऐसा नहीं कर सकता तो दोनों ओर का नाटक सत्य होकर रहेगा।"

"इस योजना में छिद्र नहीं हैं क्या?"

"हैं और बहुत बड़े-बड़े हैं, परन्तु उसका फल सबको सहन करना पड़ेगा। इस पर भी मैं समझता हूँ कि यह बेल मँढ़े चढ़ेगी नहीं। रेणु सुशील को छोड़ेगी नहीं। इससे लखनऊ-भर में हल्ला होगा। सुशील की नौकरी जाने का भय हो जायगा।

"यहाँ तुमको मौसी छोड़ेगी नहीं। मैं समझता हूँ कि रेणु सुशील से विवाह करने में सफल हो जायगी और मौसी तुम जैसी पतोहू को पाए बिना नहीं रहेगी। मैं समझता हूँ कि मौसी भी सफल हो जायगी।"

"मौसी की पतोहू बनने में तो कुछ बड़ी कठिनाई नहीं है। पर मौसी के बेटे की पत्नी बनने की इच्छा नहीं होती।"

"क्यों, वह लंगड़ा-लुंजा है क्या?"

"उसमें कई दोष हैं, जो एक पति में नहीं होने चाहिएँ।"

"तो उसको वे सब दोष बता दो अमृत, शायद वह ये सब दोष अपने में से निकालने का यत्न कर ले।"

:१२:

तीन दिन तक बर्दवान में रहकर जब शिशिर जाने लगा तो अमृत ने उससे कहा, "जाइए और अब दो मास तक यहाँ न आइएगा। जब मुझको यह विश्वास हो जायगा कि सुशील का रेणु से विवाह हो गया है तो मैं आपसे विवाह करने लखनऊ आऊँगी। आप सुशील के विवाह की तिथि लिखिएगा। तभी मैं वहाँ आ सकूँगी।"

"पर मैं बीच में क्यों न आऊँ?"

"इसलिए कि यहाँ आकर आपको संयम से रहने में कष्ट होता है।"

"जब तुम संयम से रह सकती हो तो मैं क्यों नहीं रह सकता?"

"यह मैं क्या जानूँ? आप जितनी बेताबी प्रकट करते हैं, क्या वह झूठी समझ लूँ?"

"नहीं, यह बात नहीं! मैं मन में सर्वथा वैसा ही अनुभव करता हूँ जैसा मुख से कहता हूँ, परन्तु मैं अपने मन को शान्त तभी रख सकता हूँ, जब तुमसे अपने प्रेम की बात कह लेता हूँ। जब जनता में कोई भावना उग्र होती है तो हम नेता लोग उनसे नारे लगवाने लग जाते हैं। इससे उनका जोश नारों में निकल जाता है और समाप्त हो जाता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं इससे उलट समझती हूँ। जब किसी मूर्ख गँवार में उत्तेजना लानी होती है, तब नारे लगवाए जाते हैं। नारे लगाने से उसके मस्तिष्क में एक ऐसी अवस्था उत्पन्न हो जाती है, जिससे वह पराकाष्ठा की मूर्खता करने के लिए तैयार हो जाता है।"

"पर अमृत, मैं मूर्ख नहीं हूँ। मैं जब अपने मन की बात कह लेता हूँ तो मुझको शान्ति मिलती है।"

"अच्छी बात, एक मास के उपरान्त आकर मेरे से प्रेम के नारे लगा जाइएगा और चित्त को शान्त कर जाइएगा।"

"धन्यवाद !" इतना कह शिशिर खिलखिलाकर हँस पड़ा।

जाते समय उससे मौसी ने कहा, "शिशिर, मैं तुम्हारे इस प्रकार बार-बार जाने को पसन्द नहीं करती। बहू को छोड़कर इस प्रकार भटकते रहना कोई अच्छा काम नहीं। मैं तुम्हारी आँखों में देख रही हूँ कि अब तुम पढ़ाई कर नहीं सकते। व्यर्थ में वियोग का दुःख सह रहे हो और बहू को दे रहो हो।"

इस बार शिशिर गया तो अमृत रोई नहीं। मौसी को कुछ अचम्भा हुआ। इस कारण स्टेशन से लौटकर मौसी ने अमृत से पूछा, "बहू, क्या कुछ लड़ाई हुई है तुम दोनों में ?"

"नहीं तो, माँजी !"

"पिछली बार उसके जाने पर जितना दुःख तुमको हुआ था, उतना इस बार हुआ प्रतीत नहीं होता ?"

"हाँ, पर माँजी, इसका कारण है। पिछली बार वे कह गए थे कि छः मास तक लौटकर नहीं आएँगे और इस बार वे वचन दे गए हैं कि एक मास में ही आएँगे।"

"तो तुमको बहुत आशा बँधा गए हैं न ?"

"हाँ, माँजी, उनके मित्र सुशीलकुमार का विवाह होना है और वे मुझको मित्र के विवाह पर ले चलेंगे।"

"तभी तो तुम बहुत प्रसन्न हो ? भगवान् करे कि इस बार तुम्हारे दिन चढ़ जाएँ और नौ मास में तुम्हारे लड़का हो।"

अमृत ने लज्जा से आँखें झुकाकर कहा, "माँजी, आपका आशीर्वाद चाहिए। शेष सब-कुछ होता रहेगा।"

शिशिर लखनऊ पहुँचा तो उसको पता चला कि सुशील उससे मिलने स्वयं आया था। शिशिर को कार्यालय में पहुँचते ही पता चला कि सुशील पहले दिन उसको पूछ गया था। वह स्नानादि से छुट्टी पा, सुशील की ओर जाने ही वाला था कि वह स्वयं आ गया। उसने आते ही कहा, "क्या कर आए हो, शिशिर ?"

"क्या करना था वहाँ ? मौसी से मिलने गया था, सो मिल आया हूँ। उसको स्वप्न आया था कि मेरे साथ कोई दुर्घटना हो गई है। इससे परेशान थी। जब उसने मुझको देख लिया और हाथ लगाकर मेरे जीवित होने का विश्वास कर लिया तो शान्त हो गई और कहने लगी, अब मैं अपनी पढ़ाई के लिए जा सकता हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुशील हँस पड़ा और कहने लगा, "ऐसा प्रतीत होता है कि तुम्हारा अपनी मौसी से किसी प्रकार का घना सम्बन्ध उत्पन्न हो रहा है और वह किसी दूसरे का नाम ले-लेकर अपनी वियोग-व्यथा प्रकट कर रही है।"

शिशिर भी हँसने लगा। दोनों बाँह-में-बाँह डालकर कार्यालय से निकल पड़े। बाहर सड़क पर आ दोनों मोटर में बैठ गए। लखनऊ में हुई बातों का उल्लेख करते हुए सुशील ने मोटर स्टार्ट कर दी। उसने कहा, "कल सरकार बाबू मेरे माता-पिता तथा अपनी पत्नी को लेकर हस्पताल में आ गए थे। वहाँ डॉक्टर हनुमानसिंह, डायरेक्टर ऑफ़ हॉस्पिटल्ज़ और उनकी धर्मपत्नी बैठे थे। ऐसा प्रतीत होता है कि डायरेक्टर महोदय का पिताजी से भारी परिचय है और उनकी सिफारिश से ही मुझको हस्पताल में नौकरी मिली है। उनकी उपस्थिति में मेरे विवाह की चर्चा चल पड़ी। हस्पताल के चीफ़ मेडिकल ऑफ़िसर कमलापति दास तो मेरे विवाह में पहले ही रुचि रखते हैं। बस, फिर क्या था, मेरे विवाह की तिथि पाँच अप्रैल नियत कर दी गई है।

"कमलापति दास सरकार बाबू के परम मित्र हैं। उन्होंने तो संकेत-मात्र मुझको कह भी दिया है कि वे एक बंगाली की कमाई किसी पंजाबी के लिए व्यय नहीं होने देंगे। ऐसा प्रतीत होता है कि पिताजी ने उनको मेरी प्रेम-कथा का परिचय दे दिया है।"

"यह तो बहुत बुरी बात हुई है सुशील, तुमको तो सरकार बाबू ने भली-भाँति जाल में फँसा लिया है। क्या नौकरी छोड़ दोगे?"

"मुझसे दुकानदारी नहीं हो सकती। हरभजनसिंह बहुत ही योग्य सर्जन होते हुए भी पाँच-छः सौ से अधिक प्रैक्टिस नहीं रखता। इसमें ही क्लिनिक का खर्चा भी करना पड़ता है। मैं किसी प्रकार का भी खर्चा किए बिना दो-तीन हज़ार प्रतिमास जेब में डाल लेता हूँ।

"यह सब हस्पताल के कारण ही है। हस्पताल में बेड पाने के लिए लोग घर पर फीस दे जाते हैं। जहाँ हरभजनसिंह और नीला अभी पाँच रुपए फीस लेते हैं, वहाँ मेरी फीस पन्द्रह हो गई है। हस्पताल छोड़ने पर यह सब समाप्त हो जायगा। तब अमृत से भी विवाह किया तो उसको भी मुसीबत में डालना ही होगा।"

"तो तुम विवाह के लिए मान गए हो क्या?"

"हाँ।"

"तो अमृत एक कटी पतंग की भाँति हो ग़ई है। न इधर की रही न उधर की।"

"तो तुम अपने कार्य में सफल नहीं हुए?"

"सुशील, वह कहती है कि जब तुम्हारा विवाह हो जायगा, तभी वह किसी अन्य के विषय में विचार कर सकती है।"

"तब तो मुझको उसके यहाँ आ सकने से पहले ही विवाह कर लेना चाहिए।"

"हाँ, नहीं तो वह किसी प्रकार का विघ्न भी डाल सकती है।"

"तो अब मौसी से उसका झगड़ा हो गया है क्या?"

"हाँ, भला उन दोनों की कैसे पट सकती थी? एक उत्तरी ध्रुव और दूसरी दक्षिणी। एक सर्वथा शीतल, दूसरी अग्निपुंज। एक भावुकता से ओत-प्रोत, दूसरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिनती-मिनती करने वाली बुद्धिशील। एक मास में ही चित्र बदल गया है।"

"शिशिर, किसी प्रकार मेरी सहायता करो।"

"मित्र, वह तो कर ही रहा हूँ। मौसी से कह आया हूँ कि उसको ताला लगाकर रखे। कहीं भाग गई तो उससे अपनी पत्नी भर लूँगा।"

"वंडरफुल, शाबाश शिशिर! माना कि तुम षड्यन्त्रकारी हो। इसका अर्थ मैं यह समझा हूँ कि यदि वह यहाँ आई तो मौसी को इससे कुछ भी दुःख नहीं होगा। तुम उसके मन को पहले ही तैयार कर आए हो?"

"हाँ, परन्तु मुझको उस बेचारी पर दया आती है। उस बेचारी का बनेगा क्या?"

"जब वह मौसी जैसी स्त्री से निर्वाह नहीं कर सकी, तो फिर क्या किया जा सकता है? अपने कर्मों का फल तो मिलेगा ही। इस पर भी तुम्हारा क्या बनेगा और वह लखनऊ में बदनाम हो चुकी है।"

"उसको तुम्हारे व्यवहार पर भी सन्देह हो रहा है। उसको विश्वास हो रहा है कि तुमने उसको लखनऊ से बाहर भेजकर अपने मार्ग से हटा दिया है। इससे वह मन-ही-मन तुमसे रुष्ट है और उसका क्रोध बेचारी मौसी पर निकल रहा है।"

"मैंने तो उसके भले के लिए ही किया था, परन्तु मैं क्या जानता था कि परिस्थिति इस प्रकार बदल जायगी और मैं विवश हो जाऊँगा। मनुष्य की शक्ति और बुद्धि सीमित तो हैं ही। मैं इस भावी को समझ नहीं सका। भाग्य इतना प्रबल निकला कि वह हवा में ही लटकी रह गई।

"देखो शिशिर, उसको मेरे विवाह तक तो बर्दवान में ही रखो और पीछे उसको वहाँ से भाग जाने के लिए प्रोत्साहन दो। मौसी के मन से वह बिल्कुल उतर जायगी।"

सुशील को अपने विवाह-कार्य में जल्दी करने के लिए कह, शिशिर पार्टी-कार्यालय को वापस लौट गया। वह मन में प्रसन्न था। उसने समझा कि चोर को मोर पड़ गए। सुशील अपने को बहुत ही चतुर समझता था, सो उसकी चतुराई से भी लाभ उठाने वाला आ पहुँचा है।

एक बात वह विचार कर रहा था कि पार्टी के झंझट से वह कैसे छूटे। उसने मन में निश्चय कर लिया था कि वह वैतनिक कार्यकर्ता तो अब नहीं रहेगा। वेतन की उसको अब आवश्यकता भी नहीं रही थी। उसको इलाहाबाद बैंक की बर्दवान शाखा का एक सहस्र रुपए का ड्राफ्ट मिल गया था। यह मौसी के प्रबन्ध के अधीन था।

इस पर भी वह कम्युनिस्ट पार्टी से अभी सर्वथा सम्बन्ध-विच्छेद करना नहीं चाहता था। उसके मन में यह बात अंकित हो चुकी थी कि अब संसार में कम्युनिज़्म का बोलबाला होने वाला है। कम्युनिस्ट राज्याधिकारी एक क्षण के लिए भी मतभेद स्वीकार नहीं कर सकते। उस राज्य में न मौसी की सम्पत्ति रहेगी, न उससे मिलने वाला यह एक सहस्र रुपया। उस समय निर्वाह तो उनका ही हो सकेगा, जो कम्युनिस्ट स्टेट के साथ सहयोग दे सकेंगे। कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य होना उस समय एक महान् सिफारिश होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह अभी बाईस वर्ष का युवक था। कम-से-कम पचास वर्ष तक जीने की आशा रखता था। वह विचार करता था कि इस आधी शताब्दी में होने वाले परिवर्तनों के लिए उसको तैयार रहना चाहिए। 'सैल्फ प्रिज़र्वेशन' (स्वरक्षा) जीवन का एक मुख्य सिद्धान्त है और वह इससे भाग नहीं सकता।

पिछले वर्ष भारत के प्रधानमन्त्री रूस यात्रा पर गए थे और उनका वहाँ भव्य स्वागत किया गया था। इस वर्ष रूस के प्रधान नेता और प्रधानमन्त्री भारत आए थे और उनका वह स्वागत हुआ है कि संसार-भर में आज तक किसी भी महापुरुष का कभी भी नहीं हुआ। इस सबका परिणाम वह यह देखता था कि भारत के लोगों की ही रुचि नहीं प्रत्युत पूर्ण संसार के लोगों की रुचि कम्युनिस्ट विचारधारा की ओर आकृष्ट कर ली गई है।

पार्टी में इन विषयों पर चर्चा होती थी। छोटे-से-छोटे कार्यकर्ता से लेकर पार्टी के बड़े-बड़े कार्यकर्ता तक सब इस विषय में सहमत थे कि भारत बिना जाने-बूझे कम्युनिज़्म की गोदी में धकेला जा रहा है। सब लोग अब यह विचार कर रहे थे कि क्रान्ति होगी अथवा द्रुतगति से विकास। भारत के प्रधानमन्त्री में और चाहे कुछ गुण हों या न हों, परन्तु उसने भारत को कम्युनिस्ट बनाने में बहुत सहायता दी है।

इस बदल रही परिस्थिति में वह कम्युनिस्ट पार्टी से सम्बन्ध-विच्छेद करना नहीं चाहता था। इस घटना के कुछ दिन बाद जब एक दिन कम्युनिस्ट पार्टी का मन्त्री देवेन्द्र लखनऊ आया तो शिशिर ने उससे कहा, "मैं पार्टी का वैतनिक कार्यकर्ता रहना नहीं चाहता।"

"क्यों ?"

"मेरा विवाह होने वाला है। कार्य के साथ पूर्ण सहानुभूति रखते हुए भी मैं कार्य के लिए पर्याप्त समय नहीं दे सकूँगा ?"

"तो निर्वाह कैसे होगा ?"

"मेरी मौसी, जिसने यह विवाह का प्रबन्ध किया है, मुझको एक सहस्र रुपए मासिक देगी।"

"तो वह हज़ार रुपया तुम पार्टी को दे देना। एक सरमायादार की सम्पत्ति को पार्टी-फंड में दे देने से अच्छा काम और क्या हो सकता है ?"

"वह यह जान लेगी तो मुझको वह रुपया मिलना बन्द हो जायगा।"

"तुमको खाने-पीने को तो मिलता ही है।"

"पर इतने से तो परिवार का बोझा ढोया नहीं जा सकता।"

"तुमको मैरेज अलाउंस मिल जायगा।"

"देवजी, यह नहीं हो सकेगा। मैं यह वचन देता हूँ कि एक सहस्र में से जो-कुछ बचेगा, सब पार्टी को दे दिया करूँगा और साथ ही मैं पार्टी का कार्य तो करूँगा ही। जब मुझको एक सहस्र निर्वाह के लिए मिलेगा तो मैं कोई व्यवसाय तो करूँगा नहीं।"

देवेन्द्र की बुद्धि में बात आ गई। उसने पूछा, "कब से वेतन बन्द कर रहे हो ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इसी मास से।"

"रहोगे कहाँ ?"

"अभी तो इसी कार्यालय में ही ठहरा हूँ। विवाह तक यहीं रहूँगा। पश्चात् जहाँ रहूँगा, पार्टी से सम्पर्क रखूँगा।"

"तब तो ठीक है। यहाँ न्यू इंडिया ऑटोमोबाइल इञ्जीनियरिंग वर्क्स में झगड़ा हो रहा है। वह मैं तुम्हारे हाथ में देना चाहता हूँ। तुम उनकी यूनियन के प्रधान भी हो। अब तुमको हाई कमाण्ड की आज्ञानुसार वहाँ के झगड़े का संचालन करना है।"

"परन्तु देवजी, इस कारखाने का मालिक तो हमारी पार्टी का सदस्य है। उसके कर्मचारियों की एक प्रबन्धक कौंसिल बना रखी है और उनकी राय से ही सब प्रबन्ध हो रहा है। इस कौंसिल ने भारी सुविधाएँ दे रखी हैं, जिससे कर्मचारी बहुत मज़े में हैं।"

"यह झगड़ा तो कौंसिल की राय न मानने के कारण खड़ा हुआ है। हाई कमाण्ड की राय है कि मालिकों को सबक सिखाना चाहिए कि वे इस प्रकार की कौंसिल की राय की अवहेलना नहीं कर सकते। साथ ही हमारी पार्टी का यह नियम है कि यूनियन के प्रधान हाई कमाण्ड की आज्ञा का पालन करते हैं। विचार करना कमाण्ड का काम है। यूनियन को उनके कहने के अनुसार काम करना चाहिए।"

"मैंने इस बात से इन्कार नहीं किया। इस पर भी पूर्ण परिस्थिति का ज्ञान कराना मेरा कर्तव्य है।"

"परिस्थिति से हाई कमाण्ड परिचित है।"

"पर उसको यह पता नहीं कि कर्मचारी इस कारखाने के मालिक से परम सन्तुष्ट हैं और हड़ताल का सफल होना सम्भव नहीं।"

"हमारा विचार है कि हड़ताल तक नौबत ही नहीं आएगी। केवल धमकी से ही काम चल जायगा।"

"मैं समझता हूँ कि इसमें हाई कमाण्ड भूल कर रहा है।"

"अब तुम अपने अधिकार से बाहर जा रहे हो। हाई कमाण्ड की सम्मति को ग़लत बताना तुम्हारा काम नहीं।"

शिशिर इस पर चुप कर गया।

: १३ :

शिशिर जानता था कि प्रबोध के कारखाने में, अन्य ऐसे कारखानों के कर्मचारियों से अधिक वेतन, काम कम और छुट्टियाँ अधिक मिलती हैं। इस कारखाने में झगड़ा करना किसी प्रकार भी कर्मचारियों के हित में नहीं। इस पर भी आज्ञा-पालन कर्तव्य मान, उसने वर्कर्ज़ की मीटिंग बुला ली। इसमें उसने बताया कि यदि प्रबोध आपको बहुत अधिक छुट्टियाँ देता है तो इसलिए नहीं कि वह आप पर कोई कृपा कर रहा है। यह इसलिए है कि उसके कारखाने में काम कम आता है और वह एक अच्छा मैनेजर नहीं है। उसकी अयोग्यता के कारण आप लोगों का वेतन कम करने का विचार किया जा रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्मचारी इस बात को मानने के लिए तैयार नहीं हुए। इस समय अमृत का कहना शिशिर को स्मरण हो आया। अमृत ने कहा था, 'जब किसी मूर्ख गँवार में उत्तेजना लानी होती है, तो उससे नारे लगवाए जाते हैं। नारे लगने से मस्तिष्क में ऐसी अवस्था उत्पन्न हो जाती है कि मूर्ख पराकाष्ठा की मूर्खता करने पर उद्यत हो जाते हैं।' यह स्मरण कर उसने कर्मचारियों से कहा, "यह ठीक है कि प्रबोध ने कुछ सुविधाएँ दे रखी हैं, परन्तु इस प्रकार वह अपनी अयोग्यता और सरमायादारी को छिपाकर आपको उल्लू बना रहा है। प्रायः सरमायादार यही करते हैं।

"देखो, मैं तुमको एक उदाहरण देता हूँ। अमरीका की फोर्ड फैक्टरी में मज़दूरों को कुछ विशेष सुविधाएँ मिल रही हैं, परन्तु उन सुविधाओं को देने का प्रयोजन कर्मचारियों को अफीम खिलाकर सदा अपने वश में रखने के तुल्य है।"

इस पर एक कर्मचारी ने कहा, "मेरे विचार में झगड़ा उन कारखाने के कर्मचारियों को करना चाहिए, जिनको हमसे अधिक कष्ट है।"

"यही तो असम्भव और अयुक्तिसंगत है। जो अच्छे लोग हैं, वही उन लोगों की अवस्था सुधारने का यत्न कर सकते हैं, जिनके पास कुछ नहीं है। आपको अच्छा वेतन मिलता है। आपके पास कुछ धन होने की आशा है। इस कारण आप ही तो मज़दूरों की लड़ाई लड़ सकते हैं।"

इस युक्ति के सम्मुख प्रश्नकर्ता चुप कर गया। वास्तव में वह इसका उत्तर नहीं जानता था। इसको सुअवसर जान शिशिर ने कर्मचारियों को जोश दिलाना आरम्भ कर दिया।

"हम मज़दूर सब भाई-भाई हैं। हमने यहाँ मज़दूरों का राज्य स्थापित करना है। इसके लिए जो सम्पन्न कर्मचारी हैं, उनको ही आगे बढ़ना चाहिए। आओ, हम सरमायादारी को जड़ से उखाड़ने के लिए एक हो जाएँ।"

इतना कह उसने नारा लगा दिया, "सरमायादारी।"

कुछ मज़दूरों ने आवेश में कह दिया, "मुर्दाबाद।"

"यह कुछ नहीं। सब मिलकर कहो, सरमायादारी।" उसने कुछ और ऊँची आवाज़ में कहा। अब बहुत से उपस्थित कर्मचारियों ने ज़ोर से कह दिया, "मुर्दाबाद।"

"मज़दूरों का हक।"

नारा लग गया—"लेकर रहेंगे।"

"मुनाफ़ाखोर।"

"मुर्दाबाद।"

इस समय सब लोग नारे लगाने लगे थे। शिशिरकुमार ने फिर कहा, "भारत-रूस मैत्री।"

"चिरंजीव हो।"

इन नारों से विचार्य विषय कि प्रबोध के कारखाने में कुछ खराबी है अथवा नहीं, विस्मरण हो गया और रूस के नमूने का मज़दूर-राज्य भारत में लाने का विचार उग्र हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया। यह निश्चय हो गया कि प्रबोध को नोटिस दे दिया जाय कि उनके वेतन में कटौती न हो और वह उनकी कौंसिल की राय की अवहेलना न करे। नोटिस इस प्रकार था, "न्यू इंडिया ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग वर्क्स को चलते हुए एक वर्ष से ऊपर हो चुका है। कारखाने में काम करने वाले कर्मचारियों को बोनस मिलना चाहिए था। इसके विपरीत सब कर्मचारियों के वेतन में कटौती की गई है।

"यह कटौती करने के लिए न तो कोई कारण है, न ही मालिकों को अधिकार है। जीवन के लिए आवश्यक वस्तुओं का दाम अभी कम नहीं हुआ, अतएव वेतन कम नहीं होना चाहिए। इस कटौती की यूनियन घोर निन्दा करती है और यदि मालिकों ने कटौती वापस न ली तो कारखाने में हड़ताल कर दी जायगी।"

यह प्रस्ताव पढ़कर सुनाया गया और नारों के घोर नाद के बीच पास कर दिया गया। अगले दिन प्रस्ताव प्रबोध की मेज़ पर रख दिया गया।

यथासमय प्रबोध ने उत्तर दिया। उत्तर था—

"मैं स्वयं मज़दूर हूँ और मज़दूरों के हित मुझको सदा प्रिय रहे हैं। यही कारण है कि मैंने अपने कारखाने के कर्मचारियों को बाहर के कारखानों से अधिक वेतन और सुविधाएँ दे रखी हैं। इस वर्ष कारखाने में हानि हुई है, इस कारण वेतन और अन्य सुविधाएँ कुछ सीमा तक कम करनी पड़ी हैं। मेरा विचार है कि कर्मचारियों को अगले वर्ष तक प्रतीक्षा करनी चाहिए। आपको मेहनत् और समझ-बूझ से काम करना चाहिए, जिससे कारखाने में लाभ हो और आपको अधिक वेतन और भत्ता देने पर विचार किया जा सके।"

इस उत्तर पर यूनियन में विचार हुआ और यह निश्चय कर दिया गया कि पन्द्रह दिन का नोटिस दिया जाय। उसमें माँगों को दुहराया जाय और लिख दिया जाय कि स्वीकार न होने पर हड़ताल कर दी जायगी।

यह नोटिस प्रबोध को मिला तो वह अवाक् रह गया। वह स्वयं शिशिरकुमार से मिला और उसने उसको बताया, "मैं अपने कर्मचारियों को अन्य कारखानों के कर्मचारियों की भाँति केवल वेतन ही नहीं देता प्रत्युत् इसके साथ उनके परिवार की सदस्य-संख्या पर अलाउन्स भी देता हूँ। प्रत्येक कर्मचारी का एक आधारभूत वेतन है। वह वेतन योग्यता और कार्यानुसार न्यूनाधिक होता है। साथ ही प्रत्येक कर्मचारी को उसके आश्रितों की संख्या के अनुसार भत्ता भी देता हूँ। वास्तव में मैंने वह भत्ता ही कम किया है। पहले प्रत्येक सज्ञान आश्रित के लिए बारह रुपए मासिक देता था, अब वह आठ रुपए कर दिया है। प्रत्येक अल्पवयस्क बच्चे के लिए सात रुपए मालिक देता था, अब वह पाँच रुपए कर दिया है। आधारभूत वेतन कम नहीं किया।"

शिशिर ने यह सब बात सुनी तो अवाक् रह गया। जहाँ इस प्रकार की सुविधाएँ मिलती हों, वहाँ झगड़ा करना उसको उचित प्रतीत नहीं होता था। इस पर भी वह जो-कुछ कर रहा था, स्वयं विचारकर तो नहीं कर रहा था। यह सब वह हाई कमाण्ड की आज्ञानुसार कर रहा था। यदि उसके अपने बस की बात होती तो वह उसी समय किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकार का समझौता कर लेता, परन्तु वह विवश था। उसने कह दिया, "मैं आपकी ये बातें हाई कमांड के सामने रख दूँगा।"

"उत्तर कब तक आएगा?"

"यह मैं कैसे बता सकता हूँ?"

"तो उत्तर आने तक हड़ताल नहीं की जाएगी न?"

"इस विषय में अभी कुछ नहीं कह सकता।"

"तो काम कैसे चलेगा?"

"जैसे चल रहा है।"

"मैं इसका मतलब नहीं समझा। हड़ताल हो गई तो काम कैसे चलेगा?"

"आप कर्मचारियों को कह दीजिए कि उनकी माँग पर विचार किया जा रहा है।"

"विचार करने का तो प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता। लाभ हुआ ही नहीं। वेतन, जो बहुत अधिक है, दिया नहीं जा सकता। मैं तो यह लिख रहा हूँ कि यदि मेरे हिसाब में यूनियन को सन्देह है तो वह मेरी किताबें देख सकती है।"

"किताबें तो बनाई जा सकती हैं।"

"जब आप मुझ पर विश्वास ही नहीं करते तो फिर मैं क्या कह सकता हूँ? इससे मुझको हानि होगी, परन्तु मज़दूर भी लाभ नहीं उठा सकेंगे।"

"आप ठीक कहते होंगे। परन्तु मज़दूर-वर्ग को इस बात का विश्वास कैसे हो सकता है?"

"यह आप कराइए।"

इस बातचीत का कुछ भी परिणाम नहीं निकला और निश्चित दिन कारखाने में पूर्ण हड़ताल हो गई। हड़ताल होने पर प्रबोध एक-एक कर्मचारी से मिला। प्रायः सब मिलने वाले प्रबोध की बात को मानते थे, परन्तु अगले दिन जब सब मिलकर नारे लगाते तो प्रबोध की बातों को भूल जाते थे।

हड़ताल चलती रही। जब कर्मचारी आतुर हो गए और बहुतों के घर खाने को नहीं रहा तो यूनियन के कर्मचारी प्रबोध से वार्त्तालाप करने के लिए तैयार हो गए। यह वार्त्तालाप भी पन्द्रह दिन चलता रहा और फिर एकाएक हड़ताल का समाचार नीलादेवी को मिल गया। इसका परिणाम यह हुआ कि प्रबोध के पिता को सूचना मिल गई और दोनों के प्रयत्न से हड़ताल का अन्त उस प्रकार हुआ, जिसकी आशा यूनियन के अधिकारी नहीं करते थे और न ही कर्मचारी उसके लिए तैयार थे।

यूनियन और कम्युनिस्ट पार्टी में शिशिरकुमार कड़ी का काम करता था। वह आरम्भ से ही हड़ताल को अनुचित समझता था। ज्यूँ-ज्यूँ पार्टी उसको वह काम करने को कहती, जिसको उसकी बुद्धि उचित नहीं समझती थी, उसके मन पर एक विशेष प्रकार का प्रभाव उत्पन्न होता चला जाता था। अनुशासन में बँधा हुआ वह हड़ताल का संचोलन कर रहा था, परन्तु वह मन-ही-मन समझ रहा था कि सब-कुछ अनुचित हो रहा है। वह जानता था कि हड़ताल का प्रभाव उन पर नहीं हो रहा जो इसको चलाने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज्ञाएँ दे रहे हैं। वह यह भी समझता था कि कर्मचारी तो बेचारे भावुकता के अधीन व्यर्थ की यन्त्रणा सह रहे हैं। वे न तो समझने की योग्यता रखते थे और न ही उनको समझने का अवसर दिया जाता था। नारों और जोशीले व्याख्यानों के प्रभाव में वे असल बात का ध्यान छोड़कर मज़दूर-राज्य स्थापित करने की बातें करने लग जाते थे।

अब कारखाना बिक गया। प्रबोध बेकार हो गया। सब कर्मचारी नौकरी से निकाल दिए गए। तीन कर्मचारी मारे गए और बीस के लगभग घायल हो गए।

नीला ने पुराने कर्मचारियों को पुनः नौकरी दिलाने के लिए यत्न करने का आश्वासन दिया। इस पर भी हाई कमाण्ड की आज्ञा हुई कि कारखाने की बिक्री पर कचहरी से निषेधाज्ञा ली जाय। इस आज्ञा को पाकर तो शिशिर हताश हो गया। उसने हाई कमांड की आज्ञा मानते हुए निषेधाज्ञा के लिए प्रार्थना तो कर दी, परन्तु उसका कम्युनिस्ट कार्य-विधि पर विश्वास उठ गया।

आज वह कचहरी से सीधा सुशील की कोठी पर चला गया। उसका मन पार्टी के कार्यालय में जाने को नहीं किया। सुशील ने उसको धम से कुरसी पर बैठते देख चिन्ता में पूछा, "शिशिर, क्या बात है ? स्वास्थ्य तो ठीक है ?"

"मैं अति विक्षुब्ध हूँ। मैं नहीं जानता किं क्या करूँ। इस हड़ताल में मैंने अपनी आत्मा की हत्या की है।"

"क्यों ?"

"मैं जानता था कि लखनऊ में यदि कोई कारखाना है, जहाँ कर्मचारियों को उचित सुविधाएँ मिल रही थीं, तो वह प्रबोध का कारखाना है। वहाँ हड़ताल कराने के लिए कोई कारण नहीं था, परन्तु अनुशासन के बल पर मुझसे वह सब-कुछ कराया गया, जो मैं नहीं करना चाहता था। आज यह मुकद्दमा करना भी मुझको अयुक्ति-संगत व्यवहार प्रतीत हुआ है। मैं यह करना नहीं चाहता था। यह कारखाने के नए मालिकों को व्यर्थ में तंग करने के विचार से है। वर्तमान कर्मचारियों को इससे कुछ भी लाभ की आशा नहीं। जो उनमें से नौकरी पाने वाले थे, वह मुकद्दमा समाप्त होने तक अभी और बेकार रहेंगे।

"मुझको सबसे अधिक खेद यह सुनकर हुआ है कि मज़दूरों को यह कष्ट इस कारण दिया जा रहा है कि सरकार बदलकर कम्युनिस्टों के हाथ में आ जाय, अर्थात् राजनीतिक शक्ति हथियाने के लिए मज़दूरों को हथियार बनाया जा रहा है।"

"तो फिर क्या करना चाहते हो ?"

"मैं बीमार होकर तुम्हारे हस्पताल में प्रवेश पाना चाहता हूँ।"

"इससे क्या होगा ?"

"यह काम मेरे हाथ से लेकर किसी दूसरे के हाथ में दे दिया जायगा।"

"पर दूसरी ओर भी तो कुछ हो रहा है, वहाँ क्या करोगे ? हस्पताल में लेटने से वहाँ कैसे काम चलेगा ?"

"कहाँ, क्या हो रहा है ?"

"कल अमृत की चिट्ठी उसके पिता को मिली है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या लिखा है उसने ?"

"लिखा है कि वह अब बालिग हो गई है। अब अपना विवाह स्वयं करने में स्वतन्त्र है। यदि उसके माता-पिता उसके भागने को क्षमा कर दें, तो वह लौट आयगी।"

शिशिर इस समाचार को सुनकर अवाक् रह गया। वह इसका अर्थ समझने का यत्न करने लगा। जब उसने इस पर विचार किया तो उसको यह समाचार अति भयानक प्रतीत हुआ।

वह दो मास तक हड़ताल के काम में लीन रहने के कारण अमृत की सुध-बुध ही भूल गया था। उसको ऐसा प्रतीत हुआ कि कदाचित् अमृत उसकी प्रतीक्षा करते-करते थककर यह समझी है कि वह भी उसको हवा में लटकती छोड़ छिपकर बैठ गया है।

उसने और अधिक जानने के लिए पूछा, "तुम्हें यह समाचार किसने दिया है ?"

"नीलादेवी ने कल बताया था—उसको हरभजनसिंह ने बताया है। चिट्ठी में लिखा है कि यदि उसके माता-पिता उसको क्षमा कर रहे हैं, तो वे अपनी इस बात को अपने सम्बन्धियों और मित्रों में घोषित कर दें। इससे उसको विदित हो जायगा और वह लौट आएगी।"

"तो उसने अपना पता नहीं लिखा ?"

"नहीं। यह पत्र भी कलकत्ता से आया है।"

"मुझको मौसी का पत्र पाँच-छः दिन हुए मिला था। उसमें उन्होंने पिछले मास मेरे बर्दवान न जाने के लिए डाँट बताई है। वे अमृत को लेकर कलकत्ता गई थीं। ऐसा प्रतीत होता है कि उसने वह चिट्ठी वहाँ से ही लिखी है।"

"तो भाग जाओ। मुझको कुछ गड़बड़ प्रतीत होती है। मैं अभी उसका लखनऊ आना पसन्द नहीं करूँगा। अभी मेरे विवाह में पाँच दिन बाकी हैं। उसको तब तक वहाँ रोको।"

"अपने विवाह का एक निमन्त्रण-पत्र मिस्टर तथा मिसेज़ शिशिर के नाम दे दो। इससे उसको यहाँ आने से रोकने में सहायता मिलेगी।"

सुशील ने छपा निमन्त्रण-पत्र दे दिया। उस पर शिशिर तथा उसकी पत्नी का नाम लिख दिया।

: १४ :

जब वढ़ियामसिंह ने यह विख्यात करना आरम्भ किया कि अमृत आएगी और अपनी इच्छा से विवाह करेगी तो यह सूचना गुरुद्वारा कमेटी के मन्त्री सरदार कर्तारसिंह को भी पहुँच गई। वह एक दिन सरदार वढ़ियामसिंह से मिलने आया। उसने कुछ काल तक इधर-उधर की बात कर अमृत की बात चला दी, "सुना है अमृत का पत्र आया है ?"

"हाँ, उसने लिखा है कि अब वह बालिग हो गई है। इस कारण यदि उसको विवाह अपनी रुचि अनुसार करने की स्वीकृति दे दी जाय तो वह लौट आएगी।"

"इस सबकी अब क्या आवश्यकता है ? जहाँ तीन महीने वह रही है, वहीं रहती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुई विवाह क्यों नहीं कर लेती ? अपना मुख काला कर और हमको अपमानित कर, वह यहाँ आकर क्या करेगी ?"

"मैं ऐसा नहीं समझता। उसकी इच्छा के बिना हम विवाह करने लगे थे, इस कारण वह यहाँ से चली गई थी। वह नाबालिग होने के कारण अपनी बात मनवा नहीं सकती थी। अब वह अपने मन की बात करने में स्वतन्त्र है। इस कारण लौट आने में उसको कोई हानि प्रतीत नहीं हुई।"

"बात तो एक ही है, भाई साहब !"

"कुछ भी समझो।"

"चिट्ठी कहाँ से लिखी है ?"

"कलकत्ता से।"

"तो कब तक आ रही है ?"

"मेरा विचार है कि एक-दो दिन में आ जाएगी।"

"तो आप उसको अपने घर में रख लेंगे ?"

"क्यों न रखूँगा ? आखिर तो वह मेरी लड़की ही है।"

"तो आप उसका विवाह करेंगे ?"

"हाँ, यदि उसका चुनाव हमको पसन्द आया तो इसमें क्या हानि है ?"

"तो आप उसको अपनी सम्पत्ति में से भाग भी देंगे ?"

"यह तो मेरे मरने के समय विचार करने की बात है। साथ ही अभी इस विषय में कुछ कहना कठिन है।"

वह सुनकर सरदार कर्तारसिंह गम्भीर विचार में डूब गया। इस पर सरदार वढ़ियामसिंह ने पूछा, "क्या बात है सरदार साहब ?"

"बात यह है कि मैंने प्रीतमसिंह को लिखा था कि अमृत का पत्र आया है और उसने लिखा है कि मैं पता करूँ कि वह कहाँ है। वह वहाँ जाकर उससे मिलकर स्वयं बातचीत करना चाहता था। मैं भी यही समझता हूँ कि यदि उसका विवाह उससे ही हो जाय तो बहुत ठीक होगा। प्रीतमसिंह का विचार है कि वह अब अपनी अवस्था से निराश हो चुकी है और वह उसको अपने से विवाह करने के लिए राज़ी कर लेगा।"

इस बात को सुनकर वढ़ियामसिंह को आश्चर्य हुआ। उसने पूछा, "सरदार कर्तारसिंह, क्या प्रीतमसिंह को वह अब भी भली प्रतीत होती है ?"

"आजकल के लड़के हैं, वे हमारे युग के नहीं हैं।"

"परन्तु जब हरभजनसिंह ने केश कटवाए थे, तब तो तुम कहते थे कि मुझे उसको फारख़ती दे देनी चाहिए। अब अपने लड़के की सिफारिश करने क्यों चले आए हो ?"

"केवल इसलिए कि खून पानी से गाढ़ा होता है।"

"ओह, समझ गया, कर्तारसिंह, तुम्हारा मतलब यह है कि मैं मूर्ख था, जो तुम्हारे कहने पर लड़के से बोलना बन्द कर बैठा था।"

"पर फारख़ती तो नहीं दी न ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह इसलिए कि हरभजन की माँ, भागन, मुझसे अधिक बुद्धि रखती थी।"

"कुछ भी कहो वढ़ियामसिंह, अब लड़की के भाग जाने के पश्चात् उससे जो कोई भी विवाह करने का विचार करेगा, वह प्रशंसा का पात्र माना जायगा।"

"अच्छी बात है। मैं तुम्हारा धन्यवाद करता हूँ। तुमने मेरी आँखें समय पर ही खोल दी हैं। प्रीतमसिंह को लिख दो कि जब अमृत लखनऊ आ जायगी तो वह आ जाय और उसको मना ले।"

"मेरा तो केवल इतना ही मतलब है कि अब भी यदि वह गुरुमुख हो सके तो अच्छा ही है। यदि वह प्रीतम को पसन्द न करे तो किसी अन्य गुरु के प्यारे युवक से उसकी भेंट करा देना। वाहेगुरु सहायता करेगा।"

परिणाम यह हुआ कि वढ़ियामसिंह जहाँ अमृत के लौटने की प्रतीक्षा करने लगा, वहाँ वह किसी सिख लड़के की, जो उसको पसन्द आ सके, खोज भी करने लगा। रह-रहकर उसके मन में विचार उठ रहा था कि जिसके साथ वह भागकर गई थी अब उससे लड़कर लौट रही है और अब उसको विवाह पर राज़ी कर लेना सुगम होगा।

जब एक बार बात आरम्भ हुई तो कई सिख लड़के धनी बाप की लड़की से विवाह करने के लिए तैयार होने लगे।

अमृत पत्र आने के दस दिन पश्चात् लौट आई। प्रातः बनारस से तार आया कि वह देहरादून एक्सप्रेस से लखनऊ पहुँच रही है। उसको लेने के लिए स्टेशन पर हरभजनसिंह को भेजा गया। अमृत के माता-पिता ने स्वयं जाना उचित नहीं समझा। हरभजनसिंह अपनी मोटर लेकर स्टेशन पर जा पहुँचा। वह यह जानना चाहता था कि अमृत अकेली आती है अथवा कोई अन्य भी उसके साथ आता है।

जब अमृत अकेली फर्स्टक्लास के डिब्बे से निकली तो उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा। अमृत न केवल फर्स्टक्लास के डिब्बे से निकली थी, प्रत्युत उसके साथ एक बड़ा-सा बिस्तर और एक चमड़े का सूटकेस भी था। साथ ही वह बढ़िया रेशमी सूट पहने थी। इसके अतिरिक्त उसके मुख पर किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं आया था। हरभजनसिंह को अब भी वह पहले की भाँति प्रसन्नवदन और तरो-ताज़ा प्रतीत हुई थी। उसको किसी प्रकार से भी वह पतित हुई दिखाई नहीं देती थी। उसकी आँखें अभी भी रोशन थीं और पहले की भाँति बेधड़क थीं।

अमृत ने हरभजन को पहले देखा। उसने हाथ जोड़कर सत्श्री अकाल कही तो हरभजन उसके डिब्बे के बाहर जा खड़ा हुआ। वह गाड़ी से उतरी तो उसने स्नेह से अपने साथ लगाकर उसके सिर पर प्यार दिया। उसने पूछा, "तो तुम आ गई हो अमृत? कैसी हो?"

"भैया, आप ठीक हैं!" इतना पूछते-पूछते उसकी आँखें तरल हो उठीं।

"हाँ, हम सब ठीक हैं।"

"भापाजी और मम्मी?"

"ठीक हैं। तुमने बहुत अच्छा किया है जो आ गई हो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब दोनों मोटर में सवार होकर घर को आ रहे थे तो अमृत ने पूछा, "भैया, तुम्हारा विवाह ?"

हरभजनसिंह ने मुस्कराते हुए उसकी आँखों में देखकर कहा, "अभी नहीं।"

"तो अभी आपने निश्चय नहीं किया ?"

"फिर बताऊँगा। पहले तुम बताओ। यह इतना सामान कहाँ पा गई हो ?"

"मैं अपनी एक सहेली की मौसी के घर पर ठहरी हुई थी। वह मुझसे बहुत स्नेह करती थी। सब उसने ही दिया है।"

"पर यह कहानी क्या है ? तुम्हारी चिट्ठी आई कलकत्ता से, तुम्हारा तार आया बनारस से और तुम आ रही हो बर्दवान से।"

"यदि यह न करती तो पिताजी वहाँ जाकर पकड़ न लेते और···"

"और क्या ?"

"कह नहीं सकती। कदाचित् मेरा भ्रम ही हो। मुझको विश्वास-सा हो गया था कि ज़बरदस्ती मेरा विवाह कर देते।"

"और हम कहाँ चले जाते ?"

"तो आप मुझको बचाते ?"

"क्यों नहीं ? मैं जान लड़ा देता और तुम्हारी इच्छा के बिना तुम्हारा विवाह न होने देता।"

"सच ? मुझको पता नहीं था। खैर, अभी भी कुछ हानि नहीं हुई।"

"अच्छा यह तो बताओ कि तुमको हमारे विचारों का पता कैसे चला ?"

"मेरी सहेली आपके विचारों की टोह लेती रहती थी।"

"तुम्हारे इस प्रकार घर से लापता हो जाने से घर की बदनामी बहुत हुई है।"

"तो आप सबको मेरे जाने से बहुत कष्ट हुआ प्रतीत होता है ?"

"अब जो हुआ सो हुआ। पहले तुम बताओ कि तीन महीने वहाँ कैसे व्यतीत हुए हैं ?"

"मुझको शारीरिक कष्ट तो किंचिन्मात्र भी नहीं हुआ। मानसिक दुःख अवश्य था। इसी कारण आवश्यक अवधि समाप्त होते ही लिखा था।"

"कुछ भी कहो, यह सब ठीक नहीं हुआ। नीलादेवी भी तुम्हारे व्यवहार को पसन्द नहीं करती थीं।"

"अब तो हो गया। आप अब मेरा क्या करने जा रहे हैं ?"

"यह तो तुम उनसे पूछना, जिनके घर चल रही हो। मेरा अपना घर अभी कोई नहीं बना।"

"दिल्ली के प्रोफ़ेसर साहब की लड़की का क्या हुआ ?"

"उसको तुम्हारे भाग जाने का पता चला तो उसने किसी अन्य से विवाह कर लिया।"

"और प्रबोधजी की बहन माधुरी का क्या विचार मालूम होता है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह तो ठीक है, परन्तु मेरा, बहुत जाँच-पड़ताल के पश्चात् लीलावती का चुनाव था।"

"सुशील का भी तो विवाह हो रहा है ?"

"कल होने वाला है।"

"हाँ, मुझको भी निमन्त्रण मिला है।"

"सच ? उसको तुम्हारा पता मालूम था क्या ?"

"नहीं, मेरी सहेली ने, जो सुशील को जानती है, निमन्त्रण लेकर भेजा था।"

इससे हरभजनसिंह गम्भीर विचार में पड़ गया।

इस समय मोटर कोठी में पहुँच गई थी। अमृत मोटर से उतरकर सीधी पिताजी के कमरे में चली गई। वहाँ उसकी माँ और पिता दोनों उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। अमृत ने पहुँचकर दोनों के चरण-स्पर्श किए और हाथ जोड़कर सत्‌श्री अकाल बुलाई।

"यह कहाँ से सीख आई हो ?" वढ़ियामसिंह ने पूछा।

"जिनके यहाँ तीन मास तक रही हूँ, वहाँ सब छोटे बड़ों के चरण-स्पर्श करते हैं।"

"ओह, आओ बैठो।" वढ़ियामसिंह ने कहा, "सुनाओ, कहाँ और कैसे रही हो ?"

अमृत बैठ गई। उसके माता-पिता भी बैठ गए। इस समय तक हरभजनसिंह भी सोहनू के हवाले सब सामान कर वहाँ चला आया था। उसने आते ही कहा, "यह लम्बी यात्रा से आई है। बहुत थकी हुई प्रतीत होती है। इसको आराम करने देना चाहिए।"

"नहीं भैया !" अमृत ने कहा, "कल मैं मिस्टर सुशील के विवाह पर जाना चाहती हूँ। नहीं जानती कि कितना समय लगेगा। मैं चाहती हूँ कि पिताजी को आज ही मेरे विषय में अपने विचार बना लेने दूँ।"

"मैंने विचार क्या बनाना है ? तुमने लिखा है कि तुम अपनी इच्छा से विवाह करोगी, सो कर लेना। मुझको आपत्ति नहीं होगी। यहाँ की परिस्थिति यह है कि तुम्हारी सब करतूत का ज्ञान होने पर भी लोग उसको भूल जाना ही ठीक समझेंगे। मेरे धन का, जो मैं तुम्हारे विवाह पर देने वाला हूँ, लोभ बहुत भारी है।"

"भैया तो कहते थे कि मेरे घर से जाने पर घर-भर का भारी अपमान हुआ है।"

"यह तो है ही, परन्तु वह अपमान मैं अपने धन से ढाँप रहा हूँ। मैंने यह घोषणा कर दी है कि मैं तुम्हारे विवाह पर दो लाख रुपए देने वाला हूँ।"

"दो लाख ?" अमृत ने आश्चर्य से अपने पिता के मुख पर देखते हुए कहा, "आपने यह घोषणा कर मेरे साथ भारी अन्याय किया है।"

"क्या अन्याय किया है ? मैंने तुम्हारी रक्षा के लिए घर को लुटा दिया है।"

"जिसको रक्षा की आवश्यकता नहीं, उसकी रक्षा पर कुछ भी व्यय करना उसको दुर्बल सिद्ध करना है। आपने यह घोषणा कर मेरे व्यवहार को अपमानजनक मान लिया है। मुझको आपकी सूझ-बूझ पर भारी खेद है। जितने भी लोग इस इनाम की सूचना पाकर मुझसे विवाह करने आएँगे, मुझे आवारा समझकर ही आएँगे। नहीं पिताजी, यह नहीं होगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो क्या होगा ?"

"मैं यहाँ से एक पाई का भी दहेज लेकर नहीं जाऊँगी। किसी को मुझसे विवाह करना है करे, नहीं करना है न करे। केवल इतना ही नहीं, प्रत्युत मैं यह बात भी स्पष्ट कर दूँगी कि मैं आपसे जीवन-भर एक कौड़ी भी नहीं लूँगी। आपको देने की जब बुद्धि ही नहीं तो लेकर क्या करूँगी। यदि अब भी आपका विचार मुझको घर पर रखने का बदल गया हो तो बता दीजिए। मैं किसी अन्य स्थान पर चली जाऊँगी।"

"कहाँ चली जाओगी ?"

"अभी तो कार्लटन होटल में जाऊँगी। कल तक किसी अन्य स्थान पर प्रबन्ध कर लूँगी।"

वढ़ियामसिंह भौंचक्का हो मुख देखता रह गया। उत्तर हरभजनसिंह ने दिया। उसने कहा, "मैं समझता हूँ कि अमृत ने पिताजी का आशय नहीं समझा। पिताजी ने उसके दहेज की घोषणा कर कुछ भी बुरी बात नहीं की। इससे किसी अच्छे वर के मिल जाने की सम्भावना अधिक हो गई है।"

"भैया, जो रुपए के लोभ से विवाह करने आएँगे, वे अच्छे होंगे क्या? नहीं भापाजी," उसने अपने पिता को सम्बोधन कर कहा, "मेरे विवाह पर एक पाई भी व्यय नहीं होगी।"

"तो विवाह कहाँ होगा ?"

"यह तो मैं अभी नहीं जानती।"

अमृत ने समझा कि उसने अपने मन की बात अपने माता-पिता से कह दी है। इसके पश्चात् वह उनको विचार करने के लिए समय देना चाहती थी। अतएव वह उठ पड़ी और यह कह, "अब मैं आराम करना चाहती हूँ" अपने कमरे में चली गई। हरभजनसिंह उसके पीछे-पीछे जा पहुँचा। अमृत ने अपना सूटकेस खोलकर स्नान के लिए सामान निकाल लिया और स्नानागार में चली गई। हरभजनसिंह वहीं बैठा उसकी प्रतीक्षा करता रहा। उसने उसका बिस्तर, जो सोहनू ने खोल दिया था, देखा तो चकित रह गया। उसके बिस्तर में एक रईस के योग्य सामान था। उसका अनुमान था कि शॉल, जो रात को उसके ओढ़ने के लिए था, कम-से-कम पाँच सौ रुपए के मूल्य का अवश्य था। वह मन में विचार करने लगा था कि यह कौन सहेली हो सकती है, जिसकी मौसी ने इसको इतना कीमती सामान दिया है। जब सोहनू बिस्तर में से कपड़े निकाल झाड़ चुका तो उसने पलँग पर बिस्तर लगा दिया। इस समय हरभजनसिंह ने सोहनू से कहा, "जाओ, हम दोनों के लिए खाना यहीं ले आओ।"

सोहनू खाना लेने चला गया। अमृत स्नान कर, कपड़े पहन, बाहर निकली तो हरभजन ने देखा कि वह बहुत बढ़िया रेशम के कपड़े पहने हुए है। वह चकित रह गया। उसने पूछा, "अमृत, ये कपड़े तुम्हारी सहेली की मौसी ने ही दिए हैं ?"

"हाँ भैया, पर ये तो कुछ भी नहीं। और भी बहुत-कुछ दिया है। आप देखेंगे कि मुझको क्या-क्या दिया है ? जब उनको पता चला कि मैं सुशील के विवाह पर आ रही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हूँ तो उन्होंने पहनने को भूषण भी दिए हैं। जब मैंने लेने से इन्कार किया तो उन्होंने कहा कि विवाह के पीछे वापस भी कर सकती हूँ।"

इतना कह अमृत ने भूषणों का डिब्बा खोलकर दिखाया। देखकर हरभजनसिंह की आँखें चकाचौंध रह गईं। इस समय सोहनू खाना लेकर आ गया। इस कारण हरभजनसिंह ने और कुछ नहीं कहा। इस पर भी वह मन-ही-मन इस सबमें किसी रहस्य की सम्भावना मान रहा था। ये भूषण इत्यादि बीस-तीस सहस्र से कम का सामान नहीं था।

भोजन करने के पश्चात् जब सोहनू चला गया तो उसने अपने मन में उठ रहे सन्देहों को कह दिया, "अमृत, मुझको कुछ ऐसा प्रतीत हो रहा है कि इतनी कीमती भेंटें अकारण नहीं दी जा सकतीं?"

"हो सकता है कि मौसी का इसमें कुछ उद्देश्य हो। परन्तु जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मैंने इनके पाने के लिए किसी प्रकार का न तो वचन दिया है और न ही कुछ भी प्रतिकार दिया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चार

: १ :

इस बार शिशिरकुमार बर्दवान पहुँचा तो अमृत को बहुत ही अधीर देख विस्मय करने लगा। उसने पूछा, "अमृत, क्या बात है कि तुमने पत्र लखनऊ भेज दिया है?"

"मुझको यहाँ आए तीन मास से ऊपर हो गए हैं। मेरे यहाँ आने से सुशील बाबू के मन में भारी परिवर्तन हो गया है। इस कारण मैं समझती हूँ कि मुझको अब अपने भविष्य के विषय में कुछ-न-कुछ निर्णयात्मक कार्य करना चाहिए। जिस प्रयोजन से मैं यहाँ आई थी, अर्थात् बालिग होने तक छिपकर रहना, वह पूर्ण हो गया है। अब आप आ गए हैं तो उस पत्र की, जो मैंने पिताजी को लिखा था, प्रतिक्रिया भी लाए होंगे?"

"हाँ, नीला के द्वारा यह पता चला है कि तुम्हारे पिता तुम्हारी बात को मानने के लिए तैयार हैं और वे तुमको अपने घर रखने के लिए तैयार हैं।"

"तो ठीक है, अब मुझको जाना ही चाहिए।"

"तो मेरा और मौसी का क्या बनेगा?"

"यह अब आप पर निर्भर है। आप क्या करना चाहते हैं?"

"देखो अमृत, सुशील का तो विवाह हो रहा है। मेरा विचार है कि तुम उस ओर से बन्धन-मुक्त हो गई हो। अब यदि तुम मुझसे विवाह करने के लिए तैयार हो जाओ तो इसकी विधि विचारी जा सकती है।"

"मैं आपकी मौसी की पतोहू बनने के लिए तो तैयार हूँ, परन्तु आपकी बहू तो आपके बनाने से ही बन सकती हूँ।"

"ओह, धन्यवाद अमृत, तो आज रात ही हमारा विवाह हो जायगा।"

"वाह, मेरे कहने का यह अभिप्राय कैसे हो गया? मेरा मतलब यह है कि इस उद्देश्य से हमको अपनी योजना बनानी चाहिए। विवाह तो विधिपूर्वक ही होगा।"

शिशिर मुख देखता रह गया। इस पर अमृत ने अपनी योजना बता दी। उसने कहा, "आप अपनी मौसी से यह कहकर कि मुझको सुशील के विवाह पर जाना है, मेरी लखनऊ जाने की तैयारी करा दीजिए। वहाँ चलकर विवाह का प्रबन्ध मैं कर लूँगी।"

"बात तो ठीक है। तो मैं आज ही मौसी से कहकर प्रबन्ध करवाता हूँ।"

उसी रात शिशिर ने मौसी से कह दिया, "मौसी, सुशील को तो जानती हो न! उसका विवाह होने वाला है और उसने मुझको बहू सहित विवाह में सम्मिलित होने का निमन्त्रण दिया है। बहू की भी इच्छा है कि विवाह में जाय। सुशील से उसका परिचय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी है।"

अमृत समीप ही बैठी थी, इस कारण मौसी ने उससे पूछा, "क्यों बहू? क्या विचार है?"

"माँजी आज्ञा देंगी तो अवश्य जाऊँगी।"

"जाओ बेटा, उसको मेरी ओर से बधाई देना और उसकी बहू के लिए यहाँ से कुछ, जो मन करे, भेंट भी लेते जाना।"

"मैं आपकी बहुत ही आभारी हूँ।" इतना कह उसने मौसी के चरण-स्पर्श किए। प्रतिमादेवी ने सिर पर हाथ फेरकर आशीर्वाद देते हुए पूछा, "तो कब जाओगी और कब तक लौटोगी?"

"जब आप कहेंगी और जब तक वहाँ रहने की आज्ञा देंगी, तब तक ही रहूँगी।"

"कहाँ ठहरोगी, वहाँ?"

"जहाँ ये रखेंगे।"

"देखो शिशिर, सुशील के घर तो एक-आध दिन से अधिक नहीं रहना। यदि और रहने की आवश्यकता हो तो किसी अच्छे-से होटल में रह जाना।"

शिशिर ने सुशील के विवाह का निमन्त्रण-पत्र देखकर बताया, "मौसी, आज है दो तारीख़। हम कल यहाँ से पंजाब मेल से जाएँगे और परसों लखनऊ पहुँच जाएँगे। चौथे दिन विवाह है। हम होटल में ठहरेंगे और वहाँ से उसकी बरात में शामिल होंगे। विवाह छः तारीख को समाप्त हो जायगा और हम आठ तारीख को वहाँ से चलकर नौ को बर्दवान पहुँच जाएँगे।"

"बहुत ठीक। मैं नौ तारीख़ को तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगी।"

इस प्रकार योजना का प्रथम चरण तो निश्चित हो गया। अगले दिन वे पंजाब मेल से चल पड़े, परन्तु अमृत बनारस स्टेशन पर उतरकर, पीछे आने वाली देहरादून एक्सप्रेस में सवार होकर लखनऊ पहुँच गई। बनारस में उसको तीन घंटे का अवसर मिल गया और उसने वहाँ के तार-घर से एक तार अपने पिताजी को दे दिया।

अगले दिन स्नानादि से निवृत्त हो, प्रातः का अल्पाहार कर अमृत सुशील के घर जा पहुँची। उसने वहाँ पहुँच सुशील से मिलने की इच्छा प्रकट की। सुशील अमृत के वापस आने के विषय में नहीं जानता था, इस कारण बाहर आ जब उसने अमृत को देखा तो अवाक् रह गया। उसका विचार था कि शिशिर उसको विवाह तक रोकने का प्रबन्ध कर लेगा। अमृत उसको चुप खड़े देख बोली, "क्यों, क्या बात है सुशील बाबू? झेंप क्यों गए हैं? मैं आपको विवाह से रोकूँगी नहीं। शिशिर बाबू की मौसी ने आपकी बहू के लिए भेंट भेजी है। वह मैं देने आऊँ अथवा नहीं?"

"शिशिर भी आया है, अथवा अकेली आई हो?"

"शिशिर बाबू भी आए हैं, यद्यपि मैं यहाँ अकेली आई हूँ।"

"मेरा विचार है कि मौसी की भेंट तुम शिशिर के हाथ भेज देना।"

अमृत इसका अर्थ नहीं समझ सकी। इस पर भी उसके मन में सुशील के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारी घृणा उत्पन्न होने लगी थी। अतः वह उसको वहीं खड़े छोड़ और बिना एक शब्द भी और कहे चल पड़ी। वह सुशील से मिलने तो इस कारण गई थी कि उसको जली-कटी सुनाएगी, परन्तु उसको आँखें झुकाए सामने खड़े देख उसके मन में ग्लानि उत्पन्न होने लगी थी और वह उसको वैसे ही खड़े छोड़ चली आई। वहाँ से वह नीलादेवी से मिलने के लिए उसके क्लिनिक में जा पहुँची। उसका विचार था कि नीला से मिलने के पश्चात् वह अपने भाई से कहकर शिशिर को बुला भेजेगी। जब वह नीला के क्लिनिक में पहुँची तो वह उसको एक आदमी से बातें करते देख झिझककर खड़ी रह गई। वह दूकान के दरवाज़े में खड़ी उसको देख रही थी कि नीला की दृष्टि उसकी ओर चली गई। नीला अमृत को पहचान एक क्षण तो विस्मय में देखती रह गई और फिर लपककर उसकी ओर आई और उससे गले मिलने लगी। जब मिल चुकी तो उसने पूछा, "कब आई हो?"

"कल सायंकाल पहुँच गई थी।"

"कहाँ गई थीं?"

अमृत हँस पड़ी। नीला समझ गई कि वह बताना नहीं चाहती। इस पर उसने कहा, "अच्छा, आओ बैठो। इनसे एक बात कर लूँ तब तुमसे ही बातचीत करूँगी।"

इतना कह उसने अमृत की बाँह में बाँह डाली और उसको अपने समीप एक कुरसी पर ले जाकर बिठा दिया। पश्चात् वह पुनः उसी आदमी से बात करने लगी, जिससे अमृत के आने से पहले वह कर रही थी। उस आदमी ने कहा, "हाँ, तो मैं बता रहा था कि ज्यूँ ही शिशिर बाबू आया, मैं भागा हुआ थाने में गया और वहाँ से पुलिस लेकर कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यालय पर जा पहुँचा और शिशिर को पकड़वा दिया। अब वह हवालात में है। आज उसकी मजिस्ट्रेट के सामने पेशी होगी। मैंने पुलिस वालों को कहा है कि आज ज़मानत न होने पाए। वे मजिस्ट्रेट से रिमांड माँगेंगे।"

"यह तो अच्छा हुआ।" नीला ने सुख की साँस लेते हुए कहा, "अब इंजंक्शन के मुकद्दमे में क्या होना है?"

"हमने जवाब-दावा तैयार कर लिया है। इसके बाद दो-तीन दिन की पेशी पड़ेगी। तब तक विचार कर लेंगे। यह बात यहाँ निर्णय होती प्रतीत होती नहीं। इसके लिए तो हमको सुप्रीम कोर्ट तक जाना होगा।"

"अच्छा अब आप चलिए। मैं ठीक ग्यारह बजे कचहरी में पहुँच जाऊँगी।"

जब वह आदमी चला गया तो अमृत ने पूछा, "नीलादेवी, यह शिशिर कौन है?"

"एक कम्युनिस्ट है। इसने कुछ दिन हुए प्रबोधजी के कारखाने को आग लगवा देने की कोशिश की थी। इसके वारंट तो चार दिन से निकले हुए थे, पर वह पकड़ा कल गया है।"

एक क्षण तक तो अमृत इस सब बात को समझने के लिए चुप रही। पश्चात् उसने कहा, "आप ठीक कहती हैं क्या? क्या यह पुलिस वालों की कोई बनाई बात तो नहीं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं, मैं इसको स्वयं देख चुकी हूँ। मुकद्दमा तो पुलिस ने ही बनाया है, परन्तु कारखाने के कर्मचारी ही इसके विरुद्ध गवाही दे रहे हैं।"

अमृत के मुख का रंग विवर्ण हो गया था। नीला ने उसके मुख का रंग उड़ते देखा तो पूछने लगी, "क्यों अमृत, क्या बात है? कैसे जानती हो तुम शिशिर को?"

"ये वही हैं न, जो सुशील बाबू के मित्र हैं?"

"हाँ, क्या बात है?"

"ये किसी प्रकार छूट नहीं सकते?"

नीला के मन में कुछ-कुछ प्रकाश होने लगा। उसने अमृत की आँखों में देखते हुए पूछा, "यह शिशिर कौन है, अमृत?"

"नीलादेवी, इनको छुड़ा दीजिए। मेरा इनसे विवाह होने वाला है।"

"छुड़ा दूँ? यह हो सकता है, परन्तु इसने हमको बहुत तंग कर रखा है।"

"उनसे आपकी सुलह करवा दूँगी।"

नीला कुछ देर तक विचार करती रही। पीछे बोली, "वह तुम्हारा कहना मान जायगा क्या?"

"मैं समझती हूँ कि मान जाएँगे।"

"तो चलो मेरे साथ। मैं तुमको इनसे मिला देती हूँ और यदि तुम इनको राज़ी कर लो कि वे प्रबोध बाबू पर से एक मुकद्दमा उठा लें, तो मैं पुलिस को ले-देकर छुड़ाने का प्रबन्ध कर दूँगी।"

"तो चलिए। मैं चाहती हूँ कि उनको समझा दूँ कि आप मेरी परम प्रिय हैं। उनको मेरी बात अवश्य मान जानी चाहिए।"

दोनों पुलिस थाने की ओर चल पड़ीं। मार्ग में नीलादेवी ने अमृत को पूर्ण परिस्थिति से अवगत कर दिया। नीला ने बताया, "शिशिर बाबू ऑटोमोबाइल वर्कर्ज़ यूनियन के प्रधान हैं। प्रबोधजी ने अपना कारखाना कर्मचारियों की हड़ताल से तंग आकर बेच डाला है। वर्कर्ज़ यूनियन के प्रधान ने इस बिक्री पर इंजंक्शन लगाने के लिए कचहरी में दावा दायर किया हुआ है। यह तो हम जानते हैं कि यह दावा कुछ अधिक काल तक चल नहीं सकेगा। इस पर भी कारखाना ख़रीदने वालों को तंग किया जा सकता है। यदि यह दावा उठा लिया जाय तो शिशिर को बलवे के मुकद्दमे से निकाला जा सकता है।"

थाने में वे थाना-इंचार्ज से मिले और नीलादेवी के कहने पर वह उनको हवालात में ले गया और शिशिर के सामने ले जाकर खड़ा कर दिया। शिशिर अमृत को सामने देख बहुत झेंपा। उसको इस प्रकार लज्जित देख अमृत, उससे पृथक् में बात करने की स्वीकृति लेकर, उसको हवालात के बरामदे में एक ओर ले जाकर खड़ी हो गई। अमृत ने पूछा, "बताइए, अब क्या होगा?"

"मेरी आज ज़मानत हो जायगी।"

"कौन ज़मानत देगा आपकी?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सुशील से मैंने कहला भेजा है।"

"वह ज़मानत देने आएगा क्या ?"

"नहीं। वह किसी को भेज देगा।"

"कौन कहने गया है ?"

"एक कान्स्टेबल चिट्ठी लेकर गया है।"

"मुझको सुशील से कुछ भी आशा नहीं।"

"तो फिर जेल में ही रहूँगा और कदाचित् मुकद्दमे में दो-चार वर्ष का दंड पा जाऊँगा।"

"पर क्या आपने यह अपराध किया है ?"

"एक तरीके से तो अभियोग सत्य ही है। प्रबोध के कारखाने के बाहर मैंने एक भाषण दिया था और नारे लगवाए थे। ऐसा करने का परिणाम यह हुआ था कि लोग पुलिस का घेरा तोड़कर कारखाने में घुस गए थे और उसके सामान को तोड़ने-फोड़ने लग गए थे। यदि पुलिस यथासमय गोली नहीं चलाती तो यह सम्भव था कि कारखाने को आग लगा दी जाती।"

"पर आपने यह सब क्यों किया ?" अमृत की आँखें तरल हो उठी थीं।

"पार्टी-अनुशासन में बँधे हुए, जो कुछ पार्टी के नेताओं ने कहा मैंने वही किया।"

"पर ऐसा करना क्या ठीक था ?"

शिशिर अमृत की आँखों से ढुलकते आँसू देख रहा था। उसके मुख से अनायास ही निकल गया, "मैं मन से ऐसा करना नहीं चाहता था।"

"तो अब प्रायश्चित कीजिए।"

"वह तो हवालात में पड़ा हुआ कर रहा हूँ।"

"यह प्रायश्चित नहीं। यह तो किए का दंड भोगना है। प्रायश्चित के लिए तो नीलाजी से क्षमा माँगिए। हमको आशा करनी चाहिए कि देवीजी प्रसन्न होकर वरदान देंगी।"

"तो तुम्हारी सहेली के सामने जाकर गिड़गिड़ाऊँ ?"

"नहीं शिशिरजी, अपनी भूल को स्वीकार करो और जो मुकद्दमा प्रबोधजी के विरुद्ध कर रखा है, उसको उठाने की प्रार्थना करो।"

"देखो अमृत, तुम नहीं जानतीं कि ये दोनों मुकद्दमे भिन्न-भिन्न हैं। मेरे विरुद्ध मुकद्दमा पुलिस ने चलाया है और प्रबोध के विरुद्ध कर्मचारी यूनियन ने। एक के हटा देने से दूसरा कैसे उठ जायगा ?"

"तो आप यूनियन के प्रधान नहीं हैं क्या ?"

"प्रधान तो हूँ।"

"और इंजंक्शन का दावा आपकी ओर से नहीं ?"

"दावा तो मेरी ओर से ही है, परन्तु लड़ रही है यूनियन।"

"आपके दावा उठाने की प्रार्थना से क्या दावा उठ सकेगा ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, यह दावा तो उठ जायगा, परन्तु यूनियन दूसरा दावा भी कर सकती है।"

"क्या यूनियन का यह दावा कि कारखाने की बिक्री पर रोक लगाई जाय, ठीक है ?"

"वकील कहते हैं कि ठीक है।"

"मैं किसी वकील की राय नहीं पूछ रही। मैं तो आपसे पूछ रही हूँ।"

"यह दावा यूनियन के कर्मचारियों के हित के विरुद्ध ही है। वे इसको कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं के आदेश पर चला रहे हैं।"

"तो आप इस दावे को ग़लत समझते हैं ?"

"ग़लत-ठीक की बात तो मैं नहीं जानता। हाँ, मज़दूरों के हित में प्रतीत नहीं होता।"

"देखिए शिशिर बाबू, हम साधारण बुद्धि रखने वाले आदमी किसी कार्य के औचित्य-अनौचित्य को उससे होने वाले लाभ-हानि से ही तो जान सकते हैं। आप निःस्वार्थ-भाव से और दीर्घकालीन परिणामों का चिन्तन करके यह बताइए कि कारखाने की बिक्री रोकने से किसको लाभ होने वाला है ?"

शिशिर निरुत्तर हो गया। वह जानता था कि यह मुकद्दमा केवल-मात्र प्रबोध के कारखाने के खरीदारों को तंग करने के लिए किया गया है। उसको चुप देख अमृत ने कहा, "अब मेरे हाल पर दया कीजिए। मेरी सब योजना विफल जाने वाली है। वह केवल इस कारण कि आप एक अनुचित बात कर रहे हैं। आइए, नीलादेवी को मुकद्दमा उठाने की प्रार्थना लिखकर दे दें और वे आपको इस मुकद्दमे से छुड़ा देंगी।"

शिशिर अभी भी चुप था। अमृत ने उसको बाँह से पकड़कर, नीलादेवी के सामने ले जाकर खड़ा कर दिया। नीला के सामने शिशिर को कर, उसने कहा, "नीला बहन, ये अपनी भूल तो मानते हैं पर नहीं जानते कि कैसे यह हो सकेगा ?"

नीला ने अपने वकील को थाने में ही बुला लिया था। उसने वकील से कहकर सब-जज की अदालत में पेश करने के लिए प्रार्थना-पत्र लिखवाकर, शिशिर को हस्ताक्षर करने के लिए दे दिया।

शिशिर ने हस्ताक्षर करने से पूर्व पूछा भी, "और मेरे विपरीत चल रहे मुकद्दमे का क्या होगा ?"

इसका उत्तर अमृत ने दिया, "आप अपने किए का प्रायश्चित कर रहे हैं अथवा सौदा कर रहे हैं ? यह नीलादेवी पर छोड़िए। आप अपने किए को बदलने के लिए जो उचित है कर दीजिए।"

शिशिर ने झिझकते-झिझकते हस्ताक्षर कर दिए। नीला ने पुलिस वालों से पहले ही प्रबन्ध कर रखा था। वहाँ से वह वकील और शिशिर तथा अमृत को लेकर कचहरी जा पहुँची।

कचहरी में सुशील का नौकर आया हुआ था। शिशिर ने समझा कि वह किसी ज़ामिन का प्रबन्ध करके अपने साथ लाया होगा, परन्तु जब उस नौकर ने आकर सुशील

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की चिट्ठी दी और शिशिर ने वह चिट्ठी पढ़ी तो उसका मुख विवर्ण हो गया। सुशील ने लिखा था, 'मैं स्वयं तो ज़ामिन बन नहीं सकता। मेरी कोई ज़ायदाद नहीं है। मैं पिताजी से कहकर कोई प्रबन्ध कर सकता था, परन्तु वे सरकारी नौकर होने से राजनीतिक बातों में अपना नाम लाना नहीं चाहते। तुम कोई और प्रबन्ध कर लो।'

शिशिर ने पत्र अमृत को दिखाया तो अमृत ने कहा, "मैंने यही आशा उससे की थी।"

जब मुकद्दमा उपस्थित हुआ तो यूनियन की ओर से दो वकील उपस्थित हो गए। दोनों को शिशिर ने वकालतनामा लिखकर दिया हुआ था। कचहरी में पहुँचकर जब शिशिर ने उनसे कहा, "मैं तो यह इंजंक्शन का मुकद्दमा वापस लेना चाहता हूँ।"

"अब नहीं हो सकता।"

"क्यों?"

"इस कारण कि हम वापस नहीं लेंगे। मैं आपसे वकालतनामा वापस ले लूँगा।"

"आप मेरी यह प्रार्थना पेश कर दें, नहीं तो मैं अदालत में बयान दे दूँगा कि मेरे वकील होकर मेरी आज्ञा के विरुद्ध मुकद्दमा चला रहे हैं।"

इस पर दोनों वकील एक-दूसरे का मुख देखते रह गए। पीछे वे दोनों प्रार्थना-पत्र शिशिर के हाथ में देकर वहाँ से खिसक गए।

शिशिर की प्रार्थना नीला के वकील ने ही अदालत में दे दी और मुकद्दमा उठ गया।

यूनियन के वकील स्वयं कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य थे। वे अदालत के कमरे में कुछ दूर खड़े हुए विचार कर रहे थे कि अब क्या होना चाहिए। इस समय शिशिर स्वतन्त्र हो और मुकद्दमा उठाकर चला आया तो वही वकील उसके समीप आकर पूछने लगे, "क्या हुआ है शिशिर बाबू?"

"मुकद्दमा उठ गया है।"

"बिना पार्टी की स्वीकृति के तुमने ऐसा क्यों किया है?"

"मैंने पार्टी के सामने अपनी आत्मा अभी नहीं बेची। मैं इस मुकद्दमे को ग़लत समझता था।"

"तो तुमको पार्टी से त्यागपत्र दे देना था?"

"अब दे दिया है।"

"इस पर भी तुम मुकद्दमा वापस लेने के लिए चले आए हो।"

"मैंने यूनियन के प्रधान-पद से त्यागपत्र नहीं दिया।"

"एक ही बात है।"

"कानून से दोनों का कोई सम्बन्ध नहीं।".

"यह तो यूनियन की बैठक में चलकर देख लेंगे।"

"हाँ, मैं उसकी बैठक एक-दो दिन में बुलाऊँगा।"

वकील मुख देखते रह गए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: २ :

शिशिर के मन में पार्टी के प्रति ग्लानि भर रही थी। उसने नीला से, जो उसकी और यूनियन के वकीलों की बात सुन रही थी, कहा, "नीलादेवी, यदि आप पुराने कर्मचारी रख लें तो मैं समझता हूँ कि जिस भावना से मैंने यह मुकद्दमा वापस लिया है, वह पूरी हो जायगी।"

"यह हो जायगा। आप कर्मचारियों को कह दीजिए कि कल कारखाने में हाज़िर हो जाएँ।"

कोर्ट से नीला, अमृत और शिशिर घर को लौट आए। चिकित्सालय का समय हो चुका था। घर जाकर भोजन के लिए भी समय नहीं रहा था। इस कारण नीला ने पूछा, "शिशिर बाबू, अब किधर जा रहे हैं?"

"मैं ठहरा तो पार्टी के कार्यालय में था, परन्तु अब वहाँ नहीं जाऊँगा। यहीं कहीं होटल में खाना खाकर अपने ठहरने के विषय में विचार करूँगा।"

"तो चलिए। सामने पंजाब-सिन्ध होटल है, वहीं खाना खा लेंगे। साथ ही मैं आपको अपने कारखाने के विषय में कुछ बातें बताना चाहती हूँ।"

वे होटल में चले गए और जब खाने के लिए ऑर्डर दिया जा चुका तो नीला ने अपना कहना जारी रखा। उसने बताया, "यह सत्य है कि कारखाने का बेचना केवल काग़ज़ी बात है। इस पर भी इसका एक परिणाम हुआ है कि परिवर्तित परिस्थिति में प्रबोधजी को भी बदलने का अवसर मिल जायगा। मैं इस विषय में उनसे बहुत-कुछ कह-सुन चुकी हूँ और जो योजना हमने बनाई है, वह उनकी सहमति से ही है। हम उन सब कर्मचारियों को वापस ले रहे हैं, जो अब नई शर्तों पर काम करने के लिए तैयार हैं। हम कर्मचारियों की एक कौंसिल भी बना रहे हैं, परन्तु उस कौंसिल का काम निश्चित और सीमित होगा। मालिक और कर्मचारी की कौंसिल के कामों और अधिकारों में एक निश्चित रेखा बना दी गई है। कर्मचारियों का वेतन उनके काम की श्रेष्ठता और अधिकता के अनुसार दिया जाया करेगा। प्रति तीन मास के उपरान्त उनके काम का रिकॉर्ड देखा जाया करेगा और उसके अनुसार वेतन में वृद्धि और कमी की जाया करेगी। एक फंड बनाया जायगा, जिससे कर्मचारियों के परिवार के सदस्यों को जीवन-सुविधाएँ दी जाया करेंगी।

शिशिर इस प्रबन्ध को सुन बहुत प्रसन्न था। इस पर भी एक संदेह उसके मन में बना था। उसके विषय में वह स्पष्टीकरण चाहता था। उसने पूछा, "यह क्या गारंटी है कि इस सब प्रबन्ध को ईमानदारी से चलाया जायगा?"

"कानून इस बात की गारंटी नहीं हो सकता कि कानूनों का पालन करने वाले ईमानदारी से काम करेंगे। ईमानदारी मन का एक गुण है। कानून चाहे कुछ भी हो, जब तक उसके चलाने वालों के मन शुद्ध न हों, वे कानून अच्छे होते हुए भी हितकर नहीं हो सकते। अभी तक तो मालिकों के दिमाग में बेईमानी नहीं है। मैं समझती हूँ कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वास से विश्वास उत्पन्न होता है। यदि कर्मचारी अपना व्यवहार ठीक रखेंगे तो इसकी प्रतिक्रिया भी ठीक ही होगी।"

शिशिर के डावाँडोल मन में नीला के वक्तव्य ने भिन्न ही प्रतिक्रिया उत्पन्न की। वह कम्युनिस्ट पार्टी के कार्य करने के ढंग से निराश हो चुका था। अब नीला के इस कथन से वह यह समझा था कि शायद मालिकों का लाभ भी इसी में है कि कर्मचारियों को प्रसन्न रखें। इस पर भी उसने पूछा, "एक बात मैं जानना चाहता हूँ, नीलादेवी, क्या आप यह सब प्रबन्ध मज़दूरों पर दया के भाव से कर रही हैं अथवा उनसे डरते हुए?"

नीला हँस पड़ी। उसने कहा, "एक बात आप नहीं समझते। जो भी काम दया अथवा भय के प्रभाव में किया जायगा, वह स्थायी नहीं हो सकता। इन बाहरी आक्रमणों के हट जाने पर वह काम बन्द हो जायगा। व्यवहार वही स्थायी और ईमानदारी से हो सकता है, जिसके करने में आत्मा की प्रेरणा हो। आत्मा की प्रेरणा तो लाभयुक्त कामों में ही होती है। हम इस बात को भली-भाँति समझते हैं कि कर्मचारियों से किया गया अच्छा व्यवहार मालिकों के हित में ही होगा। हम चाहते हैं कि हम कर्मचारियों के मन में भी यह बात जमा दें कि मेहनत-मज़दूरी से किया हुआ काम उनके अपने लाभ के लिए ही होगा।"

"एक बात और नीलादेवी! आपके प्रबन्ध में यूनियन का क्या स्थान होगा?"

"कर्मचारी अपनी यूनियन बना सकते हैं। मैं तो समझती हूँ कि कर्मचारियों की कौंसिल ही वास्तव में उनकी यूनियन का काम करेगी। अन्तर केवल यह होगा कि जहाँ बाहर की यूनियन कम्युनिस्ट पार्टी के अधीन काम करेगी, वहाँ कौंसिल कारखाने के अपने कर्मचारियों की होगी। इसमें बाहर के किसी व्यक्ति का हस्तक्षेप नहीं होगा।"

शिशिर ने कुछ विचारकर कहा, "मैं पार्टी छोड़ रहा हूँ। जब से प्रबोधजी के कारखाने में हड़ताल आरम्भ हुई है, तब से ही मुझको पार्टी के व्यवहार में और उसकी कार्यविधि में दोष प्रतीत होने लगा है। मुझको इस काम के ढंग से घृणा-सी होने लगी थी। आज बहुत-कुछ बातों का पता चला है, जिससे मैं समझने लगा हूँ कि वर्ग-युद्ध नहीं प्रत्युत वर्ग-समन्वय की आवश्यकता है।

"सबसे बड़ी, मन में प्रकाश करने वाली बात हुई है रूस की कार्यपद्धति पर रूस के कुछ नेताओं का रहस्योद्घाटन। आज से पाँच-छः वर्ष पहले जब कुछ लोग रूस में हो रहे अनाचार की बात कहते थे, तो हम उनसे कह देते थे कि बूर्जुआ मनोवृत्ति के लोग व्यर्थ में मानवता के साम्राज्य को बदनाम करने के लिए कह रहे हैं। जब कुछ लोगों ने लौह-आवरण के पीछे रहस्योद्घाटन किए तो हमने रेशमी आवरण के पीछे रहस्यों की बात करनी आरम्भ कर दी। परन्तु आज रूसी नेताओं के रहस्योद्घाटन से उनसे कहे जाने वाले बूर्जुआ मनोवृत्ति के लोगों की बात सिद्ध हो गई है।

"मैं तो यह समझा हूँ कि भारत में कम्युनिस्ट पार्टी रूस की बोलशिविक पार्टी के पद-चिह्नों पर चल रही है। यह सब वाग्जाल है, जिसके बल पर लाखों नवयुवकों को मूर्ख बनाकर समाज में अव्यवस्था उत्पन्न कर प्रभुत्व जमाने के लिए यत्न किया जा रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। मैं इस धोखाधड़ी में सम्मिलित रहना नहीं चाहता।"

नीला ने कहा, "संसार में वर्ग-समस्या तो है, परन्तु ये वर्ग वे नहीं, जिनका उल्लेख कार्ल मार्क्स ने किया है। जहाँ पर एक श्रेणी के आदमी को दूसरी श्रेणी में जाने का अधिकार हो, वहाँ वर्ग-समस्या नहीं मानी जानी चाहिए। मालिक और मज़दूर में कोई ऐसी अनुल्लंघनीय रेखा नहीं कि एक दूसरे में नहीं जा सकता। ऐसे उदाहरणों की कमी नहीं, जहाँ मालिक मज़दूर बन गए और जहाँ मज़दूर मालिक बन गए। विचारणीय बात तो केवल इस रेखा को सुगमता से पार कर सकने के साधनों पर है। यह विचार वर्ग-युद्ध से नहीं प्रत्युत वर्गों में सहकारिता से हो सकेगा।"

"देखिए शिशिर बाबू, कम्युनिज़्म पनपता है छात्रों और बेघर वालों में। अब आप छात्र तो हैं नहीं। साथ ही अपना घर भी बना लीजिए। तब यह 'इज़्म' आपमें निःशेष हो जायगा।"

"देखिए, यत्न तो कर रहा हूँ। सफलता इनके हाथ में है।" इतना कह उसने अमृत की ओर देखा और मुस्करा दिया।

: ३ :

अमृत चार बजे के लगभग घर पहुँची। वह कोठी में पहुँच सीधी अपने कमरे में चली गई। इस समय हरभजनसिंह अपनी मोटर में कहीं जाने को तैयार खड़ा था। वह अमृत को आए देख गाड़ी को छोड़, उसके पीछे कमरे में चला आया। अमृत अभी कुरसी पर बैठी ही थी कि वह आया और पूछने लगा, "कहाँ रही हो अमृत, दिन-भर?"

अमृत ने सुशील के घर जाने से लेकर शिशिर को होटल में छोड़ आने तक की पूर्ण बात बता दी। इस पर हरभजनसिंह ने कहा, "यहाँ तो पिताजी के पास कई लोग तुम्हारे साथ विवाह-सम्बन्ध के लिए आ चुके हैं।"

"मैं जानती हूँ कि वे मेरे लिए नहीं आए। वे तो पिताजी के धन के लोभ में आए हैं। मेरा उनसे कोई वास्ता नहीं।"

"तो अब कैसे यह सब होगा?"

"शिशिर बाबू आज सायंकाल पिताजी से मिलने आएँगे। मैं नहीं चाहती कि किसी प्रकार की बात उनके विषय में मैं करूँ। मैं देखना चाहती हूँ कि उनका कहना पिताजी के मन में क्या प्रतिक्रिया उत्पन्न करता है? यह जानने के पश्चात् ही बात आगे चल सकेगी।"

"मैं चाहता हूँ कि उस समय मैं भी सामने होता तो ठीक रहता।"

"तो भैया, ऐसा करो न! अभी होटल में उनसे मिलकर एक समय निश्चय कर लो। उस समय उनको साथ ही लेते आना।"

"इस समय सरदार कर्तारसिंह का लड़का प्रीतमसिंह पिताजी के पास बैठा है। मुझको उसकी बातों में कुछ भी रुचि नहीं, इस कारण मैं वहाँ से उठकर चला आया हूँ। मैं समझता हूँ कि पिताजी उसको लेकर आने ही वाले हैं। लो मैं चला।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अच्छी बात है, अब आप जाइए। मैं निपट लूँगी।"

अमृत अभी अपनी थकावट दूर कर ही रही थी कि उसके पिता प्रीतमसिंह को लेकर आ पहुँचे। उन्होंने आते ही पूछा, "अमृत, कहाँ गई थीं तुम?"

"पहले सुशीलजी के घर गई थी, पीछे नीलादेवी से मिलने। उन्होंने अभी तक रोक रखा था। अभी-अभी आई हूँ।"

"इनको जानती हो?" वढ़ियामसिंह ने प्रीतमसिंह की ओर संकेत कर पूछा।

"जी हाँ, बचपन से जानती हूँ। आपके साथ ही तो मेरे विवाह का प्रबन्ध हो रहा था, जब मैं घर से चली गई थी।"

इस प्रकार मुँहफट बात से तो वढ़ियामसिंह की आँखें झुक गईं। वे और प्रीतमसिंह अभी खड़े थे। अमृत भी उनके स्वागत के लिए खड़ी हो गई थी। इस समय वढ़ियामसिंह ने बात बदलने के लिए प्रीतमसिंह को बैठने को कहा और स्वयं भी बैठ गया। अमृत बैठी तो बात प्रीतमसिंह ने की। उसने कहा, "मैं जानता हूँ कि आप घर से चली गई थीं और आपके लौट आने का समाचार पाकर ही तो मैं आया हूँ। मैं आपसे पृथक् में बात करना चाहता हूँ।"

"पिताजी भी रहें अथवा उनसे भी पृथक् बात करना चाहते हैं?"

"मैं चाहता हूँ कि मैं और आप अकेले हों तो ठीक रहेगा।"

"ठीक है।" इतना कह अमृत ने अपने पिता की ओर देखा। वढ़ियामसिंह समझ गया और यह कह, "आप जब फुरसत पा जाएँ तो चाय के लिए बाहर लॉन में आ जाइएगा। मैं वहीं आपकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।" वह कमरे से बाहर निकल गया।

प्रीतमसिंह ने बात आरम्भ की, "देखिए अमृतजी, मैं आपको तब से जानता हूँ, जब आप छोटी-सी थीं और माताजी के साथ गुरुद्वारे में आया करती थीं। मैंने तब से ही निश्चय किया हुआ था कि मैं आपसे विवाह करूँगा। इसी कारण नौकरी पाते ही मैंने आपके पिताजी को कहला भेजा था। उनकी स्वीकृति से ही आपसे सगाई की बात हुई थी।"

"आप जो कहते हैं ठीक ही होगा, परन्तु जब से मैं आपके विषय में समझने लगी हूँ, मैं आपका अपने पति के रूप में कभी भी विचार नहीं कर सकी।"

"क्यों?"

"जहाँ तक मुझको स्मरण है, मैं आपको कुछ गँवार समझती थी। देखिए सरदार प्रीतमसिंह, हम यहाँ अपने भावी जीवन के विषय में विचार करने बैठे हैं। इस कारण मन के भावों को समझने में यदि कुछ ऐसे शब्द प्रयोग में आ जाएँ, जो कानों को प्रिय न लगें, तो क्षमा चाहती हूँ। मुझको आपका पहिरावा, आपका बोलना और आपका गुरुद्वारे में व्यवहार सदा ही अप्रिय रहा है।

"पश्चात् जब आप कॉलेज में पढ़ते थे और मैं स्कूल में पढ़ती थी, तब आपका घूर-घूरकर लड़कियों की ओर देखना मुझको बिल्कुल पसन्द नहीं था। साथ ही मैं यह कभी भी समझ नहीं सकी कि एक पढ़ा-लिखा व्यक्ति कैसे वास्तविकता को छोड़ बाहरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बातों को आवश्यक समझने लगता है? आपने एक सेवादार को इस कारण गुरुद्वारे से निकलवा दिया था कि वह गुरु ग्रन्थ साहब की ओर पीठ कर खड़ा था। जब मेरे पिताजी ने उस सेवादार को क्षमा कर देने के लिए कहा तो आपने क्षमा करने का विरोध किया था।

"इसके अतिरिक्त भी कई बातें हैं, जिनसे मैं आपको एक बहुत ही साधारण बुद्धि का व्यक्ति समझती हूँ। जब आपके विषय में ऐसा विचार मन में हो तो आपसे विवाह का विचार उत्पन्न हो नहीं सका।"

"परन्तु," प्रीतमसिंह ने कहा, "अब तो मैं वह नहीं हूँ। मैं सिखों में एक उदार विचार का व्यक्ति समझा जाता हूँ।"

"सच?"

"मैंने इस विषय में अपने पिताजी को लिखा था।"

"क्या लिखा था?"

"लिखा था कि आपके विचारों की मैं सराहना करता हूँ। इन विचारों के कारण आप मुझको और भी अधिक प्रिय हो गई हैं।"

"परन्तु आपके आचरण में तो कुछ अन्तर आया प्रतीत नहीं होता?"

"यह आचरण तो नौकरी के कारण रखना पड़ता है। देखिए, मैं थर्ड क्लास एम० ए० हूँ। इस पर भी इन्स्पेक्टर ऑफ़ स्कूल्ज़ लग गया हूँ। यह केवल इस कारण ही है कि मैं केशधारी सिख हूँ। पंजाब में सिखों की स्थिति हिन्दुओं के दो दलों में निर्णयात्मक है। इस कारण हिन्दू अधिकारियों को सिखों को प्रसन्न रखना आवश्यक हो गया है और मेरा सिख होना मेरे लाभ की बात हो गई है।"

"तो यह नौकरी के कारण है। वास्तव में आप सिखिज़्म में विश्वास नहीं रखते?"

"यह बात नहीं। मैं मन से सिख हूँ, परन्तु मैं यह कच्छा, कड़ा इत्यादि सिख-धर्म के आवश्यक अंग नहीं मानता।"

"अब समझी हूँ कि आपकी विवशताएँ हैं, जिनके कारण आप आवश्यक और अनावश्यक बातों में भेद-भाव नहीं कर सकते, अर्थात् नहीं करना चाहते।"

"देखिए अमृतजी, आज पंजाब में सिख और हिन्दुओं में भारी झगड़ा हो रहा है। बहुत ही निकट भविष्य में सिख-समुदाय के लिए जीवन-मरण का प्रश्न उत्पन्न होने वाला है और उस समय के लिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति, जो सिख-सम्प्रदाय का हित चाहता है, वह अपने को प्रकट रूप में भी सिख बनाए रखे, अन्यथा मैं तो आपसे भी पहले यह झंझट छोड़ चुका होता।"

"बहुत ही विचित्र बात है। आप सिख-धर्म की रक्षा के लिए भारी त्याग कर रहे हैं और कष्ट सहन कर रहे हैं। परन्तु मैं यह नहीं समझ सकी कि इसकी रक्षा की आवश्यकता क्या है?"

"गुरु महाराज ने जो शिक्षा दी है, उसकी रक्षा की आवश्यकता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह रक्षा तो यूँ भी हो जायगी। गुरु ग्रन्थ साहब का अनुवाद सब भाषाओं में करवाकर बाँट देने से ही यह कामं सुगमता से हो जायगा। अभी तक तो हिन्दू गुरु महाराज की वाणी को आदर से सुनते हैं और फिर हिन्दू-धर्म से सिख-धर्म किस प्रकार भिन्न है ? मैंने तो दरबार साहब में यह पढ़ा है—

कहत कबीर अवर नहीं कामा। हमरे मन धन राम को नामा।
राम सिमर राम सिमर राम सिमर भाई
राम नाम सिमरन बिनु बूडते अधिकाई।
वनिता सुत देह गेह सम्पति सुखदाई
इन्ह में कछु नाही तेरो काल अवधि आयी
अजामल गज गनिका पतित करम कीने
तेऊ उतरि पारि परे राम नाम लीने
सूकर कूकर जेनि भ्रमे तऊ लाज न आयी
राम नाम छाड़ि अमृत काहे बिखु खाई।

इस वाणी को तो कोई भी हिन्दू पसन्द कर लेगा।"

"नहीं अमृतजी, यह बात नहीं। बात यह है कि यदि सिखों को अधिकार नहीं मिले तो कोई किसलिए सिख धर्म मानेगा ?"

"कौन-से अधिकार आप चाहते हैं, जो आपको नहीं और हिन्दुओं को प्राप्त हैं ?"

"हमारी यह धारणा है कि यदि सिखों का प्रभुत्व किसी एक राज्य में न रहा तो कोई भी सिख नहीं रहेगा।"

"सिख-धर्म के बढ़िया होने पर भी लोग इसको छोड़ देंगे क्या ?"

प्रीतमसिंह को स्मरण हो आया कि वह सिख-हिन्दू के विवाद में पड़कर अपने वहाँ आने के प्रयोजन को भूल रहा है। इस कारण उसने बात बदलकर कहा—"परन्तु अमृतजी, इन बातों का विवाह से क्या सम्बन्ध है ? मैं आपको बहुत सुखी रखूँगा और आपकी स्वतन्त्रता में किसी प्रकार की बाधा नहीं डालूँगा।"

"मैं इस आश्वासन के लिए आपकी बहुत ही आभारी हूँ। मैं आपका धन्यवाद करती हूँ, परन्तु मैं एक सिख और एक हिन्दू में कोई अन्तर नहीं समझती। सिख-धर्म तथा हिन्दू-धर्म में मुझको कहीं भी अन्तर प्रतीत नहीं होता। मैं जब दरबार साहब में पढ़ती हूँ कि—

अस्थावर जंगम कीट पतंगा अनेक जन्म किए बहुरंगा
ऐसे घर हम बहुत बसाये जब हम राम गरभ होइ आये
जोगी जति तपि ब्रह्मचारी कबहूँ छत्रपति कबहूँ भिखारी।

तब मुझको गुरु महाराज से सहस्रों वर्ष पूर्व भगवान् कृष्ण की बात याद आ जाती है। भगवान् कृष्ण ने कहा था, 'हे अर्जुन, मैंने और तुमने भी लाखों जन्म पाए हैं, तुम नहीं जानते और मैं जानता हूँ।'

"जब यह है तो आपका यह सब-कुछ कहना व्यर्थ है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर अमृतजी, मैं तो विवाह के विषय में कह रहा हूँ।"

"ओह! वह तो मैं भूल ही गई थी। पर यह बहस तो आपने ही आरम्भ की थी।"

"हाँ, तो फिर क्या विचार है? बाहर पिताजी लॉन में प्रतीक्षा कर रहे हैं और चाय ठंडी हो रही है।"

"मैंने इस विषय में अपने विचार अभी बदले नहीं। अभी भी मेरे मन पर बचपन के प्रभाव विद्यमान हैं।"

"पर मैं तो आपसे प्रेम करता हूँ।"

अमृत हँस पड़ी। उसने कहा, "छोड़िए इस बात को। एक बंगाली युवक, जो डॉक्टर है, उच्च कोटि की संगत में घूमने वाला है, वह भी मुझको यही कहता था। जब उसको पचास हज़ार दहेज में मिलने की आशा हुई तो सब प्रेम भूल गया और उस लड़की से विवाह करने पर उद्यत हो गया है, जिसको वह कुरूप, कुशिक्षित और काली कहा करता था। यह प्रेम शब्द एक आडम्बर है। यह कविताओं और नावलों में लिखने के लिए भावुक युवकों ने बना रखा है। निम्न कोटि के कलाकारों ने भी इसको अनावश्यक महत्ता दी है।"

"तो फिर आप क्या चाहती हैं?"

"चलिए बाहर, चाय ठंडी हो रही है।"

इतना कह वह उठ खड़ी हुई। उठते हुए उसने कहा, "मैं समझती हूँ कि और कुछ कहने को नहीं रह गया। चलिए, पिताजी काफी देर से प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

: ४ :

वढ़ियामसिंह ने लॉन में चाय लगवाई हुई थी। ये दोनों वहाँ पहुँचे तो चुपचाप चाय के लिए कुरसियों पर बैठ गए। अमृत मुस्करा रही थी। वह मन में सोच रही थी कि बात करने का ढंग भी नहीं आता और विवाह करने चला आया है।

वढ़ियामसिंह ने अमृत को प्रसन्न देखा तो यह समझा कि दोनों में कुछ समझौता हो गया है। अतएव उसने पूछा, "क्यों अमृत, क्या निश्चय किया है?"

अमृत ने मुस्कराते हुए कहा, "इनसे ही पूछ लीजिए।"

वढ़ियामसिंह ने इस उत्तर से उत्साहित हो प्रीतमसिंह की ओर देखा। इस पर प्रीतमसिंह ने कहा, "अमृतजी ने किसी और को पसन्द कर रखा है।"

"किसको?" वढ़ियामसिंह ने अमृत की ओर देखकर पूछा।

"ये ही बताएँगे। जो-कुछ ये कहते हैं, उसका ये ही जानते होंगे।"

वढ़ियामसिंह दोनों का मुख देखने लगा। वह इस बातचीत का अर्थ नहीं समझा था। अमृत अभी भी मुस्करा रही थी। प्रीतमसिंह का मुख विवर्ण हो रहा था। उसने किसी अन्य के पसन्द करने की बात कहकर अमृत को प्रकुपित करने का यत्न किया था। उसका विचार था कि वह क्रुद्ध होकर कुछ कहेगी और इससे उसका रहस्य खुल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जायगा, परन्तु उसको शान्त और प्रसन्न देख वह स्वयं प्रकुपित हो उठा।

"छोड़िए इस बात को, चाय पीजिए और शान्ति से बात कीजिए।"

अमृत ने चाय बनाना आरम्भ कर दिया। प्रीतमसिंह ने अमृत के पिता से कहा, "क्षमा कीजिए। चाय सब जगह मिल सकती है। जिस वस्तु की लालसा से मैं यहाँ आया था, यदि वह नहीं मिली तो फिर यहाँ ठहरने में कुछ भी प्रयोजन नहीं।"

"प्रीतमसिंहजी!" अमृत ने बनी चाय का प्याला आगे करते हुए कहा, "आपके पिताजी और मेरे पिताजी का सम्बन्ध इस असफल-प्रेम से बहुत पुराना है। उस सम्बन्ध को क्यों भंग करते हैं?"

ज्यूँ-त्यूँ कर प्रीतमसिंह ने चाय का प्याला समाप्त किया और सत्श्री अकाल कह चल दिया। उसके चले जाने के पश्चात् वढ़ियामसिंह ने पूछा, "क्या बातचीत हुई है?"

"कुछ विशेष नहीं। ये कहते थे कि मुझको पसन्द करते हैं। मैंने बताया कि मुझको वह पसन्द नहीं। इस पर नाराज़ हो गए और कहने लगे थे कि मैंने कोई दूसरा पसन्द किया हुआ है।"

"अमृत, आज तुम्हारे विवाह के लिए पाँच अन्य स्थानों से भी सन्देश आए हैं। कुछ निर्णय तो करना ही होगा।"

"हो जायगा और शीघ्र ही। मैं अब लखनऊ में नहीं रहना चाहती।"

"पर कहाँ रहना चाहती हो?"

"कहीं तो रहना होगा ही। आप व्यर्थ की चिन्ता न करें।"

निराश वढ़ियामसिंह चुप कर रहा। चाय पीकर दोनों अपने-अपने कमरों में चले गए।

सायंकाल हरभजनसिंह शिशिर को लेकर आया और सीधा अपने पिता के कमरे में चला गया। वहाँ शिशिर का उसने परिचय कराया, "पिताजी, ये हैं शिशिर कुमार, प्रधान, ऑटोमोबाइल वर्कर्ज़ यूनियन। आपसे कुछ निवेदन करने आए हैं।"

"हाँ बताइए साहब!" वढ़ियामसिंह ने सतर्क हो पूछा।

शिशिर ने बैठते हुए कहना आरम्भ किया, "आज से सवा तीन महीने पहले की बात है कि मेरे एक मित्र मेरे पास आए। उनके साथ एक लड़की थी। वे कहने लगे कि यह लड़की तीन मास के लिए अपने माता-पिता से छिपकर रहना चाहती है और मैं उसको अपनी मौसी के घर छोड़ आऊँ। वे मेरी मौसी को जानते थे।

"मैं उस लड़की को अपनी मौसी के घर छोड़ आया। मौसी के पूछने पर हम दोनों ने अर्थात् मैंने और उस लड़की ने कह दिया कि हम दोनों पति-पत्नी हैं। ऐसा कहने में प्रयोजन यह था कि मौसी को किसी अनुचित बात का संदेह न हो जाय और लड़की का उचित मान-आदर हो सके।

"लड़की वहाँ रही और मैं यहाँ लखनऊ में रहा। तीन मास में लड़की की विशेष मोह-माया मौसी से हो गई और वह उनको अपनी वास्तविक सास बनाने की इच्छा करने लगी है। मेरी मौसी भी, जो उस लड़की को अपनी पतोहू ही समझती है, उससे बहुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रसन्न है।

"मौसी की कोई सन्तान नहीं। मुझको उन्होंने गोद लिया हुआ है। स्वाभाविक रूप से यदि मौसी और उस लड़की की इच्छा पूर्ण की जाय तो लड़की के पति होने का सौभाग्य मुझको प्राप्त होगा और वह आपके आशीर्वाद से ही हो सकता है।

"मैं कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य था परन्तु अब मैंने पार्टी छोड़ दी है। अभी-अभी मैंने इस विषय का पत्र पार्टी के अधिकारी को लिख दिया है। अभिप्राय यह है कि मैं अब स्वतन्त्र हूँ और स्वतन्त्रता से जीविकोपार्जन के साधन रखता हूँ।"

वढ़ियामसिंह कुछ ऐसी ही बात की आशंका कर रहा था। शिशिर ने अपनी पूर्ण कथा इतनी स्पष्टता और सुन्दरता से उसके सामने रखी थी कि वढ़ियामसिंह अनुभव करने लगा कि कोई विशेष व्यक्ति उसके सामने बैठा है। इस पर भी उस युवक ने यह बात बताई नहीं थी कि वह मित्र, जो उसके पास उस लड़की को लेकर गया था, कौन था। दूसरी बात, जिसके विषय में उसका संदेह विश्वास की सीमा तक जाता था, वह उनके परस्पर सम्बन्ध की थी। वह यह बात समझ ही नहीं सकता था कि कैसे ये दोनों, पति-पत्नी का अभिनय करते हुए, घनिष्ठ सम्बन्ध से बच सके होंगे? दूसरी बात का मन में विश्वास कर वह इस विवाह को रोकने का विचार नहीं कर सकता था। यूँ तो वह इस प्रकार के सम्बन्ध से हेठी अनुभव करता था, परन्तु वर्तमान परिस्थिति में इस विषय पर चुप रहने के अतिरिक्त और कोई उपाय भी नहीं था।

इस पर भी वह पहली बात पर प्रकाश डाले जाने की अपनी उत्सुकता को रोक नहीं सका। उसने पूछ ही लिया, "और वह मित्र, जो उस लड़की को आपके पास लेकर गया था, हरभजनसिंह था?"

"जी नहीं।" शिशिर ने कहा, "वह सुशीलकुमार था। लड़की को विश्वास था कि सुशीलकुमार उससे प्रेम करता है और उससे विवाह करने का इच्छुक है। सुशीलकुमार का विवाह आज सरकार बाबू की लड़की से हो रहा है। साथ ही उसको सुशीलकुमार की माता से मेरी मौसी अधिक पसन्द है।"

वढ़ियामसिंह हँस पड़ा। उसने कहा, "हरभजनसिंह, हमारी बदनामी तो जो होनी थी, सो हो चुकी। तुम जानते हो कि प्रीतमसिंह यहाँ आया हुआ था। अमृत ने उससे झगड़ा कर उसको यहाँ से भगा दिया है। इस कारण मुझको लड़की का विवाह शीघ्रातिशीघ्र हो जाना ही ठीक प्रतीत होता है। अन्यथा लोग आते रहेंगे और अमृत उनसे झगड़ा करती रहेगी।

"देखो युवक!" उसने शिशिर की ओर देखकर कहा, "पूर्व इसके कि मैं अमृत को बुलाकर पूछूँ, मैं यह जानना चाहता हूँ कि तुम्हारे पास अपनी पत्नी को सुखी रखने के साधन भी हैं अथवा नहीं। कम्युनिस्ट प्रायः निर्धन, अयोग्य, अशिक्षित और कोरे भावुक व्यक्ति होते हैं। जीवन-संघर्ष में अपने पाँव पर खड़ा हो सकने की क्षमता न रखने के कारण ही वे सरकार की सहायता के मोहताज होते हैं। जानते हो, मैं राष्ट्रीयकरण के क्या अर्थ समझता हूँ?—अयोग्य लोगों को खाना-पीना और वह भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अच्छे स्तर पर दिलाने के लिए फौज और पुलिस की शक्ति का प्रयोग करना।

"यह मैं जानता हूँ कि भारत सरकार ऐसे निर्धन और अयोग्यों की सहायता करने का पक्का निश्चय किए हुए है। इस पर भी मैं अपने दामाद को राज्य के, अर्थात् टैक्स देने वालों के आश्रय पर पलने वाला देखना नहीं चाहता।"

शिशिर हँस पड़ा। उसने अपने मन के भाव और अपनी मौसी की सम्पत्ति का उल्लेख करने के स्थान, इस सरकारी ठेकेदार से प्रश्न पूछने आरम्भ कर दिए। उसके अपने मन में उठ रहे विचारों का एक नया रूप, इस व्यक्ति ने उसके सामने उपस्थित किया था। शिशिर ने कहा, "आपका प्रश्न तो उचित ही है। परन्तु इस प्रश्न का उत्तर देने से पूर्व मैं आपसे यह निवेदन करना चाहता हूँ कि एक निर्धन शोषित व्यक्ति यदि अपनी सरकार से सहायता न माँगे तो किससे माँगे? पैसे वालों ने निर्धनों को बेमोल दासता में बाँध रखा है। यदि सरकार उनकी सहायता करती है, तो आपको आपत्ति क्यों है?"

वढ़ियामसिंह ने कहा, "ठीक है, ऐसी अवस्था में सरकार को दुखी और शोषित व्यक्ति की सहायता करनी ही चाहिए। मैं समझता हूँ कि सब सभ्य देशों में मज़दूरों के संरक्षणार्थ विधि-विधान बन रहे हैं। यह बात तो ठीक है ही। इसके विपरीत मैंने कुछ नहीं कहा। मैंने तो यह कहा है कि जब सरकार प्रबन्धकर्ता होने के स्थान स्वयं व्यवसायी और मालिक बन जाती है, तब वह, जो मेहनत-मज़दूरी करने वालों की मेहनत से उत्पन्न धन से चलती है, बेकार, अयोग्य और प्रमादी लोगों का आश्रय बन जाती है।

"अब देखो, सरकार ने बीमा कम्पनियों का राष्ट्रीयकरण कर उन कम्पनियों को सहारा दिया है, जिनके प्रबन्धक अयोग्य होने के कारण चलाने में असफल हो रहे थे। कम्पनियों की लूट रोकने का उपाय तो उनके 'प्रीमियम' कम करना तथा उनके खर्च पर नियन्त्रण करना और धन-वितरण में शीघ्रता कराना था, न कि भारत-भर में एक ही बीमा करने की संस्था और वह भी सरकारी प्रबन्ध के अधीन कर देना था। अब परस्पर स्पर्धा न होने के कारण बीमा के व्यवसाय में उन्नति और कम्पनियों के प्रबन्धकों के व्यवहार में श्रेष्ठता आने में बाधा उत्पन्न हो जायगी।

"बीमा कम्पनियों के अधिकारी भी धीरे-धीरे वैसे ही आलसी, कामचोर और रिश्वत लेने वाले बन जाएँगे, जैसे आज रेल के अधिकारी हैं।"

"पर क्या आप," शिशिर ने मुस्कराते हुए पूछा, "सरकार के एक उच्च अधिकारी, मेरा अभिप्राय है कि एक सचिव और एक ठेकेदार में अन्तर नहीं समझते? इनमें से कौन निष्काम भाव से काम कर सकता है?"

"जन-साधारण में तो सचिव को ही श्रेष्ठ माना जाता है, परन्तु यह वास्तविकता से दूर है। जहाँ तक ठेकेदारी की बेईमानी का सम्बन्ध है, वह क्या सरकारी अधिकारियों के रिश्वत लेने के ही कारण नहीं? यदि सचिव और इंजीनियर अपनी अतिरिक्त आय का लालच न करें तो ठेकेदार की क्या मजाल है कि सीमेंट में मात्रा से अधिक रेत मिला सके! ठेकेदार ऐसा करता है, क्योंकि उसको ओवरसियर, इंजीनियर इत्यादि सबको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्षिणा देनी पड़ती है।

"क्या कभी आपने इस बात की ओर ध्यान दिया है कि एक ही प्रकार की, सरकार द्वारा निर्मित इमारत और किसी निजी व्यक्ति द्वारा निर्मित इमारत की लागत में आकाश-पाताल का अन्तर होता है? भला यह क्यों? क्या इसमें यह कारण नहीं कि सरकारी अधिकारी कार्य की श्रेष्ठता और सतर्कता की ओर ध्यान न देकर अपनी अतिरिक्त आय की ओर अधिक ध्यान देते हैं?.

"निजी कार्य में धन व्यय करने वाला अपने से अर्जित धन का व्यय करता है। सरकारी कार्यों में धन व्यय करने वाला दूसरे के अर्जित धन का व्यय करता है। इससे यह स्वाभाविक ही है कि निजी कार्य करवाने वाला कम दाम में अधिक अच्छा काम करा सकता है।"

"काम करने वाले तो मनुष्य ही होते हैं—सरकारी कामों में भी और निजी कामों में भी। तो फिर ऐसा क्यों होता है?" शिशिर ने उत्सुकता से पूछा।

"सरकार कभी भी कोई कार्य किसी निजी कार्य (प्राइवेट एंटरप्राइज़) से स्पर्धा में नहीं कर सकती। यही कारण है कि सरकार अपने प्रत्येक कार्य में एकाधिकार ले लेती है। कारण स्पष्ट है कि सरकारी कामों में अधिकारियों को धन व्यर्थ जाते देख दुःख नहीं होता। वह उनका अपना अर्जित किया हुआ धन नहीं होता। जनता के धन से वे खिलवाड़ करते हैं।"

"पर मैं पूछता हूँ कि व्यक्तिगत प्रयास में विशेष बात क्या होती है? एक ठेकेदार की आवश्यकता ही क्या है?"

"ठेकेदारी व्यक्तिगत प्रयास (प्राइवेट एंटरप्राइज़) का एक रूप है। इसमें अन्य व्यक्तिगत प्रयासों (एंटरप्राइज़) से अन्तर यह है कि इसमें कार्य को सुव्यवस्थित करने की विशेष आवश्यकता रहती है। सुव्यवस्था करने की शक्ति परस्पर स्पर्धा के कारण उग्र और सम्पुष्ट हो जाती है।

"मैं आपको अपनी ही बात बताता हूँ। मेरे पिता पंजाब में ठेकेदारी करते थे। मैं पन्द्रह वर्ष का था, जब मैं मैट्रिक पास कर पिता के साथ काम करने लगा। एक ही वर्ष में मैं काम का आधार-बिन्दु समझ गया। यह था लेबर-ऑर्गनाइज़ेशन (कर्मचारियों में सुव्यवस्था)। जब मैं अपने विचारानुसार कार्य करने लगा तो पिता से झगड़ा हो गया और मैं पिता से बिना कुछ लिए-दिए, भागकर लखनऊ चला आया। यहाँ दीनानाथ ठेकेदार के पास मुन्शी का काम करने लगा। एक वर्ष-भर यहाँ कंजूसी का जीवन व्यतीत कर, पाँच सौ रुपए एकत्रित करके ठेकेदारी में कूद पड़ा। बड़े ठेकेदारों से छोटे-छोटे काम लेकर धन पैदा करने लगा। पाँच वर्ष में मैं स्वतन्त्र ठेके लेने योग्य हो गया। इस समय दीनानाथ, जो मुझ पर बहुत ही दयालु था, मुझको अपना दामाद बनाने के लिए तैयार हो गया। मेरा विवाह हुआ और तब से मैं अपनी सुव्यवस्था करने की योग्यता से उत्तरोत्तर उन्नति करता चला आ रहा हूँ। इस समय मैं लाखों रुपयों का काम लेता हूँ।

"जो उन्नति नहीं कर सकते, वे ईर्ष्या के कारण मुझको गालियाँ देते हैं। जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गालियाँ नहीं देते और योग्यता रखते हैं, वे मेरे समान उन्नति कर रहे हैं।"

"तो आपके कहने का मतलब यह है कि सरमायेदार ईमानदार और मेहनती आदमी हैं?"

"मैंने यह नहीं कहा। मैं सरमायादारी कोई वस्तु नहीं समझता। कई लोगों के पास धन इस कारण जमा हो गया है कि वे पैसे वालों की सन्तान हैं। मैं इस समय उनकी बात नहीं कह रहा। मैं तो यह कहना चाहता हूँ कि ऑर्गनाइज़िंग कैपेसिटी (सुव्यवस्था करने की शक्ति) सफल ठेकेदार का अत्यावश्यक गुण है। इस योग्यता का न होना पैसे से पूर्ण नहीं हो सकता। अयोग्य आदमियों के हाथ में पैसा नहीं रह सकता। पैसा होने पर भी अयोग्य सफल नहीं हो सकते।"

इस पर शिशिर ने अपना एक और संदेह बता दिया, "सरमाये को पैदा करना तो बुरा नहीं, परन्तु इसको मज़दूरों की मेहनत मोल लेने में व्यय करना मज़दूरों का विदोहन (एक्सप्लॉयटेशन) करना है, उनकी मज़दूरी को सस्ते दाम पर खरीदकर महँगे भाव पर बेचने के तुल्य है।"

वढ़ियामसिंह ने मुस्कराकर कहा, "यह लांछन कुछ अंशों में ठीक है, परन्तु इस विदोहन को बन्द करने का उपाय एक विदोहनकर्ता को हटाकर दूसरा विदोहनकर्ता पैदा कर देना नहीं है।

"राष्ट्रीयकरण इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं। यदि मैं विदोहन करता हूँ तो बुरा और यदि रेलवे बोर्ड विदोहन करे तो बुरा नहीं।"

"रेलवे बोर्ड कैसे विदोहनकर्ता हो गया? रेलवे का लाभ तो बोर्ड नहीं लेता। यह तो कर्मचारियों और जनता को चला जाता है।"

"मुझको आपके कथन पर संदेह है। प्रतिवर्ष मैं रेलवे का बजट बहुत शौक से पढ़ता हूँ और वहाँ के कर्मचारियों का वेतन और उनकी अवस्था देखता हूँ। हमारे यहाँ से उनकी अवस्था किसी प्रकार भी अच्छी नहीं।

"मैं तो यह समझता हूँ कि रेलवे की करोड़ों रुपयों की आय अधिकारियों की अतिरिक्त आय में, ठेकेदारों के साथ रियायत करने में और कर्मचारियों द्वारा समय के व्यर्थ खोए जाने में भस्म हो जाती है।

"अब यात्रियों को सुविधाएँ दी जा रही हैं, यह मैं जानता हूँ। परन्तु उसमें कारण यह नहीं कि रेलवे की आय का सदुपयोग हो रहा है, प्रत्युत प्लैनिंग की मद में से अरबों रुपए रेलवे को मिल रहे हैं। प्लैनिंग की मद का रुपया रेल की आय का धन नहीं, प्रत्युत करदाताओं के कर का रुपया है।

"मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि राष्ट्रीय उद्योग-धन्धों में आय न तो कर्मचारियों को मिलती है, न ही सर्व-साधारण के हितों में प्रयुक्त होती है। यह जाती है सरकारी अफ़सरों की जेब में और अयोग्य, आलसी और कम काम करने वाले कर्मचारियों के वेतन में।"

"आपके कहने से तो यह सिद्ध हो गया कि एक व्यक्तिगत उद्योगपति मज़दूर से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम खूब लेता है और वेतन कम देता है। तभी तो आप टैक्स देकर भी मज़े में रहते हैं।"

"इसके लिए तो कानून बनाए जा सकते हैं। वेतन कितना हो, काम कितने घंटे लिया जाय और अन्य सुविधाएँ क्या हों? मुझको विश्वास है कि इस बात के होने पर भी प्राइवेट उद्योगपति के कार्य की निष्पत्ति (एफ़िशियन्सी) सरकार के कार्य से अधिक होगी।

"यह मनुष्य की प्रकृति है कि जब उसको यह समझ आती है कि उसके काम के लाभ-हानि से उस पर भी प्रभाव पड़ेगा तो वह मेहनत और विचार से कार्य करेगा।

"एक वेतनधारी नौकर, कार्य के लाभ-हानि से पृथक् रहने के कारण, कार्य की श्रेष्ठता और सतर्कता में शिथिल हो जायगा।"

"तो आपका अभिप्राय यह है कि कोऑपरेटिव (सहकारिता) का ढंग ठीक है? उसमें तो काम करने वाले लाभ-हानि में हिस्सेदार होते हैं।"

"हाँ, यदि कोऑपरेटिव सोसाइटियों को किसी कार्य में एकाधिकार न दिया जाय, तब तो परस्पर प्रतिस्पर्धा कर वे अपनी निष्पत्ति (ऐफ़िशियन्सी) बढ़ाती चली जाएँगी।"

"आप तो केवल मैट्रिक पास हैं।"

"परन्तु मेरी शिक्षा और अनुभव तो मैट्रिक पास करने के पश्चात् आरम्भ हुआ है। मैं अपनी स्कूल की शिक्षा के पश्चात् चालीस वर्ष-भर अनेक प्रकार के व्यक्तियों के सम्पर्क में आया हूँ और उन सबसे शिक्षा ग्रहण करता रहा हूँ। जीवन की प्रत्येक घटना से मैं शिक्षा ग्रहण करता रहा हूँ। मेरा सबसे बड़ा गुण मेरा प्रबल-ग्राही (रिसैप्टिव) मन ही है। यही कारण है कि मैं नए-नए विचारों और परिस्थितियों में अपने को खोया हुआ नहीं पाता।"

:५:

शिशिर ने आज तक समाजवादियों की ही युक्तियाँ सुनी थीं। अभी तक तो उसका मन उचाट हुआ था उनकी कार्य-विधि को देखकर, वे अधिनायक-ढंग (डिक्टेटरशिप) से कार्य करते थे। उनका उद्देश्य क्रान्ति उत्पन्न करना था। वे भूल रहे थे कि क्रान्ति का उपाय था गए-गुज़रे ज़माने का। जहाँ एक व्यक्ति का शासन हो और वह युक्ति का आदर और सहानुभूति से व्यवहार न करे, तभी क्रान्ति आवश्यक होती है। भारत में तो प्रति पाँच वर्ष पश्चात् शान्तिमय क्रान्ति उत्पन्न करने का अवसर होता है।

जब पार्टी ने केवल गड़बड़ मचाने के विचार से हड़ताल कराई और उस हड़ताल को अन्तिम स्थिति तक पहुँचाया, तो वह उनके उपायों में त्रुटि अनुभव करने लगा था। परन्तु जब एक व्यर्थ का मुकद्दमा कर कारखाने के मालिकों को तंग करने की आज्ञा उसको मिली तो वह घबड़ा उठा और अवसर मिलते ही सब झमेले से बाहर निकल आया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु आज उसको एक सरमायेदार के दृष्टिकोण को सुनने का अवसर मिला। यह उसके मस्तिष्क में हलचल मचाने वाला सिद्ध हुआ। सरदार वढ़ियामसिंह का कहना था कि सरमायादारों में भी ऊँच-नीच हैं। ये ऊँच-नीच कम और अधिक सरमाया के आधार पर नहीं, प्रत्युत सरमाया पैदा करने की योग्यता पर हैं।

एक व्यक्ति अपने व्यापार को दस-बीस अथवा चार-पाँच सौ रुपए से आरम्भ करता है और अपनी मितव्यतता के कारण, कारखाने की सुव्यवस्था के कारण और कारखाने के कर्मचारियों को प्रसन्न और सन्तुष्ट रखने के कारण अपने उद्योग में उन्नति कर सकता है। दूसरा व्यक्ति अपने बाप-दादाओं की सम्पत्ति लेकर उसको अनियमित ढंग से उद्योग में लगाता है और शीघ्र ही दिवालिया हो जाता है। दोनों प्रकार के उद्योगों और व्यक्तियों में अन्तर है।

साथ ही उसने कहा था कि जहाँ तक मालिक का कर्मचारियों के साथ व्यवहार का सम्बन्ध है, वह तो देश के कानून से व्यवस्थित किया जा सकता है।

एक बात जो मानव-प्रकृति की उसने बताई और जिसका प्रभाव शिशिर के मन पर सबसे अधिक हुआ था, वह एकाधिकार के विषय में थी। जब किसी उद्योग में किसी को भी एकाधिकार मिल जाता है तो वह प्रतिस्पर्धा के अभाव में मनुष्य को आलसी, प्रमादी और प्रवंची बना देता है।

इसने उसके समाजवाद के आधारभूत सिद्धान्तों में विश्वास को जड़ से हिला दिया। यद्यपि उसकी आस्था समाजवाद से अभी भी सर्वथा उन्मूलित नहीं हुई थी, तो भी वह अब उसके पक्ष में कहने से पूर्व गम्भीर विचार की आवश्यकता समझने लगा था।

उसने इस वाद-विवाद से निकलने के लिए कहा, "मेरी मौसी ज़िला बर्दवान के एक ज़मींदार की विधवा स्त्री हैं। ज़मींदारी तो समाप्त हो गई, परन्तु नकद, कम्पनियों और कारखानों में हिस्सों के अतिरिक्त एक बहुत बड़ा फार्म उनके पास है। मैं उस फार्म का मैनेजर बनने वाला हूँ। केवल उससे ही तीस-चालीस हज़ार की वार्षिक आय होने वाली है।"

वढ़ियामसिंह ने कुछ विचारकर कहा, "हरभजन, अमृत को बुला लाओ। यदि वह इस युवक के साथ विवाह करना चाहती है तो कर ले। मुझको आपत्ति नहीं होगी।"

हरभजनसिंह गया और अमृत को बुला लाया। अमृत के पिता ने उससे बहुत प्रश्न किए और जब देखा कि अमृत सब प्रकार से सन्तुष्ट है तो विवाह की स्वीकृति दे दी।

विवाह की विधि पर विचार हुआ तो शिंशिर ने कह दिया कि उसकी मौसी के मन में यह बात बैठ चुकी है कि विवाह हो चुका है। वह नहीं चाहता था कि यह बैठी बात मिटाई जाय। इससे उसका सम्बन्धियों में भारी अपमान होने की सम्भावना थी। इस कारण उसने कह दिया, "विवाह बहुत ही साधारण विधि से और तुरन्त हो जाना चाहिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वढ़ियामसिंह ने हरभजनसिंह से कहा, "ग्रन्थी को बुला लो और 'आनन्द' पढ़ा दिया जाय।"

"परन्तु पिताजी, ग्रन्थी उस व्यक्ति का, जिसने पौल नहीं ली और जिसने केश नहीं रखे, 'आनन्द' नहीं पढ़ाएगा।"

वढ़ियामसिंह इससे एक क्षण के लिए घबड़ाया। फिर कुछ विचारकर बोला, "छोड़ो इस झंझट को। किसी पंडित को बुलाकर विवाह करा लो। यूँ तो कचहरी में जाकर स्पेशल मैरेज ऐक्ट से भी विवाह हो सकता है, परन्तु उसमें कम-से-कम पन्द्रह दिन लग जाएँगे।"

"यह तो सबसे अधिक अच्छा है। यह शीघ्र और मौसी के मतानुसार ही होगा।"

"क्यों अमृत ?" पिता ने पूछा।

"यह बात मेरे निर्णय करने की नहीं है। मैंने निर्णय करना होता तो यहाँ लौटकर नहीं आती।"

"तो ठीक है। पंडित को बुलाकर विवाह हो जाना चाहिए। साक्षी के रूप में दस-बीस आदमियों की आवश्यकता है। सो निकटस्थ सम्बन्धियों को ही बुलाना चाहिए।"

यह सब-कुछ अगले दिन प्रातःकाल के लिए निश्चय हो गया।

अगले दिन सौ सवा-सौ मित्रों तथा सम्बन्धियों के सम्मुख विवाह हो गया। कन्यादान सरदार वढ़ियामसिंह ने किया। शिशिर के मित्रों में नीला, प्रबोध और कुछ यूनियन के सदस्य उपस्थित थे। हरभजनसिंह का मामा विष्णुसहाय तथा कुछ मित्र, जिनको वह टेलीफोन पर बुला सका, वहाँ आ गए थे।

विवाह हो गया और जब यह बात विख्यात हुई कि वढ़ियामसिंह की लड़की का विवाह हिन्दू विधि से हुआ है तो गुरुद्वारा में उसके बहिष्कार की चर्चा चल पड़ी। एक 'गुर-मता' स्वीकार किए जाने की बात होने लगी। यह प्रस्ताव था कि सरदार साहब को गुरुद्वारा कमेटी से निकाल दिया जाय।

वढ़ियामसिंह को जब पता चला तो उसने स्वयं ही लिखकर त्यागपत्र दे दिया।

विवाह के पश्चात् वढ़ियामसिंह ने शिशिरकुमार को पृथक् में ले जाकर पूछा, "मैं विवाह के अवसर पर कुछ भेंट-स्वरूप देना चाहता था। परन्तु मैं इस बात की प्रतीक्षा कर रहा था कि तुम इस विषय को चलाओगे। तुमने इस विषय पर बात नहीं की, इस कारण अब जानना चाहता हूँ कि तुम क्या आशा लगाए बैठे थे ?"

"जो चाहता था, सो पा गया हूँ। मैं विवाह करने पर किसी प्रकार के दहेज की इच्छा नहीं रखता। मेरा विचार हैं कि अमृत हमारे घर की अवस्था जानती है। उससे पूछिए कि वह किस वस्तु का अभाव वहाँ देखती थी, सो वह वस्तु उसको दे दीजिए।"

अमृत को बुलाया गया और पिता ने एक खाली चेक पर हस्ताक्षर कर अमृत के हाथ में दे दिया। अमृत ने पूछा, "क्या करूँ इसका ?"

"इसको भर लो, जितना तुम उचित समझती हो और जिसके नाम तुम उचित समझती हो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमृत ने चेक वापस करते हुए कहा, "भापाजी, आपने मेरी उच्छृंखलता को क्षमा कर दिया है सो मैंने लाखों पा लिये हैं। इनकी मौसी बहुत ही अच्छी हैं। उन्होंने यह जानकर भी कि मैं एक ग़रीब रिफ्यूजी की लड़की हूँ, जो दहेज में कुछ भी नहीं ले गई थी, मुझसे न तो घृणा की और न ही मुझको छोटा समझा। मेरे कहने का अर्थ है कि मुझको किसी वस्तु की अब आवश्यकता नहीं।"

"यह मैं तुमको इसलिए नहीं दे रहा कि यह तुम, उनको रिश्वत देकर सुखी रह सको। यह तो तुमको स्नेह-भेंट के रूप में देना चाहता हूँ।"

"तो इसके लिए आप मुझसे क्यों पूछते हैं? जितना मूल्य आप स्नेह का आँकते हैं, दे दीजिए और मेरे से स्नेह शेष कर दीजिए। वैसे तो मैं इस स्नेह का मूल्य पसन्द नहीं करती। यह यहाँ इस बैंक में जमा रहने देना चाहती हूँ।"

इस बात ने पिता का मुख बन्द कर दिया। शिशिर ने बात बदलने के लिए कह दिया, "हम आज सायंकाल ही जाना चाहते हैं।"

: ६ :

उस दिन उनका जाना नहीं हो सका। विवाह से छुट्टी पाने पर नीला ने अमृत को पकड़ लिया और उसको उसी सायंकाल चाय-पार्टी पर निमन्त्रण दे दिया। नीला के इस निमन्त्रण को वह इन्कार नहीं कर सकी।

वहाँ पर पार्टी के कुछ लोग भी बुलाए हुए थे। वे प्रबोध के परिचय के कारण आए थे। देवेन्द्र भी आमन्त्रित था। उसके पास शिशिर का त्यागपत्र आ चुका था। वह इसका अभिप्राय नहीं समझा था। चाहिए तो यह था कि उसके बिना पार्टी की आज्ञा के मुकद्दमा वापस लेने पर, उसके विरुद्ध अनुशासन की कार्यवाही की जाती, पर अब इस त्यागपत्र से परिस्थिति भिन्न हो गई थी।

जब अनौपचारिक बातचीत हो चुकी तो देवेन्द्र उस मेज़ पर आ बैठा जिस पर शिशिर, नीला तथा प्रबोध बैठे थे। देवेन्द्र ने अवसर पा बात चला दी। उसने पूछा, "शिशिर, यह त्यागपत्र कदाचित् अनुशासन भंग करने के परिणामों से बचने के लिए दिया गया है?"

"नहीं देवजी! मैंने कोई अनुशासन भंग नहीं किया। न ही मैं इससे डरता हूँ। इस पर भी मैंने त्यागपत्र दिया है। इसका कारण यह है कि मेरा पार्टी के सिद्धान्तों और इसकी कार्यविधि में बिल्कुल विश्वास नहीं रहा।"

"यह बात कब से हुई है?"

"जब से प्रबोधजी के कारखाने में हड़ताल की बात चली थी।"

"परन्तु हड़ताल तो तुमने सफलतापूर्वक चलाई थी।"

"चलाई थी पार्टी की आज्ञा पालन करते हुए। इस पर भी मेरा विचार है कि वह सफल नहीं रही।"

"क्यों? चालीस दिन तक हड़ताल चली और एक भी कर्मचारी अनुशासन भंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करके काम पर नहीं गया। क्या इसको तुम सफलता नहीं समझते ?"

"यह सफलता तो वैसी ही है, जैसे कोई तैरकर नदी पार करना चाहे और तैरता हुआ मझधार में डूब मरे। इस अवस्था में यह कहना कि वह बहुत शान से तैरता रहा है, इस हड़ताल की सफलता के तुल्य है।"

"यह तो ठीक उदाहरण नहीं बना। देखो, तुमने हड़ताल कराई और अन्त तक हड़ताल नहीं टूटी। यही इसकी सफलता का सूचक है।"

"क्या हड़ताल, लक्ष्य था ? वास्तव में तैरने की भाँति हड़ताल भी साधन ही था। एक में नदी पार जाना लक्ष्य था और दूसरे में कर्मचारियों के लिए सुविधाएँ प्राप्त करना।"

"उस समय हड़ताल ही लक्ष्य था, अन्य बातें तो गौण थीं।"

"कर्मचारियों ने तो हड़ताल अपनी आर्थिक अवस्था सुधारने के लिए की थी।"

"वे लोग तो गँवार और कम शिक्षित थे। उनसे यह आशा करना कि वे हमारे उद्देश्यों को समझ सकेंगे, ठीक नहीं। वे तो हमारे अमरयुद्ध में केवल मोहरों का काम दे रहे थे। हम तो नगर में हलचल पैदा करना चाहते थे, सो तुम्हारे इस कार्य से हो गई। गोली चल गई। एक दर्जन के लगभग कर्मचारी घायल हुए और तीन मर गए। पार्लियामेंट और राज्यसभा में प्रश्न पूछे गए, 'काम रोको' प्रस्ताव किए गए और जब ये प्रस्ताव अस्वीकार किए गए तो मज़दूर-वर्ग में कांग्रेस सरकार के प्रति घृणा उत्पन्न हो गई। यह सब-कुछ तुमने सम्पन्न किया। इस प्रकार हड़ताल तो सफल ही कही जा सकती है।"

"तो मज़दूरों के हितों के लिए यह हड़ताल नहीं थी ?"

"कदापि नहीं। हम अपनी पार्टी को सुदृढ़ बनाना चाहते हैं और उसके लिए जनता में सरकार के विरुद्ध भावना उत्पन्न करने के लिए इस प्रकार की हलचलें उत्पन्न करना आवश्यक है। कर्मचारियों को तो हानि हुई है, हम भली-भाँति जानते हैं; परन्तु लाभ बहुत भारी हुआ है।"

"मैं इस प्रकार की हलचल प्रबोधजी के कारखाने में उत्पन्न करना न तो पार्टी के विचार से और न ही जनता में मज़दूरों के प्रति सहानुभूति उत्पन्न करने के लिए उचित समझता हूँ। इससे आपकी पार्टी का प्रभाव बहुत-कुछ बिगड़ा ही है। इससे भी बढ़कर मैं आपको बताना चाहता हूँ कि मैं आपकी पार्टी का काम देश में हलचल मचाने के लिए नहीं करता था। न ही मुझको कांग्रेस पार्टी अथवा किसी अन्य पार्टी से द्वेष है। मैं मज़दूरों का हित चाहता हूँ और इसमें इस हड़ताल से हानि हुई है।"

"मैं समझता हूँ कि कम्युनिस्ट पार्टी के अधिकारी-वर्ग न केवल अपनी कार्यविधि में भूल कर रहे हैं, प्रत्युत वे अपनी पार्टी का उद्देश्य भी ग़लत बनाए हुए हैं।"

यह सुनकर देवेन्द्र के माथे पर त्योरी चढ़ गई। उसने कहा, "शिशिर, दस वर्ष तक पार्टी का काम करने के पश्चात् उद्देश्यों में यह त्रुटि समझ आने लगी है। कहीं एक ठेकेदार की लड़की से विवाह इसमें कारण तो नहीं बन गया ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात बढ़ती देख प्रबोध ने कहा, "भाई साहब, लड़ना हो तो यहाँ से बाहर जाकर लड़िएगा। मैंने शिशिर के विवाह के उपलक्ष्य में यह पार्टी की है। यहाँ स्टडी-सर्कल नहीं खोला है।"

शिशिर हँस पड़ा, परन्तु देवेन्द्र दो घूँट चाय पीकर प्रबोध से पूछने लगा, "क्या आप भी समझते हैं कि आपके कारखाने में हड़ताल कराकर बहुत खराबी हुई है।"

"मैं तो आपकी पार्टी के सिद्धान्तों को मानने वाला था। इस पर भी आपने मुझे ही अपनी हलचल सम्बन्धी कार्यवाही का केन्द्र बनाया, यह मुझको भला प्रतीत नहीं हुआ। वास्तव में मुझमें और पार्टी के प्रायः सदस्यों में एक भारी अन्तर है। पार्टी के सदस्यों ने कारखाना नहीं खोला हुआ। उन्होंने किसी कारोबार के चलाने के लिए बैंक से रुपया उधार नहीं लिया हुआ। इस कारण जो वे सोचते हैं, वह मैं सोच नहीं सकता।"

"यही तो मैं कह रहा हूँ कि हम पूर्ण देश की परिस्थिति का अवलोकन कर रहे थे। तुम्हारा और शिशिर का दृष्टिकोण सीमित था। जब देश में सोशियलिज़्म हो जायगा, तब न तो बैंकों से कर्ज़ा लेने की आवश्यकता रहेगी, न ही हड़ताल कराने की।"

"हमारी सरकार यही तो कर रही है। इस कारण अब आपकी पार्टी की आवश्यकता नहीं रही। यदि यही बात आपकी पार्टी ने करनी है तो फिर उसको बन्द कर देना चाहिए।"

"पर जिस प्रकार कांग्रेस सरकार काम कर रही है, उससे तो एक शताब्दी लग जायगी। तब भी ये पूर्ण रूप से कर पाएँगे अथवा नहीं, कहा नहीं जा सकता।"

"तो आप और कांग्रेस सरकार में मतभेद क्रान्ति की गति में ही रह गया है न?"

"गति ही तो सब-कुछ है। हम अपने प्रयत्नों का फल अपने जीवनकाल में देखना चाहते हैं और इस प्रकार तो हमारे पौत्र-परपौत्र भी कदाचित् इसको पूर्ण रूप में कार्य करते नहीं देख सकते।"

"तो आप स्टालिन-शाही यहाँ भी चलाना चाहते हैं?"

"केवल यही नहीं, प्रत्युत उससे पहले लेनिन द्वारा लाई गई क्रान्ति भी यहाँ करना चाहते हैं।"

"पर यह आप नहीं जानते क्या कि लेनिन के कार्य को स्टालिन ने अमान्य किया और स्टालिन के कार्य की निन्दा वर्तमान रूसी राजनीतिज्ञों ने की है। मैं तो यह समझता हूँ कि वह विधि अथवा विधियाँ सर्वथा ग़लत थीं। रूस ने दोनों पर परीक्षण किए और दोनों को दोषपूर्ण पाया है। हम वैसे ही भयानक परीक्षण यहाँ दुहराना नहीं चाहते।"

"तो आप भी गए?" देवेन्द्र ने पूछा।

"मैं तो उसी दिन ही आपके सिद्धान्तों को ग़लत समझ बैठा था, जब आप मेरे कारखाने में हड़ताल करा रहे थे। मैं चाहता था कि किसी प्रकार मज़दूरों को कम-से-कम हानि हो और हड़ताल बन्द हो जाय, परन्तु इसमें सहायक हुए हैं तो आपके द्वारा कहे जाने वाले सरमायादार, मेरे पिता और नीलादेवी।"

इस समय नीलादेवी, जो अमृत से बातें कर रही थी, वहाँ आ गई और कहने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगी, "यह विवाद अब बन्द होगा या नहीं? मैं समझती हूँ कि अब हमको वर-वधू के लिए बधाई और शुभकामना करनी चाहिए।"

: ७ :

प्रबोध के घर पार्टी पर बहुत देर हो गई थी, इस कारण उस दिन के जाने का प्रोग्राम रद्द करना पड़ा। इधर सरदार वढ़ियामसिंह ने प्रबोध को वर-वधू को पार्टी देते देख, स्वयं भी विवाह के उपलक्ष्य में एक भारी पार्टी करने का विचार बना लिया। इस कारण शिशिर को दो दिन तक और लखनऊ में ठहरना पड़ा।

पहले तो सरदार वढ़ियामसिंह लड़की के तीन मास तक लापता रहने पर बहुत नाराज़ था। जब वह लौटकर आई तो वह अपने को अपमानित समझता था। पश्चात् उसने अपने को धोने के लिए अमृत के विवाह पर भारी दहेज देने की घोषणा कर दी। उसके विचारों को पहली ठेस पहुँची, जब कर्तारसिंह अपने लड़के की इच्छा पूरी करने के लिए अपने सब सिद्धान्तों को भी छोड़ बैठा था और कहने लगा था कि रक्त पानी से गाढ़ा होता है। इसके उपरान्त जब प्रीतमसिंह धन के लोभ में अपने केश भी मुँडवाने के लिए तैयार मिला, तो वह सँभल गया और अपने बच्चे के हित की बात विचार करने लगा।

जब शिशिर से भेंट हुई और उसको, गँवारू भाषा में प्रेम-सौन्दर्य इत्यादि शब्दों का प्रयोग छोड़, सीधी सरल कथा कहते सुना तो वह सर्वथा ही बदल गया। उसको अमृत के प्रति अपने व्यवहार पर पश्चात्ताप होने लगा। उसने मन में विवाह के अवसर पर भारी दहेज देने का विचार कर लिया था, इस पर भी वह शिशिर से इस विषय में किसी प्रकार की बात करने की प्रतीक्षा कर रहा था। जब उसने इधर ध्यान ही नहीं दिया, तो उसने उसको पृथक् बुलाकर दहेज के विषय में उसकी राय माँगी और यह कहते सुना कि अमृत उसकी मौसी के घर रह आई है, उससे ही पूछ लिया जाय कि वह वहाँ जिस वस्तु की कमी देखती है, वह वस्तु उसको दे दी जाय। इस बात ने तो वढ़ियामसिंह को गद्गद कर दिया। उसने समझा कि अमृत का चुनाव ग़लत नहीं है। इसके पश्चात् जब शिशिर और अमृत को उनके एक मित्र द्वारा चाय-पार्टी दी जाती देखी, तो वह स्वयं भी एक पार्टी देने के लिए तैयार हो गया।

पार्टी का प्रबन्ध होने लगा। इसमें दो दिन और लग गए। विवाह के अगले दिन मध्याह्न के समय भोजन करने के पश्चात् शिशिर ने अमृत की बर्दवान रहने की पूर्ण कथा सुना दी। वढ़ियामसिंह प्रतिमादेवी की सरलता की बातें सुनकर बहुत प्रभावित हुआ। उस समय उसने मन में यह निश्चय कर लिया कि वह अपनी लड़की को खाली हाथ बर्दवान नहीं भेजेगा।

तीसरे दिन सायंकाल ही पार्टी का प्रबन्ध हो सका। एक सहस्र से ऊपर मेहमानों के लिए चाय-पानी का प्रबन्ध था। कोठी के लॉन में एक बहुत बड़े शामियाने के नीचे एक हज़ार लोग बैठे चाय पी रहे थे और अमृत के भाग जाने और अपने लिए पति ढूँढ लाने की चर्चा कर रहे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पार्टी का एक और परिणाम हुआ। माधुरी हरभजनसिंह से नाराज़ थी। वह विवाह के विषय में किसी अन्तिम निर्णय पर नहीं पहुँच सका था। अन्तिम बात उसके साथ उस दिन हुई थी, जिस दिन अमृत की चिट्ठी कलकत्ता से आई थी। उसके पश्चात् हरभजनसिंह अमृत की प्रतीक्षा में भाग-दौड़ करता रहा था। पहले तो वह अपने मित्रों, सम्बन्धियों और परिचितों को यह बताता फिरता था कि अमृत अब बालिग हो गई है, इस कारण उसका विवाह अब उसकी रुचि के विरुद्ध नहीं किया जा सकता। तदनन्तर अमृत आई तो उसके विवाह और विवाह के उपलक्ष्य में इस चाय-पार्टी का प्रबन्ध करने में उसको माधुरी से मिलने का और इस विषय में बातचीत करने का अवसर नहीं मिला। आज चाय पर माधुरी, प्रबोध, नीला इत्यादि सब मित्र भी आमन्त्रित थे। अवसर देख हरभजनसिंह ने माधुरी से अपने विवाह की चर्चा चला दी। माधुरी ने माथे पर त्योरी चढ़ाकर कहा, "आप मेरी हँसी उड़ाते हैं क्या?"

"यह बात नहीं माधुरी! अमृत के घर से चले जाने के कारण मेरा चित्त कुछ इतना खिन्न हो रहा था कि न तो ठीक ढंग से मस्तिष्क ही काम करता था और न ही विचार की हुई बात पर कार्य करने का उत्साह होता था। अमृत का विवाह हो गया है और अब मन से एक बोझा-सा उतर गया प्रतीत हो रहा है। क्या मेरा यह प्रस्ताव अब समयातीत तो नहीं हो गया?"

"समयातीत तो नहीं कहा जा सकता, परन्तु जो-कुछ भी निश्चय होना हो, आज ही हो सकता है। कल कदाचित् समयातीत हो सकता है।" हरभजनसिंह मुस्कराया और कहने लगा, "तो मैं अपने पिताजी से कहकर आपके पिता के पास प्रस्ताव करा दूँ?"

"आपकी इच्छा है। मेरी ओर से आज तो इन्कार नहीं होगा।"

प्रभुदयाल तो इस घोषणा की चिरकाल से प्रतीक्षा कर रहा था। जब वढ़ियामसिंह ने उससे कहा, "बैरिस्टर साहब, मुझसे मेरे लड़के ने कहा है कि मैं आपसे उसके लिए आपकी लड़की माधुरी को माँगूँ। मैं समझता हूँ कि यह माँग अनुचित तो किसी प्रकार भी नहीं है। हाँ, आप इसकी सराहना करते हैं अथवा नहीं, यही जानना चाहता हूँ। मुझको विश्वास दिलाया गया है कि माधुरी को यह अरुचिकर नहीं है।"

बैरिस्टर साहब ने माधुरी से पूछा और अपनी अनुमति दे दी। दोनों वृद्धजनों का यह विचार हुआ कि यह अमृत के बर्दवान जाने से पूर्व ही हो जाय तो ठीक है। परिणाम यह हुआ कि शिशिर और अमृत को एक और दिन यहाँ ठहर जाना पड़ा। अगले दिन हरभजनसिंह और माधुरी का विवाह हो गया।

अमृत के विवाह तथा पार्टी के समय और हरभजनसिंह के विवाह के अवसर पर गुरुद्वारे की सिख-संगत नहीं आई। वढ़ियामसिंह यह सब-कुछ देख रहा था। वह समझ रहा था कि उन्होंने उसका बहिष्कार किया हुआ है। इस पर भी वह जब यह देखता था कि उसके अन्य मित्रों ने उसके निमन्त्रणों को सहर्ष स्वीकार किया है, तो उसका क्रोध सिख-संगत के प्रति शान्त होता जाता था। मित्रों और सम्बन्धियों ने अमृत को बहुत-सी वस्तुएँ भेंट में दी थीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ८ :

नीलादेवी से शिशिर और अमृत को दी गई पार्टी के अवसर पर हुए वार्त्तालाप से देवेन्द्र को भारी क्रोध चढ़ आया था। उसको खेद इस बात का था कि वह अपना दृष्टिकोण प्रबोध और शिशिर को समझा नहीं सका था। इस कारण उसने अगले ही दिन पार्टी की मीटिंग बुलाकर कई अत्यावश्यक निर्णय करा लिये। उनमें एक था, 'शिशिर और प्रबोध बूर्जुआ वर्ग में सम्मिलित हो गए हैं, अतएव उनको पार्टी से अलग किया जाता है।' दूसरा निर्णय यह था कि 'शिशिर के स्थान पं० भृगुदत्त को ऑटोमोबाइल वर्कर्ज़ यूनियन का प्रधान नियुक्त किया जाता है।'

भृगुदत्त प्रबोध के कारखाने में हड़ताल के परिणाम को देख चुका था। अतएव जब उसको पार्टी के निर्णयों का, विशेष रूप से उसके ऑटोमोबाइल वर्कर्ज़ यूनियन के प्रधान-पद पर नियुक्ति का, पता चला तो वह भारी असमंजस में पड़ गया। वह पार्टी की मीटिंग में किसी कारणवश उपस्थित नहीं था। उसको इन निर्णयों के विषय में सूचना देवेन्द्र के एक सहायक कार्यकर्ता ने दी थी। भृगुदत्त ने अपने से सम्बन्धित निर्णय को स्वीकार करने के स्थान कह दिया, "मैं आज सायंकाल देवेन्द्रजी से मिल लूँगा।"

देवेन्द्र इस उत्तर से क्रोधित हो गया। जब भृगुदत्त मिलने आया तो वह फूट पड़ा। उसने कहा, "मैं जानता हूँ कि जब किसी नगर में प्लेग फूट पड़ती है तो वह स्वस्थ-अस्वस्थ सबको लग जाती है। तो यह प्रतीत होता है कि तुमको भी शिशिर वाली छूत लग गई है।"

भृगुदत्त ने कहा, "मैं कई दिन से लखनऊ से बाहर था और नहीं जानता कि शिशिर को क्या छूत लगी थी, जिसके लक्षण मुझमें भी आप देखने लगे हैं।"

"सरमायादारी के प्लेग के लक्षण। शिशिर का विवाह सरदार वढ़ियामसिंह, यहाँ के एक कुख्यात ठेकेदार, की लड़की के साथ हो गया है और एक ठेकेदार की बूर्जुआ मनोवृत्ति उसमें आ गई है। जब तुमने भी पार्टी के निर्णयों को स्वीकार करने के स्थान मुझसे मिलकर बात करनी चाही तो मुझको तुममें भी उसी मनोवृत्ति के लक्षण दिखाई देने लगे हैं।"

भृगुदत्त हँस पड़ा। उसने कहा, "देवेन्द्रजी, मेरे मन में एक प्रकार की क्रान्ति उत्पन्न हो गई है। ये प्लेग की बीमारी के लक्षण हैं अथवा किसी और के, मैं जान नहीं सका। इतना विचार रखता हूँ कि निदान के लिए आप उपयुक्त डॉक्टर नहीं हैं।

"मैं जब कम्युनिस्ट पार्टी में सम्मिलित हुआ था, तब यह समझता था कि पार्टी की डिक्टेटरशिप में देश का कार्य चल सकेगा। मैं अब इस धारणा के भ्रममूलक होने को समझ गया हूँ। कम्युनिस्ट पार्टी में पार्टी की डिक्टेटरशिप नहीं प्रत्युत एक अधिकारी की डिक्टेटरशिप है। मैं देखता हूँ कि आपने पार्टी के सदस्यों को इस प्रकार सिधाया हुआ है कि कोई भी आपके निर्णयों का न तो विरोध कर सकता है और न ही विरोध करने की सूझ-बूझ रखता है। कदाचित् आप भी स्वतन्त्र विचार करने की योग्यता खो चुके हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप अपने से उच्च अधिकारी की आज्ञा-पालन करना जानते हैं और वे अपने से उच्च अधिकारी की। इस शृंखला में सर्वश्रेष्ठ अधिकार भारत से बाहर रूस में है। पहले स्टालिन था और अब ख़ुश्चेव हो गया है।

"आपकी इस अधिनायक-गण की शृंखला में, मैं मानव-हित नहीं पाता। बताइए, आपने शिशिर को पार्टी से क्यों निकाला है? क्या पार्टी में मतभेद के लिए स्थान नहीं है?"

"उसने बिना पार्टी की आज्ञा के प्रबोध के कारखाने के खरीदारों पर से मुकद्दमा उठा लिया था।"

"यही तो कह रहा हूँ। आपकी पार्टी का प्रबोध के कारखाने में कार्य करने वालों से सम्बन्ध था। उनमें से सब कर्मचारी तो पार्टी के सदस्य भी नहीं थे। शिशिर ने उन कर्मचारियों के हित में मुकद्दमा उठाया है।"

"देखो भृगु, उसको यह विचार करने का अधिकार नहीं था कि कर्मचारियों के हित में क्या था और क्या नहीं था।"

"तो किसको था?"

"पार्टी को अर्थात् पार्टी के नेताओं को।"

"मैं इस फिलॉसफी को नहीं मानता। इस विषय में प्रथम अधिकार तो कर्मचारियों का था और मैं जानता हूँ कि वे मुकद्दमा उठाने के पक्ष में थे।"

"हम यह अधिकार सीमित बुद्धि वाले उन कर्मचारियों को नहीं दे सकते। इससे सोशियलिस्टिक-स्टेट का निर्माण नहीं हो सकता। समाजवादी देश में अधिनायक-शासन ही सफल हो सकता है। ऐसी डेमोक्रेसी, जैसी भारत, अमेरिका, इंग्लैंड इत्यादि देशों में है, वह समाज का समाजवादी ढाँचा निर्माण नहीं कर सकती।"

"तो आपके कहने का अभिप्राय यह है कि समाजवादी ढाँचे का गौरव और लाभ इतना अधिक है कि देश के प्रत्येक व्यक्ति के मस्तिष्क को ताला लगाना भी क्षम्य है?"

"इसमें सन्देह ही क्या है? समाजवादी ढाँचे से भोजन, वस्त्र और निवास-स्थान प्रत्येक व्यक्ति को मिलेगा और इस विपुल कार्य के लिए मूर्खों के मस्तिष्क को ताला लगाना पड़े तो कुछ हानि नहीं।"

"मस्तिष्क में ताला लगाने वाले बुद्धिमान माने जाएँगे क्या?"

"मूर्खों के मस्तिष्क में ताला तो पहले से लगा होता है। केवल उसका उपयोग समाजवादी ढाँचे के लिए करने वाले हम हैं।"

भृगुदत्त इन मनोद्गारों को सुन स्तब्ध रह गया। उसने कुछ देर तक अपने मन में उठ रहे भावों का विश्लेषण करके कहा, "मैं इसको केवल हिमाकत (अभिमानयुक्त भावना) ही मानता हूँ। मानव की सर्वश्रेष्ठ शक्ति, मनन-शक्ति को कुंठित करने वालों को मैं और पातकी मानता हूँ। मैं तो ऐसा कर नहीं सकता। इसी कारण मैं यूनियन का प्रधान बनकर वर्कर्ज़ की, अपने हित-अहित-चिन्तन की योग्यता को समाप्त करना नहीं चाहता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो तुम भी पार्टी का आदेश नहीं मानते ?"

"पार्टी का अथवा आपका ? या यूँ कहूँ कि आपके गुरु-घंटाल रूसी बोलशिविक पार्टी क़े महामन्त्री के आदेश को ? नहीं, मैं तो हिन्दुस्तानी हूँ। भारत में प्रजातन्त्रात्मक राज्य स्थापित है। प्रजातन्त्र देश में विचार-स्वातन्त्र्य एक मूल्यवान् अधिकार है। मैं इसको आपके हाथ बेचने के लिए तैयार नहीं।"

देवेन्द्र भृगुदत्त के इन उद्‌गारों को सुन लाल-पीला हो रहा था। उसने अपना निर्णय सुना दिया, "मैं तुमको पार्टी की सदस्यता से बहिष्कृत करता हूँ। तुम अब यहाँ से चले जाओ, अन्यथा यहाँ से जीवित बच निकलना कठिन हो जायगा। जैसे प्लेग के चूहों को मिट्टी का तेल डालकर जला देना ठीक होता है, वैसे ही मैं तुम्हारे विषय में समझने लगा हूँ।"

यद्यपि भृगुदत्त यह सम्भव नहीं समझता था, इस पर भी उसको वहाँ ठहरना उचित प्रतीत नहीं हुआ।

अगले दिन भृगुदत्त के बहिष्कार की सूचना सब सदस्यों को भेज दी गई।

: ९ :

आखिर वह दिन आया, जिस दिन अमृत और शिशिर को विदा होना था। उनको लखनऊ स्टेशन पर विदा करने के लिए बीसियों लोग एकत्रित हो गए। इस समय मित्रों और सम्बन्धियों ने वर-वधू को फूलों की मालाएँ पहनाईं और आशीर्वाद दिया।

गाड़ी छूटने के पूर्व वढ़ियामसिंह गाड़ी में चढ़ आया और अमृत को हाथीदाँत की एक संदूकची दे आया। यह देते समय उसने कहा, "अमृत, मेरे सब सम्बन्धियों और मित्रों ने तुमको बहुत-कुछ दिया है। मेरी ओर से केवल यह चीज़ ही है। इसे रख लो और ज़ब गाड़ी छूट जायगी तो देखना।"

इस समय शिशिर अपने मित्रों से, जिनमें उसकी पार्टी के लोग नहीं थे, विदा ले रहा था। जब गाड़ी ने सीटी बजाई तो वह गाड़ी में चढ़ा और अमृत के साथ खिड़की में से झाँककर, हाथ जोड़कर नमस्कार करने लगा।

गाड़ी जब स्टेशन से निकल गई तो अमृत ने हाथीदाँत की संदूकची दिखाकर कहा, "यह पिताजी ने अभी-अभी दी है।"

शिशिर ने देखा, बहुत सुन्दर बनी थी। उसका विचार था कि दो-तीन सौ रुपए से कम दाम की नहीं हो सकती। शिशिर ने कहा, "यह तो स्नेह का चिह्न-मात्र है। श्वेत हाथीदाँत की वस्तु शुभ मानी जाती है।" इतना कहते-कहते उसने संदूकची खोलकर देखना आरम्भ कर दिया। उसमें एक काग़ज़ तह किया हुआ रखा था। शिशिर ने यह समझा कि यह संदूकची की रसीद है। इस कारण दाम जानने के लिए उसने खोलकर पढ़ा। पढ़ते समय उसकी आँखें और मुख खुला रह गया। यह इलाहाबाद बैंक की बर्दवान शाखा पर पाँच लाख रुपए का ड्राफ्ट था। उसने ड्राफ्ट अमृत को दिखाया तो अमृत की आँखों में आँसू भर आए। शिशिर ने कहा, "यह बहुत अधिक है न ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ऐसी बात नहीं। मेरा मन तो यह जानकर भर आया है कि पिताजी ने मुझको केवल क्षमा ही नहीं किया, प्रत्युत अपनी कठोरता का, जो पहले दिखाते रहे हैं, प्रायश्चित भी किया है। वे मान गए हैं कि मैंने घर से जाकर कुछ अनुचित बात नहीं की और मेरा चुनाव····।"

"बिल्कुल ग़लत है। ठीक है न?"

इस पर दोनों हँसने लगे। अमृत की आँखों में आँसू ढुलकने लगे थे और वह उनको पोंछने लगी थी।

:१०:

अमृत की अनुपस्थिति में बर्दवान में हवा का रुख़ बदला। जब शिशिर और अमृत बर्दवान स्टेशन पर लखनऊ जाने के लिए आए थे तो विमलानन्द भी उनको विदा करने आया हुआ था। वैसे तो वह अपनी शशि के लिए सन्तोष कर चुका था। इस पर भी उसके मन में विषाद का घाव अभी विद्यमान था। जब सब लोग, जो विदा करने आए थे, गाड़ी छूटने की प्रतीक्षा प्लेटफॉर्म पर कर रहे थे तो एक व्यक्ति, मोटर-ड्राइवर की वर्दी में, जो लखनऊ जा रहा था, इस भीड़ को देख विमलानन्द से पूछने लगा, "कौन जा रहा है?"

"यहाँ के ज़मींदार प्रफुल्ल बाबू का लड़का और बहू हैं।"

"यह लड़की तो पंजाबिन है। मैं इसको जानता हूँ।"

"कहाँ देखा है?" विमलानन्द ने अभी भी हँसी ही समझी थी।

ड्राइवर ने कहा, "ये लखनऊ के एक बहुत बड़े ठेकेदार सरदार वढ़ियामसिंह की लड़की अमृतकौर है। मैं इनके यहाँ नौकरी करता हूँ।"

विमलानन्द के कान खड़े हो गए। उसने पूछा, "सत्य कहते हो?"

"हाँ जी, बहुत अच्छी तरह से पहचानता हूँ।"

"ज़मींदार का लड़का लखनऊ से विवाह लाया है। कहता था कि इसके बाप का देहान्त हो चुका है और इसका कोई सम्बन्धी जीवित नहीं।"

"विवाह कर लाया है? बाबू साहब, यह लड़की घर से भागकर आई है।"

"चुप रहो।" विमलानन्द ने माथे पर त्योरी चढ़ाकर कहा।

गाड़ी ने सीटी बजा दी और वह ड्राइवर की पोशाक वाला आदमी भागकर थर्ड-क्लास के डिब्बे में चढ़ गया। विमलानन्द उसके कहने का अर्थ समझता रह गया। गाड़ी छूट गई तो वह सबके साथ घर लौट आया। घर आकर उसने अपनी पत्नी से उस ड्राइवर की बात कही तो पत्नी फड़क उठी। उसने अपने पति से कहा, "लो, अब हमारे पौ-बारह हैं। शिशिर ने झूठ बोलकर भगाई हुई लड़की को घर में रखा और धर्म के विरुद्ध उससे सम्बन्ध बना रखा था। चाची को इस बात का पता चला तो वह आगबबूला हो जायगी।"

"हाँ, और हमारा काम बन जायगा। शशि के विवाह की आशा की जा सकती है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम कल लखनऊ चले जाओ और वहाँ से पूर्ण समाचार ले आओ। क्या नाम लिया था उस आदमी ने इसके पिता का ?"

"वढ़ियामसिंह। लखनऊ के एक बहुत बड़े ठेकेदार हैं।"

"तो सुगमता से पता चल जायगा। सब समाचार लेकर शिशिर के लौटने से पहले ही आ जाओ। शेष तुम मुझ पर छोड़ दो, मैं निपट लूँगी।"

विमलानन्द इस रहस्योद्‌घाटन के लिए लखनऊ गया और स्टेशन से उतरते ही पूछ-गीछ करने लगा। शिशिर के तीन दिन रहकर वापस आने की बात थी। इस कारण वह उससे एक दिन पहले ही लौट आना चाहता था। वढ़ियामसिंह की कोठी का पता पाकर वह वहाँ आस-पड़ोस के लोगों से पूर्ण समाचार, जो जाना जा सकता था, जानकर बर्दवान लौट आया।

जो-कुछ उसने सुना और जो-कुछ वह स्वयं जानता था, दोनों को मिला और शेष कल्पना से काम लेकर, उसने एक अच्छी-खासी कहानी बना ली। बर्दवान में पहुँच, अपनी पत्नी से राय करके वह प्रतिमादेवी के पास जा पहुँचा। प्रतिमादेवी ने उसको तीन दिन तक नहीं देखा था। इस कारण पूछा, "विमल, कहाँ रहते हो आजकल ?"

"चाची, लखनऊ गया था।"

"क्या काम था वहाँ ?"

"यह तुम्हारे शिशिर ने जो अपना मुख काला किया है और परिवार के मुख पर कालिख पोती है, उसका ठीक-ठीक पता करने गया था।"

प्रतिमा इस बात को सुनकर क्रोध से पागल हो उठी। उसने डाँटकर कहा, "क्या कहते हो विमल, मेरे लड़के और अमृत पर कोई झूठा लांछन लगाया तो याद रखो घर से निकाल दूँगी और दाने-दाने के लिए मोहताज कर दूँगी।"

"चाची, नहीं। तुम्हारी सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि यह लखनऊ के एक ठेकेदार की आवारा लड़की है। वह शिशिर को उल्लू बनाए हुए है। दोनों का विवाह नहीं हुआ और वह घर से भागकर आई थी।"

"मुझको विश्वास नहीं होता।"

"किस बात का विश्वास नहीं होता।"

"तुम्हारे कहने के एक भी शब्द पर।"

"तो चलो मेरे साथ लखनऊ। मैं सब बात पुछवा दूँगा।"

"चलूँगी, परन्तु पहले उनको आ जाने दो।"

"चाची, यदि मेरी बात सत्य है तो उनको आने ही मत दो। यहाँ आने के पश्चात् घर से निकालोगी तो भारी बदनामी होगी। मैं तो पहले ही कहता था कि बंगाली समुदाय से बाहर की लड़की लेना ठीक नहीं। पर तुम उसकी मीठी आवाज़ और उसके नाटक पर इतनी मोहित हुईं कि असल बात समझ ही नहीं सकीं।"

प्रतिमादेवी को इस समाचार से बहुत दुःख हुआ। वह यह तो समझती थी कि यदि लड़की हीन-चरित्र है तो उसको घर में नहीं रखना चाहिए, परन्त एक तो उसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोला मुख स्मरण करके वह विमलानन्द की बात पर विश्वास करने के लिए तैयार नहीं होती थी। दूसरे, वह अभी यह नहीं समझ सकी थी कि शिशिर भी उन सबकी भाँति धोखे में फँस गया है, अथवा वह भी इस षड्यन्त्र में सम्मिलित है और उसने एक आवारा लड़की को घर में लाकर बिठा रखा है। वह विचार करती थी कि यदि शिशिर भी उनकी भाँति ठगा गया है तब उसको घर से क्यों निकाले ? किसी दूसरे के दोष के लिए अपने बेटे को दंड दे, यह वह समझ नहीं सकी थी। इस पर भी उसको विमलानन्द की बात पर विश्वास नहीं होता था। अतएव उसने उनके आने की प्रतीक्षा करना ही उचित समझा। उसने कहा, "देखो विमल, यह बात अभी किसी से नहीं कहना। मैं आज रात-भर विचार करूँगी और यदि आवश्यकता पड़ी तो लखनऊ जाकर शिशिर को इस दुष्टा के पंजे से छुड़ाऊँगी। यदि शिशिर उसको छोड़कर यहाँ आया तो शशि से उसका विवाह कर दूँगी।"

विमलानन्द चाची की बात सुनकर अति प्रसन्नवदन, यह वचन देकर कि वह किसी से इस बात की चर्चा नहीं करेगा, उठ अपने घर चला गया। रात-भर वह और उसकी पत्नी मन के लड्डू बनाते रहे।

अगले दिन वह चाची की इच्छा जानने आया। वह पूजा-गृह में थी। वह बैठक में प्रतीक्षा करता रहा। प्रतिमादेवी पूजा करके बाहर निकली और वस्त्र बदलने अपने शयनागार में चली गई। वहाँ नित्यप्रति के कपड़े पहन बैठक में आ गई। आते ही उसने कहा, "विमल, मैं लखनऊ नहीं जाऊँगी।"

"चाची, क्यों ? मुझ पर विश्वास नहीं क्या ?"

"नहीं। मैं अभी ठाकुरजी से पूछ रही थी। उनकी आवाज़ आई है, 'प्रतीक्षा करो।' "

"ठाकुरजी ने कहा है क्या ?"

"हाँ।"

"वे बोलते हैं क्या ?"

"हाँ, मेरे साथ बात किया करते हैं।"

"चाची, बौरा गई हो क्या ?"

"नहीं विमल, तुम इस बात को समझ नहीं सकते। तुम कभी शुद्ध निःस्वार्थ भाव से ठाकुरजी के चरणों में बैठे नहीं, इस कारण तुमसे उन्होंने कभी बात नहीं की।"

"चाची, यह न कभी हुआ है न होगा। पत्थर के ठाकुर भला कैसे बोल सकते हैं ?"

"सुनो, मैं बताती हूँ कि उन्होंने क्या बताया है। रात-भर मैं राम-नाम की माला जपती रही थी। मेरी एक ही प्रार्थना थी, 'मुझको मार्ग दिखाओ।'

"आज नित्य से एक घंटा पहले स्नानादि से निवृत्त हो मन्दिर में जा बैठी थी। अभी पन्द्रह मिनट हुए हैं कि वे साक्षात् प्रकट हुए थे। वे मुझको आशीर्वाद देकर बोले, "विमल की जाँच अधूरी है। अमृत शुद्ध पवित्र है। शिशिर देवता है। विमल का मार्ग अन्धकारमय है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह सब असम्भव है चाची ! ये तुम्हारे मन के अपने विचार ही हो सकते हैं। ये विचार उस समय के बने हैं, जब तक मैं सत्य-विवरण जानकर नहीं आया था। यह ठाकुरजी का कहा नहीं हो सकता। इसकी परीक्षा करके देख लो।"

"वह करूँगी। परन्तु अब लखनऊ जाने की आवश्यकता नहीं रही।"

"तो यहाँ कैसे परीक्षा होगी ?"

"यह मार्ग भी ठाकुरजी बताएँगे। मैंने तो अपने को उनके अधीन कर रखा है।"

"चाची, मैं प्रार्थना करता हूँ कि लखनऊ चलकर अपनी आँखों देख आओ और अपने कानों सुन आओ।"

"नहीं, मैं अभी नहीं जाऊँगी। तुम्हारा मार्ग अन्धकारमय है। विमल, मैं प्रतीक्षा करूँगी। उनको लौटने दो।"

विवश विमल असफल लौट गया। इस पर भी उसने अपना प्रयत्न नहीं छोड़ा। उसने और उसकी पत्नी ने सम्बन्धियों और परिचितों में यह बात फैला दी कि शिशिर की बहू विवाहिता नहीं। वह शिशिर के साथ भागकर आई थी और अब अपने माता-पिता की खुशामद करके उनसे सुलह करने गई है।

इसके साथ उसने अपनी कल्पित बात जोड़ दी, "वह आवारा लड़की थी। माता-पिता उससे नाराज़ थे। घर से भागी हुई थी और न जाने किस-किसके पास रहने के पश्चात् शिशिर के पल्ले पड़ी है।"

सुनने वाले विमलानन्द तथा उसकी पत्नी की बात सुन अवाक् रह जाते थे। जब विमलानन्द अथवा उसकी स्त्री अपनी बात की पुष्टि के लिए लखनऊ जाना और वहाँ की जाँच-पड़ताल का उल्लेख करते तो सब सिर हिला-हिलाकर बूढ़ी विधवा की बुद्धि के ठीक होने पर सन्देह करने लगते थे।

सम्बन्धी जब प्रतिमादेवी के पास जाते तो विमलानन्द की कथा सुना, उसे तथा उसकी पत्नी को दो-चार जली-कटी सुना देते।

प्रतिमादेवी को यह तो पता चल गया कि विमलानन्द ने अमृत और शिशिर की निन्दा आरम्भ कर दी है। इस पर भी वह लखनऊ जाकर वास्तविक बात जानने की इच्छा नहीं रखती थी। यह बात ठीक थी कि पूजा पर बैठे-बैठे उसके मन में यह बात स्फुरित हुई थी कि विमलानन्द असत्य भाषण करता है। उसका इस निन्दा करने से स्वार्थ सिद्ध होता है।

अब उसके घूम-घूमकर निन्दा करने पर विश्वास हो गया तो वह समझ गई कि परिवार की मान-रक्षा करने के विचार से नहीं, प्रत्युत अपने किसी कार्यसिद्धि के लिए ही यह कर रहा है। इस पर वह क्रोध से उतावली हो गई। वह समझती थी कि विमलानन्द को शिशिर के लौटने की प्रतीक्षा करनी चाहिए थी, उसकी बात भी सुन लेनी चाहिए थी। वह शिशिर के शीघ्र लौट आने की प्रतीक्षा कर रही थी। उसके आने पर ही वह विमलानन्द से बात करना चाहती थी।

विमलानन्द की बात धीरे-धीरे बल पकड़ती गई। इधर शिशिर को लौटने में देर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लग गई। इससे तो विमलानन्द को और भी अपने निन्दनीय कार्य के लिए समय मिल गया। कभी-कभी तो प्रतिमादेवी इस निन्दा की बातें सुन इतनी विक्षुब्ध हो उठती कि विमलानन्द को घर से निकाल देने का विचार करने लगती। परन्तु ठाकुरजी की पूजा में विस्फुरित बात का स्मरण कर वह प्रतीक्षा करने पर मन को मना लेती।

जब उसका मन अति कुपित होता तो वह पूजा-गृह में जाकर ठाकुरजी के चरणों में सिर रख घंटों ही बैठी रहती। उसके मन में बार-बार यह प्रार्थना आती, "प्रभु, बुद्धिहीन सेविका को मार्ग दिखाओ।"

:११:

शिशिर ने बर्दवान पहुँचने का समाचार नहीं भेजा था। वह कुछ अधिक हल्ला नहीं करना चाहता था। मार्ग में वह और अमृत विचार करते रहे थे कि मौसी को कितनी और किस प्रकार सत्य-कथा बतानी चाहिए। अंमृत की सम्मति थी कि पूर्ण कथा बिना किसी प्रकार के लुकाव-छिपाव के मौसी को बता देनी चाहिए। शिशिर कहता था कि इससे मौसी को बहुत भारी दुःख होगा और सम्भव है कि वह उन दोनों को घर से निकाल दे। वह वैष्णव है, सदाचार और शुचिता में बहुत विश्वास रखती है। यदि उसको उनके विवाह से पूर्व सहवास का विचार भी आ गया तो आगबबूला हो उनको भ्रष्ट और पतित मानने लगेगी।

"परन्तु देखिए न!" अमृत का कहना था, "झूठ बोलने से जीवन-भर डर लगा रहेगा कि भेद खुला तो मारे गए। यह तो बहुत बड़ी यंत्रणा होगी। एक बार सब-कुछ खोलकर स्पष्ट रूप में बता देने से परमात्मा हमारी सहायता करेगा। इस पर भी यदि वे रुष्ट हो गईं तो पाँच लाख रुपया हमारे पास है। कलकत्ता में चलकर कोई व्यवसाय करके जीवन-नौका चलाएँगे।"

"मैं असत्य बोलने के लिए नहीं कहता। मैं तो कुछ छिपाने और कुछ कहने के लिए कहता हूँ। धीरे-धीरे सब बात कह देने की बात कह रहा हूँ। ज्यूँ-ज्यूँ वे हमारी कथा को सुनकर सहन करती जाएँ, त्यूँ-त्यूँ हम बताते जाएँ।"

परन्तु अमृत नहीं मानी। उसने कहा, "देखिए, आपने मेरे पिताजी से सत्य बात बताई थी तो कैसा जादू का-सा प्रभाव उनके मन पर हुआ था। आप मुझ पर छोड़िए। मैं कह दूँगी। साथ ही यदि उनको हमारे कहने पर विश्वास नहीं हुआ तो लखनऊ में चलकर जाँच कर लें।"

"परन्तु वे हमको विवाह से पूर्व एक ही कमरे में सोते देखती रही हैं।"

"इससे क्या होता है? हम निर्दोष हैं। हमको भय नहीं खाना चाहिए। देखिए, सत्य एक महान् शक्ति है, जो विकट-से-विकट परिस्थिति में भी सहायता करने की क्षमता रखती है।"

दिन-भर के रेलगाड़ी में वाद-विवाद के पश्चात् अमृत की युक्ति ही ठीक समझ आई, परन्तु शिशिर ने कहा, "तुम्हीं इस विषय में बात करना।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, आप निश्चिन्त रहें। मुझको सत्य कें बल पर पूर्ण विश्वास है। उससे पापों का प्रायश्चित होता है, अर्थात् उसके परिणामों से छुटकारा मिलता है।"

सायं पाँच बजे वे घर पहुँचे। सेवक लोग, जो कोठी के फाटक पर आकर एकत्रित हो गए थे, दोनों का मुख देखते रह गए। वे भारी झगड़ा होने की आशंका कर रहे थे। एक बात वे देख रहे थे कि शिशिर और बहू जाते समय एक अटैची-केस और एक बिस्तर लेकर गए औंर आए थे गाड़ी-भर सामान लेकर। सब मिल-मिलाकर सोलह नग थे।"

सेवकों को बितर-बितर मुख देखते हुए खड़े पा, शिशिर ने कहा, "सामान उतारो, क्या देख रहे हो?"

इस डाँट से सतर्क हो वे घोड़ागाड़ी से सामान उतारने लगे। "देखो कचेरू, सोलह नग हैं, कोई गुम न होने पाए।"

इतना कह शिशिर ने गाड़ी वाले को भाड़ा देकर अमृत को साथ लिया और भीतर चला गया। सेवक सब चुप कर रहे। उनके भीतर जाते ही वे भारी हल्ला होने की आशंका करने लगे थे।

एक ने कहा, "विमल बाबू को पता दे देना चाहिए।"

इस विचार के आते ही एक सेवक उस ओर भागकर गया, जिधर विमलानन्द रहता था।

शिशिर और अमृत भीतर गए तो उनको यमुना ने बताया, "मौसी पूजा-गृह में हैं।"

"इस समय? क्या बात है?"

"कुछ तो है बहू! उनका मन बहुत दुःखी है।"

"क्यों, क्या बात है? क्या हुआ है?"

इसका उत्तर दासी ने नहीं दिया। शिशिर अपने कमरे में कपड़े बदलने चला गया। अमृत पूजा-गृह के बाहर जा खड़ी हुई। प्रतिमादेवी ठाकुरजी के सामने आँखें मूँदे, शीश नवाए बैठी थी।

अमृत को सन्देह हो गया कि कुछ हुआ है, जो वह नौकरानी उसको बताना नहीं चाहती थी। इसका अर्थ वह यह समझी कि अवश्य उनके विषय में ही कोई बात है, अन्यथा नौकरानी को बताने में संकोच न होता। इससे वह कुछ विचारकर, वहीं पूजा-गृह के बाहर भूमि पर बैठ गई।

बाहर कुछ हलचल का अनुमान कर प्रतिमादेवी ने समझा कि शिशिर और बहू आ गए हैं। इससे भगवान् से अन्तिम बार निवेदन कर, "प्रभु, इस अन्धी को मार्ग दिखाओ।" वह सीधी खड़ी हो गई। उसकी पहली ही दृष्टि अमृत पर पड़ी, जो पूजा-गृह के बाहर भूमि पर बैठी थी। अमृत के प्रफुल्लित मुख को देख उसके संशय छिन्न-भिन्न होने लगे, परन्तु केवल मुख देख किसी परिणाम पर न पहुँचने का निश्चय कर, पूजा-गृह से बाहर चली आई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके बाहर आते ही अमृत ने चरण छुए। चरण-रज सिर पर चढ़ाई और हाथ जोड़े हुए कहा, "माँजी, यमुना ने कहा है कि आप बहुत दुखी हैं। क्या बात है ?"

प्रतिमादेवी ने अमृत की आँखों में देखा और उसको निर्भीकता से अपनी ओर देखते हुए कहा, "बहू, तुम्हारी बहुत निन्दा सुन रही हूँ। मुझसे यह सब-कुछ सहन नहीं हो सकता। जब मन अत्यन्त आतुर होता है तो मनुष्य के अन्तिम आश्रय भगवान् के चरणों में आ बैठती हूँ।

"यहाँ मुझको शान्ति मिलती है, परन्तु बाहर सम्बन्धियों, सेवकों और परिचितों की दृष्टि में आग बरसती अनुभव करती हूँ। मैं नहीं जानती कि क्या करूँ।"

"माँजी, कुत्तों के भौंकने से हाथी अपनी मस्त चाल नहीं छोड़ देते। भगवान् के भक्त क्या लोक-निन्दा की परवाह करते हैं ? माँ, मैं सर्वथा निर्दोष हूँ।"

"भगवान् को साक्षी बनाकर कह सकोगी क्या ?"

"क्यों नहीं ? मैं किसी प्रकार से अपराधी नहीं हूँ।"

"तो आओ। भगवान् के चरणों में बैठकर अपनी कथा बताओ कि तुम कौन हो, क्यों यहाँ आई हो और कैसी हो ?"

आज पहली बार अमृत मौसी के पूजा-गृह में गई। प्रतिमा भगवान् के चरणों में, मूर्ति के सम्मुख खड़ी हो गई। अमृत ने बैठकर सिर मूर्ति के चरणों में टेक दिया और वहाँ बैठी-बैठी ही कहने लगी।

उसने अपनी कथा उस समय से आरम्भ की, जब नीला से उसका परिचय हुआ था। फिर सुशील से उसकी जानकारी हुई। सुशील ने उससे प्रेम प्रकट किया, जिस कारण वह अपनी बिरादरी के एक युवक से विवाह करने से ना कर बैठी। उसके माता-पिता ने उसके विवाह में ज़बरदस्ती करनी चाही और वह सुशील के कहने पर शिशिर के साथ यहाँ आ गई।

अमृत ने अपने मन के भाव और शिशिर के साथ शयनागार में हुई बातें और उनका संयम से रहना इत्यादि पूर्ण कथा बता दी। तदनन्तर उसने लखनऊ में लौटकर जाना और वहाँ अपने माता-पिता से सुलह, वहाँ विवाह और पश्चात् उनका तथा उनके सम्बन्धियों और मित्रों का, भेंट में अनेक वस्तुओं का देना और लगभग दो सौ सम्बन्धियों और मित्रों का उसको स्टेशन पर विदा करने आना, साथ ही पाँच लाख रुपए के ड्राफ्ट की बात भी बता दी।

अन्त में उसने कहा, "माँजी, यह सत्य है कि जब मैं पहली बार यहाँ आई थी, तो उनकी विवाहिता नहीं थी। साथ ही यह भी सत्य है कि हम पति-पत्नी के रूप में नहीं रहते थे। दस रात हम एक ही कमरे में सोए, परन्तु मैं भगवान् के सामने सौगन्धपूर्वक कहती हूँ वहाँ हमने एक-दूसरे को कभी छुआ तक नहीं था।

"सबसे पहले उनको वरने का विचार, जब मेरे मन में आया था तो इस विचार के उत्पन्न होने में उनकी स्नेहमयी मौसी का सुहृदयपूर्वक व्यवहार ही कारण था। मैं यह विचार करती थी कि आपकी पतोहू होने से जीवन-भर सुखी रहूँगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"धन का लोभ नहीं था। वह तो मेरे माता-पिता के पास बहुत है और इसका प्रमाण वह ड्राफ्ट है, जो इस समय उनके पास है। आपके स्नेहमय व्यवहार से मन पसीज उठा था।

"जब मैंने आपके पुत्र से अपने मन की बात बताई तो वह बोले कि बिना सुशील से स्वीकृति लिए वे इस सम्बन्ध के लिए तैयार नहीं होंगे। एक मित्र की अमानत को वे हड़प नहीं सकते। अतएव लखनऊ जाना आवश्यक हो गया। हमारे वहाँ पहुँचने के दिन ही सुशील बाबू का विवाह एक अन्य लड़की से हो रहा था। इस प्रकार मुझको छुट्टी मिल गई।

"इन्होंने मेरे माता-पिता को यही कथा बताई, तो उन्होंने मेरे उनके प्रति विद्रोह को क्षमा कर दिया। आज से पाँच दिन पूर्व हमारा विवाह हुआ है, परन्तु हमारा यह निश्चय था कि जब तक आप हमारी सेज सजाकर हमको नहीं देंगी, हम····।"

यह कहते-कहते अमृत की आँखें डबडबा आईं। उसने अपनी बात समाप्त करते हुए कहा, "मैं भगवान् से यह अनुरोध करती हूँ कि यदि इस वार्त्तालाप में एक अक्षर भी असत्य हो तो वे मुझ पर वज्रपात कर, मुझको यहीं भस्म कर दें।"

एक क्षण तक प्रतिमादेवी ने विचार किया। पश्चात् उसने विह्वल हो रोती हुई अमृत को उठाकर गले लगा लिया। उसने कहा, "बेटी, अब यह विवाद तुम्हारे और तुम्हारे भगवान् के बीच हो गया है। मैं इससे बाहर हो गई हूँ।

"भगवान् जाने और तुम जानो। यदि तुमने असत्य भाषण किया है तो वह सर्वान्तर्यामी असत्य भाषण करने वाले से उचित व्यवहार करना जानता है। जब यह मामला भगवान् के दरबार में पहुँच गया है तो मैं कौन हूँ, उसमें बात करने वाली!

"परन्तु बहू, मुझको इन इष्ट सम्बन्धियों के सामने मुख दिखाने योग्य बनाना है। यह कैसे होगा? ये तो भगवान् की बात मानेंगे नहीं।"

"मैं उनसे निपट लूँगी। इन भूले-भटके स्वार्थी स्वजनों को मैं सब बात बता दूँगी और उनको चुनौती दूँगी कि वे जाकर लखनऊ में मेरे माता-पिता, मेरे परिचित मित्रों से पूछ लें। इस पर भी यदि वे नहीं मानेंगे तो मैं उनको भगवान् के हाथ छोड़, उनकी अवहेलना करूँगी।

"भगवान् की बात वे नहीं मानते तो न मानें, परन्तु वह तो सर्वशक्तिमान् है और सत्य की प्रतिष्ठा के लिए वह इनको सुमति देगा।"

□□□

Central Library
167888
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar
081
167888

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
वर्ग संख्या R 089.9143 GUR-A आगत संख्या 167888

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब शुल्क लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
Access No.		
Class No.		
Cat No.		
Tag etc.		
E.A.R.		
Recomm. by.		
Date Ent. by		
Checked		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त

1894-1989 शिक्षा : एम. एस-सी

प्रथम उपन्यास "स्वाधीनता के पथ पर" से ही ख्याति की सीढ़ियों पर जो चढ़ने लगे कि फिर रुके नहीं।

विज्ञान की पृष्ठभूमि पर वेद, उपनिषद् दर्शन इत्यादि शास्त्रों का अध्ययन आरम्भ किया तो उनको ज्ञान का अथाह सागर देख उसी में रम गये।

वेद, उपनिषद् तथा दर्शन शास्त्रों की विवेचना एवं अध्ययन अत्यन्त सरल भाषा में प्रस्तुत करना गुरुदत्त की ही विशेषता है।

उपन्यासों में भी शास्त्रों का निचोड़ तो मिलता ही है, रोचकता के विषय में इतना कहना ही पर्याप्त है कि उनका कोई भी उपन्यास पढ़ना आरम्भ करने पर समाप्त किये बिना छोड़ा नहीं जा सकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar